छत्तीसगढ़ विधान सभा

की

अशोधित कार्यवाही

(अधिकृत विवरण)

षष्ठम् विधान सभा **सप्तम् सत्र**

मंगलवार, दिनांक 18 नवम्बर, 2025
(कार्तिक 27, शक सम्वत् 1947)

[अंक 01]

Web copy

विधान सभा के पदाधिकारी

अध्यक्ष	डॉ. रमन सिंह
सचिव	श्री दिनेश शर्मा

सभापति तालिका

1. श्री विक्रम उसेण्डी
2. श्री धर्मजीत सिंह
3. सुश्री लता उसेण्डी
4. श्री लखेश्वर बघेल
5. श्री दलेश्वर साहू
6. श्री प्रबोध मिंज

अशोधित/प्रकाशन के लिये नहीं

माननीय राज्यपाल

श्री रमेन डेका

मंत्रिमण्डल के सदस्यों की सूची

01.	श्री विष्णु देव साय, मुख्यमंत्री	सामान्य प्रशासन, खनिज साधन, ऊर्जा, जनसम्पर्क, ल संसाधन, विमानन, सुशासन एवं अभिसरण, इलेक्ट्रॉनिक एवं सूचना प्रौद्योगिकी, जन शिकायत निवारण एवं अन्य विभाग जो किसी मंत्री को आवंटित ना हो.
02.	श्री अरूण साव, उप मुख्यमंत्री	लोक निर्माण, लोक स्वास्थ्य यांत्रिकी, नगरीय प्रशासन एवं खेलकूद एवं युवा कल्याण.
03.	श्री विजय शर्मा, उप मुख्यमंत्री	गृह एवं जेल, पंचायत एवं ग्रामीण विकास, विज्ञान और प्रौद्योगिकी.
04.	श्री रामविचार नेताम, मंत्री	आदिम जाति विकास, कृषि विकास एवं किसान कल्याण तथा जैव प्रौद्योगिकी, मछलीपालन, पशुधन विकास.
05.	श्री दयाल दास बघेल, मंत्री	खाद्य, नागरिक आपूर्ति एवं उपभोक्ता संरक्षण.
06.	श्री केदार कश्यप, मंत्री	वन एवं जलवायु परिवर्तन, परिवहन, सहकारिता, संसदीय कार्य.
07.	श्री लखनलाल देवांगन, मंत्री	वाणिज्य और उद्योग, सार्वजनिक उपक्रम, वाणिज्यिक कर (आबकारी), श्रम.
08.	श्री श्याम बिहारी जायसवाल, मंत्री	लोक स्वास्थ्य और परिवार कल्याण, चिकित्सा शिक्षा, पिछड़ा वर्ग एवं अल्पसंख्यक विकास, बीस सूत्रीय कार्यान्वयन.
09.	श्री ओ. पी. चौधरी, मंत्री	वित्त, वाणिज्यिक कर (आबकारी को छोड़कर), आवास एवं पर्यावरण, योजना, आर्थिक एवं सांख्यिकी.
10.	श्रीमती लक्ष्मी राजवाड़े, मंत्री	महिला एवं बाल विकास, समाज कल्याण.
11.	श्री टंक राम वर्मा, मंत्री	राजस्व एवं आपदा प्रबंधन, पुनर्वास, उच्च शिक्षा.
12.	श्री गजेन्द्र यादव, मंत्री	स्कूल शिक्षा, ग्रामोद्योग, विधि और विधायी कार्य.
13.	श्री गुरू खुशवंत साहेब, मंत्री	कौशल विकास, तकनीकी शिक्षा एवं रोजगार, अनुसूचित जाति विकास.
14.	श्री राजेश अग्रवाल, मंत्री	पर्यटन, संस्कृति, धार्मिक न्यास एवं धर्मस्व.

अशोधित/प्रकाशन के लिए नहीं

सदस्यों की वर्णात्मक सूची
(निर्वाचन क्षेत्र का नाम तथा क्रमांक सहित)

अ

01.	अंबिका मरकाम, श्रीमती	56-सिहावा (अ.ज.जा.)
02.	अजय चन्द्राकर	57-कुरूद
03.	अटल श्रीवास्तव	25-कोटा
04.	अनिला भेंडिया, श्रीमती	60-डौंडीलोहारा (अ.ज.जा.)
05.	अनुज शर्मा	47-धरसींवा
06.	अमर अग्रवाल	30-बिलासपुर
07.	अरूण साव	26-लोरमी
08.	आशाराम नेताम	81-कांकेर (अ.ज.जा.)

इ

01.	इंद्र कुमार साहू	53-अभनपुर
02.	इंद्र साव	46-भाटापारा
03.	इन्द्रशाह मंडावी	78-मोहला-मानपुर (अ.ज.जा.)
04.	ईश्वर साहू	68-साजा

उ

01.	उत्तरी गनपत जांगड़े, श्रीमती	17-सारंगढ़ (अ.जा.)
02.	उद्धेश्वरी पैकरा, श्रीमती	08-सामरी (अ.ज.जा.)
03	उमेश पटेल	18-खरसिया

ओ

01.	ओंकार साहू	58-धमतरी
02.	ओ.पी.चौधरी	16-रायगढ़

क

01.	कवासी लखमा	90-कोन्टा (अ.ज.जा.)
02.	कविता प्राण लहरे, श्रीमती	43-बिलाईगढ़ (अ.जा.)

अशोधित/प्रकाशन के लिए नहीं

03.	किरण देव	86-जगदलपुर
04.	कुंवर सिंह निषाद	61-गुण्डरदेही
05.	केदार कश्यप	84-नारायणपुर (अ.ज.जा.)

ग

01.	गजेन्द्र यादव	64-दुर्ग शहर
02.	गुरू खुशवंत साहेब	52-आरंग (अ.जा.)
03.	गोमती साय, श्रीमती	14-पत्थलगांव (अ.ज.जा.)

च

01.	चरणदास महंत, डॉ.	35-सक्ती
02.	चातुरी नंद, श्रीमती	39-सराईपाली (अ.जा.)
03.	चैतराम अटामी	88-दंतेवाड़ा (अ.ज.जा.)

ज

01.	जनक ध्रुव	55-बिन्द्रानवागढ़ (अ.ज.जा.)

ट

01.	टंक राम वर्मा	45-बलौदाबाजार

ड

01.	डोमनलाल कोर्सेवाड़ा	67-अहिवारा (अ.जा.)

त

01.	तुलेश्वर हीरा सिंह मरकाम	23-पाली-तानाखार (अ.ज.जा.)

द

01.	दयाल दास बघेल	70-नवागढ़ (अ.जा.)
02.	दलेश्वर साहू	76-डोंगरगांव

अशोधित/प्रकाशन के लिये नहीं

03.	दिलीप लहरिया	32-मस्तूरी (अ.जा.)
04.	दीपेश साहू	69-बेमेतरा
05.	देवेंद्र यादव	65-भिलाई नगर
06.	द्वारिकाधीश यादव	41-खल्लारी

ध

01.	धरम लाल कौशिक	29-बिल्हा
02.	धर्मजीत सिंह	28-तखतपुर

न

01.	नीलकंठ टेकाम	82-केशकाल (अ.ज.जा.)

प

01.	पुन्नूलाल मोहले	27-मुंगेली (अ.जा.)
02.	पुरन्दर मिश्रा	50-रायपुर नगर (उत्तर)
03.	प्रणव कुमार मर्पची	24-मरवाही (अ.ज.जा.)
04.	प्रबोध मिंज	09-लुण्ड्रा (अ.ज.जा.)
05.	प्रेमचंद पटेल	22-कटघोरा

फ

01.	फूल सिंह राठिया	20-रामपुर (अ.ज.जा.)

ब

01.	बघेल लखेश्वर	85-बस्तर (अ.ज.जा.)
02.	बालेश्वर साहू	37-जैजेपुर
04.	ब्यास कश्यप	34-जांजगीर-चांपा

भ

01.	भावना बोहरा, श्रीमती	71-पण्डरिया

अशोधित/प्रकाशन के लिये नहीं

02.	भूपेश बघेल	62-पाटन
03.	भूलन सिंह मराबी	04-प्रेमनगर
04.	भैयालाल राजवाड़े	03-बैकुंठपुर
05.	भोला राम साहू	77-खुज्जी

म

01.	मोती लाल साहू	48-रायपुर ग्रामीण

य

01.	यशोदा नीलाम्बर वर्मा, श्रीमती	73-खैरागढ़
02.	योगेश्वर राजू सिन्हा	42-महासमुन्द

र

01.	रमन सिंह, डॉ.	75-राजनांदगांव
02.	राघवेन्द्र कुमार सिंह	33-अकलतरा
03.	राजेश अग्रवाल	10-अम्बिकापुर
04.	राजेश मूणत	49-रायपुर नगर (पश्चिम)
05.	रामविचार नेताम	07-रामानुजगंज (अ.ज.जा.)
06.	रामकुमार टोप्पो	11-सीतापुर (अ.ज.जा.)
07.	रामकुमार यादव	36-चंद्रपुर
08.	रायमुनी भगत, श्रीमती	12-जशपुर (अ.ज.जा.)
09.	रिकेश सेन	66-वैशाली नगर
10.	रेणुका सिंह सरूता, श्रीमती	01-भरतपुर-सोनहत (अ.ज.जा.)
11.	रोहित साहू	54-राजिम

ल

01.	लक्ष्मी राजवाड़े, श्रीमती	05- भटगांव
02.	लखन लाल देवांगन	21-कोरबा
03.	लता उसेंडी, सुश्री	83-कोण्डागांव (अ.ज.जा.)
04.	ललित चन्द्राकर	63-दुर्ग ग्रामीण
05.	लालजीत सिंह राठिया	19-धरमजयगढ़ (अ.ज.जा.)

अशोधित/प्रकाशन के लिए नहीं

व

01.	विक्रम उसेण्डी	79-अंतागढ़ (अ.ज.जा.)
02.	विक्रम मण्डावी	89-बीजापुर (अ.ज.जा.)
03.	विजय शर्मा	72-कवर्धा
04.	विद्यावती सिदार, श्रीमती	15-लैलूंगा (अ.ज.जा.)
05.	विनायक गोयल	87-चित्रकोट (अ.ज.जा.)
06.	विष्णु देव साय	13-कुनकुरी (अ.ज.जा.)

श

01.	शकुन्तला सिंह पोर्ते, श्रीमती	06-प्रतापपुर (अ.ज.जा.)
02.	शेषराज हरवंश, श्रीमती	38-पामगढ़ (अ.जा.)
03.	श्याम बिहारी जायसवाल	02-मनेन्द्रगढ़

स

01.	संगीता सिन्हा, श्रीमती	59-संजारी बालोद
02.	संदीप साहू	44-कसडोल
03.	संपत अग्रवाल, डॉ.	40-बसना
04.	सावित्री मनोज मण्डावी, श्रीमती	80-भानुप्रतापपुर (अ.ज.जा.)
06.	सुनील सोनी	51-रायपुर नगर (दक्षिण)
05	सुशांत शुक्ला	31-बेलतरा

ह

01.	हर्षिता स्वामी बघेल, श्रीमती	74-डोंगरगढ़ (अ.जा.)

अशोधित/प्रकाशन के लिये नहीं

छत्तीसगढ़ विधान सभा

मंगलवार, दिनांक 18 नवम्बर, 2025

(कार्तिक 27, शक संवत् 1947)

विधान सभा पूर्वाह्न 11:01 बजे समवेत् हुई.

{अध्यक्ष महोदय (डॉ.रमन सिंह) पीठासीन हुये}

समय :

11.01 बजे **राष्ट्रगीत/राज्यगीत**

अध्यक्ष महोदय :- अब राष्ट्रगीत "वंदे मातरम्" के साथ राज्यगीत "अरपा पइरी के धार" होगा। माननीय सदस्यों से अनुरोध है कि वे राष्ट्रगीत एवं राज्यगीत के लिये कृपया अपने स्थान पर खड़े हों ।

(राष्ट्रगीत "वंदे मातरम्" और राज्यगीत "अरपा पइरी के धार" का गायन किया गया)

समय :

11.04 बजे **सदन को सूचना**

अध्यक्ष महोदय :- छत्तीसगढ़ विधान सभा की यह एक दिवसीय बैठक इस भवन में अंतिम बैठक होगी । इसके पश्चात् सभा की आगामी बैठकें नवीन विधानसभा भवन में आयोजित की जायेंगी। इस भवन की अंतिम बैठक के अवसर पर स्मृति स्वरूप माननीय सदस्यों का "समूह छायाचित्र" सेन्ट्रल हॉल में निधन के उल्लेख के पश्चात् सदन की कार्यवाही स्थगित होने के तुरंत बाद लिया जाएगा ।

अत: माननीय सदस्यों से अनुरोध है कि वे निधन के उल्लेख के बाद सभा की कार्यवाही स्थगित होने के पश्चात् समूह छायाचित्र हेतु विधान सभा परिसर स्थित सेन्ट्रल हॉल में उपस्थित रहें ।

समय :

11.05 बजे **निधन का उल्लेख**

(1) श्रीमती रजनीताई उपासने, अविभाजित मध्यप्रदेश विधान सभा की पूर्व सदस्य.

(2) श्री बनवारीलाल अग्रवाल, छत्तीसगढ़ विधान सभा के पूर्व उपाध्यक्ष.

(3) श्री राधेश्याम शुक्ल, अविभाजित मध्यप्रदेश विधान सभा के पूर्व सदस्य.

अध्यक्ष महोदय :- मुझे सदन को सूचित करते हुए अत्यन्त दु:ख हो रहा है कि अविभाजित मध्यप्रदेश विधान सभा की पूर्व सदस्य, श्रीमती रजनी ताई उपासने जी का दिनांक 27 अगस्त, 2025,

छत्तीसगढ़ विधान सभा के पूर्व उपाध्यक्ष श्री बनवारीलाल अग्रवाल जी का दिनांक 15 अक्टूबर, 2025 तथा अविभाजित मध्यप्रदेश विधान सभा के पूर्व सदस्य, श्री राधेश्याम शुक्ल का दिनांक 30 अक्टूबर, 2025 को निधन हो गया है।

श्रीमती रजनी ताई उपासने का जन्म 28 अप्रैल, 1933 को हुआ था। श्रीमती रजनी ताई शुरूआती दिनों में राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ इकाई की राष्ट्र सेविका समिति की सक्रिय सदस्य रहीं। उन्होंने जनसंघ की प्रांत कार्यकारिणी में भी सदस्य के रूप में कार्य किया और लोक हित के विषय पर अनेक आंदोलनों का हिस्सा बनीं। आपातकाल के दौरान उनके तीनों बेटों को जेल भेज दिया गया। इसके बाद श्रीमती रजनी ताई उपासने ने हिम्मत न हारते हुए मीसाबंदियों का समर्थन किया और साथ ही सामाजिक कार्यकर्ता भूमिगत होकर जो आपातकाल का विरोध कर रहे थे, उनके लिए भोजन की व्यवस्था सुनिश्चित की। सन् 1977 में श्रीमती रजनी ताई उपासने जी को जनता पार्टी द्वारा रायपुर निर्वाचन क्षेत्र से विधायक का टिकट मिला। वह चुनाव में जीत हासिल कर रायपुर की पहली महिला विधायक बनकर विधान सभा पहुंची। श्रीमती रजनी ताई जी ने सदन के भीतर और सदन के बाहर निरंतर जनसेवा के विषयों को उठाया। एक सक्रिय विधायक के रूप में अपनी जिम्मेदारी का निर्वहन किया। सन् 1977 में विधायक रहते हुए श्रीमती रजनी ताई उपासने जी ने डॉ. भीम राव अंबेडकर चिकित्सालय, रायपुर में कैंसर हॉस्पिटल के निर्माण के लिए प्रयास किया और उनके परिश्रम से इस चिकित्सालय में कैंसर उपचार के लिए एक अलग इकाई की सुविधा प्रारंभ हुई।

उनके निधन से प्रदेश ने वरिष्ठ राजनेत्री तथा समाजसेविका को खो दिया है। समाज के निर्माण में एवं अन्याय के विरूद्ध संघर्ष में श्रीमती रजनी ताई उपासने जी का योगदान सदैव स्मरणीय रहेगा।

श्री बनवारीलाल अग्रवाल जी का जन्म 1 मई, 1947 को ग्राम-जपेली, जिला-कोरबा में हुआ था। वे छात्र जीवन से ही राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ में सक्रिय रहे। उन्होंने एम.एस.सी., एल.एल.बी. तक की शिक्षा प्राप्त की। उनका मुख्य व्यवसाय वकालत था। वे सन् 1990 से 1992 तक विशेष क्षेत्र विकास प्राधिकरण, कोरबा के अध्यक्ष रहे। भारतीय जनता पार्टी की टिकट पर निर्वाचन क्षेत्र कटघोरा से प्रथम बार सन् 1993 तथा दूसरी बार सन् 1998 में अविभाजित मध्यप्रदेश विधान सभा के सदस्य निर्वाचित हुये तथा मध्यप्रदेश से अलग होकर बने नवगठित छत्तीसगढ़ राज्य की प्रथम विधान सभा के सदस्य रहे। उन्होंने सन् 2001 से 2003 तक छत्तीसगढ़ विधान सभा के प्रथम उपाध्यक्ष का दायित्व संभाला। वे अविभाजित मध्यप्रदेश विधान सभा एवं छत्तीसगढ़ विधान सभा की अनेक महत्वपूर्ण समितियों के सदस्य रहे तथा छत्तीसगढ़ विधान सभा की पत्रकार दीर्घा सलाहकार समिति के पदेन सभापति भी रहे। वे अपने क्षेत्र के सर्वांगीण विकास के लिये हमेशा संघर्षशील रहे।

आपके निधन से प्रदेश ने वरिष्ठ राजनीतिज्ञ तथा समाजसेवी को खो दिया है।

श्री राधेश्याम शुक्ल का जन्म 17 नवम्बर, 1936 को हुआ था। उन्होंने एम.ए. तक की शिक्षा प्राप्त की थी। प्रारंभ में वे नायब तहसीलदार तथा महाविद्यालय में इतिहास के व्याख्याता रहे। सार्वजनिक सेवा में लगाव होने के कारण व राजनीतिक जीवन में सक्रिय हुए तथा ग्राम पंचायत खैरा के सरपंच तथा जनपद पंचायत बिल्हा के उपाध्यक्ष रहे। वे कांग्रेस पार्टी की टिकट पर निर्वाचन क्षेत्र बलोदा से प्रथम बार सन् 1972 में तत्पश्चात् निर्वाचन क्षेत्र सीपत से सन् 1977 तथा 1980 में अविभाजित मध्यप्रदेश विधान सभा के सदस्य निर्वाचित हुये। वे अविभाजित मध्यप्रदेश विधान सभा की अनेक समितियों के सदस्य रहे। उन्होंने मध्यप्रदेश राज्य परिवहन निगम के उपाध्यक्ष पद का दायित्व भी संभाला। आपने अपने क्षेत्र के विकास में सक्रिय योगदान दिया।

आपके निधन से प्रदेश ने वरिष्ठ राजनीतिज्ञ तथा समाजसेवी को खो दिया है।

मुख्यमंत्री (श्री विष्णु देव साय) :- माननीय अध्यक्ष महोदय, रायपुर की प्रथम महिला विधायक और प्रदेश की अग्रणी जनसेविका श्रीमती रजनी ताई उपासने जी का निधन हम सभी के लिए अपूरणीय क्षति है। वे छत्तीसगढ़ और मध्यप्रदेश दोनों राज्यों के राजनीतिक एवं सामाजिक जीवन की एक प्रेरक व्यक्तित्व थीं। श्रीमती रजनी ताई उपासने जी ने भारतीय जनता पार्टी से 1977 में रायपुर विधान सभा से चुनाव जीतकर इतिहास रचा था। वे रायपुर की पहली महिला विधायक बनीं। उस दौर में राजनीति में महिलाओं की भागीदारी बेहद सीमित थी। ऐसे समय में जनता का भरोसा जीतकर विधान सभा पहुंचना उनके साहस और संघर्ष को दर्शाता है। श्रीमती रजनीताई उपासने जी ने अपने सरल, दृढ़ और संवेदनशील नेतृत्व से जन सरोकारों को सदैव प्राथमिकता दी। महिलाओं, वंचित वर्गों और ग्रामीण क्षेत्र के उत्थान के लिए उनका समर्पण अत्यंत प्रशंसनीय रहा। माननीय प्रधानमंत्री जी ने भी उनके प्रति श्रद्धांजली अर्पित करते हुए कहा था कि आपकी दी गई जिम्मेदारी का मैं निष्ठापूर्वक पालन कर रहा हूं। यह वक्तव्य उनके मार्गदर्शक स्वरूप और सार्वजनिक जीवन में उनके योगदान की गहरी मान्यता को दर्शाता है। उनका निधन प्रदेश की राजनीति, समाज और जन सेवा के क्षेत्र के लिए अपूरणीय क्षति है। मैं दिवंगत आत्मा को श्रद्धांजली अर्पित करता हूं और ईश्वर से प्रार्थना करता हूं कि उनके परिजनों को इस दु:ख को सहन करने की शक्ति प्रदान करें।

माननीय अध्यक्ष महोदय, छत्तीसगढ़ विधान सभा के पूर्व उपाध्यक्ष तथा कटघोरा विधान सभा क्षेत्र के 2 बार के लोकप्रिय विधायक श्री बनवारीलाल अग्रवाल जी का निधन छत्तीसगढ़ की राजनीति और समाज दोनों के लिए एक अपूरणीय क्षति है। छात्र जीवन से ही वे राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ से जुड़े थे। उन्होंने अपना जीवन संगठन, समाज और शिक्षा के प्रति समर्पित किया। श्री अग्रवाल जी ने अपने विधायी कार्यकाल के दौरान जन समस्याओं को दृढ़ता और संवेदनशीलता के साथ उठाया। विधान सभा के उपाध्यक्ष के रूप में उन्होंने सदन की गरिमा, अनुशासन और संवाद की परंपरा को और मजबूत किया। वे भाजपा के प्रदेश कोषाध्यक्ष और अनुशासन समिति के सदस्य भी रहें। उनकी छवि एक सादे, ईमानदार

और जन सेवक नेता की थी। कोरबा और कटघोरा क्षेत्र में वे बेहद लोकप्रिय रहें और गरीब, मजदूर तथा किसानों के हक में हमेशा आवाज उठाये। राजनीति के साथ-साथ वे शैक्षणिक और सामाजिक संगठनों से भी जुड़े रहें। उनका निधन प्रदेश के लिए एक अपूरणीय क्षति है। मैं दिवंगत आत्मा को विनम्र श्रद्धांजली अर्पित करता हूं और ईश्वर से प्रार्थना करता हूं कि उनके परिवारजनों को इस कठिन समय में शक्ति प्रदान करें।

माननीय अध्यक्ष महोदय, छत्तीसगढ़ और अविभाजित मध्य प्रदेश की राजनीति के एक अनुशासित, सरल और कर्मनिष्ठ जनप्रतिनिधि श्री राधेश्याम शुक्ल जी का दिनांक 30 अक्टूबर, 2025 को दु:खद निधन हो गया। वे 92 वर्ष के थे। उनका संपूर्ण जीवन जन सेवा के लिए समर्पित रहा। उन्होंने नायब तहसीलदार के रूप में कार्य आरंभ किया, परंतु जन सेवा की तीव्र इच्छा उन्हें राजनीति की ओर ले लाई। राजनीतिक और सामाजिक जीवन में सक्रिय भूमिका निभाते हुए वे लगातार 10 वर्षों तक खैरा ग्राम पंचायत के सरपंच भी रहें। बिल्हा जनपद पंचायत के सदस्य के रूप में कार्य करते हुए उन्होंने ग्रामीण युवाओं को संगठित कर उनकी ऊर्जा को रचनात्मक दिशा प्रदान की। जनता ने उनके व्यक्तित्व और कार्यों को पहचानते हुए सन् 1972 में पहली बार उन्हें सीपत-बलौदा विधान सभा क्षेत्र से विधायक चुना। तत्पश्चात् सन् 1977 और 1980 में भी वे लगातार इसी क्षेत्र से विधान सभा के लिए निर्वाचित हुए। जनता पार्टी शासन तत्पश्चात् कांग्रेस शासन दोनों कालखण्डों में वे प्राक्कलन समिति के सक्रिय सदस्य रहें और देश के अनेक राज्यों में उन्होंने मध्य प्रदेश का प्रतिनिधित्व किया। उन्हें मध्य प्रदेश राज्य परिवहन निगम के उपाध्यक्ष पद की महत्वपूर्ण जिम्मेदारी भी सौंपी गई। उनके निधन से प्रदेश की राजनीति और समाज ने एक कर्तव्यनिष्ठ जनप्रतिनिधि को खो दिया है। मेरी ईश्वर से प्रार्थना है कि उनकी दिवंगत आत्मा को शांति प्रदान करें और उनके परिवारजनों को इस दु:ख को सहन करने की शक्ति दें।

नेता प्रतिपक्ष (डॉ. चरणदास महंत) :- माननीय अध्यक्ष महोदय, आज हम लोग रजनीताई जी को श्रद्धांजली अर्पित करने के लिए यहां खड़े हुए हैं। मैं उस समय राजनीति में प्रवेश तो नहीं किया था, मगर इस बात को जानता हूं कि सन् 1977 में उनका बड़ा नाम था। रायपुर और रायपुर के साथ-साथ छत्तीसगढ़ में रायपुर की पहली विधायिका के रूप में उनका नाम, उनका काम पूरे मध्य प्रदेश में जाना जाता था। वह एक बहुत अच्छी जन सेवक रही हैं। आपातकाल में भी उनकी भूमिका रही और कई बार उन्होंने सरकार के विरोध में आंदोलन किया। उसके लिए उन्हें जेल भी जाना पड़ा। एक बेहतर जनप्रतिनिधि के नाते वे जानी जाती रहीं। मैं उनका पूरा सम्मान करते हुए, उन्हें श्रद्धांजलि अर्पित करता हूं।

माननीय अध्यक्ष महोदय, श्री बनवारीलाल अग्रवाल, कोरबा से विधायक रहे, कटघोरा से विधायक रहे, मेरे संसदीय क्षेत्र में एक विधायक होने के नाते और भाजपा के विधायक होने के नाते भी मेरा उनसे

बेहतर संबंध था। हम लोग जहां भी मिलते थे, छत्तीसगढ़ के और अपने बिलासपुर डिवीजन के काम के बारे में, उन्नति के बारे में एक मित्रवत बात करते थे और सदैव उनका साथ रहा। उन्होंने विधान सभा में उपाध्यक्ष के रूप में जो सवाएं की और कोरबा में जो वकालत करते रहे, उसके नाते उनका जो व्यवहार है, वह सबके लिए बेहतर रहा। मैं उनको श्रद्धांजलि अर्पित करता हूं, ईश्वर से प्रार्थना करूंगा कि उनके परिवार को घोर दुख सहन करने की क्षमता प्रदान करें।

माननीय अध्यक्ष महोदय, श्री राधेश्याम शुक्ल, मेरे परिवार के बहुत नजदीक रहे, मेरे पिता जी के साथ वे विधायक रहे और उनके नेतृत्व में वे अगुवाई करते रहे। छत्तीसगढ़ में जब भी विधायकों की किसी बात की बैठक, आदि की जरूरत पड़ती थी तो उसमें बिल्कुल सजग रूप से अग्रणी भूमिका निभाते थे। यह मेरा सौभाग्य है कि मैं उनके साथ भी विधायक रहा। अर्जुन सिंह जी ने उन्हें मध्यप्रदेश राज्य सड़क परिवहन का उपाध्यक्ष बनाया और उस नाते भी उन्होंने छत्तीसगढ़ में अनेक लोगों को रोजगार भी दिया, अनेक लोगों की बातें भी सुनी और कई जगह नये-नये बस का संचालन किया। वे खिलाड़ी के रूप में भी बहुत प्रसिद्ध थे, उनके आचरण से प्रत्येक व्यक्ति को एक आनंद आता था। आज कहने का समय तो नहीं है, मगर हम लोग जब भी प्रणाम करने जाते थे, तब उनका एक ही आशीर्वाद होता था, "जवानी सलामत रहे बाबू"। उसको हम सब लोग याद करते हैं, आज भी उनकी स्मृतियों को याद करते हैं, मैं ईश्वर से कामना करता हूं कि उनको प्रभु अपने अंतर्आत्मा में स्थान दे और तीनों दिवंगत नेताओं के परिवार के प्रति उनका प्रेम, स्नेह बना रहे और सभी परिवारों को अपने दुख को सहन करने की क्षमता दे, उन्हें संबल प्रदान करें, इसी प्रार्थना के साथ मैं अपना हार्दिक दुख व्यक्त करता हूं। धन्यवाद।

वाणिज्य एवं उद्योग मंत्री (श्री लखन लाल देवांगन) :- माननीय अध्यक्ष महोदय, सम्माननीय रजनीताई जी, हम लोग राजनीति में नहीं आए थे, उस समय उनका बड़ा नाम सुनते थे। वे जनसेवा भावना की व्यक्तित्व की धनी थी। मैं उनको श्रद्धांजलि अर्पित करता हूं।

अध्यक्ष महोदय, श्री बनवारीलाल अग्रवाल, कोरबा जिला से आते थे, कटघोरा से दो बार विधायक थे, विधान सभा के उपाध्यक्ष थे, उस समय साडा हुआ करता था, उसमें साडा के अध्यक्ष थे, कोरबा एक छोटा सा कस्बा था, उन्होंने साडा अध्यक्ष बनने के बाद पहले झुग्गी, झोपड़ियों में बिजली नहीं हुआ करती थी, वहां उन्होंने बिजली पहुंचाने का काम किया। उन्होंने विधायक रहते हुए कोरबा क्षेत्र, कोरबा जिला को लगातार आगे बढ़ाने का प्रयास किया। वे कुशल संगठक थे, हम लोग राजनीति में शुरू में पार्षद के रूप में काम करते थे तो लगातार उनका मार्गदर्शन मिलता था कि संगठन को कैसे मजबूत करना है, कैसे जनता की अच्छी सेवा करनी है, हम लोगों को लगातार उनके द्वारा सीख मिलती थी। निश्चित तौर पर एक कर्मठ योगी थे, जनसंघ से भी जुड़े थे। यदि उनको कोई भी बात कहना होता था तो वह पीठ पीछे बात नहीं करते थे, यदि उनको डांटना हो, जो भी कहना हो, सामने में ही कहते थे। उनके द्वारा सभी कार्यकर्ताओं को एक अच्छा मार्गदर्शन मिलता था। वे विकास के प्रति काफी सचेत रहते

थे। वे श्रमिकों के हितों के लिए हमेशा बड़ा-बड़ा आंदोलन भी करते थे। वे चाहते थे कि अच्छा काम हो। निश्चित तौर पर आज वे नहीं रहें। हमारे भारतीय जनता पार्टी के लिए, छत्तीसगढ़ की राजनीति के लिए बड़े दु:ख की बात है। इसकी क्षतिपूर्ति कर पाना संभव नहीं है। अंतिम समय में भी, जब जनसंघ की बात आई, हमारे भारतीय जनता पार्टी द्वारा दिव्य यात्रा निकाला गया और जब वह इस यात्रा की बात सुने तो वह अचेत अवस्था में थे, तो भी उठकर हाथ हिला रहे थे। इस तरह से वे बहुत ही कुशल संगठक थे और एक अच्छा विचार रखकर चलने वाले धनी व्यक्तित्व थे। आज वे नहीं रहे, हम उनको श्रद्धांजलि व्यक्त करते हैं। भगवान उनके परिवार को दु:ख सहन करने की शक्ति प्रदान करें, ऐसी आशा करता हूं।

अध्यक्ष महोदय, सम्माननीय राधेश्याम शुक्ल जी, अविभाजित मध्यप्रदेश विधान सभा के सदस्य थे। हम लोग उनको भी नहीं जानते थे, खाली उनका नाम सुनते थे। उनको भी श्रद्धासुमन और श्रद्धांजलि अर्पित करता हूं।

आदिम जाति विकास मंत्री (श्री रामविचार नेताम) :- अध्यक्ष महोदय, यह सदन आज श्रीमती रजनीताई उपासने, स्व. बनवारी लाल अग्रवाल और स्व. राधेश्याम शुक्ल जी को श्रद्धांजलि दे रहा है। जैसा कि आपने अपनी भावना व्यक्त किया। माननीय सदन के नेता और माननीय नेता प्रतिपक्ष सबने यहां स्व. माननीय सदस्यों को श्रद्धांजलि देते हुए अपनी बातें रखी हैं।

अध्यक्ष महोदय, जहां तक विधायक स्व. रजनीताई उपासने की बात है, वह एक ऐसी सशक्त महिला थी, जो महिलाओं की आवाज थीं। उन्होंने अपने नेतृत्व क्षमता के बल पर जिस प्रकार से उस दौर में एक तरह से आपातकाल की साया से निकलकर जिस प्रकार से नेतृत्व प्रदान किया, आवाज दीं, उसे रायपुर की जनता ने उन्हें सरआंखों में बैठाकर एक विधायक के रूप में चुना। उनका जीवन बहुत ही सादगीपूर्ण रहा और बड़े ओजस्वी वक्ता के रूप में जानी जाती रहीं हैं। उन्होंने अपने कार्यकाल में बहुत सारे काम किए। यद्यपि वह उस दौर में जनसंघ की सक्रिय सदस्य के रूप में रहीं। जब सन् 1977 में चुनाव हुआ तो उस समय, उस दौर में जनसंघ के चलते-चलते जनता पार्टी की प्रत्याशी यहां से विधायक चुनी गईं। आज तक उस स्थान की भरपाई यहां से कोई महिला विधायक बनकर नहीं कर पाईं। वह रायपुर नगर की एक मात्र महिला विधायक के रूप में, नाम से जानी जाती हैं। वह रायपुर की एक मात्र महिला नेत्री के रूप में, विधायक के रूप में चुनी गईं। आज हम सब उनके नेतृत्व को याद करते हैं, स्मरण करते हैं। अभी कुछ दिन पहले वह दिखीं थीं। 93 वर्ष की आयु में उनका निधन हुआ। हम सब उनके अंतिम संस्कार में शामिल भी हुए। मैं उन्हें अपनी ओर से भावभीनी श्रद्धांजलि देता हूं। उनके परिवारजनों को, यद्यपि समाज में पूरा परिवार अपने-अपने स्थान में बहुत अच्छा स्थान बनाया है। उनके परिवार को इस दु:ख को सहने का ईश्वर सार्मथ्य दें।

अध्यक्ष महोदय, जहां तक स्व. बनवारी लाल अग्रवाल जी का विषय है, हम सब साथ में बैठते थे। उस दौर में जब हमारे छत्तीसगढ़ राज्य का स्थापना हुआ था, स्थापना के समय यह परम्परा हुआ करता था कि विपक्ष के किसी नेता को, विपक्ष द्वारा जो नामित सदस्य होता था, उसे उपाध्यक्ष बनाया जाता था। भारतीय जनता पार्टी की दल की ओर से माननीय श्री बनवारीलाल अग्रवाल जी का नाम आगे बढ़ाया गया और वह उपाध्यक्ष बने। उस समय का दौर हम सभी को मालूम होगा कि हम किस दौर में गुजर रहे थे। चूंकि वह एक ओजस्वी वक्ता थे, उनका बड़ा आक्रामक तेवर हुआ करता था। जब वे सदन में भी उपाध्यक्ष के रूप में किसी विषय को प्रतिपादित करते थे, जब उनका वक्तव्य होता था तो उनको पूरा सदन ध्यान से देखा करता था। एक ऐसा नेतृत्व जो बाल्यकाल से, विद्यार्थी परिषद से समाज सेवा में सक्रिय रहे। उन्होंने नानाजी के आश्रम में भी अपना समय गुजारा और उन्होंने वहां पर सालों तक अध्ययन किया। ग्रामोदय क्या होता है, ग्राम का विकास क्या होता है, हमारा पंचायतों का विकास किस तरीके से होता है, यह सभी अध्ययन उन्होंने ग्रामोदय विश्वविद्यालय में रहकर किया। नानाजी के सानिध्य में रहकर उनको एक अच्छा ज्ञान मिला। आगे चलकर हाऊस में भी जब वे अपना वक्तव्य देते थे। संगठन के नाते संगठन में भी हमने उनके साथ रहकर काफी काम किया है। संगठन में वह अक्सर एक गाना गाया करते थे और कार्यकर्ता को संदेश दिया करते थे कि संगठन गढ़े चलो, सुपंथ पर बढ़े चलो, भला हो जिसमें देश का, वह सब काम किये चलो। मैं समझता हूं कि वह एक दौर था, जब हम इस गाने को गाया करते थे, आदरणीय भूपेश बघेल जी और उसी रास्ते पर हम चलते-चलते आज हमारा कारवां यहां तक पहुंचा है। मैं समझता हूं कि ऐसे तमाम सारे नेताओं ने हमारे पार्टी को बढ़ाने में, देश की सेवा करते-करते जिस प्रकार से संगठन की रचना और संगठन को बढ़ाने का जो काम किया है, ऐसे नेतृत्व आज हमारे बीच में नहीं है। निश्चित ही हम सबको एक बहुत ही अपूरणीय क्षति हुई है। हमारे पार्टी को तो क्षति हुई है, साथ ही समाज को भी क्षति हुई है। हमने प्रदेश के एक ऐसे नेतृत्व को खोया है, जो एक बहुत ही ओजस्वी वक्ता के साथ-साथ इस समाज के क्षेत्र में उनका सामाजिक जीवन भी निर्मल रहा है। उन्होंने समाज सुधार के लिए भी बहुत सारे प्रयास किए हैं। मैं समझता हूं कि आज ऐसे नेता हमारे बीच में नहीं है। आज उनके जाने से हम सबको एक गहरा दु:ख है। मैं उनको भावभीनी श्रद्धांजलि देता हूं और मैं ईश्वर से यही प्रार्थना करता हूं कि उनके परिवारजनों को इस दु:ख की घड़ी में इस विपदा को सहने की उन्हें शक्ति दें।

जहां तक आदरणीय स्वर्गीय विधायक श्री राधेश्याम शुक्ल जी का विषय है। जिस प्रकार से राधेश्याम शुक्ल जी ने अपने एक छोटे से ग्राम पंचायत के सरपंच से लेकर जनपद सदस्य के रूप में, फिर आगे चलकर शासकीय सेवा में आकर जनता के बीच में उन्होंने लोकप्रियता हासिल की, उस लोकप्रियता के आधार पर जनता ने उन्हें एक बार, दो बार नहीं, बल्कि तीन-तीन बार विधायक बनाया। उन्होंने अपने विधायक कार्यकाल में जिस प्रकार से अपने विधान सभा क्षेत्र, समाजिक क्षेत्र एवं ग्रामीण

क्षेत्रों में काम किया है, वह सदैव याद किया जाता रहेगा। आज उन तीनों दिवंगत आत्माओं की शांति के लिए हम सब यहां दो शब्द व्यक्त कर रहे हैं। अध्यक्ष महोदय, मैं समझता हूं कि आपकी भावना, सदन के नेता की भावना, सदन के नेता प्रतिपक्ष की भावना के अनुरूप मैं अपने को भी उसमें समाहित करते हुए अपनी बात को समाप्त करता हूं, उन्हें विनम्र श्रद्धांजलि अर्पित करता हूं। ओम शांति।

अध्यक्ष महोदय :- श्री अजय चन्द्राकर जी।

श्री अजय चन्द्राकर (कुरूद) :- माननीय अध्यक्ष महोदय, मुझे बहुत कम उम्र में माननीया स्वर्गीय श्रीमती रजनीताई उपासने जी का वात्सल्य मिला। सार्वजनिक जीवन में काम करते हुए हम सबको उनका मातृतुल्य वात्सल्य प्राप्त हुआ। आज की पीढ़ी में वैचारिक रूप से ऐसे प्रतिबद्ध लोग नहीं दिखते हैं। उस कठिन दौर में भी पूरा परिवार राष्ट्रीय सेवक संघ से समर्पित रहा और पूरे परिवार ने आपातकाल को देखा। उनके पति, दोनों बच्चे, सभी आपातकाल के दौरान जेल में निरूद्ध रहें। अकेली महिला सार्वजनिक जीवन में संघर्ष करती रहीं ओर अपने स्तर पर भी उस दौर में जो पीड़ित परिवार थे, उनकी मदद करती रही । ऐसे मिसाल सार्वजनिक जीवन में बहुत कम देखने को मिलते हैं ।

बनवारीलाल जी हम लोगों के साथ विधायक थे, उसका उल्लेख हुआ । इस पवित्र सदन के प्रथम उपाध्यक्ष थे । राजनीति के साथ-साथ भी समाज सेवा में, वैचारिक आग्रह में, उनका कोई मुकाबला नहीं था । मैं कोरबा जब भी जाता था तो देवपहरी घूमने चलना है, यह बोलते थे और कहते थे कि वहां जो काम हो रहा है, उसे देखें और अध्ययन करें । प्रदेश में आगे जो भी उपेक्षित क्षेत्र है, इस प्रकल्प को वहां फैलाने की कोशिश करें, इसके साथ ही साथ सामाजिक जीवन में उनका योगदान रहा है । विधि विधायी कार्यों में उनकी रूचि और उसकी प्रतिबद्धता बहुत सीखने योग्य थी । उनके साथ आगे जो भी घटा हो, वह अच्छा नहीं था ।

श्री राधेश्याम शुक्ल जी छत्तीसगढ़ के वरिष्ठ नेता थे । MPSRTC के उपाध्यक्ष रहे थे और बहुत सारे पदों पर उन्होंने काम किया । सार्वजनिक जीवन के इस दौर में छत्तीसगढ़ ने बहुत से लोगों को खोया है, हम उनको बहुत विनम्रता के साथ श्रद्धांजलि अर्पित करते हैं । यह प्रदेश उनके योगदान के लिये सदैव ऋणी रहेगा और मैं इन्हीं शब्दों के साथ अपनी बात समाप्त करता हूँ ।

अध्यक्ष महोदय :- श्री धरमलाल कौशिक जी ।

श्री धरमलाल कौशिक (बिल्हा) :- माननीय अध्यक्ष महोदय, रजनी ताई जी को आज हम लोग स्मरण कर रहे हैं, उन्हें याद कर रहे हैं और बहुत लम्बे अरसे तक हमें उनका आर्शीवाद रहा है । जिस प्रकार से परिवार का और उनका खुद का संघर्ष, जनसंघ और राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ से संपर्क और उसके बाद में आपातकाल, मैं समझता हूँ कि इसको कोई भूला नहीं सकता कि जिस संघर्ष को जिन्होंने देखा है, भोगा है और उसके साथ में जब प्रथम बार 1977 के चुनाव हुये तो रायपुर से महिला विधायक के रूप में जीतकर आई और उसके बाद रायपुर में आज तक किसी को महिला विधायक बनने का

सौभाग्य प्राप्त नहीं हुआ है । हम यह कह सकते हैं कि उनको हमेंशा याद करेंगे, भूलेंगे नहीं । हम आज उनको स्मरण कर रहे हैं ।

जहॉं तक बनवारीलाल अग्रवाल जी की बात है तो उनके साथ मध्यप्रदेश और छत्तीसगढ़ की विधान सभा में हम सब को काम करने का अवसर प्राप्त हुआ । उस समय हम लोग पहली बार विधायक बने थे । मध्यप्रदेश में जब विभागों की चर्चा हो रही थी तो हम लोग पहले देखते थे कि कैसे चर्चा करते हैं । बनवारीलाल अग्रवाल जी उर्जा विभाग की चर्चा में भाग लिये और जब चर्चा कर रहे थे, मेरे ख्याल से उस समय वित्त मंत्री श्री अजय मुशरान जी थे, ऐसा मुझे याद आ रहा है । बनवारीलाल जी ने डिबेट में कहा कि आपको विभाग के लिये पैसा क्यों दिया जाये, उसमें चर्चा के बाद अजय मुशरान जी ने एक पर्ची लिखा और बनवारीलाल अग्रवाल जी को भेजा । मैंने उसे देखा और हम लोगों ने पढ़ा तो उन्होंने बधाई दी कि आपका डिबेट बहुत अच्छा रहा है । छत्तीसगढ़ में जब हम लोग यहां आ गये तो बनवारीलाल अग्रवाल जी विधान सभा के उपाध्यक्ष हुये । उपाध्यक्ष के नाते अपने दायित्वों का निर्वहन किया । यदि हम हाऊस के अंदर उनका परफार्मेंस और हाऊस के बाहर उनका परफार्मेंस देखें तो जो सही बात है और सही विषयों को रखना है, उन बातों को वे हमेंशा रखते थे और इसके कारण में जिस पार्टी की सत्ता थी, उसमें लोगों को कहीं न कहीं दिक्कतें भी आती थी । जहां तक प्रकल्प का सवाल है तो जिस प्रकार से उन्होंने गोंडा में काम किया, अनेक संस्थानों में उनको काम करने का अवसर प्राप्त हुआ । वर्ष 1993 में कटघोरा से पहली बार विधायक हुये, फिर उसके बाद वर्ष 1998 में हुये, उसके पहले प्राधिकरण के अध्यक्ष रहे, कोरबा के विकास की आज हम बात करें तो बनवारीलाल अग्रवाल जी की जो भूमिका रही है, उसको नकारा नहीं जा सकता। कोरबा के विकास में उनका एक महत्वपूर्ण योगदान रहा है । देवपहरी प्रकल्प की बात है, वह सभी को बोलते थे कि आपको देवपहरी जरूर जाना चाहिये । वहां लोगों को खेती सिखाने का काम उन्होंने किया, जो बंजर भूमि है उसको उपजाऊ बनाने का काम किया । आज भी वह देवपहरी प्रकल्प चल रहा है और लोगों को उससे प्रेरणा मिलती है और आज ऐसे समय में हम उनको याद करते हैं ।

राधेश्याम शुक्ल जी, पहले बलौदाबाजर से विधायक रहे और उसके बाद सीपत क्षेत्र से दो बार विधायक हुये हैं । नायब तहसीलदार बनना और उसके बाद जनप्रतिनिधि की भूमिका में आना और नीचे ईकाई के पायदान से शुरू करना और उसके बाद में राजनीति के क्षेत्र में काम करना । निश्चित रूप से उन्होंने अपने जीवन में अपने दायित्वों का निवर्हन किया । वे हमारे बिल्हा ब्लॉक के सदस्य भी रहे । जब सन् 1977 में जनता पार्टी की सरकार थी तो वे विधायक के रूप में थे, कांग्रेस की सरकार थी तो उन्होंने विधायक के रूप में अपनी भूमिका, अपने दायित्वों का निवर्हन किया । आज ऐसे तीनों महान आत्माओं को मैं यहां पर श्रद्धासुमन अर्पित करता हूं तथा ईश्वर से प्रार्थना करता हूं कि वे दिवंगत

आत्माओं को अपने श्री चरणों में स्थान दे और साथ ही उनके परिवारों को इस असहय दुख को सहन करने की शक्ति प्रदान करें । ओम शांति ।

श्री भूपेश बघेल (पाटन) :- आदरणीय अध्यक्ष महोदय, रजनी ताई उपासने जी, बनवारी लाल अग्रवाल जी और राघेश्याम शुक्ल जी को सदन में श्रद्धांजलि देने के लिए आपने उल्लेख किया । सदन के नेता, प्रतिपक्ष के नेता, सभी सदस्यों ने बात कही, उनसे समवेत् करता हूं । जब रजनी ताई उपासने जी विधायक थीं, तब हम लोग कॉलेज में थे । उस समय से उनसे मेरा परिचय था, बहुत ज्यादा तो नहीं, लेकिन हम लोग दूर से देखा करते थे । कॉलेज का मामला एक-दो बार आया तो हमें जाने का अवसर मिला । उनके पुत्रों से जरूर सम्पर्क और संबंध रहा है क्योंकि वे राजनीति में और लेखन के क्षेत्र में रहे हैं ।

आदरणीय अध्यक्ष महोदय, उसी प्रकार से बनवारी लाल अग्रवाल जी और मैं एक ही साथ 1993 और 1998 में विधान सभा में चुनकर पहुंचे थे । वे यहां विधान सभा उपाध्यक्ष के रूप में रहे और एक तेज तर्रार विधायक के रूप में मध्यप्रदेश में भी जाने जाते थे और उपाध्यक्ष के रूप में भी हम लोगों ने उनके कार्य को देखा है ।

आदरणीय अध्यक्ष महोदय, राघेश्याम शुक्ल जी के साथ काम करने का अवसर तो नहीं मिला, लेकिन जब भी हम लोग बिलासपुर जाते थे तो वे अपने निवास में बुला लेते थे और जिस प्रकार से अभी महंत जी ने जो बातें कहीं, वे बहुत ही जिंदादिल इंसान थे । हमेशा हॅसाते रहते थे, हसमुख थे और सम-सामयिक विषय पर वरिष्ठ होने के नाते हम लोगों को निर्देश भी देते थे । तीनों दिवंगतों से हमारा संबंध रहा है । उनके जाने से निश्चित रूप से सदन की, पूरे प्रदेश की तथा समाज की एक अपूरणीय क्षति हुई है । मैं उन तीनों महान आत्माओं को अपनी ओर से और अपने दल की ओर से श्रद्धासुमन अर्पित करता हूं। ओम शांति ।

संसदीय कार्यमंत्री (श्री केदार कश्यप) :- सम्माननीय अध्यक्ष महोदय, आज आपने रजनीताई उपासने जी, बनवारी लाल अग्रवाल जी और राघेश्याम शुक्ल जी के निधन का उल्लेख इस सदन में किया । हम सभी उन्हें श्रद्धांजलि अर्पित कर रहे हैं। रजनीताई जी के साथ में एक पारिवारिक संबंध रहा । जब वे पहली बार रायपुर से विधायक रहीं तो उस समय मेरे पिताजी मध्यप्रदेश में मंत्री हुआ करते थे और उसके नाते चूंकि हम छोटे थे, उस समय बचपन से हमने उनको देखा और बहुत कुछ सीखने का अवसर भी प्राप्त हुआ । अभी भी हम लोग जाते थे तो उनसे बहुत कुछ सीखते थे । निश्चित तौर पर महिला होने के नाते उन्होंने जिस तरीके से अपनी बात बड़े मंचों तक पहुंचाने का काम किया, यह अभूतपूर्व है और निश्चित तौर पर हम सबके लिए प्रेरणा का विषय है । वे आज हमारे मध्य नहीं हैं । हम अपनी ओर से उन्हें श्रद्धांजलि अर्पित करते हैं ।

सम्माननीय अध्यक्ष महोदय, स्वर्गीय बनवारी लाल अग्रवाल जी जो कि हमारे छत्तीसगढ़ विधान सभा के प्रथम विधान सभा उपाध्यक्ष रहे हैं । उनका भाषण और उनका जो वक्तव्य होता था, वह हमें बहुत कुछ प्रेरणा देता था और हमेशा उनसे बहुत कुछ सीखने का अवसर प्राप्त होता था । अभी हमारे पूर्व के वक्ताओं ने बताया कि कोरबा क्षेत्र में विकास के जो काम हुए, उसमें कहीं न कहीं उनकी झलक दिखाई दे रही है । हमें देवपहरी जाने का अवसर प्राप्त हुआ और देवपहरी में जो कार्य उन्होंने जनजातीय क्षेत्र में किया, कृषि, स्वास्थ्य, शिक्षा, क्रीडा के क्षेत्र में, हर क्षेत्र में उन्होंने जो आधारशिला रखी, आज वह उस क्षेत्र में दिखाई देता है । उनके द्वारा दिखाए गए मार्ग पर चलते हुए आज भी हम लोग उस क्षेत्र में जाते हैं तो उनको अभी भी याद करते हैं तो ऐसे हमारे वरिष्ठ नेता हमारे मध्य नहीं हैं । हम उन्हें भी अपनी ओर से श्रद्धांजलि अर्पित करते हैं।

श्री राधेश्याम शुक्ल जी मध्य प्रदेश विधान सभा के पूर्व सदस्य रहे। उनका जीवन भी हमेशा संगठन को गढ़ने की दृष्टि से रहा और वे कांग्रेस के एक जनप्रिय, लोकप्रिय नेता रहे। मैं उन्हें भी अपनी ओर से श्रद्धांजलि अर्पित करता हूं। मैं तीनों दिवंगत आत्माओं को अपनी ओर से श्रद्धांजलि अर्पित करता हूं और इस दु:ख की बेला में ईश्वर उनके परिवार को इस दु:ख को सहने की क्षमता प्रदान करें, ऐसी कामना करता हूं।

श्री किरण देव (जगदलपुर) :- माननीय अध्यक्ष महोदय, आज पूरा सदन तीन दिवंगत आत्माओं को अपनी श्रद्धांजलि अर्पित कर रहा है। श्रीमती रजनीताई उपासने जी, जिनको पूरा छत्तीसगढ़ ताई के नाम से जानता था और हमारे भारतीय जनता पार्टी के वरिष्ठ नेता एवं सदन के उपाध्यक्ष रहे हमारे आदरणीय बनवारी लाल अग्रवाल जी और श्री राधेश्याम शुक्ल जी। सभी ने अपनी अभिव्यक्ति शोक श्रद्धांजलि के माध्यम से दी है। मैं रजनी ताई जी के विषय में कहना चाहता हूं कि जब मैं राजनीति का क, ख, ग, घ सीख रहा था, उस समय मेरा उनके घर आना जाना हुआ करता था। परिवारजनों के साथ मिलकर मुझे उनका आशीर्वाद भी प्राप्त हुआ है। रायपुर से प्रथम महिला विधायक की दृष्टि से उन्होंने एक नारी सशक्तिकरण के मानक को तय किया। मुझे लगता है कि उस समय राजनीति में जो नारी सशक्तिकरण को बहुत बढ़ाने की आवश्यकता थी, उस समय उन्होंने अपनी महत्वपूर्ण भूमिका का निर्वहन किया। हम सभी जानते हैं राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ से उनका पूरा परिवार जुड़ा रहा और आपातकाल के समय में भी उन्होंने भूमिगत रहकर सभी प्रकार के निहीत कार्यों का संपादन किया। यहां तक कि उनके तीनों पुत्र भी आपातकाल की चपेट में आये और जेल में रहे । यही कारण है कि उन्होंने जो एक स्पष्ट रेखा खींची जिससे आज राजनीति में महिला सशक्तिकरण की दिशा में धीरे-धीरे काफी महिलाओं का अपने-अपने स्थान पर आगे बढ़ने का मार्ग प्रशस्त हुआ है। मैं उन्हें अपनी ओर से श्रद्धांजलि अर्पित करता हूं और ईश्वर उनके पूरे परिवार को इस कठिन दु:ख को सहन करने की क्षमता प्रदान करें, ऐसा निवेदन करता हूं।

आदरणीय बनवारी लाल अग्रवाल जी, हम सभी जानते हैं और आदरणीय धरमलाल कौशिक जी ने भी विस्तार से उस विषय पर अपनी बात रखी और सभी वरिष्ठ विधायकों ने भी अपनी बात रखी है। मुझे उनके साथ काम करने का अनुभव रहा है। वह बहुत स्पष्टवादिता के साथ राजनीति के क्षेत्र में अपनी बातों को रखते थे। भारतीय जनता पार्टी के समय-समय पर विभिन्न महत्वपूर्ण दायित्वों का भी उन्होंने निर्वहन किया है। हमारे बस्तर क्षेत्र में विभिन्न कार्ययोजना कार्यक्रमों की दृष्टि से जब प्रभारी के नाते उनका आना होता था, उस समय मैं जिला अध्यक्ष के रूप में बस्तर जिला में संगठन का काम कर रहा था। उस समय उनका एक विषय मुझे बहुत ही अच्छा लगता था कि बहुत स्पष्ट रूप से और बहुत कर्तव्यपरायणता के साथ, निष्ठा के साथ उनको जो भी दायित्व दिया गया, चाहे वह सदन में उपाध्यक्ष के रूप में रहे या राजनीतिक क्षेत्र में जो दायित्व उनकी ओर रहा, उस पर भी उन्होंने बहुत स्पष्टवादिता के साथ काम किया इसलिए न सिर्फ कोरबा में बल्कि पूरे छत्तीसगढ़ में उनकी सर्वमान्यता थी, मैं उनको भी श्रद्धांजलि अर्पित करता हूं।

श्रद्धेय राधेश्याम शुक्ल जी, मेरा उनसे परिचय नहीं था लेकिन जब मैंने उनके विषय में जानकारी ली तो वे निश्चित रूप से एक जनसेवक के रूप में राजनीति के क्षेत्र में और शासकीय सेवा के क्षेत्र में सम्मिलित रूप से रहे। उन्होंने छत्तीसगढ़ और अपने क्षेत्र के लिये अपना महत्वपूर्ण योगदान दिया है । वे सहज, सरल व्यक्तित्व के धनी थे। मैं उनको भी अपनी ओर से सच्ची श्रद्धांजलि अर्पित करता हूँ। मेरी प्रभु श्री राम से प्रार्थना है कि आप तीनों ही श्रीजनों को अपने चरणों में स्थान प्रदान करें। ओम शांति।

श्री प्रेमचंद पटेल (कटघोरा) :- माननीय अध्यक्ष महोदय, हमारे मध्यप्रदेश विधान सभा के समय में विधान सभा सदस्य रहे स्वर्गीय श्रीमती रजनीताई उपासने जी का निधन, स्वर्गीय श्री बनवारीलाल अग्रवाल जी का निधन, स्वर्गीय श्री राधेश्याम शुक्ल जी के निधन से हम सब लोगों को बड़ी अपूरणीय क्षति हुई है। हम लोगों के लिए इनकी क्षति को भरपाई करना संभव नहीं है। आज हमारे विधान सभा और सदन के नेता, हमारे सदन के नेता प्रतिपक्ष और विभिन्न सदस्यों द्वारा तीनों स्वर्गीय सदस्यों को श्रद्धांजलि अर्पित की है ।

चूंकि स्वर्गीय श्री बनवारीलाल अग्रवाल जी को कोरबा जिले के कटघोरा विधान सभा से वर्ष 1993 एवं वर्ष 1998 में दो बार मौका मिला था और वे दो बार कटघोरा विधान सभा के विधायक बने। उनको वर्ष 2003 में भी अविभाजित कटघोरा विधान सभा से और वर्ष 2008 में कोरबा विधान सभा से भारतीय जनता पार्टी का प्रत्याशी बनाया गया, किंतु उनको हार का सामना करना पड़ा। स्वर्गीय श्री बनवारीलाल अग्रवाल जी का जन्म हमारे कटघोरा विधान सभा में 01 मई वर्ष 1947 को जपेली ग्राम में हुआ था। उन्होंने एम.एस.सी., बी.एड., एल.एल.बी.की उच्च शिक्षा प्राप्त की थी और उन्होंने वकालत का भी कार्य किया। वे छात्र जीवन से ही आर.एस.एस. से जुड़े और उन्होंने अपना जीवन संगठन,

समाज और शिक्षा के प्रति समर्पित किया। उन्होंने शिक्षक के रूप में छत्तीसगढ़ उच्चतर माध्यमिक विद्यालय बिलासपुर और सावन पब्लिक स्कूल नई दिल्ली में अपनी सेवाएं दीं एवं स्वर्गीय श्रद्धेय नानाजी देशमुख जी के साथ गोंडा स्थित उनके प्रकल्प में दो साल सेवाएं दीं। उन्होंने अपने राजनीतिक जीवन की शुरूआत जनसंघ के समय से की थी। वे वर्ष 1990 के दशक में बिलासपुर भा.ज.पा. कमेटी के संगठन के महामंत्री बने। वर्ष 1990 से 1992 तक उनको विशेष क्षेत्र विकास प्राधिकरण सारडा, कोरबा के अध्यक्ष के रूप में दायित्व निभाने का मौका मिला। बिलासपुर क्षेत्र में अपने कार्यकाल के दौरान वे लोकलेखा समिति, प्रश्न एवं संदर्भ समिति, आवास समिति और कार्यमंत्रणा समिति जैसी कई महत्वपूर्ण समितियों के सदस्य रहे। उन्हें छत्तीसगढ़ विधान सभा का प्रथम उपाध्यक्ष बनने का अवसर भी मिला। वे भा.ज.पा. के प्रदेश कोषाध्यक्ष एवं अनुशासन समिति के सदस्य भी रहे। उनकी छवी एक सादे ईमानदार और जनसेवक के नेता की थी। चूंकि कोरबा जिले में जो कोयले की खदाने हैं और कोरबा में बहुत से श्रमिकों का निवास है, उन्होंने श्रमिकों के लिये काम किया, किसानों के लिये काम किया। वह उस समय विपक्ष के नेता हुआ करते थे तो छोटे-छोटे कार्यों के लिये भी उनके द्वारा लगातार आंदोलन किया गया। मजदूरों और किसानों के हक में हमेशा आवाज उठाई। राज्य आपदा प्रबंधन के सदस्य और भा.ज.पा. प्रशिक्षण प्रकोष्ठ के सदस्य, संयोजक भी रहे। राजनीति के साथ-साथ वे शैक्षणिक, सामाजिक संगठनों, सरस्वती शिशु मंदिर के संस्थापक सदस्य, रोटरी क्लब एवं लायंस क्लब से भी जुड़े रहे। कटघोरा विधान सभा में उनको बनवारी भैया के नाम से छोटे-छोटे बच्चे भी जानते थे और लगातार हम सब लोगों के लिये काम करते थे। हमको भी उनकी अंतिम यात्रा में शामिल होने का अवसर मिला। आज हम तीनों पूर्व सदस्यों को विनम्र श्रद्धांजलि अर्पित करते हैं, दु:ख व्यक्त करते हैं। उनके परिवार को श्रीराम जी के आशीर्वाद से दु:ख सहने की शक्ति मिले, उनको आत्मबल मिले।

श्री धर्मजीत सिंह (तखतपुर) :- आदरणीय अध्यक्ष महोदय, हमारे प्रदेश के तीन बहुत ही वरिष्ठ राजनीतिज्ञों श्रीमती रजनीताई उपासने जी, श्री बनवारीलाल अग्रवाल जी और श्री राधेश्याम शुक्ल जी का निधन हुआ है। इन तीनों के निधन से हमारे प्रदेश को अपूरणीय क्षति हुई है। तीनों ही महानुभावों के निधन से हम सब व्यथित हैं और उनके प्रति अपनी श्रद्धासुमन अर्पित करते हुए उन्हें श्रद्धांजलि अर्पित करते हैं। अध्यक्ष महोदय, श्री बनवारीलाल अग्रवाल जी के साथ इस विधान सभा में बैठने और काम करने का अवसर मुझे मिला था। वह हमारे प्रदेश के प्रथम उपाध्यक्ष निर्वाचित हुए थे। परंतु 9 महीने पहले किन्हीं राजनीतिक कारणों से उनके खिलाफ अविश्वास का प्रस्ताव इस सदन में पेश हुआ और उस पर पूरी चर्चा भी हुई और चर्चा के बाद श्री बनवारीलाल अग्रवाल जी ने अपना त्यागपत्र अध्यक्ष महोदय को दिया। अध्यक्ष महोदय, उनके त्यागपत्र के बाद सुबह 10 बजे हमारे तत्कालीन संसदीय कार्य मंत्री और इस सदन के वरिष्ठतम नेता श्री रविन्द्र चौबे जी का एक फोन आया और उन्होंने मुझे कहा कि आप थोड़ा 10 बजे के पहले जल्दी आ जाईये, विधान सभा में उपाध्यक्ष का फार्म भरना है। मैं आया,

उपाध्यक्ष का फार्म भरा। अध्यक्ष महोदय, उसमें मैं निर्वाचित भी हुआ। उसी दिन से ये परंपरा कि विपक्ष को जो उपाध्यक्ष का पद मिलता था, वह परंपरा वहीं से खत्म हो गई और अब सत्तापक्ष के लोगों को ही उपाध्यक्ष का पद दिया जाने लगा। बनवारीलाल जी अपने सिद्धांत में अड़िग रहने वाले व्यक्ति थे। वह बिल्कुल आर.एस.एस. के पैटर्न में ही अपना जीवन जीते थे। कोरबा के पास कोई बहुत सुंदर जगह देवपहरी है, वहां से वो जुड़कर के आध्यात्मिक, धार्मिक और सामाजिक कार्यों में भाग लेते रहे हैं। उनके निधन से व्यक्तिगत रूप से मैं बहुत दु:खी हूं क्योंकि उनसे मेरा संपर्क रहता था।

अध्यक्ष महोदय, जहां तक श्री राधेश्याम शुक्ल जी की बात है, उनको देखते हुए ही हम लोग राजनीति शुरू किये थे। वह हमारे बिलासपुर जिले के बहुत पढ़े-लिखे, कुमारिस कालेज नागपुर में पढ़े लिखे थे और पूरी जिंदगी अंग्रेजी नॉवेज पढ़ते थे और शानदार अंग्रेजी बोलने वाले नेता थे। वह गांव के गौटियां थे, उनके रहन-सहन का अंदाज भी राजकुमाराना अंदाज था, राजशाही अंदाज में रहते थे और राजनीति को भी पूरी गरिमा से करते थे। माननीय अध्यक्ष महोदय, हम लोग तो कार्यकर्ता के रूप में काम करते थे। लेकिन मुझे मालूम है कि एक समय था कि जब श्री अर्जुन सिंह जी को नेता प्रतिपक्ष बनना था तो वे बिलासपुर आये थे, चंद्रिका होटल में रूके थे और स्वर्गीय श्री बिसाहूदास महंत जो इस प्रदेश के बहुत ही मूर्धन्य और बड़े नेता थे वह बिलासपुर जिले में और छत्तीसगढ़ में श्री राधेश्याम शुक्ल का साथ, श्री राधेश्याम शुक्ल जी महंत जी के समर्थक थे । उनके माध्यम से अर्जुन सिंह जी को विधायकों की बहुत बड़ी लॉबी तैयार करके नेता प्रतिपक्ष के लिये बनाने का काम स्वर्गीय राधेश्याम शुक्ला जी ने महंत जी के नेतृत्व में किया था । वह राज्य परिवहन के अध्यक्ष थे और उनके घर में रात को बहुत बड़ा जलसा सरीखे प्रतिदिन ही होता था।

माननीय अध्यक्ष महोदय, लेकिन मैंने एक बात यह भी देखी है कि जिस दिन वे विधायक नहीं थे, उसके बाद वह नेहरू नगर के अपने बंगले के ऊपर वाले कमरे से कभी नीचे नहीं आये और कभी किसी भी कलेक्टर, कमिश्नर के ऑफिस में नहीं गये, कोई इधर-उधर की जगह में कभी खड़े नहीं हुए । कभी-कभार यदि एकाध शादियों में जाते थे तो पूरे सूट-बूट, टाई के साथ वह दिखाई देते थे । मतलब उन्होंने अपनी जिंदगी को बिंदास जिया है, जिम्मेदारियों का निर्वहन बहुत ही गंभीरता और ईमानदारी से किया है और सबसे बड़ी बात यह थी कि उन्होंने अपने सिद्धांत से समझौता कभी नहीं किया । जो चीज उनको पसंद थी, वह उसी को मांगते थे और जो चीज पसंद नहीं है तो वह किसी के राजनीतिक दबाव में आते नहीं थे । उनके निधन से एक अच्छे इंसान को भगवान ने हमारे बीच से छीना है । उनके निधन से एक शानदार-जानदार व्यक्तित्व हमारे बीच से चला गया है । उनके निधन से एक कुशल संगठनकर्ता हमारे बीच से चला गया है । उनके निधन से बिलासपुर जिले के साथ ही पूरे छत्तीसगढ़ को और उनके फॉलोअर तो मध्यप्रदेश में भी हैं । वहां भी अपूरणीय क्षति हुई है । मैं इन सभी महापुरूषों के चरणों में श्रद्धांजलि अर्पित करते हुए अपनी बात समाप्त करता हूं। धन्यवाद ।

अध्यक्ष महोदय :- मैं सदन की ओर से शोकाकुल परिवारों के प्रति हार्दिक संवेदना व्यक्त करता हूं । दिवंगतों के सम्मान में अब सदन कुछ देर मौन धारण करेगा ।

(सदन द्वारा खड़े रहकर मौन धारण किया गया)

अध्यक्ष महोदय :- दिवंगतों के सम्मान में सदन की कार्यवाही 15 मिनट के लिये स्थगित ।

(11.58 से 12.50 बजे तक कार्यवाही स्थगित रही)

समय :
12.50 बजे

(अध्यक्ष महोदय (डॉ. रमन सिंह) पीठासीन हुए)

अध्यक्षीय दीर्घा में अतिथि

पूर्व विधान सभा अध्यक्ष श्री गौरीशंकर अग्रवाल, पूर्व संसदीय कार्य मंत्री एवं सांसद श्री बृजमोहन अग्रवाल, पूर्व संसदीय कार्य मंत्री एवं पूर्व नेता प्रतिपक्ष श्री रविन्द्र चौबे, पूर्व उपाध्यक्ष एवं पूर्व नेता प्रतिपक्ष श्री नारायण चंदेल एवं पूर्व नगरीय प्रशासन मंत्री डॉ. शिवकुमार डहरिया

अध्यक्ष महोदय :- छत्तीसगढ़ विधान सभा के 25 वर्षों के संसदीय यात्रा पर केंद्रित चर्चा के साक्षी बनने हेतु इस विधान सभा के यहां उपस्थित पूर्व अध्यक्ष श्री गौरीशंकर अग्रवाल जी, पूर्व संसदीय कार्य मंत्री एवं सांसद, श्री बृजमोहन अग्रवाल जी, पूर्व संसदीय कार्य मंत्री एवं नेता प्रतिपक्ष श्री रविन्द्र चौबे जी, पूर्व उपाध्यक्ष एवं नेता प्रतिपक्ष श्री नारायण चंदेल जी, पूर्व मंत्री डॉ. शिवकुमार डहरिया जी आज अध्यक्षीय दीर्घा में उपस्थित हैं। मैं सदन की ओर से उन सभी का स्वागत करता हूं। (मेजों की थपथपाहट)

समय :
12.50 बजे

शीतकालीन सत्र के वृद्धि का प्रस्ताव

अध्यक्ष महोदय :- यह हम सब के लिए अत्यन्त हर्ष और गौरव का विषय है कि नवा रायपुर, अटल नगर के सेक्टर-19 में निर्मित नवीन विधान सभा के भवन का लोकार्पण भारत के यशस्वी प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी द्वारा दिनांक 1 नवंबर, 2025 को किया गया है।

मैं अपनी ओर से एवं माननीय सदस्यों की ओर से माननीय प्रधानमंत्री जी के प्रति हार्दिक आभार व्यक्त करता हूं। (मेजों की थपथपाहट)

मैं सदन को सूचित करना चाहता हूं कि छत्तीसगढ़ विधान सभा के इस भवन को लगभग 25 वर्ष पूर्ण हो गये हैं। इस विधान सभा भवन में शीतकालीन सत्र की यह अंतिम बैठक होगी।

माननीय मुख्यमंत्री एवं माननीय नेता प्रतिपक्ष की सहमति से विधान सभा का यह सत्र जारी रखा जाकर सभा की आगामी बैठकें रविवार, दिनांक 14 दिसंबर, 2025 से बुधवार, दिनांक 17 दिसंबर, 2025 तक नवीन विधान सभा भवन में आयोजित की जायेंगी।

चूंकि 14 दिसंबर 2025 को रविवार है तथा इस दिन को विधान सभा के स्थापना दिवस के रूप में मनाया जाता है। इसलिए इस दिन छत्तीसगढ़ विजन 2047 पर केंद्रित चर्चा कराई जायेगी। सदन की सहमति उपरांत पुनरीक्षित पत्रक भाग-दो, पुनरीक्षित दिनदर्शिका एवं प्रश्नों के संबंध में जारी दिनांकों का विवरण आदि जारी किया जायेगा।

मैं समझता हूं सदन इससे सहमत है।

(सदन द्वारा सहमति प्रदान की गई)

समय :
12.52 बजे

सभापति तालिका की घोषणा

अध्यक्ष महोदय :- विधान सभा की नियमावली के नियम 9 के उप नियम (1) के अधीन मैं निम्नलिखित सदस्यों को सभापति तालिका के लिये नाम-निर्दिष्ट करता हूं :-

1. श्री विक्रम उसेण्डी
2. श्री धर्मजीत सिंह
3. सुश्री लता उसेण्डी
4. श्री बघेल लखेश्वर
5. श्री दलेश्वर साहू
6. श्री प्रबोध मिंज

समय :
12.52 बजे

नवीन विधान सभा के सभा भवन के उपयोग संबंधी

अध्यक्ष महोदय :- नवा रायपुर, अटल नगर, सेक्टर-19 में निर्मित नवीन विधान सभा भवन का लोकार्पण दिनांक 1 नवंबर, 2025 को भारत के यशस्वी प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी द्वारा किया गया है।

इस विधान सभा के सभा कक्ष का उपयोग आज दिनांक 18 नवंबर, 2025 को अंतिम बैठक के रूप में किया गया है। अब सदन की सहमति से विधान सभा भवन के इस सभा कक्ष के स्थान पर

अशोधित/प्रकाशन के लिए नहीं

नवीन विधान सभा भवन के सभा कक्ष का उपयोग रविवार, दिनांक 14 दिसंबर, 2025 से प्रारंभ होने वाली आगामी बैठकों में सभा कक्ष के रूप में किया जाएगा।

मैं समझता हूं सदन इससे सहमत है।

(सदन द्वारा सहमति प्रदान की गई)

समय :
12.53 बजे **छत्तीसगढ़ विधान सभा के पच्चीस वर्षों की संसदीय यात्रा पर केन्द्रित विषयों पर चर्चा**

अध्यक्ष महोदय :- छत्तीसगढ़ विधान सभा के पच्चीस वर्षों की संसदीय यात्रा पर केन्द्रित विषयों पर श्री अजय चन्द्राकर, सदस्य चर्चा प्रारंभ करेंगे। श्री अजय चन्द्राकर जी।

श्री अजय चन्द्राकर (कुरूद) :- माननीय अध्यक्ष महोदय, आपका, सदन के नेता का, सदन के सम्माननीय सदस्यों का और दीर्घा में उपस्थित उन सभी शख्सों का, जिन्होंने छत्तीसगढ़ की इस यात्रा में नवनिर्माण की इस प्रक्रिया में योगदान दिया है, मैं सबका स्वागत और अभिनंदन करता हूं।

माननीय अध्यक्ष महोदय, हम दो तीन स्तर में बात करेंगे। छत्तीसगढ़ निर्माण की प्रक्रिया। फिर छत्तीसगढ़ विधान सभा और फिर छत्तीसगढ़ की यात्रा में जो उपलब्धियां हमने हासिल की, एक बीमारू राज्य से एक उन्नत राज्य की ओर जो हम बढ़ रहे हैं, उन पर संक्षिप्त बातचीत करेंगे और उन सबको याद और स्मरण करेंगे, जिन्होंने इस यात्रा में अपना योगदान दिया है। माननीय अध्यक्ष महोदय, सबसे पहले तो मैं आपको कहूंगा कि आप जहां से सांसद बनकर आए थे, श्री विजय शर्मा जी हैं, श्रीमती भावना बोहरा जी हैं, दलेश्वर साहू जी हैं, ये लोग हैं, छत्तीसगढ़ शब्द का सबसे पहले उपयोग चौदहवीं शताब्दी में आपके खैरागढ़ के दरबारी कवि श्री दलपत राय जी ने किया। माननीय अध्यक्ष महोदय, वर्ष 1861 तक छत्तीसगढ़ शब्द कहानी, कविताओं में गूंजता रहा और पीड़ा व्यक्त करने का एक शब्द रहा। क्या हो रहा है, कैसे हो रहा है, कैसे बनेगा, कैसे क्या करेगा, इसके लिए कोई ठोस पहल नहीं हुई और जिन लोगों ने वास्तव में पहल की, उसको हमने विस्मृत कर दिया। अध्यक्ष महोदय, चूंकि आप इस विषय में एक चर्चा का आयोजन कर रहे हैं तो मैं आपसे आग्रह करूंगा कि मैं जो बात बोलूंगा, यदि वह गलत है तो आप उस दस्तावेज को विलोपित करवाइयेगा और यदि वह सही है तो जो अधूरे मुझसे छूट जाएंगे, उनको आप। यहां जो 51 नये विधायक चुनकर आये हैं या आगे जो नये विधायक चुनकर आयेंगे, उनके लिए निश्चित रूप से आई ओपनिंग बात होगी कि छत्तीसगढ़ शब्द या छत्तीसगढ़ की राजनीति को किस तरह से एक भावनात्मक उपयोग किया गया और उसके लिए किसने काम किया और किसने काम नहीं किया। सन् 1857 की क्रांति के बाद सन् 1861 में जब कंपनी शासन समाप्त हुआ और जब हम महारानी के अंडर में आये तो हम मध्य प्रांत में थे और नागपुर उसकी राजधानी थी। हमारी कहीं पहचान नहीं थी। मैं कभी-कभी माननीय भूपेश बघेल जी से कहता था कि आप सन् 1905 को

छत्तीसगढ़ का आधार वर्ष बना दीजिए। मैं राजनीतिक कारणों से कहता था। आज मैं नहीं बोलता कि डोमिसाइल के लिए सन् 1905 को आधार वर्ष बना दीजिए। सन् 1905 में फिर उसका पुनर्गठन होता है और छोटा नागपुर, संथाल, झारखंड की सरगुजा, उदयपुर, जशपुर, चांगभखार, कोरिया की तरह जमींदारियां हमको मिलती हैं। छत्तीसगढ़ आकार नहीं ले पाता है और उसके बाद सन् 1918 में पहली बार यहां से यात्रा शुरू होती है और पंडित सुंदर लाल शर्मा जी छत्तीसगढ़ की एक काल्पनिक रेखाचित्र बनाते हैं कि हमारा भावी छत्तीसगढ़ ऐसा हो सकता है। लेकिन जो लोग छत्तीसगढ़ के नाम से राजनीति करते हैं, छत्तीसगढ़ की बात करते हैं, वह पंडित सुंदरलाल शर्मा जी के नाम को कभी उल्लेखित नहीं करते हैं कि छत्तीसगढ़ का यह आकार हो सकता है, इसको छत्तीसगढ़ को उन्होंने पहले दिया। सन् 1926 और 1939 के त्रिपुरी अधिवेशन में पंडित सुंदरलाल शर्मा जी ने राजनीतिक तौर पर पहली बार छत्तीसगढ़ की मांग की। सन् 1946 में ठाकुर प्यारेलाल सिंह जी ने छत्तीसगढ़ शोषण विरोधी मंच की स्थापना की, जो छत्तीसगढ़ निर्माण की प्रक्रिया के लिए पहला संगठन था। सन् 1937 के बाद सन् 1947 में देश भर में विभिन्न प्रांतों के जो प्रथम चुनाव हुए, उस समय सन् 1947 में हम सी.पी.ए. बरार में थे और उसके बाद 14 रियासतों को मिलाकर फिर इसके नक्शा में परिवर्तन कर दिया गया तो छत्तीसगढ़ का मूल स्वरूप स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद भी कभी उभर नहीं पाया। सन् 1955 में रायपुर के विधायक माननीय रामकृष्ण जी ने पहली बार मध्य प्रांत की विधान सभा में छत्तीसगढ़ की मांग की और यह पहली बार विधि-विधायी ढंग से छत्तीसगढ़ मांग की प्रक्रिया शुरू हुई। मैं फिर कहूंगा कि दुर्भाग्य से इन महान लोगों को कभी याद नहीं किया जाता है। माननीय खूबचंद बघेल जी ने सन् 1956 में छत्तीसगढ़ महासभा का निर्माण किया और उसमें अन्य सदस्यों में बैरिस्टर छेदीलाल जी श्रीवास्तव, केयूर भूषण जी, खूबचंद बघेल जी, हरि ठाकुर जी जैसे ये सब लोग थे। सन् 1967 में ही खूबचंद बघेल जी ने भातृत्व संघ की स्थापना की। इसके बाद सन् 1980 में पृथक छत्तीसगढ़ का गठन हुआ। पृथक छत्तीसगढ़ के गठन के बाद पवन दीवान जी पृथक छत्तीसगढ़ पार्टी से सन् 1980 में लोक सभा का चुनाव लड़ते हैं। जब वह लोक सभा का चुनाव लड़ते हैं तो उसके बाद राजनीतिक गतिविधियां तेज होती हैं। छत्तीसगढ़ विकास प्राधिकरण का गठन होता है और पवन दीवान जी किसी राजनीतिक दल में शामिल हो जाते हैं।

समय :
1.00 बजे

माननीय अध्यक्ष महोदय, हममें से किसी ने भी छत्तीसगढ़ विकास प्राधिकरण का कार्यालय भी नहीं देखा कि वह कहां पर है। माननीय अध्यक्ष महोदय, जब वर्ष 1980 से आगे बढ़ते हैं तो वर्ष 1994 की विधान सभा में जो माननीय शख्स हैं, दो लोग तो बैठे हैं, इधर भी दो लोग बैठे हैं, उधर बैठे हैं, मैं उनका नाम ले नहीं सकता। मैं आज आपकी प्रोसिडिंग पढ़ रहा था, आप दोनों ने उस बहस में भाग

लिया था। आपने उस बहस में भाग नहीं लिया था, मैं आज प्रोसिडिंग देख रहा था। गोपाल परमार अगर मालवा के विधायक ने वर्ष 1994 में अशासकीय संकल्प रखा और वह पारित हुआ। पहली बार वर्ष 1998 में छत्तीसगढ़ के लिए शासकीय संकल्प पारित हुआ। माननीय अध्यक्ष महोदय, छत्तीसगढ़ शायद किसी महान पुरूष का इंतजार कर रहा था। अब यहां पर मैं कुछ बातें ऐसी कहूंगा जो राजनीतिक है। वर्ष 1993 में पहली बार किसी राजनीतिक दल ने अपने घोषणा पत्र में छत्तीसगढ़ को शामिल किया, उस राजनीतिक दल का नाम भारतीय जनता पार्टी था। (मेजों की थपथपाहट) वर्ष 1998 में भारतीय जनता पार्टी ने लोकसभा के घोषणा पत्र में पृथक छत्तीसगढ़ राज्य की स्थापना शामिल हुआ और वर्ष 1999 में एन.डी.ए. के घोषणा पत्र में छत्तीसगढ़ राज्य के निर्माण की बात कही गयी, यह किसी भी राजनीतिक दल के घोषणा पत्र में पहली बार शामिल हुआ। माननीय अध्यक्ष महोदय, मैं बोल रहा था कि इन सब प्रयत्नों के बीच वह पल आ गया। 31 जुलाई, 2000 का ऐतिहासिक दिन माननीय लाल कृष्ण आडवाणी जी लोक सभा में विधेयक प्रस्तुत करते हैं। 03 अगस्त, 2000 को राज्यसभा में विधेयक प्रस्तुत किया जाता है, 09 अगस्त, 2000 को राज्यसभा में एक संशोधन भी स्वीकृत हो जाता है। 10, अगस्त, 2000 को राज्यसभा के इस संशोधन को लोकसभा और राज्यसभा ने स्वीकार कर लिया। माननीय अध्यक्ष महोदय, 28 अगस्त, 2000 को भारत के राजपत्र अधिनियम संख्या 28, 2000 में अधिसूचित हुआ और 01 नवंबर, 2000 को अलग प्रांत बनकर 26वां राज्य इस भारत के नक्शे में छत्तीसगढ़ स्थापित हुआ। (मेजों की थपथपाहट) संविधान के अनुच्छेद 3 के अंतर्गत इस राज्य की स्थापना हुई और वर्षों की मांग, वर्षों की मांग कौन सी, जो हाईकोर्ट के खंडपीठ के तौर पर आंदोलन होता था, किसी प्राधिकरण के तौर पर होता था, किसी मांग के तौर पर होता था, वह सारे सपने छत्तीसगढ़ बनने के साथ जागृत हो गया। महान शख्स इधर बैठे हैं, माननीय भूपेश बघेल जी, माननीय रामविचार नेताम जी, पुन्नूलाल जी, अमर जी, ये जितने माननीय सदस्य मध्यप्रदेश की विधान सभा में थे, मैं भी उसमें शामिल था, हम लोगों ने उस बहस में कहा, हमें कुछ नहीं चाहिए, छत्तीसगढ़ दे दीजिए, दरी में बैठ लेंगे, तनख्वाह नहीं लेंगे, कुछ नहीं करेंगे लेकिन आप छत्तीसगढ़ दीजिए, तत्काल दीजिए, हम लोग जो कर सकते हैं करेंगे। उस ऐतिहासिक क्षण के हम सब साक्षी बने। 1 नवंबर, 2000 को छत्तीसगढ़ महतारी का अवतरण हुआ। हमारे महापुरूषों ने जो नक्शा खींचा था, जो भावनाएं व्यक्त की थी, समय-समय पर संघर्ष किया था। लेकिन इस बीच में गठन के पूर्व जो हुआ, उसमें मैं राजनीतिक बातों को भी थोड़ा सा कहना चाहूंगा। मैं आज ही प्रोसिडिंग पढ़ रहा था, गोपाल परमार जी के अशासकीय संकल्प को 04 मार्च, 1994 को पेश होना था, राजनीतिक कारणों से उसे 18 मार्च, 1994 तक पेश नहीं होने दिया गया और इस बीच में देश के तत्कालीन प्रधानमंत्री माननीय पी.वी.नरसिम्हा राव जी का एक बयान आता है कि इस देश में छोटे राज्यों की कोई आवश्यकता नहीं है। इसी संकल्प के बीच में वक्तव्य आता है। माननीय चन्दू लाल जी, माननीय विद्याचरण जी, माननीय मोती लाल वोरा जी, और भी जितने माननीय थे, एक माननीय जो

प्रथम मुख्यमंत्री बने, उनका उल्लेख नहीं करूंगा, वह भी राज्यसभा के सदस्य थे, माननीय भूपेश बघेल जी आगे मुख्यमंत्री बनकर,आगे चलकर प्रदेश की सेवा की, वह भी उस विधान सभा में थे। आप भी थे, मैंने आज आपका वक्तव्य भी पढ़ा है। किसी ने भी उस बयान का विरोध नहीं किया था कि छोटे राज्य की आवश्यकता नहीं है। यदि आज वह कहे कि साहब हमने छत्तीसगढ़ के लिए यह किया, वह किया तो शायद मुझे आगे आलोचना पड़ेगी, मैं आज के इस शुभ अवसर पर आलोचना नहीं करना चाहूंगा, परन्तु पूरे छत्तीसगढ़ ने यह देखा लेकिकि नाखून कटाकर शहीद बनने के लिए राजनीति मत कीजिये।

माननीय अध्यक्ष महोदय, मैं इस गठन की प्रक्रिया में माननीय श्रद्धेय अटल बिहारी बाजपेयी जी को श्रद्धा के साथ स्मरण करूंगा। 3 राज्य बने। 2 राज्य में भा.ज.पा. के मुख्यमंत्री बनेंगे, वह जानते थे। झारखण्ड में बाबू लाल मरांडी जी ने नेतृत्व किया और उत्तराखण्ड में नित्यानंद जी ने नेतृत्व किया। वह जानते थे कि छत्तीसगढ़ में कांग्रेस की सरकार बनेगी। उसके बाद भी, जिसके लिए आगे बात करेंगे, छत्तीसगढ़ की समरसता, छत्तीसगढ़ की शांतिप्रियता, छत्तीसगढ़ के भाईचारे और छत्तीसगढ़ की उन तमाम भावनाओं का सम्मान करके सरकार खो देने के बाद भी उन्होंने छत्तीसगढ़ के निर्माण को स्वीकार किया। (मेजों की थपथपाहट) ऐसे महामना को बहुत श्रद्धा के साथ आज यह सदन याद करता है, उनके प्रति छत्तीसगढ़ कृतज्ञ है कि उन राजनीतिक परिस्थितियों के बाद भी छत्तीसगढ़ का निर्माण किया। माननीय अध्यक्ष महोदय, यह छत्तीसगढ के निर्माण की एक प्रक्रिया थी। सबने अपने-अपने स्तर पर उन बातों को कहा।

माननीय अध्यक्ष महोदय, अब मैं छत्तीसगढ़ विधान सभा के गठन की कुछ बातों को कहूंगा। हम लोगों ने मध्यप्रदेश में जैसा भाषण दिया था कि आप कुछ मत दीजिये, ठीक है आप कुछ मत दें। जशपुर के हाल में टेंट लगाकर भाषण दिया था। जहां तक मेरा ख्याल है, राजेन्द्र प्रसाद शुक्ल जी अध्यक्ष बने। महेन्द्र बहादुर जी प्रोटेम स्पीकर थे, उन्होंने हम लोगों को शपथ दिलाई। नंद कुमार साय जी नेता प्रतिपक्ष बने। अजीत जोगी जी प्रथम मुख्यमंत्री बने। तत्कालीन संसदीय कार्यमंत्री जी बैठे हैं, देवेन्द्र वर्मा जी प्रमुख सचिव रहें। साहब आपको याद कर लेता हूं, आप लोगों ने बड़ी मेहनत की थी। टी.पी.शर्मा जी सचिव थे, बाद में उच्च न्यायालय के न्यायाधीश बने। श्री दिनेश नंदन सहाय जी माननीय राज्यपाल रहें। अब मेरे ख्याल से छत्तीसगढ़ विधान सभा का पहला शब्द, यदि आप प्रोसीडिंग देखेंगे तो वह सज्जन बीच में बैठे हैं, उनका नाम आयेगा। उन्होने पहले खड़े होकर कहा, जो मेरी स्मृति में आ रहा है "जोगी जी, आप अपने मंत्रिमण्डल का परिचय करायेंगे या नहीं करायेंगे" यह छत्तीसगढ़ विधान सभा का पहला वाक्य था। वह सज्जन बीच में बैठे हैं, जिन्होंने यह व्यवस्था उठाई थी।

श्री धर्मजीत सिंह :- नाम बोल दीजिये।

श्री अजय चन्द्राकर :- नाम नहीं बोल सकता। आज श्रेष्ठ परम्पराओं की बात हो रही है और आगे भी होगी तो श्रेष्ठ परम्पराओं की ओर ही चलने दें। 6 दिन का सत्र था और 20 घण्टे बैठकें चली।

माननीय अध्यक्ष महोदय, उस दौर में बहुत सारी परम्पराएं स्थापित हुईं। बहुत सारी परम्पराएं, जो छत्तीसगढ़ को ऊंचाई में ले गईं और आज भी किसी विधान सभा में ये चीजें देखने को नहीं मिलती है। कुछ ऐसी परम्पराएं भी आज स्थापित हुईं, जिसको हमको देखना और सुनना भी नहीं चाहिए और याद भी नहीं करना चाहिए। यदि वह नियम में आये तो उसको रिकार्ड से डिलीट भी कर देना चाहिए।

माननीय अध्यक्ष महोदय, कार्यमंत्रणा समिति के दिन का भी उल्लेख कर दूंगा, आगे बोलूंगा तो एक प्रस्ताव पारित होता है कि हम वेल में नहीं जायेंगे। वेल में जायेंगे तो हम स्वत: निलंबित हो जायेंगे। उस समय डॉ. राजेन्द्र प्रसाद जी शुक्ल अध्यक्ष थे। आज यह व्यवस्था आज भी देश में संसदीय परम्परा के लिए मिशाल बनी हुई है। छत्तीसगढ़ विधान सभा में सचेतक सम्मेलन या किन्हीं जगहों में जाते हैं तो वे लोग आश्चर्यचकित होते हैं कि छत्तीसगढ़ में यह परम्परा कैसे बनी हुई है।

माननीय अध्यक्ष महोदय, उस समय 3,241 करोड़ का बजट था, आज 91 प्रतिशत बढ़कर लगभग 1 लाख 65 हजार करोड़ हो गया है। यह कितनी सफल यात्रा है। (मेजों की थपथपाहट) सबने मेहनत की और यहां तक लाने में मैं उन सब ज्ञात-अज्ञात सहयोगियों को बधाई देता हूं। माननीय अध्यक्ष महोदय, छत्तीसगढ़ विधान सभा की कार्यप्रणाली में बोलते हुए यह बताना चाहूंगा कि पक्ष और विपक्ष का जो सामंजस्य आज भी है, उस तौर पर देश के किसी भी विधान सभा में यह सामंजस्य नहीं मिलेगा। अध्यक्ष महोदय, यह कैसी मिसालें बनीं? धान खरीदी का विषय आया। हम लोगों का उसमें स्थगन प्रस्ताव था। मैं नहीं सोचता कि आज तक किसी विधान सभा में स्थगन, प्रस्ताव में बदला होगा। हमने सर्वसम्मति से कहा कि स्थगन को प्रस्ताव में बदल देते हैं और केन्द्र सरकार से आग्रह करते हैं कि छत्तीसगढ़ की धान खरीदी के लिए जो भी आवश्यक मदद हो सकती है, वह करें। यह छत्तीसगढ़ की विधान सभा में ही हुआ। स्थगन की मिसाल है करके मैंने किसी समय में एक उदाहरण दिया था कि छत्तीसगढ़ विधान सभा में यह स्थगन प्रस्ताव में बदला जा सकता है। मैं प्रथम मुख्यमंत्री जी को भी स्मरण करूंगा क्योंकि उन्होंने कई महत्वपूर्ण निर्णय लिये। उन्होंने एम.पी.एस.आर.टी.सी. को बंद कर दिया। आज हम जो मितानिन देखते हैं, जो निजी विश्वविद्यालय देखते हैं, दो साल के पहले जो छत्तीसगढ़ गठन विधेयक में था, उससे पहले उन्होंने सी.एस.ई.बी. की गठन कर दी, ऐसे कई महत्वपूर्ण निर्णय थे, जो छत्तीसगढ़ के लिए माईल स्टोन बने। लेकिन कुछ ऐसी चीजें थी, ऐसी परंपराएं थी, जो याद नहीं किया जाना चाहिए। छत्तीसगढ़, जहां मेरे भाई हैं, जहां मेरे भैया हैं, जहां मेरे मितान हैं, जहां मेरे महाप्रसाद हैं, जहां मेरे गंगाजल, गंगाबारू जैसे संबंध काम करते हैं, वहां पर इस तरह की राजनीति काम नहीं करती है। मैं अपना उदाहरण दे देता हूं। मैं पी.एच.ई. से एक पंप टेस्ट करने के लिए मंगाया। आप पी.एच.ई. मंत्री थे। मेरे ऊपर पंप चोरी की जांच हो गई थी। नेता प्रतिपक्ष के टांग तोड़ दिए गए। उपाध्यक्ष एक मात्र शख्सियत होता है जो तीनों भूमिका में रहता है। इसी सीट से बनवारीलाल अग्रवाल जी ने अविश्वास प्रस्ताव में भाषण दिया तो दूसरे दिन उनका अविश्वास प्रस्ताव आ गया। छत्तीसगढ़ में

एक शानदार परंपरा स्थापित हुई कि उपाध्यक्ष का पद विपक्ष को दिया जाएगा। आपने ही यह परंपरा स्थापित किया और आपने ही तोड़ दिया। आपने हमसे नाम मांगा, उसके बाद हमारे भाई आदरणीय धर्मजीत जी ने उस पद की शोभा बढ़ाई। आज तक हिंदुस्तान के संसदीय इतिहास में ऐसा नहीं हुआ कि मंत्रिमण्डल के खिलाफ अविश्वास प्रस्ताव है और मंत्रिमण्डल ही सदन से गायब हैं। यह यदि घटा तो फिर कहूंगा कि वे सामने मौजूद हैं। उस समय एक मंत्री और एक रामलाल भारद्वाज जी, यह दो लोग बैठे थे। वह सचेतक थे, बाकी पूरा मंत्रिमण्डल गायब था। आज तक संसदीय इतिहास में ऐसा नहीं हुआ होगा कि मंत्रिमण्डल बेल में आया हो। बालको निजीकरण में हमने तथ्यों से कहा कि संसद में इतने घंटे बहस चली तब आप रोकने के लिए, बहस करने के लिए कहां थे? संसद में इतनी लंबी बहस हुई, तब कांग्रेस ने उसमें भाग नहीं लिया। छत्तीसगढ़ विधान सभा का यह विषय नहीं है। आप इस विषय को यहां कैसे बात कर सकते हैं? बात नहीं कर सकते हैं, बहुमत की दादागिरी थी कि साहब, बेल में आकर मंत्रिमण्डल ने कार्रवाई रोकने का काम किया। मैं यह सोचता हूं कि छत्तीसगढ़ की विधान सभा में ट्रेजरी बेंच बेल में हो, यह घटना छत्तीसगढ़ में ही घटी। एक और वाक्या, जो कभी दोहराया नहीं जाना चाहिए। इसीलिए मैं हमारे अग्रज को कहता हूं, वह मेरी बात को सुन रहे हैं कि पक्ष और विपक्ष बदलते रहते हैं, पर छत्तीसगढ़ में जो विस्थापित परंपराएं हैं, आगे हम उसका उल्लेख करेंगे। वह जो मापदण्ड बनाती है, जो उल्लेख होती है, वह सदैव काम देती है, उसको पीढ़ियां याद करती हैं। उसके बाजू में एक सज्जन बैठे हैं। हम लोगों ने एक निजी विधेयक धर्म स्वतंत्रता विधेयक लाया। हमारा वह अधिकार है। हमने शुक्रवार के दिन अशासकीय दिवस में वह विधेयक लाया था। पहली बार ऐसा हुआ कि बहुमत के आधार पर एक निजी विधेयक को, निजी कार्य दिवस में, निजी बिजनेस को निरस्त कर दिया कि आप इसमें बहस नहीं कर सकते और महान संसदविज्ञ, ऐसे लोगों ने उनका समर्थन किया कि हम ठीक कर रहे हैं । माननीय अध्यक्ष जी, मैंने ऐसी परम्परायें को छत्तीसगढ़ में श्रद्धा के साथ स्मरण किया ।

अध्यक्ष महोदय :- एक आग्रह कि जो वर्तमान में सदस्य नहीं है, उनके बारे में कम बातें हो सकती है ।

श्री अजय चन्द्राकर :- अध्यक्ष महोदय, दुर्भावना से बिल्कुल नहीं..।

अध्यक्ष महोदय :- चलिये । धन्यवाद । आप सिर्फ इशारों ही इशारों में बात कर सकते हैं । आज का दिन सिर्फ इशारों में बात करने का है । व्यक्ति का नाम और चिन्हांकन नहीं करना है ।

श्री अजय चन्द्राकर :- दुर्भावना से बिल्कुल नहीं बोल रहा हूँ भाई साहब ।

श्री रामकुमार यादव :- एक भी बात ला दुर्भावना से नहीं बोले हे काहथस ?

श्री धर्मजीत सिंह :- आप इतना सब बोलने के बजाय मिश्री भईया नहीं बोल सकते ? आप क्या बोलना चाहेंगे, सब समझ जायेंगे ।

श्री अजय चन्द्राकर :- भाई साहब जो ऊपर से बोल रहे हैं, उसका एक ही मतलब होता है । माननीय अध्यक्ष महोदय, छत्तीसगढ़ में जो राजनीतिक तासीर है, वह लोकतंत्र के खिलाफ अन्याय, अत्याचार, दमन को स्वीकार नहीं करती है । उस सरकार को बहुत अच्छा निर्णय के बाद भी इसीलिए जाना पड़ा कि छत्तीसगढ़ की तासीर के खिलाफ अन्याय, आतंक की राजनीति छत्तीसगढ़ में नहीं हो सकती । हम विधायक दल से कवर्धा जांच करने गये थे और राजनीति कैसे होती है, उसको बता देते हैं । बलदाऊ कौशिक के लाश को पुलिस 5 बार दफनाई थी और जब बाद में विधान सभा में हमारी जांच समिति का मामला आया तो उसको सजा हुई । नाम नहीं लेता, लेकिन ऐसी राजनीति के कारण अच्छा निर्णय लेते हुये भी उस सरकार को जाना पड़ा, पार्टी कौन सी थी मैं यह बोलना नहीं चाहता । माननीय अध्यक्ष महोदय, आपके काल की बात करूँ तो आप सही में डॉक्टर हैं । आपने छत्तीसगढ़ की नब्ज को पकड़ लिया कि छत्तीसगढ़ की जनता क्या चाहती है और छत्तीसगढ़ में कैसी राजनीति स्वीकार होगी ? (मेजों की थपथपाहट) छत्तीसगढ़ के मन को कैसे सहजता और सरलता से जीता जा सकता है ? छत्तीसगढ़ की जो मूल चीजें हैं, जब मैं आगे छत्तीसगढ़ की उपलब्धियों के बारे में बात करूँगा तो उस पर आऊँगा, लेकिन मैं आप लोगों को एक छोटी सी बात बता देता हूँ कि एक रूपया किलो चावल या शून्य प्रतिशत ब्याज दर से छत्तीसगढ़ की सदियों पुरानी बाढ़ी परम्परा समाप्त हो गई, जो आदमी शोषण का स्वीकार होता था, उससे मुक्त हो गया । यह आम आदमी के जीवन पर प्रभाव डालने वाला ऐतिहासिक निर्णय था । (मेजों की थपथपाहट) आपने उन नवाचारों को आगे बढ़ाया तथा मैं उन उपलब्धियों पर और बात करूँगा कि जब हमारे चारों-पांचो माननीय मुख्यमंत्रीगण, उनके कार्यकाल तथा माननीय नेता प्रतिपक्ष के बारे में बातचीत कर लूँगा तो आपने छत्तीसगढ़ को शून्य से, कुछ प्रशासनिक निर्णय लिये । मैं जोगी जी के कार्यकाल को समझ सकता हूँ कि वह जब छोड़े तो 6000 करोड़ का बजट था, लेकिन आपने जो आगे विभिन्न क्षेत्रों में बुनियाद डाली थी, तब मैंने कभी आपको कक्ष में कहता था, आपने मेरी बात नहीं मानी । मैं आपके कार्यकाल में दस साल तक संसदीय कार्य मंत्री था तो कहा था कि शुरू दिन से एक गजटियर लिखवाईये । संस्कृति विभाग को बोलिये या जीएडी को बोलिये, क्योंकि कुछ निर्णय ऐसे लिये हैं, जिसका मैं उल्लेख करूँगा कि सदन में ऐसा कौन-कौन सा लेजिसलेशन हुआ, कौन-कौन सी ऐसी परम्परा पड़ी जो भारत में आज तक नहीं हुई? हम नई पीढ़ी के 51 लोगों को बताना चाहेंगे कि इस पवित्र सदन ने किस तरह के निर्णय लिये । आज जब सदन की अवधि घटती है, माननीय पाण्डेय जी दीर्घा में नहीं है, उल्लेख कर सकता हूँ । माननीय संसदीय कार्य मंत्री से लेकर मुख्यमंत्री बैठे हैं, आपका विश्वास कैसा था, हाईएस्ट कार्यदिवस छोटी विधान सभा में 58 दिनों की बैठक, इस विधान सभा ने की है । यह छोटी विधान सभा में आज भी हिन्दुस्तान में एक रिकार्ड है और वह आपके कार्यकाल में हुआ । (मेजों की थपथपाहट) आज यह चिन्ता का विषय है कि जो इधर से इधर बैठते हैं और इधर से इधर बैठते हैं तो बैठक के बारे में उसका दृष्टिकोण तुरन्त यू-टर्न हो जाता है ।

मुझे आज तक यह बात समझ नहीं आया कि कुर्सी का प्रभाव है कि छत्तीसगढ़ के समस्याओं के प्रति हमारा दृष्टिकोण विमुख है कि हम बैठकों की संख्या को लगातार घटाते चलते हैं । आपने जो संख्या स्थापित की थी, वह आज भी छोटी विधानसभाओं के लिये सचेतक सम्मेलन में हम बोलेंगे तो वह सबसे ज्यादा दिन है, क्योंकि अनुशंसा 40 दिन, 30 से 45 दिन के बीच होती है । माननीय अध्यक्ष महोदय, आपके कार्यकाल को जिसको स्वर्णीय युग बोला जाये कि उन सब चीजों की बुनियाद हम डालें, आपके कार्यकाल में नई विधान सभा क्यों शुरू नहीं हो पाई, यह मुझे आश्चर्य लगता था । जब मैं संसदीय कार्यमंत्री था और जब आप बुलाते थे तो मैं कई बार वहां से उठकर आ गया कि मैं अब बैठक में नहीं आऊंगा, इस पर निर्णय होना चाहिए, काम तत्काल शुरू होना चाहिए । हम लोग बहस, बहस करते रहे, नहीं तो यह नया विधान सभा भवन 5 साल पहले बन गया होता ।

माननीय अध्यक्ष महोदय, उसके बाद माननीय भूपेश बघेल जी ने नेतृत्व किया । भूपेश बघेल जी में आग थी और आग है, जब मैं आंकलन करता हूं तो उनके निर्णय ग्रामीण जीवन को, छत्तीसगढ़ के जीवन की दिशा बदल सकते थे । एक विधायक या सार्वजनिक जीवन के कार्यकर्ता होने के नाते मैंने तय किया कि मैं आलोचना नहीं करूंगा । मुझे जो सकारात्मक लगता है, मैंने आपकी बात कही कि आपने मेरी बात नहीं मानी । यदि हम कोई योजना बनाते हैं तो उसको लेजिस्लेटिव्ह सर्पोट दें, उसको बजटीय सर्पोट दें । आपकी जो स्वर्णीय योजनाएं, आपके जो माईल स्टोन थे, आपकी जो कोर योजनाएं थीं, दुर्भाग्य से उसे बजट का सर्पोट नहीं था, उसको लेजिस्लेटिव्ह सर्पोट नहीं था और वह किसी दूसरे के हाथों में जाकर दुरूपयोग का माध्यम बन गई, उसकी बदनामी आपके माथे पर आई । मैं उदाहरण दे देता हूं । किसी भी फंड से गोबर का पेंट, गोबर का पेंट गडकरी जी का ड्रीम विषय था कि इसको बनाया जाना चाहिए । हम भी समर्थन करते थे कि आप बनाईए । गोबर की पेंट का दर तय नहीं और लोगों ने मनमाने दर में गोबर का पेंट खरीद लिया । आपके उद्देश्य कहीं गलत नहीं थे । दूसरी बात जो मैंने महसूस की । लोकतंत्र में उसका निर्णय जनता करती है, मैं कोई ऐसा व्यक्तित्व नहीं हूं कि आप जैसे माननीय पूर्व मुख्यमंत्री जी को प्रमाण-पत्र दे सकूं । मैंने जो महसूस किया, मैं वही बताने की कोशिश कर रहा हूं । एक ऐसे सलाहकार थे, जो किसी के रिजेक्टेड लोग थे, जो किसी के लोक जीवन में, सार्वजनिक जीवन में कोई एक रूपए का प्रभाव नहीं था, उन्होंने सत्ता के संतुलन में अपना प्रभुत्व जमा लिया और आपके नाम का दुरूपयोग करने लगे । यही चीजें थीं और कोई चीजें नहीं थीं । आपके मन में आग थी कि मैं छत्तीसगढ़ के लिए कुछ करूं, इसको मैं भी स्वीकार करता हूं ।

माननीय अध्यक्ष महोदय, विष्णु देव जी की पारी चल रही है । अभी तीन दिन पहले गुजरात से माननीय प्रधानमंत्री जी ने संबोधित करते हुए कहा कि देश का एक आदिवासी मुख्यमंत्री छत्तीसगढ़ के कायाकल्प की कोशिश में लगा है । (मेजों की थपथपाहट) भारत चाहे जो भी हो, गरीबों के लिए 24 लाख मकान स्वीकृत हैं और मैं भी यह मानता हूं कि गरीबों के साथ राजनीति नहीं होनी चाहिए क्योंकि

दुनिया सारी विचारधाराएं कम्यूनिष्ट हों, समाजवादी हों, कुछ भी हों, दुनिया की जितनी भी विचारधाराएं हैं, वह पैदा हुई तो गरीबी शब्द से ही पैदा हुई । यदि हम राजतंत्र में या सत्ता तंत्र में बैठकर उसके साथ खिलवाड़ करते हैं तो वे हमें माफ नहीं करेंगे, वे समय में अपना निर्णय सुनाएंगे ही । यहां जो नये माननीय मंत्रीगण बने हैं, नये विधायक हैं, वे इस बात को गंभीरता से लेंगे, ऐसा मैं सोचता हूं ।

माननीय अध्यक्ष महोदय, विष्णु देव साय जी लगातार प्रदेश में इंवेस्ट के लिए कोशिश कर रहे हैं । आज छत्तीसगढ़ में लगभग 11 हजार करोड़ रूपए की केन्द्रीय सहायता से इंफ्रास्ट्रक्चर में सड़क की जो परियोजनाएं चल रही हैं तो ऐसे इंफ्रास्ट्रक्चर में, निवेश में, इनोवेशन में काम करने की कोशिशें शुरू हो रही हैं । अभी आधे से ज्यादा समय बाकी है, उसमें ज्यादा टिप्पणी, ज्यादा बात करना उचित नहीं है, पर माननीय मुख्यमंत्री जी ने एक निच्छल कोशिश की ।

माननीय अध्यक्ष महोदय, अब मैं आखिरी में कुछ उपलब्धियों में बात करके कुछ महत्वपूर्ण चीजें आपके सामने रखता हूं, फिर मैं अपनी बात जल्दी समाप्त करता हूं । इस देश में पहली बार किसी भी विधान मण्डल को राष्ट्रपति श्री ए.पी.जे. अब्दुल कलाम जी ने संबोधित किया । इससे पहले किसी भी राष्ट्रपति ने संबोधित नहीं किया था और उसकी विशेषता यह थी कि उस समय प्रश्नकाल भी था। हम लोगों ने उस समय प्रश्न किया। हमने अंग्रेजी में और हिन्दी में प्रश्न किया तो उसका लोगों ने इंटरप्रिटेशन किया। ऐसा पहली बार हुआ। आज आप विजन 2047 की बात करते हैं, लेकिन आपने उसको गोपनीय दस्तावेज बना दिया है। अब्दुल कलाम साहब ने विजन 2020 पर देश के सामने इस विधान सभा के माध्यम से चर्चा की थी। छत्तीसगढ़ के विधान मण्डल के खाते में यह एक बहुत बड़ी उपलब्धि थी।

माननीय अध्यक्ष महोदय मैंने स्वमेव निलंबन का उल्लेख किया। उसी दौरान पोडियम लगाया गया था और मैंने अविश्वास प्रस्ताव में उसी पोडियम में यहां खड़े होकर बोला था। माननीय राजेन्द्र प्रसाद शुक्ल जी ने एक प्रयोग किया था, मैं उनका हृदय से स्मरण करता हूं और उनके साथ जो व्यवहार सत्तारूढ़ दल ने किया या जो चेयर ने किया वैसा व्यवहार किसी चेयरपर्सन या सेक्रेटरी के साथ नहीं होना चाहिए, हमने अपनी आंखों से देखा और सुना था। छत्तीसगढ़ के इतिहास में वह अच्छा दिन नहीं है। सदन को कैसे सामाजिक सरोकार से जोड़ सकते हैं ? आजादी के बाद पहली गोपनीय बैठक आपके नेतृत्व में हुई और जब प्रस्ताव गया तो आपने सहमति दी इसीलिये मैंने कहा कि आपका कार्यकाल उस तरीके से याद किया जायेगा। दूसरी गोपनीय बैठक होगी या नहीं होगी यह मैं नहीं जानता परंतु आपने सहमति दी और सभी सदस्यों ने उस पर चर्चा की और अपने-अपने सुझाव नक्सलियों के लिये दिये और आज गृहमंत्री जी, माननीय मुख्यमंत्री जी और पूरा सदन है, आज भी एक प्रमुख नक्सली हिडमा मारा गया (मेजों की थपथपाहट)। यह प्रदेश जो अपनी महत्वपूर्ण समस्या है, जो दंश है, उसकी मुक्ति की ओर

बढ़ रहा है। इसमें सबका योगदान है। मैं आज यह उपलब्धि किसी दल को नहीं देना चाहता क्योंकि सभी सार्वजनिक जीवन के प्रमुख हस्ताक्षर है।

माननीय अध्यक्ष महोदय, यह विधान सभा कभी भी कोरम के अभाव में स्थगित नहीं हुई। इस विधान सभा में कभी मार्शल का उपयोग नहीं हुआ। एक बार मार्शल का उपयोग हुआ। यहां पर अमित जोगी जी बैठते थे और उनके साथ तीन विधायक थे। मैंने लोगों को बताया कि साहब सदन की कार्यवाही स्थगित होने के बाद मार्शल का उपयोग होना रिकॉर्ड में मार्शल का उपयोग नहीं माना जाता। इसलिए हम यह कहेंगे कि इस सदन में मार्शल का उपयोग कभी नहीं हुआ। आज तक देश में रविवार के दिन विधान सभा नहीं चली है। यह छत्तीसगढ़ की विधान सभा है, जिसने अपनी जनता की प्रतिबद्धता साबित करते हुए पक्ष एवं विपक्ष ने मिलकर रविवार को भी बैठने की सहमति दी और पक्ष, विपक्ष का ऐसा समन्वय देश की किसी भी विधान सभा में नहीं मिलेगा। यही छत्तीसगढ़ का संबंध है, यही छत्तीसगढ़ का भाईचारा है और यही छत्तीसगढ़ की विधि विधायी प्रक्रिया की सबसे महानता है या यह कह ले कि परंपरा की महानता है।

माननीय अध्यक्ष महोदय, आपने जो ऐतिहासिक विधेयक पारित किये। आप केवल शासन भर नहीं करते रहे आप शासन करने का एक दृष्टिकोण भी देते रहे। मैंने छत्तीसगढ़ खाद्य सुरक्षा, 2012 का उल्लेख किया था। आप बोलिये मैं किन शब्दों में आपका अभिनंदन करूं ? आपने छत्तीसगढ़ को एक कोढ़ से मुक्ति दिला दी, जिसे बाढ़ी कहते थे, जिसे मैं ब्याज बोलता था । यदि लिखा जायेगा और याद किया जायेगा तो आप स्वत:वान सामने खड़े होंगे कि डॉ. रमन सिंह जी ने गरीबों की संवेदना पहचानी और वह सही में गरीबों के डॉक्टर थे। वह नाड़ी छूते थे तो बीमारी के साथ सामाजिक समस्याओं को भी पकड़ लेते थे।

माननीय अध्यक्ष महोदय, इसमें सभी के लिये खाद्य सुरक्षा, पोषण, किसानों को सीधा लाभ, छत्तीसगढ़ पंचायती राज संशोधन था। माननीय यहां मौजूद है। यह लगभग सर्वसम्मति से पारित हुआ था। माननीय पंचायत मंत्री जी बैठे हैं। आज देश में 50 प्रतिशत आरक्षण देने वाला यह बिहार के बाद दूसरा राज्य था। (मेजों की थपथपाहट) स्वच्छता उम्मीदवार अर्हता में शामिल हो। उस समय बजट नहीं था लेकिन रमन सिंह जी की इच्छा थी कि यह जो अस्वच्छता होती है, जो सड़कों में महिलाओं की इज्जत दिखती है, उससे छत्तीसगढ़ मुक्त हो। 1.5 लाख से ऊपर पंचायत प्रतिनिधि चुनकर आते हैं, यदि उनके घर में भी शौचालय बन जाता है तो हम एक कदम बढ़ायेंगे। आज वह केंद्रीय सपोर्ट से एक आंदोलन बन गया। लेकिन उसकी शुरूआत किसने की थी ? उस समय SGRY योजना चलती थी, मैं उसका उदाहरण दे देता हूं। आज उज्जवला योजना बहुत फेमस है लेकिन उज्जवला योजना की शुरूआत डॉ. रमन सिंह जी ने की थी । एस.जी.आर.वाई. के 22.5 प्रतिशत से हम छोटा वाला गैस सिलेण्डर देते थे। यदि किसी ने गृह लक्ष्मी योजना की शुरूआत की तो वह छत्तीसगढ़ प्रदेश ने शुरूआत की। साक्षरता,

मैं यह जानता था कि जब विधेयक आएगा तब वह महोदय साक्षरता में प्रश्न करेंगे। यू.एण्ड डी.पी. से लेकर संयुक्त राष्ट्र महासभा से लेकर, साक्षरता मिशन से लेकर संवैधानिक, उस दिन ऐसी मेरे पास साक्षरता की 20 परिभाषाएं थीं। यदि किसी भी तरह से साक्षरता मिशन को लेकर प्रश्न पूछेंगे तो हम उसका उत्तर देंगे। लेकिन जब यह मूल रूप से कैबिनेट में गया तो 12 वीं, 8 वीं और 5 वीं पास था। तात्कालीन चीफ सेक्रेटरी ने कहा कि हिन्दुस्तान के प्रांत और दुनिया में कहीं ऐसा नहीं है। आप क्या करना चाह रहे हैं ? मैंने यह कहा कि मैं नहीं करना चाहता हूँ। हमारे छत्तीसगढ़ में साक्षरता का प्रतिशत कम है। जो प्रतिनिधि निर्वाचित हैं उनको चेक पॉवर है। हम ऐसे कैसे होने देंगे? तो कैबिनेट में बहुत बहस के बाद वह साक्षरता स्वीकार हुई । उस समय और अभी तक अर्हता में शामिल करने वाला पहला राज्य छत्तीसगढ़ है। खाद्यान्न सुरक्षा जो आगे चलकर, मैंने यह कहा कि खाद्यान्न सुरक्षा 1 रूपया किलो वाला चावल शामिल हुआ। एक निर्देश था कि हर पंचायत में 1 क्विंटल अनाज रखे जाएंगे। मैंने अभी भूपेश बघेल जी का उल्लेख करते हुए कहा था कि उस समय legislative सपोर्ट नहीं था, बजट सपोर्ट नहीं था, पर इस खाद्यान्न सुरक्षा को legislative सपोर्ट दिया, हमने इसे अनिवार्य किया कि आपको यह रखना पड़ेगा। उस समय इतना बजट नहीं होता था। हर सत्र में भूख से मृत्यु और पलायन के कोई न कोई स्थगन, ध्यानाकर्षण आता ही था। यह नियम था कि कोई न कोई स्थगन, ध्यानाकर्षण आएगा ही। अतिक्रमण, सार्वजनिक पूंजी के बचाने के लिए मैंने इसे रखते हुए कहा था कि विधायिका समाजिक मामालों में हस्तक्षेप नहीं करती। उस समय रमन सिंह जी का शासन था विधायिका अपनी सार्वजनिक, समाजिक भूमिका भी निभाती दिखी कि अतिक्रमण के बारे में कानून बनाकर सार्वजनिक संपत्तियों की रक्षा करेंगे। कोई राज्य था तो यह छत्तीसगढ़ था। ग्राम सभा आश्रित गांवों में भी होंगी और भी उसके नियम बनें, पर यह बात जान लीजिए कि उस समय यह एक नया और क्रांतिकारी कानून माना गया। जब मैं एन.आई.आर.डी. में भाषण देने गया और इस संशोधन को बताया तो वह भरोसा करने को तैयार नहीं थे कि छत्तीसगढ़ प्रदेश ऐसा कदम उठा सकता है। लोक सेवा गारण्टी अधिनियम। शासन अपने ऊपर शासन करता है। छत्तीसगढ़ में यह उदाहरण देखने को मिलता है कि मुख्यमंत्री जी कहते हैं कि साहब, मेरे कार्यालय का यह-यह काम है, वह इतने समय में नहीं होगा तो कर्मचारी दण्डित होंगे। शासन अपने ऊपर शासन करता है। यदि किसी ने यह उदाहरण बनाया तो छत्तीसगढ़ प्रदेश ने बनाया। उस नियम में समयबद्ध सेवाएं, उत्तरदायी शासन, पारदर्शिता, अधिकारों की गारण्टी यह सब थे। अभी छत्तीसगढ़ और पूरी दुनिया में एक समस्या है खासतौर से जब हम चीन से प्रतिस्पर्धा कर रहे हैं तो वह है कौशल, मानव संपदा। अकुशल मानव संपदा एक समस्या है brain drain के बाद अब wealth drain आ रहा है। हम ब्रेन का उपयोग अपने हित में करें। अमेरिका के राष्ट्रपति ट्रम्प की नीतियों के बाद यह और जरूरी हो गया है। जो आप नक्सल अभियान चला रहे हैं। आज पंडुम शुरू हुआ, यह कौशल उन्नयन का ही एक उदाहरण है। जब माननीय अध्यक्ष जी माननीय मुख्यमंत्री थे

तो कौशल उन्नयन का अधिकार दिया कि साहब, मैं कौन सा काम सीखना चाहता हूँ, आपके लिए व्यवस्था करेंगे। यह कितना सफल होता है, यह आलोचना का विषय नहीं है। लेकिन छत्तीसगढ़ और नवजवानों के प्रति commitment है, उनको काम देना, निर्धारित अवधि तक नियोजित करना, यदि किसी ने देश के सामने यह काम प्रस्तुत किया तो यह छत्तीसगढ़ प्रदेश ने किया। आज भी पूरे देश के स्वतंत्र भारत के इतिहास में ...।

अध्यक्ष महोदय :- अजय जी, आपको 32-35 मिनट हो गये हैं।

श्री अजय चन्द्राकर :- माननीय अध्यक्ष महोदय, मैं 5-10 मिनट में खत्म करूंगा। भाई साहब, मैं आज आपका ही चारण-भाट बना हूँ। आपके कार्यकाल की उपब्धियों को गा रहा हूँ। (हंसी) मैं जल्दी खत्म करूंगा।

अध्यक्ष महोदय :- अजय जी, आप अच्छा बोल रहे हैं। मगर अब जल्दी समाप्त करिये।

श्री अजय चन्द्राकर :- माननीय अध्यक्ष महोदय, मैं एक भी लाईन अतिरिक्त नहीं बोल रहा हूँ। उस समय 1 दिन में 3 विश्वविद्यालय बनें। कुशाभाऊ ठाकरे पत्रकारिता एवं जनसंचार विश्वविद्यालय, छत्तीसगढ़ स्वामी विवेकानंद तकनीकी विश्वविद्यालय, पं. सुन्दरलाल शर्मा (मुक्त) विश्वविद्यालय। किसी प्रदेश में एक दिन में 3 विश्वविद्यालय legislate नहीं हुए। एक छत्तीसगढ़ विशेष जनसुरक्षा अधिनियम 2005 में आया। हम लोग उस विधान सभा में थे। नक्सलवाद से नियंत्रण की ओर, आंतरिक सुरक्षा की ओर छत्तीसगढ़ में नियम बनाकर हम क्या काम कर सकते हैं, कैसे काम कर सकते हैं, नक्सलवाद पर नियंत्रण, सामजिक सुरक्षा, कानून व्यवस्था, गैर कानूनी गतिविधि, आतंकवादी और उग्रवादी गतिविधियों पर नियंत्रण के ऐसे कानून थे जो पहली बार इसी विधान सभा से पास हुए। आज इस विधान सभा के 25 वर्ष पूरे होने पर, यहां की मान्य विधायी परंपरा है, हमने जो वेस्ट मिनिस्टर प्रणाली स्वीकार की है, वह नियम से ज्यादा परंपराओं से चलती है। रविवार के चलने के बाद में कुछ बातों को जल्दी में छोड़ दिया। 24 घंटे और 18 घंटे अविश्वास प्रस्ताव पर रात भर जागकर बहस करना ये यहीं संभव था। और यह मेरे खिलाफ है या आपके खिलाफ है, विषय नहीं है। चर्चा पूरी करेंगे, इसमें सदन सहमत था। ये इस सदन की विशेषता है। इस पर हमको जाना चाहिए कि हम कितने लोकतंत्र के प्रति निष्ठावान हैं या आस्था रखते हैं, ये छत्तीसगढ़ के लोग कैसी राजनीति पसंद करते हैं। माननीय अध्यक्ष महोदय, आपने अंत की ओर इशारा कर दिया। इन सबके प्रयत्नों में छत्तीसगढ़ क्या था, अब आंकडों को गिनाऊंगा तो राजनीति होगी। भूल जायें या उनका पतन हो गया। 1 नवंबर 2000 तक सीन बदल गया, उसके पीछे क्या था, उसको भूल जाना ही अच्छा है। राजनीति में उलझने के बाद नया नाटक हम सब मिलकर शुरू करें। अभिमन्यु वध का शोक मनाने के बजाय जयद्रध वध की तैयारी करें।

माननीय अध्यक्ष महोदय, नई राजधानी में सीपेट, फोरेंसिक यूनिवर्सिटी, सेन्ट्रल यूनिवर्सिटी और सेन्ट्रल यूनिवर्सिटी में बता देता हूं। माननीय अर्जुन सिंह जी से मैंने खैरागढ़ के लिये 10 करोड़ रुपये मांगे। कोरिया, कांकेर, दंतेवाड़ा, जांजगीर इस तरह से 5 जिले औद्योगिक, शिक्षा से विहीन थे। 5 पॉलीटेक्निक कॉलेज स्वीकृत। मैंने उनको एक ही बात कही थी कि आप तो छत्तीसगढ़ के साहब हैं, कुंवर साहब छत्तीसगढ़ से मुख्यमंत्री बने हैं। बिलासपुर सेन्ट्रल यूनिवर्सिटी, मुझे दु:ख था कि मैं शिक्षा मंत्री था, उतनी बड़ी प्रापर्टी सौंप देना, सेन्ट्रल यूनिवर्सिटी वह छत्तीसगढ़ की सबसे बडी प्रापर्टी थी, हमने नि:स्वार्थ दे दिया कि जाईये इसको रख लीजिए। इतना बड़ा कैंपस छत्तीसगढ़ में किसी संस्थान का नहीं है। माननीय अध्यक्ष महोदय, जब आपने दुर्ग में आई.आई.टी. खोलने का निर्णय लिया तो आपके ही निर्देश पर मैं और माननीय पाण्डेय जी रामविलास पासवान जी के पास गये कि हमको सेल से जमीन दे दीजिए। आई.आई.एम., ट्रिपल आई.टी., रेलवे जोन, रेलवे मंडल, एन.आई.टी. और मेडिकल कॉलेज की संख्या तो मैं गिन नहीं सकता। मैं शिक्षा मंत्री था तो 100 सीट थी और एक बिलासपुर की घोषणा हुई थी तो वह उच्च शिक्षा विभाग के अधीन थी, उसको हम आपके निर्देश में उच्च शिक्षा से हटाकर मेडिकल एजुकेशन में लाये। तो इतनी सारी सीटें हैं। खाद्यान्न सुरक्षा, हॉटल, केन्टीन की यूनिवर्सिटी, बिजली का उत्पादन और सामाजिक क्षेत्रों में जी.ई.आर. की लज्जाजनक स्थिति थी। डेढ़ से दो प्रतिशत थी। आज 22 प्रतिशत से ऊपर है। आई.एम.आर., एम.एम.आर. जो मानव विकास के सूचकांक थे, ड्रापआउट रेट, साक्षरता के प्रतिशत, कुपोषण की दरें, ये छत्तीसगढ़ आज विकसित राज्य के बराबर खड़ा है। ये सबके प्रयत्न हैं। पर जब मैं स्वास्थ्य मंत्री था तो डॉक्टर साहब समीक्षा में पूछते थे कि आई.एम.आर., एम.एम.आर. की दर क्या है, उसमें क्या प्रयत्न हो रहा है? टीकाकरण कितने प्रतिशत हुआ है? तो सामाजिक क्षेत्रों में जब मैंने नक्शा दिखाया, 110 कालेज हैं, जिस दिन हम छोडें उस दिन 200 से ऊपर कॉलेज थे। बीजापुर, सुकमा, देवभोग, मैनपुर इधर यदि कॉलेज खोलने का श्रेय जाता है तो सामने बैठे हैं। किसी भी क्षेत्र मे शिक्षा में, स्वास्थ्य में, स्कूल शिक्षा में क्षेत्रीय असंतुलन नाम का शब्द छत्तीसगढ़ की डिक्शनरी से गायब हो गया। आज इनको आगे बढ़ाने की और मजबूत करने की जरूरत है। नक्सली उन्मूलन, कला, साहित्य, संस्कृति, यह बैठे हैं। सिरपुर को विशेष क्षेत्र, आज भी सिरपुर पर एक लेख है। यूनेस्को इंटेल ललित सुरजन की जी की संस्था से यूनेस्कों में शामिल करने के लिये पेपर बनाने के लिये हमने समझौता किया था। छत्तीसगढ़ की जो विरासत है, छत्तीसगढ़ इतिहास के हर दौर में, सबसे प्राचीन शिलालेख रायगढ़ में मिलेंगे । कहां हैं, क्या ओ.पी. चौधरी जी चले गये ? कल मेरे पास राजकमल प्रकाशन की विनोद कुमार शुक्ला जी की 4 किताब आयी है, आज तक साहित्य, संस्कृति, खेल-कूद में छत्तीसगढ़ के...।

श्री रामकुमार यादव :- भैया, बढ़िया बोलत हस । हमन सुनत हन ता बढ़िया लागत हे । महाज्ञानी हस लेकिन छत्तीसगढ़ में एको ठन छत्तीसगढ़ी गोठियाबे कि हिंदीच मारबे ? जब पुरखा मन

छत्तीसगढ़ ला बनाये हे ता छत्तीसगढ़िया के भावना रिहिस हे ता एको शब्द छत्तीसगढ़ी गोठिया दे । कम से कम उहू मन के आत्मा ला शांति मिलही ।

अध्यक्ष महोदय :- चलिये, रामकुमार जी ।

श्री अजय चंद्राकर :- माननीय अध्यक्ष महोदय, बोरई का मानसिक चिकित्सालय । (हंसी) उस समय आपने निमान से बात की थी कि उसको सेंटर ऑफ एक्सीलेंस बनायेंगे । (हंसी) आज क्या स्थिति है, मैं नहीं जानता लेकिन उसमें आप लाभ जरूर लीजिये । (हंसी) विजन 2047, माननीय विष्णुदेव साय जी की कल्पना देश में अमृतकाल है । अमृतकाल में हमने विकसित छत्तीसगढ़ बनाने का सपना देखा है । माननीय अध्यक्ष महोदय, आपने, जोगी जी ने, भूपेश बघेल जी ने, विष्णुदेव साय जी ने, सब माननीय मंत्री, सब माननीय विधानसभा के अध्यक्ष, सब माननीय उपाध्यक्ष, सब नेता प्रतिपक्ष और प्रथम विधानसभा से आज तक लेकर सभी माननीय सांसद एवं विधायक और उसको बनाने वाले सभी ने इस छत्तीसगढ़ महतारी की सेवा के लिये अपना सब-कुछ दिया है । मैं आज इस पवित्र सदन के माध्यम से उन ज्ञात-अज्ञात सुंदरलाल शर्मा जी से लेकर दलपत राय जी से लेकर आज तक के सभी लोगों को स्मरण करता हूं, उनका अभिनंदन करता हूं । हम सभी उनके योगदान के लिये उन्हें याद करते हैं जो आज इस मौजूदा सदन में हैं । माननीय, लेकिन एक बात है, थोड़ा बहुत इधर-उधर, आजू-बाजू में ऐसा है कि छत्तीसगढ़ में दो नेताओं की नहीं पटी तो राजनीति में छत्तीसगढ़ खड़ी हो गयी । आप उन दो नेताओं को राजनीतिक क्षेत्र के समझते हैं तो सुंदरलाल शर्मा को जागृत किया गया फिर वीर नारायण सिंह जी वर्ष 1984 में जागृत हो गये, अर्जुन सिंह जी के कार्यकाल में, वे हमारे यहां से ही मुख्यमंत्री थे फिर गुरू घासीदास जी के उत्सव को हम श्रद्धा से मनाने लगे । फिर दुर्ग जिले में दो नेताओं में नहीं बैठने लगी तो छत्तीसगढ़ी, गैर छत्तीसगढ़ी हो गये । आज सूचना क्रांति के दौर में एक ग्लोबल विलेज है । हमारी सामाजिक समरसता, हमारी सांस्कृतिक विविधता, हमारी भाषायी विविधता, हमारी औद्योगिक विविधता, हमारी विभिन्न खानपान संस्कृति इसके लिये भारत दुनिया में जाना जाता है और इससे बढ़कर अपने लोकतंत्र के लिये दुनिया में जाना जाता है । इसकी रक्षा करें, इसका राजनीतिक इस्तेमाल मत करें और सब मिलकर महतारी की सेवा करें, इस भाव के साथ मैं अपनी बात समाप्त करता हूं । माननीय अध्यक्ष महोदय, आपने मुझे बोलने के लिये समय दिया इसके लिये बहुत-बहुत धन्यवाद । (मेजों की थपथपाहट)

सदन को सूचना

अध्यक्ष महोदय :- भोजन की व्यवस्था माननीय सदस्य, विधानसभा के पूर्व पदाधिकारी एवं राज्यशासन के वरिष्ठ अधिकारियों के लिये लॉबी स्थित कक्ष में, पत्रकारों के लिये प्रथम तल पर की गयी है । कृपया सुविधानुसार भोजन ग्रहण करें । श्री भूपेश बघेल जी ।

छत्तीसगढ़ विधान सभा के पच्चीस वर्षों की संसदीय यात्रा पर केन्द्रित विषयों पर चर्चा (क्रमशः)

श्री भूपेश बघेल (पाटन) :- माननीय अध्यक्ष महोदय, इस विधानसभा के, इस भवन के आखिरी सत्र में आपने बैठक आहूत की है और 25 साल की यात्रा और छत्तीसगढ़ की यात्रा के बारे में एक सार्थक चर्चा कराने का आपने निर्णय लिया इसके लिये मैं आपको साधुवाद देता हूं ।

माननीय अध्यक्ष महोदय, चर्चा की शुरूआत बहुत ही विद्वान सदस्य श्री अजय चंद्राकर जी ने की । उन्होंने बहुत सारी जानकारियां दी और बहुत सारी चीजें ऐसी हैं जिनको बहुत सारे सदस्य नहीं जानते, वह इस सदन के माध्यम से जानकारी मिली इसके लिये मैं भाई अजय चंद्राकर जी को बहुत बधाई देता हूं । माननीय अध्यक्ष महोदय, छत्तीसगढ़ की यात्रा में आप देखेंगे कि आदिकाल से चला आया और यह दक्षिण कौशल के नाम से छत्तीसगढ़ जाना जाता रहा है और यहीं से माता कौशल्या को भी हम लोग स्मरण करते हैं । माता कौशल्या छत्तीसगढ़ की बेटी थी और इस नाते हम उन्हें भी स्मरण करते हैं और दक्षिण कौशल से जो यात्रा चली और आज तक हम लोग पहुंचे हैं। मैं बहुत लंबा इतिहास के बारे में नहीं कहना चाहूंगा। लेकिन छत्तीसगढ़ कभी सी.पी. बरार का हिस्सा हुआ करता था। आजादी के बाद जब भाषाई आधार पर राज्य का पुनर्गठन हुआ तो हम लोग मध्य प्रदेश चले गए और मध्य प्रदेश से फिर हम लोग छत्तीसगढ़ आए। अध्यक्ष महोदय, जब हम लोग मध्यप्रदेश में थे, तो बहुत कम सदस्य हैं, जो मिंटो हॉल में जहां विधान सभा लगा करती थी, उसमें बैठते थे, उसमें आप भी थे, डॉ. महंत जी हैं और श्री पुन्नूलाल मोहले जी हैं, श्री रामविचार नेताम जी हैं तो बहुत कम सदस्य हैं, जो उस मिंटो हॉल में बैठे हैं। बहुत सारे सदस्य हैं, जो इधर श्री बृजमोहन अग्रवाल जी, रविन्द्र चौबे जी, ये लोग भी उस सदन में उपस्थित थे। अध्यक्ष महोदय, फिर नया सदन बना । नए सदन में फिर श्री धर्मजीत जी, श्री धरमलाल कौशिक जी, ये लोग भी उसमें जुड़े। इधर बहुत सारे साथी उसमें थे। नए विधान सभा में नहीं थे। श्री अमर अग्रवाल जी, श्री अजय चंद्राकर जी, आप तो उसमें मिंटो में रहें तो फिर मैं इस बात उल्लेख किया।

श्री अजय चन्द्राकर :- पुन्नूलाल जी भी थे।

श्री भूपेश बघेल :- हां, हां वे तो थे। भाई मिंटो हॉल कब बना? जॉर्ज पंचम के स्वागत के लिए अंग्रेजों के समय में जो हॉल बना था, उसे रंगारंग कार्यक्रम के लिए उसका आयोजन किया गया था, उस हॉल में विधान सभा लगा करती थी, जिसमें 320 सदस्य होते थे और उस हॉल में कहां-कहां बैठे हैं, 320 में खोजना पड़ता था। फिर नया भवन बना तो बहुत बड़ा था, विशाल भवन बना और उसमें भी 320 लोगों में बैठने का सौभाग्य हम लोगों को मिला। उसके बाद जब छत्तीसगढ़ बना तो सबसे पहले राजकुमार कॉलेज के जशपुर हॉल में टेंट में वह पहली विधान सभा लगी। राजेंद्र प्रसाद शुक्ल जी अध्यक्ष थे। जोगी जी मुख्यमंत्री, रविन्द्र चौबे जी संसदीय कार्य मंत्री और नंद कुमार साय उस समय नेता

प्रतिपक्ष बने। नेता प्रतिपक्ष बने, उसकी जो लड़ाइयां थीं, वह सब जानते हैं कि किस प्रकार से लड़ाइयां हुईं। अध्यक्ष महोदय, चूंकि वह बाहर की बात थी, इसलिए मैं चर्चा नहीं करूंगा। नेता प्रतिपक्ष नंद कुमार साय जी बने। हालांकि बहुमत उनके साथ नहीं थी, फिर भी उस समय जो पर्यवेक्षक आए थे, आज देश के शीर्ष में बैठे हैं । (हंसी) अध्यक्ष महोदय, छत्तीसगढ़ नया-नया बना था और वह घटना घटी थी तो पूरे देश का ध्यान उधर खींचा था। उस टेंट में भी मंत्रियों के अलग कक्ष बने हुए थे। हम लोग मंत्रिमंडल में थे और हम लोगों ने उसमें भी एक सत्र संचालित किया। यह राजीव जी के नाम से वाटर रिसर्च सेंटर के नाम से बिल्डिंग बनी थी और उसके बाद वह हैंडओवर भी नहीं हुआ था और इसको विधान सभा घोषित किया गया। अध्यक्ष महोदय, अब तो यह कहना चाहूंगा, चूंकि हम लोग यहां से जा ही रहे हैं तो फिर से इस भवन को राजीव वाटर रिसर्च सेंटर के नाम से इसको रखा जाना चाहिए, जो मूल रूप से यह बिल्डिंग थी। (मेजों की थपथपाहट) माननीय अध्यक्ष महोदय, इस विधानसभा में भी अनेक प्रस्ताव हुए। जो जशपुर हॉल है, वहां जब विधान सभा संचालित हुई तो उस समय छत्तीसगढ़ बना था और छत्तीसगढ़ बनने के साथ-साथ पूरे छत्तीसगढ़ में सूखा पड़ा हुआ था। सूखे से लड़ना भी था और दूसरा अधिकारी कर्मचारियों का छत्तीसगढ़ और मध्य प्रदेश आना जाना। एक ही विभाग था, जिसमें सरप्लस कर्मचारी थे, वह राजस्व विभाग था। केवल हमारे पास तहसीलदार और आर.आई. सरप्लस थे, बचे सारे विभाग में डेफिसिट था। ऐसे समय में सब लोगों ने काम शुरू किया। अध्यक्ष महोदय, मैं याद करना चाहूंगा कि उस समय जो तत्कालीन वित्त मंत्री कुमार साहब थे, उन्होंने जो वित्तीय प्रबंधन, जो व्यवस्था की और जो नींव डाली, हालांकि धर्मजीत भैया उस समय बोला करते थे कि आप 400 करोड़ रुपये हम लोगों को दे देते तो फिर से सरकार में रहते। तो वह इतना वित्तीय अनुशासन बनाकर रखे थे। यदि आज हम छत्तीसगढ़ की अर्थव्यवस्था को पूरे देश के अन्य राज्यों की अर्थव्यवस्था के दृष्टिकोण से तुलनात्मक रूप से बेहतर स्थिति में पाते हैं तो उस दौर में उसकी नींव आदरणीय कुमार साहब ने रखी थी। उसके बाद यह भवन बना और इसमें हम सब सदस्य इसके साक्षी बने। अब हम इस भवन के बाद एक नये भवन में जा रहे हैं। मैं समझता हूं कि यह यात्रा अब समाप्त हो जाएगी। जो मिंटो हॉल से यात्रा शुरू हुई थी और यह जो नयी राजधानी नवा रायपुर में नया भवन बना है, अब छत्तीसगढ़ की विधान सभा भवन बनने की यात्रा में लगाम लग जाएगी। इस दौर में बहुत सारी घटनाएं घटीं और उसका उल्लेख किया गया। मैं आदरणीय अजय जी के भाषण में एक सुधार कर दूं कि उन्होंने प्रारंभिक रूप से त्रिपुरारी अधिवेशन की बात कही थी, वह त्रिपुरी है, जो जबलपुर के पास है। उसको आपने त्रिपुरारी बोल दिया था। वह त्रिपुरी अधिवेशन था और उसमें पंडित सुंदरलाल शर्मा जी ने सबसे पहले प्रस्ताव रखा था। उसके बाद मैं उन कलाकारों, साहित्यकारों को भी स्मरण करना चाहूंगा, जिन्होंने छत्तीसगढ़ की व्यथा-कथा को अपने गीतों, प्रसंगों, नाटकों, मंचन, गम्मत व कला के माध्यम से जनता को जागृत करने का प्रयास किया। पंडित सुंदरलाल शर्मा जी सहित अन्य महापुरूष, जिनके नाम का यहां उल्लेख किया गया, मैं

उनको भी नमन करता हूं। सन् 1956 व 1967 में डॉ. खूबचंद बघेल ने रायपुर में पदुमलाल पुन्नालाल बख्शी जी की अध्यक्षता में भातृ संघ की बैठक की और उसमें उन्होंने सबसे पहले पृथक छत्तीसगढ़ राज्य की बात कही। एक राजनीतिक आंदोलन के रूप में वह जारी रहा और यह आंदोलन सन् 1967 से लेकर लगातार चलता रहा। इसमें पवन दीवान जी, अरविंद नेताम जी, ठेठवार जी, हमारे रायपुर के पूर्व विधायक मुखर्जी जी, महेश तिवारी जी जैसे लोग शामिल थे। मुझे याद है कि ग्राम अर्जुंदा में पिछड़ा वर्ग सम्मेलन हुआ था, जिसमें अर्जुन सिंह जी आये थे और उसकी अध्यक्षता सांसद व पूर्व केन्द्रीय मंत्री चंदूलाल चंद्राकर जी ने की थी। यह सन् 1992 की घटना है। उसमें चंदूलाल चंद्राकर जी ने एक लाइन कही थी और ऐलान किया था कि पृथक छत्तीसगढ़ राज्य से नीचे कोई बात नहीं होगी। उसके बाद अध्यक्षीय मण्डल बना, जिसमें छत्तीसगढ़ के सभी दल के सारे नेता थे। महेश तिवारी जी भाजपा में थे, मुखर्जी साहब कम्यूनिष्ट पार्टी में थे तथा अरविंद नेताम जी थे। नवयुवक साथियों में रविन्द्र चौबे की बात करे या अन्य साथियों की बात करे, हमारे राजेन्द्र प्रसाद शुक्ल जी जैसे सब लोग उस अध्यक्षीय मण्डल में थे। उसमें फिर लगातार आंदोलन चलता रहा। दुर्भाग्य यह है कि सन् 1995 में चंदूलाल जी का देहावसान हो गया और उसके बाद वह आंदोलन समाप्त हो गया। आपने कहा कि सन् 1993 में भाजपा के घोषणा पत्र में इसका उल्लेख था। शायद आपकी जानकारी में नहीं होगी या आपने कुछ कंजूसी बरती होगी, लेकिन सन् 1993 के चुनावी घोषणा पत्र में चाहे आप कांग्रेस का घोषणा पत्र उठाकर देख लीजिए तो उसमें भी उसका उल्लेख था। उस समय दिग्विजय सिंह जी प्रदेश कांग्रेस कमेटी के अध्यक्ष थे। चंदूलाल जी राष्ट्रीय महासचिव थे और उन्होंने दबावपूर्वक इसको घोषणा पत्र में शामिल करवाया था। आप कम्यूनिष्ट पार्टी के घोषणा पत्र में देखिये तो उसमें भी उसका उल्लेख था। आप भाजपा के घोषणा पत्र के बारे में कह रहे हैं तो उसमें भी उसका उल्लेख था। सारे दलों ने सबसे पहले सन् 1993 में इसका उल्लेख किया और सन् 1994 में वहां प्रस्ताव रखा गया। उस समय दिग्विजय सिंह जी मुख्यमंत्री थे और उन्होंने सर्वसम्मति से छत्तीसगढ़ राज्य निर्माण का प्रस्ताव पारित करके केन्द्र को भेजा। उस समय मध्य प्रदेश विधान सभा में हमारे छत्तीसगढ़ और मध्यप्रदेश के जितने भी तत्कालीन सदस्य थे, उनके प्रति भी यह सदन कृतज्ञता व्यक्त करता है क्योंकि यदि उन लोगों ने सहयोग नहीं किया होता और उस समय उस प्रस्ताव को सदन में पास नहीं किया होता तो छत्तीसगढ़ बनने के रास्ते में फिर से बाधा बंध जाती। मैं पक्ष-विपक्ष के उन सभी माननीय सदस्यों को हृदय से धन्यवाद देता हूं। निश्चित रूप से उस समय माननीय अटल बिहारी वाजपेयी जी प्रधानमंत्री थे, नेता प्रतिपक्ष सोनिया गांधी जी थी। उस समय जो सहमति बनी, उसके आधार पर सत्ता पक्ष व विपक्ष के सभी लोगों ने 3 राज्यों के गठन का निर्णय लिया। जिसमें झारखण्ड, उत्तराखंड और हमारे छत्तीसगढ़ जैसे 3 राज्य बने और तीन राज्य बनने के बाद छत्तीसगढ़ की यात्रा शुरू हुई। अध्यक्ष महोदय, इस पवित्र सदन में हम सबने बहुत सारे उतार-चढ़ाव देखा है, बहुत सारे तनाव के वक्त आते थे। ये बात भी बिल्कुल सही है कि सत्ता पक्ष रहते हुए भी

सदन का बहिर्गमन करना ये पहली बार हुआ, उस मंत्रिमंडल में मैं भी था। न भूतो न भविष्यति, उसके पहले कभी नहीं हुआ था न आगे कभी होगा। लेकिन हमारे दो संसदीय कार्य मंत्री जी और सचेतक 18 घंटे बैठे रहते थे। साहब, आपने आलोचना नहीं की, आपने लगभग गाली ही दिया (हंसी) मैं तो रविन्द्र चौबे और संसदीय कार्य मंत्री जी की क्षमता को प्रणाम करता हूं, वे आपको 18 घंटे झेले।

आदिम जाति विकास मंत्री (श्री रामविचार नेताम) :- उनके सहने की क्षमता।

श्री भूपेश बघेल :- उनके सहने की क्षमता को प्रणाम करता हूं। वैसे भी मेरे आदरणीय हैं, मैं प्रणाम ही करता हूं।

श्री अजय चंद्राकर :- गाली-गलौज के सूत्रधार भी मौजूद हैं, सुनने वाले भी मौजूद हैं। (हंसी)

श्री भूपेश बघेल :- दोनो अगल-बगल बैठे हैं। (हंसी)

श्री रामविचार नेताम :- वैसे मजबूरी में सुन रहे थे लेकिन इनको सुनने में आनंद आ रहा था। (हंसी)

श्री धरमलाल कौशिक :- नाटक का मंचन होना था, आपको इतना दबाए कि वह मंचन भी नहीं हो पाया।

श्री भूपेश बघेल :- वह तो धर्म भैया..।

श्री धर्मजीत सिंह :- नाटक का नाम पंपापुर का राजा था। (हंसी)

श्री भूपेश बघेल :- अध्यक्ष महोदय, वह भी हम लोगों ने देखा। वह दौर भी हम लोगों ने देखा, जब समिति का प्रतिवेदन प्रस्तुत हो गया और मारपीट करने वाले अधिकारी के खिलाफ कार्रवाई करने का प्रस्ताव भी आ गया, उसको भी वापस होते हमने देखा है। उसको फिर आपने सर आंखों पर चढ़ाकर रखा था, वह भी हमने देखा है।

श्री अजय चंद्राकर :- अध्यक्ष महोदय, पहली बार छत्तीसगढ़ विधान सभा में उसी दिन दोहरी कार्यसूची शाम को जारी हुई।

श्री भूपेश बघेल :- आप संसदीय थोड़ा सा ज्यादा ध्यान देते हैं, बारीकी से ध्यान देते हैं, हम लोग थोड़ा-थोड़ा सरफेसियल हैं लेकिन थोड़ी बहुत जानकारी हम लोग भी रखते हैं। माननीय अध्यक्ष महोदय, इस सत्र में, इस सदन में, किसानों की आवाज गूंजी, इस सत्र में मजदूरों की आवाज गूंजी, इस सत्र में महिलाओं, आदिवासियों, अनुसूचित जाति की आवाज गूंजी, यहां बेराजगार साथियों के हक के अधिकार की आवाज गूंजी। ये पवित्र सदन है, जहां प्रजातंत्र की रक्षा करने के लिए नक्सलियों के खिलाफ भी लगातार आवाज गूंजी है जिसकी हम सबने भर्त्सना की और लड़ाई लड़ी। अध्यक्ष महोदय, 15 सालों में लगातार नक्सलियों के मामले में कोई ऐसा सत्र नहीं होता था जिसमें ध्यानाकर्षण, स्थगन न लगा हो, सरगुजा से लेकर बस्तर तक अनेक घटनाएं घटी लेकिन मैं इस मामले में सौभाग्यशाली रहा, 5 साल मुख्यमंत्री के कार्यकाल में एक भी नक्सली के मामले में न ध्यानाकर्षण लगा, न प्रश्न लगा, न स्थगन

आया। 5 साल में एक बार भी नहीं आया। (मेजों की थपथपाहट) आपने विकास के मामले में, किसानों की उन्नति के मामले में लगातार काम किया, हम लोगों को भी अवसर मिला तो हम लोगों ने भी काम किया, वह आज मील का पत्थर साबित हो गया। आज यदि 3100 रूपए प्रति क्विंटल धान की दे रहे हैं, मन तो नहीं है लेकिन दे रहे हैं, वह हम लोगों के कारण से दे रहे हैं, अन्यथा आप लोग नहीं देते। (मेजों की थपथपाहट) कुछ काम ऐसे हुए हैं, जैसे राशन का मामला है, भले आप राशन कार्ड 5 किलो की बांट दिए हैं, लेकिन उसको 35 किलो से कम नहीं कर पा रहे हैं, भले 5 किलो वाला राशन कार्ड बंटे साल डेढ़ साल हो गया लेकिन कम नहीं कर पा रहे हैं। कुछ-कुछ काम ऐसे हुए हैं जिसको वर्तमान सरकार क्या, भविष्य में कोई भी सरकार बनेगी तो जो रेखाएं खींची है, उससे वह हट नहीं सकती। वैसे संसदीय कार्य में भी जो बात आपने कही, फिर भी हम लोग दोहराना चाहेंगे, वेल में जाने से स्वत: निलंबित हो जाना, ये जितनी बार भी हम लोग रेखांकित करें वह कम है। क्योंकि पूरी दुनिया में जहां-जहां भी संसदीय व्यवस्था है, वहां कहीं नहीं होता लेकिन इसका श्रेय आदरणीय राजेन्द्र प्रसाद शुक्ल जी और उस समय तत्कालीन संसदीय कार्य मंत्री रविन्द्र चौबे जी को जाता है, जिन्होंने ये व्यवस्था की और पूरे सदन ने बृजमोहन अग्रवाल जैसे तेज तर्रार नेता ने भी यह स्वीकार किया कि ये होना चाहिए, यह सर्व सम्मति से विधान सभा में पारित हुआ, इसमें लिए ह्रदय से मैं उन लोगों को धन्यवाद देता हूं। हमने अनेक बड़े-बड़े निर्णय किए लेकिन बहुत सारी चीजें ऐसी रही है जो हमारे निर्णय होने के बाद भी उसमें हम लोग कुछ नहीं कर पाये और यहां विधान सभा से पारित होने के बाद भी उस पर अमल नहीं कर पाये। इसमें चाहे हसदेव का मामला हो, जिसे धर्मजीत सिंह जी ने लाकर प्रस्ताव पारित करवाया। लेकिन आज किस प्रकार से हसदेव कट रहा है, हालांकि हम लोगों ने इसी पवित्र सदन में पारित किया था, उस समय डॉ. चरण दास महंत अध्यक्ष हुआ करते थे, उन्होंने पारित करवाया, लेकिन आज हसदेव कट रहा है। उसी प्रकार से आरक्षण के मामले में 27 प्रतिशत ओ.बी.सी. को आरक्षण देने का विधेयक इसी पवित्र सदन में पारित किया गया है। अधिकांश सदस्य एस.टी., एस.सी. और ओ.बी.सी. से आते हैं, लेकिन आज भी वह लागू नहीं हो पाया है। तो बहुत सारी चीजें हैं, जो नहीं हो पाये हैं। मैं उसके विस्तार में नहीं जाना चाहूंगा। लेकिन आज यहां रिकार्ड में आ जाये, इसलिए मैंने इस बात को कहा।

समय :
2:00 बजे

अध्यक्ष महोदय, यह कुछ संयोग है। वह संयोग यह है कि इस सदन में जो व्यक्ति विधान सभा अध्यक्ष रहा, वह व्यकित विधान सभा का नेता प्रतिपक्ष भी रहा। अभी वर्तमान में नेता प्रतिपक्ष डॉ. चरण दास महंत, उसके पहले वह विधान सभा अध्यक्ष थे। एक इधर धरम लाल कौशिक जी बैठे हैं, पहले अध्यक्ष बने, फिर नेता प्रतिपक्ष बने। लेकिन यह भी रिकार्ड है कि पूरे 5 साल तक नेता प्रतिपक्ष कोई नहीं बदला था, लेकिन धरमलाल कौशिक की जगह हमारे नारायण प्रसाद चंदेल जी नेता प्रतिपक्ष

बने, यह भी उदाहरण इस पवित्र सदन में है। अध्यक्ष महोदय, आपने भी रिकार्ड बना दिया। आप 15 साल तक मुख्यमंत्री रहे, उसके बाद अध्यक्ष बन गये, यह भी एक रिकार्ड है। मैं समझता हूं कि मुझे याद नहीं है कि कोई मुख्यमंत्री, विधानसभा अध्यक्ष बना हों। अगर विधान सभा अध्यक्ष बने होंगे तो मुझे जानकारी दे देंगे तो अच्छा ही लगेगा। लेकिन मुख्यमंत्री बनने के बाद विधान सभा अध्यक्ष बना हो, मैं समझता हूं कि आप पहले व्यक्ति होंगे, ऐसा मैं मानता हूं। बहुत सारी यादें हैं, इसमें बहुत सारे साथी बोलेंगे, मैं और ज्यादा ना कहते हुए हम सब मिलकर चाहे किसी भी राजनीतिक दल के हों, लेकिन मुख्य रूप से बात यही है कि छत्तीसगढ़ का विकास हो, छत्तीसगढ़ के लोगों के जीवन स्तर में सुधार हो, छत्तीसगढ़ की संस्कृति और परम्परा और ऊंचाईयों में पहुंचे, यह हम सब का संकल्प होना चाहिए, मैं इन्ही शब्दों के साथ अपनी बात समाप्त करता हूं। माननीय अध्यक्ष महोदय, आपने समय दिया, उसके लिए हृदय से धन्यवाद।

अध्यक्ष महोदय :- आज विधान सभा की अंतिम बैठक चल रही है। इस अवसर को स्मृति स्वरूप विधान सभा के अधिकारियों और कर्मचारियों का समूह छायाचित्र सेन्ट्रल हॉल के समक्ष उद्यान में है। इसलिए समूह चित्र के लिए कार्यवाही स्थगित होने के बाद सभी उपस्थित हों।

अध्यक्ष महोदय :- सभा की कार्यवाही आधे घण्टे के लिए स्थगित।

(2:03 से 2:49 बजे तक कार्यवाही स्थगित रही)

समय :
2.49 बजे

(अध्यक्ष महोदय (डॉ. रमन सिंह) पीठासीन हुए)

अध्यक्ष महोदय :- श्री धरमलाल कौशिक जी, अपना वक्तव्य दें।

श्री धरमलाल कौशिक (बिल्हा) :- माननीय अध्यक्ष महोदय, मैं सबसे पहले आज इस महत्वपूर्ण विषय के लिए आपको धन्यवाद देना चाहता हूं। छत्तीसगढ़ राज्य की स्थापना व उसके पीछे जो कारण है तथा आज हम संसदीय इतिहास में छत्तीसगढ़ में 25 सालों में हमने क्या अर्जित किया है, इस यात्रा को लेकर आपने आज एक दिन के लिए चर्चा रखा है, मैं उसके लिए आपको बधाई देना चाहता हूं। हम सभी को विदित है कि छत्तीसगढ़ राज्य पृथक से बने, इसके लिए हमारे यहां के महापुरूषों के द्वारा विभिन्न मंचों के द्वार एवं विभिन्न लोगों के द्वारा समय-समय पर इस मांग को लेकर अपनी आवाज उठाते रहे हैं। इस आवाज को उठाते-उठाते एक वातावरण तैयार हुआ कि छत्तीसगढ़ राज्य पृथक से बनना चाहिए। जब छत्तीसगढ़ राज्य पृथक हुआ तो उसके लिए लोक सभा एवं राज्य सभा में बिल पारित हुआ और मध्य प्रदेश की विधान सभा में भी इसकी चर्चा हुई। चर्चा होने के उपरांत में दिनांक 01 नवंबर, 2000 को छत्तीसगढ़ राज्य अस्तित्व में आया। मैं इसके लिए तत्कालीन प्रधानमंत्री श्री अटल बिहारी बाजपेयी जी को बहुत-बहुत बधाई एवं धन्यवाद देना चाहता हूं। (मेजों की थपथपाहट) मैं उनको

नमन करना चाहता हूं कि वे जहां भी होंगे, आज छत्तीसगढ़ की तस्वीर को देखकर, उनका आशीर्वाद हम सबको मिल रहा है। छत्तीसगढ़ के लिए चर्चा के बहुत सारे विषय आए, लेकिन छत्तीसगढ़ राज्य का तभी निर्माण हुआ, जब दिल्ली में एन.डी.ए. की सरकार रही। मैं उससे बड़ी बात बोलना चाहता हूं कि जिस समय छत्तीसगढ़ राज्य का निर्माण हो रहा था, उस समय तत्कालीन प्रधानमंत्री श्री अटल बिहारी बाजपेयी जी को भी मालूम था, एन.डी.ए. की सरकार को भी यह बात मालूम रही होगी कि यदि छत्तीसगढ़ अलग राज्य बनेगा तो उनकी पार्टी की सरकार यहां पर नहीं बनेगी। बहुमत दूसरी पार्टी की थी, लेकिन मैं उनके हृदय की विशालता को नमन करना चाहता हूं कि उन्होंने छत्तीसगढ़ राज्य को बनाया। चाहे सरकार किसी की भी बने, लेकिन छत्तीसगढ़ के लोगों के सपने को साकार करना है, यह काम तत्कालीन प्रधानमंत्री अटल बिहारी बाजपेयी जी ने किया है। (मेजों की थपथपाहट) जब छत्तीसगढ़ राज्य बन गया, तब पत्रकार लोग हम लोगों से पूछते रहे, मध्य प्रदेश विधान सभा में उस समय चर्चा हुई तो उन्होंने हम लोगों से पूछा कि आप लोग छत्तीसगढ़ जाने के लिए इतना जल्दबाजी क्यों कर रहे हैं? आपके पास बैठने की व्यवस्था नहीं है, आपके पास इंफ्रास्ट्रक्चर नहीं है। आप छत्तीसगढ़ जाकर क्या करेंगे? लेकिन हम लोगों ने कहा कि हम लोग आज ही छत्तीसगढ़ जाना चाहते हैं। हमारे पास बिल्डिंग का अभाव है, उसकी कोई दिक्कत नहीं है, हम टेंट में बैठकर छत्तीसगढ़ विधान सभा की चर्चा कर लेंगे, लेकिन हम मध्य प्रदेश से तत्काल अलग होकर छत्तीसगढ़ जायेंगे क्योंकि छत्तीसगढ़ के लोगों का सपना छत्तीसगढ़ बनने के बाद ही पूरा होगा। जब हमने जशपुर हाल में बैठकर उस विधान सभा में चर्चा की। उसके बाद आज हम यह विधान सभा में बैठे हुए हैं। यह विधान सभा की केवल चार दीवारी नहीं है, यह विधान सभा का केवल छत नहीं है, यह विधान सभा का केवल बिल्डिंग नहीं है, बल्कि मैं यह कह सकता हूं कि हम छत्तीसगढ़ के पावन मंदिर में बैठकर चर्चा कर रहे हैं और इस मंदिर में बैठकर हम लोगों ने छत्तीसगढ़ की विकास की चर्चा की है। आज 25 साल की यात्रा में हम कहां से प्रारंभ किए थे और हम कहां तक पहुंचे हैं। आज हम सबको एवं छत्तीसगढ़ की जनता को यह बात दिखाई देने लगी है। अध्यक्ष महोदय, हमारा जो पहला बजट वर्ष 2000 में आया था, वह लगभग 5,700 करोड़ रूपये का बजट था। यदि आज हम वर्ष 2025-2026 के बजट का आंकलन करेंगे तो हम 1,65,000 करोड़ रूपये का बजट पारित कर चुके हैं। उस समय किसानों की चर्चा शुरू होती थी। हमारी जो धान खरीदी है, वह 4,63,104 मीट्रिक टन थी और आपके नेतृत्व में, आपके मुख्यमंत्रित्वकाल में आपने उसको 70 लाख मीट्रिक टन पहुंचाने का काम किया था। उसके बाद क्रमश: जब भूपेश बघेल जी की सरकार आई तो उन्होंने आगे बढ़ते हुए उसको बढ़ाने का काम किया। आज विष्णुदेव जी की सरकार है और अध्यक्ष के रूप में आसंदी में विराजमान हैं, मैं बधाई देना चाहता हूँ कि छत्तीसगढ़ के धान खरीदने का रिकार्ड बनाया और 149 लाख मीट्रिक टन धान की खरीदी पूरे देश में इस छत्तीसगढ़ के मुख्यमंत्री और विधान सभा के माध्यम से संभव हुआ है । माननीय अध्यक्ष महोदय, छत्तीसगढ़ के प्रथम कार्यकाल में हम

लोग सदस्य रहे हैं और प्रतिपक्ष में रहे हैं, उस समय 3 साल की जो सरकार की कार्यशैली रही है, मैं उसमें आगे नहीं जाना चाहता हूँ, इसमें बहुत सारी बातें हैं । छत्तीसगढ़ में जब प्रथम चुनाव हुये, इसमें छत्तीसगढ़ की जनता ने, जिस पार्टी ने छत्तीसगढ़ राज्य को बनाया, जिस पार्टी के कारण छत्तीसगढ़ अस्तित्व में आया, छत्तीसगढ़ की जनता को भली-भांति मालूम था कि जिस पार्टी ने बनाया है, उसे छत्तीसगढ़ के प्रति दर्द है, इस बात को लेकर जब प्रथम चुनाव हुआ तो भारतीय जनता पार्टी को विजय मिली तथा प्रथम निर्वाचित मुख्यमंत्री के रूप में डॉ.रमन सिंह विराजमान हुये और आपके नेतृत्व में 15 साल सरकार चली है । माननीय अध्यक्ष महोदय, उस सरकार में जो महत्वपूर्ण विषय आपके बीच में आये हैं, लेकिन मैं कहना चाहता हूँ कि आप याद कीजिए कि मध्यप्रदेश के समय में एक समय ऐसा आया था, रामविचार जी यहां पर बैठे हुये हैं, सरगुजा संभाग में ऐसा विषय आया कि लोगों के पास में खाने के लिये अनाज नहीं है और भूख से उनकी मौत हो रही है, उस समय पटवा जी की सरकार थी तो यह मुद्दे के रूप में सामने आया । वहां प्रधानमंत्री जी को आमंत्रित किया गया कि छत्तीसगढ़ में भूख से मौत हुई है, लेकिन यहां मौत होने की जो बात आई, यह तो अलग बात है । यहां जो परिस्थिति बनी कि छत्तीसगढ़ में अनाज की कमी है और लोग पलायन करते हैं, ऐसा कोई प्रदेश नहीं है लखनऊ, इलाहाबाद, दिल्ली से लेकर कानपुर और काश्मीर तक लोग पेट की आग बुझाने के लिये जाते हैं, आपने उसके बाद में जो निर्णय लिया कि भूख के अभाव में किसी की मौत नहीं होगी, हम उसे चावल प्रदान करेंगे और आपने पीडीएस के सिस्टम को लागू किया ।(मेजों की थपथपाहट) आपने तो उसे लागू ही नहीं किया है, बल्कि लागू करने के बाद में उसे खाद्य सुरक्षा कानून के रूप में वर्ष 2012 में लेकर आये । आपने इसमें कहा कि आपका यह अधिकार आपसे कोई नहीं छीन सकता, हमने इसको कानून बना दिया है। आज वह अविरल धारा प्रवाहित हो रही है । सुप्रीम कोर्ट ने सराहा, यूपीए की सरकार सेंट्रल में थी, यूपीए की सरकार ने इस चावल की योजना को क्रियान्वित किया और करने के बाद में वहां पर यह तय हुआ कि प्रति व्यक्ति 5 किलो चावल उनको भी दिया जायेगा, 7 किलो चावल दिया जायेगा और इसे यूपीए की सरकार ने क्रियान्वयन किया । पीडीएस सिस्टम में पूरे हिन्दुस्तान में कोई मॉडल बना तो आपके नेतृत्व में हमारा छत्तीसगढ़ मॉडल बना, जिसे बाद में दूसरे प्रदेश में भी इसे एडॉप्ट करने का काम किया गया है । माननीय अध्यक्ष महोदय, आपके कार्यकाल में बहुत सारी चीजों को इस विधान सभा के माध्यम से पारित किया गया, उसमें हमारे छत्तीसगढ़ चिकित्सा सेवा संस्थान क्षति या हानि रोकथाम विधेयक, 2010 भी प्रमुख है । छत्तीसगढ़ राजभाषा की बहुत सारी चर्चा हो रही थी, क्या आपने छत्तीसगढ़ राज्य बनाया, लेकिन बनाने के बाद में छत्तीसगढ़ी भाषा नहीं बन सकी, अब छत्तीसगढ़ी भाषा बननी चाहिये । माननीय अध्यक्ष महोदय, इसी विधान सभा के अंतर्गत में जब आप वहां पर मुख्यमंत्री के रूप में बैठते थे, तब उस समय छत्तीसगढ़ी राजभाषा यहां पारित किया गया और छत्तीसगढ़ी राजभाषा को केवल पारित नहीं किया गया, बल्कि कामकाज की भाषा बनाया गया । उस

दिन के बाद में आज हमारे विधान सभा में सदस्य हिन्दी में अपनी बात रख सकते हैं, छत्तीसगढ़ी में अपनी बात रख सकते हैं, उसका अनुवाद यहां पर तय किया गया है और आसानी के साथ में कोई भी बात छत्तीसगढ़ में रख सकते हैं । इस छत्तीसगढ़ को सम्मान देने का काम जब आप उस समय मुख्यमंत्री थे, तब आपके कार्यकाल में इसे पारित किया गया था । लोक सेवा गारंटी अधिनियम, 2010 जवाबदारी के साथ, पारदर्शिता के साथ में काम करना, कामधेनू विश्वविद्यालय विधेयक, 2011 यह जो विधेयक पारित किया गया। इसके साथ ही अंतर्राष्ट्रीय सूचना संस्थान् विधेयक, 2013, कौशल विकास में जो लड़का प्रशिक्षण प्राप्त करना चाहता है, वह आवेदन देगा और उसको प्रशिक्षण मिलेगा, यह कौशल विकास का अधिकार विधेयक, 2013 आपके नेतृत्व में ही पारित किया गया।

मानेनीय अध्यक्ष महोदय, आज हमारे प्रदेश में 27 लाईवलीहुड कालेज चल रहे हैं । वहां लाखों से अधिक विद्यार्थी प्रशिक्षण प्राप्त करके निकल गए हैं और प्रशिक्षण प्राप्त करने के बाद वे अपना कामकाज कर रहे हैं । केवल सरकारी नौकरी ही नहीं, हमारे रोजगार का साधन हो, बल्कि सरकारी नौकरी के अलावा हम प्राईवेट में दूसरे को कैसे रोजगार दे सकते हैं, हम मालिक बनकर कैसे कार्य कर सकते हैं, यह जो विधेयक पारित किया गया है, निश्चित रूप से आज लोगों को उसका लाभ दिखाई दे रहा है।

माननीय अध्यक्ष महोदय, यदि हम छत्तीसगढ़ के 25 साल की बात करें तो छत्तीसगढ़ विधान सभा में अभी तक 3 राष्ट्रपति जी का उद्बोधन हम सबको प्राप्त हुआ है । अजय भाई ने कलाम साहब की चर्चा की । दूसरे राष्ट्रपति जी की चर्चा मैं कर रहा हूं। जब उस समय मैं विधान सभा का अध्यक्ष था तो हम लोगों ने संसद का सेन्ट्रल हॉल सुना था । अध्यक्ष महोदय, हमने उसी तर्ज पर आपके नेतृत्व में इस विधान सभा में सेन्ट्रल हॉल का निर्माण किया और सेन्ट्रल हॉल बनाने के बाद में तत्कालीन राष्ट्रपति प्रतिभा ताई को हमने आमंत्रित किया और फिर उस सेन्ट्रल हॉल का उद्घाटन किया ।

अध्यक्ष महोदय :- एक मिनट । अभी तक हमारे पास कुल 24 वक्ता हैं, जिनको आज सदन में अपनी बात रखनी है । इसलिए मैं सबसे आग्रह करूंगा कि अपनी बात को 10-10 मिनट में या और संक्षिप्त में रखेंगे तो सभी को बोलने का अवसर मिलेगा । आप जारी रखिए ।

समय :-
3:03 बजे **(सभापति महोदय (श्री प्रबोध मिंज) पीठासीन हुए)**

श्री धरम लाल कौशिक :- सभापति महोदय, यहां राष्ट्रपति जी का आगमन हुआ और सेन्ट्रल हॉल का उद्घाटन हुआ और यहीं आसंदी से हम सबको राष्ट्रपति जी का संबोधन प्राप्त हुआ । जब हम संसदीय इतिहास की चर्चा करते हैं, मैं अपनी बात महत्वपूर्ण विषय की ओर ले जाना चाहता हूं कि जब छत्तीसगढ़ में उस समय हम लोगों ने 2010 में चतुर्थ इंडिया एवं एशिया रीजन राष्ट्रकुल संसदीय संघ

का सम्मेलन का आयोजन यहां पर किया और इस आयोजन में इंडिया रीजन के सभी विधान सभा के अध्यक्ष, उपाध्यक्ष और सचिव आये । इसके साथ में हमारे एशिया रीजन में पाकिस्तान, बांग्लादेश, श्रीलंका, बर्मा और उसके साथ में लंदन मुख्यालय से सीपीए के जनरल सेक्रेटरी का आगमन इसी विधान सभा में हुआ । उस समय डॉ. रमन सिंह जी मुख्यमंत्री और रविन्द्र चौबे जी नेता प्रतिपक्ष थे । जब सीपीए का कांफ्रेंस होता है तो अलग-अलग राष्ट्रों को पत्र लिखा जाता है, उसमें अंतर्राष्ट्रीय स्तर का मसौदा तैयार होता है, विषय तैयार होते हैं और तैयार होने के बाद में उसमें चर्चा होती है, उसका चयन किया जाता है, लेकिन जब यहां पर चर्चा का जो विषय आया तो छत्तीसगढ़ की ओर से हम लोगों ने प्रस्ताव भेजा था कि छत्तीसगढ़ में जब राष्ट्रकुल संसदीय सम्मेलन सम्पन्न हो रहा है तो हम लोगों ने दो प्रस्ताव भेजे । उसमें हमारे दो अतिरिक्त प्रतिनिधि शामिल हों, यह हम लोगों ने प्रस्ताव भेजा कि हमारे दो प्रतिनिधि भाग लेंगे । तत्कालीन मुख्यमंत्री और आज के विधान सभा अध्यक्ष डॉ. रमन सिंह जी, उस समय के नेता प्रतिपक्ष रविन्द्र चौबे जी और नारायण चंदेल जी उस समय उपाध्यक्ष थे, दो सदस्यों के अलावा दो लोगों को और शामिल किया जाये । लंदन मुख्यालय से उसकी स्वीकृति मिली और स्वीकृति मिलने के बाद जब यहां पर चर्चा का विषय आया तो छत्तीसगढ़ से हमने जो प्रस्ताव भेजा था, जो हमारी चर्चा का विषय था, वह था Terrorism and Naxalism. Threat to democracy need for joint efforts in the region। हमारा दूसरा विषय था, प्लीनरी सेशन, Food security and cooperation at regional levels role and responsibility of legislation. उसमें विधायकों का क्या दायित्व हो सकता है? विधायकों के द्वारा किस प्रकार से food security act को आगे बढ़ा सकते हैं ? और इन दोनों विषयों पर यहां महत्वपूर्ण चर्चा हुई। उस समय लोक सभा की स्पीकर मीरा कुमार जी थीं, वह स्वयं उपस्थित रही। राज्य सभा के उप सभापति जी यहां स्वयं उपस्थित रहे। मैं कह सकता हूं कि छत्तीसगढ़ बनने के बाद इस हाउस में अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन और सी.पी.ए. के राष्ट्रकुल संबंधी सम्मेलन में हमारे राज्य के विषय की चर्चा अंतर्राष्ट्रीय स्तर के मंच में हुई तो वह इसी छत्तीसगढ़ की विधान सभा में हुई है, मैं इसके लिये सभी को बधाई देना चाहता हूं।

माननीय सभापति महोदय, हम छत्तीसगढ़ की विधान सभा में अलग-अलग विषयों को लेकर चर्चा करते हैं। हमें इस बात का सुकून है क्योंकि आज भी हम देश की बहुत सारी विधान सभा को देख रहे हैं कि कहीं पर एक दिन की विधान सभा होती है तो कहीं पर 3 दिनों की विधान सभा होती है। बजट कैसे पारित करते हैं, उसको भी हम लोग देख रहे हैं लेकिन मुझे इस बात को कहने में प्रसन्नता है कि छत्तीसगढ़ की विधान सभा में गिलोटिन नहीं बल्कि एक-एक विभाग पर चर्चा होती है और चर्चा के बाद उसको बजट के रूप में पारित किया जाता है। हमारे तीन सत्र हैं, शीतकालीन, बजट और मानसून सत्र। एक बड़ी विधान सभा होती है जहां 200 से ज्यादा सदस्य होते हैं, एक छोटी विधान सभा होती है जहां 50-60 सदस्य होते हैं और हम मध्य स्तर की विधान सभा में आते हैं जहां 60 से ज्यादा और

100-120 से कम की हमारी संख्या है। लेकिन ऐसी विधान सभा में होते हुए भी हमारे यहां के जो महत्वपूर्ण निर्णय हुए हैं, जो हमने नियम बनाया है, जिसका पालन यहां के सदस्य स्वयं करते हैं, चाहे वह सत्ता पक्ष के हो, चाहे प्रतिपक्ष के हो। केवल इतना ही नहीं, मुझे कहने में प्रसन्नता है कि जब प्रतिभा देवी सिंह पाटिल जी यहां पर आयी हुई थीं, तब इस बात का हम लोगों ने उल्लेख किया था। उसके बाद जब महाराष्ट्र में विधान सभा का प्लेटिनम ईयर मनाया जा रहा था तो उसमें हमको As a Speaker आमंत्रित किया गया था, मैं उस कार्यक्रम में गया था और पूरे देश भर के स्पीकर उस कांफ्रेंस में आये हुये थे। वहां पर राष्ट्रपति जी को भी आमंत्रित किया गया था। वहां मुझे इस बात की खुशी हुई कि राष्ट्रपति जी ने महाराष्ट्र में अपने भाषण में छत्तीसगढ़ विधान सभा के नियम और प्रक्रिया की चर्चा की जिसमें गर्भगृह में आ जाने पर स्वमेव निलंबन होने की प्रक्रिया है। इस बात का सौभाग्य छत्तीसगढ़ की विधान सभा को मिला है। अन्य मंचों पर राष्ट्रपति के द्वारा छत्तीसगढ़ की चर्चा हो, यह छत्तीगसढ़ की विधान सभा की ऊंचाइयों को बढ़ाने वाला काम हमारे अध्यक्षों और यहां के सदस्यों द्वारा की गयी है, मैं इसके लिये बधाई देना चाहता हूं।

माननीय सभापति महोदय, हम लोगों ने एक बार यहां क्रिकेट का आयोजन किया था, जिसमें अध्यक्ष एकादश और सी.एम. एकादश के नाम से टीम बनी थी। हमारे सभी सदस्यों के द्वारा मिलकर यहां पर क्रिकेट खेला गया। एक बहुत अच्छे वातावरण में क्रिकेट का आयोजन हुआ। हमको प्रजापिता ब्रम्हकुमारी ईश्वरीय विश्वविद्यालय, माउण्ट आबू का निमंत्रण मिला कि वहां आना है। मैं यदि पूरे देश के संसदीय इतिहास की बात करूं तो छत्तीसगढ़ की विधान सभा है, जहां मुख्यमंत्री जी से लेकर नेता प्रतिपक्ष और मंत्री से लेकर विधायक तक, हम सब जाकर तीन दिनों तक वहां योग शिविर में भाग लिये और वहां शामिल हुए। यहां से हरिद्वार के कुंभ में गये और हरिद्वार के कुंभ में जाकर हमने केवल कुंभ स्नान ही नहीं किया, हमने छत्तीसगढ़ प्रदेश की प्रगति के लिए आस्था और विश्वास की डुबकी लगायी। जब हम सभी लोग लौटकर दिल्ली आये तब उस समय के तात्कालीन प्रधानमंत्री से मिले, हमने राष्ट्रपति जी से मुलाकात की। मेरा कहने का आशय यह है कि कहीं विचारों में मतभेद हो सकता है, लेकिन छत्तीसगढ़ की विधान सभा में मनभेद का कहीं स्थान नहीं है। यह छत्तीसगढ़ की विधान सभा की जो गहराईयां और ऊचाईयां हैं, जिसमें निरंतर पक्ष और प्रतिपक्ष का एक ही उद्देश्य है कि छत्तीसगढ़ का विकास हो और विकास के दृष्टिकोण से छत्तीसगढ़ प्रदेश नई ऊँचाईयों को प्राप्त करें। उस दृष्टिकोण से हमें छत्तीसगढ़ प्रदेश को आगे ले जाना है। मुझे इस बात की खुशी है। हम यह याद करें कि छत्तीसगढ़ प्रदेश बनने के पहले छत्तीसगढ़ की क्या स्थिति रही। मैं कभी-कभी गांवों में यह बात मजाक में बोलता हूँ कि आप लोग थोड़ा छत्तीसगढ़ को टटोलना शुरू करिये। छत्तीसगढ़ प्रदेश बनने के पहले जिनके घरों में सायकल नहीं थी, मैं केवल सायकल की बात कर रहा हूँ। यह वही विधान सभा है जहां पर हमारी नीतियां लायी गयीं, उसके बाद चाहे किसानों, मजदूरों, युवाओं, महिलाओं के लिए हो, जो इन 25 सालों

में काम किये गये हैं तो उस समय जिनके यहां खाने के लिए अनाज, सायकल नहीं था, आज उस गांव में उनके घर के सामने चार पहिया गाड़ी खड़ी हुई है। यह छत्तीसगढ़ प्रदेश के विकास की गाथा को गा रही है। छत्तीसगढ़ प्रदेश बनने की सार्थकता क्या है। अगर हम छत्तीसगढ़ प्रदेश को अलग नहीं करते, यह हो पाता या नहीं हो पाता, यह संभव होता या नहीं होता, मुझे यह नहीं मालूम है। लेकिन आज हम सबको छत्तीसगढ़ प्रदेश बनने की जो सार्थकता दिखायी दे रही है। इस छत्तीसगढ़ में निर्माण से लेकर, आज विष्णु देव साय जी के नेतृत्व में जो हमारी सरकार चल रही है। विधान सभा में अध्यक्ष के रूप में माननीय डॉ. रमन सिंह जी आसंदी पर विराजमान हैं। मैं यह कहना चाहता हूँ कि आज जो भूपेश बघेल जी बोल रहे थे कि आपने हमारे कारण किसानों को 3100/- रूपये धान का समर्थन मूल्य दे रहे हैं। हम इनके कारण किसानों को यह राशि नहीं दे रहे हैं। छत्तीसगढ़ में हमारी हमेशा से कोई प्राथमिकता रही है तो हमारे किसान, हमारे अन्नदाता प्राथमिकता में रहे हैं। इसलिए मैंने इस बात का उल्लेख किया कि हमने धान की खरीदी 5 लाख मीट्रिक टन से शुरूआत की थी और आज हम कहां पर खड़े हैं । उस समय जब डॉ. रमन सिंह जी मुख्यमंत्री थे तो उनके कार्यकाल में 70 लाख मेट्रिक टन धान की खरीदी हुई । आज रिकॉर्ड तोड़ दिया गया है। मुझे ऐसा लगता है कि इस बार भी जो हमारी धान खरीदी होगी। हम बयान पढ़ते रहते हैं कि छत्तीसगढ़ के किसानों की धान खरीदी की व्यवस्था नहीं की गई है। कल मैं दो-तीन सोसायटियों में गया था।

श्री रामकुमार यादव :- माननीय सभापति महोदय, आन्दोलन करत हे। महोदय जी मेरी बात सुनिये। अभी सोसायटी में एको बोरा नहीं तौलाए हे।

श्री धरमलाल कौशिक :- माननीय सभापति महोदय, मैंने दो-तीन सोसायटियों में जाकर देखा कि वहां धान खरीदी की व्यवस्था है या नहीं ?

श्रीमती संगीता सिन्हा :- माननीय सभापति महोदय, अभी धान खरीदी 15 नवम्बर से चलना था, लेकिन अभी तक ऑपरेटर लोगों के हड़ताल के कारण शुरू नहीं हुआ है।

श्री रामकुमार यादव :- ओति पूरा लाठी चलत हे।

श्रीमती संगीता सिन्हा :- उसको सुचारू रूप से चलाने के लिए और छत्तीसगढ़ को आगे बढ़ाने के लिए वह बहुत आवश्यक है।

श्री रामकुमार यादव :- ठीक हे। लेकिन ए मन लबारी पर लबारी बोलत हे।

सभापति महोदय :- संगीता जी, आप लोगों के बोलने की बारी आएगी तब उस समय आप लोग अपने वक्तव्य में अपनी बात रखियेगा।

श्री रामकुमार यादव :- माननीय सभापति महोदय, सोसायटी में धान तौलाए नइ हे, तेखर बर में सुरता करात हौं।

श्री धरमलाल कौशिक :- जब छत्तीसगढ़ प्रदेश नइ बने रहिस हे तो रामकुमार तैं ओ समय छेरी चरावत रहेस। ए छत्तीसगढ़ प्रदेश नइ बनतिस ते पता नहीं तैं विधायक बनतेस या नहीं बनतेस। छत्तीसगढ़ बने के ए तोरो सार्थकता हे कि छेरी चरात-चरात तैं आज विधायक बन गेस।

श्री रामकुमार यादव :- आज मैं आदमी चराथौं। मैं छेरी, बोकरा सब चराथौं, आदमी ला घलो चराथौं।

श्री धरमलाल कौशिक :- माननीय सभापति महोदय, आज हम छत्तीसगढ़ प्रदेश की जो बात कर रहे हैं। मैंने कहा कि मुख्यमंत्री विष्णु देव साय जी के नेतृत्व में छत्तीसगढ़ प्रदेश का विकास हो रहा है। आज ग्लोबल क्षेत्र में हमारे छत्तीसगढ़ प्रदेश का नाम है। यहां पर लगातार इवेस्टर विजिट कर रहे हैं और उसके साथ में हमारा छत्तीसगढ़ नये कलेवर के साथ आगे बढ़ रहा है। चाहे शिक्षा के क्षेत्र में हों। मेरे पास सारा रिकॉर्ड है मैं उसे अलग से बोलना नहीं चाह रहा हूँ। जब छत्तीसगढ़ प्रदेश बना तो एक, दो मेडिकल कॉलेज था । डॉ. रमन सिंह जी के मुख्यमंत्री बनने के बाद, आज हमारे छत्तीसगढ़ में 14-15 मेडिकल कॉलेज स्थापित हो गये हैं। जहां पहले सीटों की संख्या 100 थी तब हमारे केवल 100 डॉक्टर निकलते थे आज हमारे डॉक्टरों की संख्या 2250 से ऊपर हो गई है। यह हमारा छत्तीसगढ़ बढ़ रहा है। हमने छत्तीसगढ़ प्रदेश में आई.एम. की बात की, हमने आई.टी. की बात की, हमारे यहां पर एम्स स्थापित है। इसके साथ में जो सड़कों की कनेक्टिविटी है, उस समय हमारी क्या स्थिति थी, वह रिकॉर्ड में है। इन्फ्रास्ट्रक्चर में हम कितना आगे बढ़े हैं, आज चारो तरफ चाहे सड़क, बिजली हो, पंप का कनेक्शन हो, आजादी के बाद में कांग्रेस की गवर्नमेंट में जब छत्तीसगढ़ राज्य का निर्माण हुआ तो 73 हजार पंप के कनेक्शन थे। आज 5 लाख 62 हजार से ऊपर पंप के कनेक्शन किसानों को दिये हैं। उस समय हमारी 23 प्रतिशत सिंचाई की क्षमता थी, आज 37 प्रतिशत से ऊपर सिंचाई की क्षमता को ले गये हैं। किसानों में जो खुशहाली दिखाई दे रही है, किसानों की खुशहाली में सरकार की जो भूमिका है, पंप के कनेक्शन में रिबेट, सब्सिडी से लेकर के अन्य चीजों में जो बढ़ावा देने का काम आज जो छत्तीसगढ़ में हो रहा है, निश्चित रूप से छत्तीसगढ़ राज्य बनने का हम सबको उसका सफलीभूत दिखाई दे रहा है कि छत्तीसगढ़ बनाने के पीछे उद्देश्य क्या था। माननीय सभापति महोदय, छत्तीसगढ़ राज्य बनने के बाद आज हम 2025 में हैं। हम पहले मध्यप्रदेश की विधान सभा में रहे, उसके बाद राजकुमार कालेज में आये और उसके बाद इस विधान सभा में जहां हम चर्चा कर रहे हैं। इसके बाद में अभी हमारे प्रधानमंत्री जी के द्वारा एक नये भव्य विधान सभा भवन का नया रायपुर में उनके करकमलों से उद्घाटन हुआ है। 14 दिसंबर को छत्तीसगढ़ का प्रथम सत्र राजकुमार कालेज में शुरू हुआ था और आगामी सत्र नये हमारे विधान सभा भवन में हम 14 दिसंबर को रविवार के दिन उस नये इमारत में ले करके जायेंगे और आगे की हमारी यात्रा उस नये भवन से प्रारंभ होगी। वह भवन केवल भवन नहीं है, बल्कि उसके प्राकृतिक सौंदर्य को देखा गया है, सोलर सिस्टम को देखा गया है, सारी व्यवस्था को देखा गया है। आधुनिक

टेक्नालाजी का हम विधान सभा में कितना उपयोग कर सकते हैं। उसके माध्यम से हम अभी तो प्रश्न लगाते हैं, लेकिन प्रश्न लगाने के अलावा हमारी विधान सभा की जो कार्यवाहियां हैं, हम डिजिटलीकरण में उसमें कितना आगे बढ़ सकते हैं, उससे साधन संपन्न नये भवन का आज के युग में निर्माण हुआ है और आज के युग के अनुसार से उस विधान सभा भवन को बनाया गया है। जिससे हमारी ये यात्रा अविरल रूप से आगे बढ़े जो छत्तीसगढ़ निर्माण के पीछे जो उद्देश्य था, वह छत्तीसगढ़ की पूरी परिकल्पना इस भवन में बैठ करके 25 साल में हम लोगों ने खींची है। इनमें सभी का योगदान रहा है जो मुख्यमंत्री बने हैं, जो विधान सभा के अध्यक्ष, नेता प्रतिपक्ष हुए हैं। आज यदि मैं कहूं कि उस समय के बहुत ही कम विधायक यहां पर विराजमान हैं जो प्रथम विधान सभा के सदस्य रहे हैं। लेकिन इस विधान सभा में आने के बाद में जिनको जो भी अवसर मिला, अपना योगदान सब सुनिश्चित किये हैं। हम सबका उद्देश्य पक्ष, प्रतिपक्ष, सत्तापक्ष हो, इस छत्तीसगढ़ को नई ऊंचाईयों में ले जाना और छत्तीसगढ़ की जनता की सुख समृद्धि और आर्थिक प्रगति के साथ में हमारा छत्तीसगढ़ केवल उन 3 प्रदेशों के साथ के साथ में नहीं, बल्कि हिन्दुस्तान के विकसित प्रदेशों के साथ में उसके समकक्ष खड़ा हुआ आज दिखाई दे रहा है। मैं इन सारे लोगों को जिनका योगदान रहा है, जो भी हमारे विधान सभा के अध्यक्ष रहे हैं, मैं सबको बधाई देते हुए और आज के इस आयोजन के लिये विशेष रूप से मुख्यमंत्री जी, नेता प्रतिपक्ष जी का और विधान सभा अध्यक्ष जी का आभार व्यक्त करते हुए मैं अपनी बात को समाप्त करता हूं। जय हिन्द, जय भारत, जय छत्तीसगढ़।

श्री लखेश्वर बघेल (बस्तर) :- माननीन सभापति महोदय, सबसे पहले विधान सभा अध्यक्ष जी को और विधान सभा सचिवालय को बहुत-बहुत धन्यवाद देता हूं कि ऐसे विशेष आयोजन करके आपने विधान सभा का इतिहास रचने में कभी कमी नहीं करते हैं। हमारे बस्तर के लिये छत्तीसगढ़ विधान सभा का जो इतिहास रहा है, महत्वपूर्ण विधेयक पाए हुए, महत्वपूर्ण लोगों का, विशिष्ट अतिथियों का आगमन हुआ है। सबसे बडी बात यह है कि आज रजत जयंती वर्ष और स्थापना दिवस मना रहे हैं और जहां तक मुझे जानकारी यह है कि यहां जितने बैठे हैं, हम लोगों में से लगातार 25 वर्ष कोई भी कार्यकाल हम लोग पूरा नहीं कर पाये हैं । जैसे मोहले जी, अजय जी हैं और इनका लंबे समय तक रहा, विधानसभा-लोकसभा लेकिन इस विधानसभा में 25 साल उनका भी नहीं रहा लेकिन जो 25 साल के विधायकगण रहे हैं । एक तो षड़यंत्रपूर्वक उच्च सदन चले गये और हमारे कांग्रेस दल के एक विधायक को भी षड़यंत्रपूर्वक जेल में अंदर डाल दिये तो कम से कम इस रजत जयंती के कार्यकाल में, इस पवित्र सदन में उनको लाकर कम से कम एक दिन के लिये यहां बैठाकर सम्मान देते तो बहुत अच्छा रहता, यह मेरी व्यक्तिगत सोच है तो यह सब कमियां रहीं कि हम लोग रजत जयंती मना रहे हैं, स्थापना दिवस मना रहे हैं और हमारे भाई लोग जेल में हैं, यह बड़े दुख की बात है । यह मेरी व्यक्तिगत पीड़ा है । ऐसा विशेष कौन सा, हमारे सदन का ऐसा कौन सा अपराध करके गये हैं, 376-

302 ऐसी सामान्य प्रक्रिया में वह गये हैं । प्रक्रिया जांच में है लेकिन एक दिन के लिये उनको लाना था, यह मेरा सदन से निवेदन है ।

श्री रामकुमार यादव :- भैया, ओ गरीब रिहिस हे तेकर बर हे ।

श्री लखेश्वर बघेल :- माननीय सभापति महोदय, इस सदन में, जैसा मैंने कहा कि यहां 2-3 माननीय राष्ट्रपति आये हैं । इन 25 सालों के कार्यकाल में विशिष्ट अतिथिगण आये और हमें बहुत सीखने-समझने का मौका मिला । इस सदन में महत्वपूर्ण विधेयक भी लाये गये, चाहे प्रथम मुख्यमंत्री के कार्यकाल में हो, चूंकि सबसे लंबा डॉक्टर साहब का 3 कार्यकाल रहा है । उस बीच में बहुत ही अच्छा रहा और फिर बघेल जी का कार्यकाल रहा फिर अभी वर्तमान में फिर विष्णुदेव साय जी का कार्यकाल है । इस विषय में हमारे छत्तीसगढ़ को जितना समृद्धशाली होना था, हम लोग बोलते जरूर हैं, लेकिन हमारे जो बुजुर्ग, हमारे पूर्व नेता, जो छत्तीसगढ़ के लिये चाहते थे कि ऐसा होना चाहिए लेकिन इन 25 सालों में ऐसा नहीं हुआ । हमने छत्तीसगढ़ में क्या किया है ? सब-कुछ किया लेकिन कर्ज में डाला, 1 लाख हजार करोड़ से ज्यादा कर्ज हो गया । इसको भी पब्लिक को बताना चाहिए कि हम लोगों ने इन 25 सालों में क्या किया ? यह नेता लोग बैठे हैं, हम लोगों ने ही किया है न। हमने कर्ज में डाला, हम समृद्धशाली बोलते हैं । हमारे पास खनिज सम्पदा है, वन सम्पदा है, सब चीजों में संपूर्ण है उसके बावजूद इतना कर्ज होना और आज भी गांव में बुनियादी सुविधायें नहीं हैं । इस चीज को भी हमारे इस 25 साल के कार्यकाल में जानना चाहिए । हमारे बहुत से पुराने सदस्य जैसे वह विधेयक की बात हो, हमारी परम्परा, नीति-रीति इस पवित्र सदन द्वारा की गयी है उस बारे में सब बातें आयीं हैं। मुझे यही मुख्य बात कहनी थी । माननीय सभापति महोदय, ज्यादा नहीं कहते हुए आपने मुझे बोलने का मौका दिया इसके लिये आपको बहुत-बहुत धन्यवाद ।

श्री धर्मजीत सिंह (तखतपुर) :- माननीय सभापति महोदय, छत्तीसगढ़ का रजत जयंती वर्ष है और मैं इन 25 वर्षों की संसदीय यात्रा के संबंध में अपनी बात कहने के लिये प्रस्तुत हुआ हूं ।

माननीय सभापति महोदय, श्री अजय चंद्राकर जी ने पूरा छत्तीसगढ़ भाषा, छत्तीसगढ़ बनने का जो आंदोलन वगैरह-वगैरह और धरमलाल कौशिक जी, दोनों ने ही लगभग बता दिया है । मैं उसको बिल्कुल रिपीट नहीं करूंगा । माननीय सभापति महोदय, राजनीति में रूचि रखने वाले लोगों को इस प्रदेश की 3 करोड़ जनता में अगर आप थर्मामीटर डालेंगे तो सबका थर्मामीटर बोलेगा विधायक, विधायक, विधायक बन जाउं और उसमें से 90 चुनकर के फिर यहां आते हैं और यह कोई बुरी बात भी नहीं है । हम तो छत्तीसगढ़ वाले विधायक तक ही सोचते हैं, उसके बाद तो फिर किस्मत का खेल रहता है । कौन दिल्ली जायेगा, कौन मुख्यमंत्री बनेगा । कौन मंत्री बनेगा, कौन क्या होगा ? तो भगवान की कृपा से वर्ष 1998 में पहली बार विधायक बनने का सौभाग्य मुझे भी प्राप्त हुआ और मध्यप्रदेश के नए विधान सभा भवन में जाकर बैठकर वहां पर काम देखने, सुनने, समझने और बड़े-बड़े लोगों के संग बैठने

का अवसर मिला था। वहां राजा दिग्विजय सिंह जी मुख्यमंत्री थे। सुंदरलाल पटवा जी प्रतिपक्ष में थे। जमुना देवी उस वक्त की बहुत तेज तर्राट महिला मंत्री थी। हमारे अजय नारायण मुशरान जी, उनका तो मेरे को विशेष रूप से अनुभव है कि उन्होंने मुझको क्या कहा था। चौबे जी जानते हैं, वह भी थे। पंडित श्यामाचरण शुक्ल थे, बाबूलाल गौर थे, कृष्णपाल सिंह भी थे। ऐसे बड़े-बड़े नेताओं के आगे में, उस सदन में हम लोगों को उनके साथ बैठने का अवसर मिला। लेकिन सभापति महोदय, विधान सभा की यह इमारत सिर्फ इमारत नहीं है, बल्कि इसमें इतनी ऊर्जा है कि गूंगे को भी वाणी दे देती है। अध्यक्ष महोदय, इस विधान सभा में इतनी ताकत है कि जो असहाय और निःशक्त है, उसको भी चलने की ताकत यह विधान सभा देती है। सभापति महोदय, जिसका दिल भी निष्ठुर होगा, उसको जनता का दर्द बोलने के लिए मजबूर करने वाला यह विधान सभा है और इस विधान सभा को हम नतमस्तक होकर प्रणाम करते हैं। हम सौभाग्यशाली लोगों में से हैं। जब मध्यप्रदेश में पहली बार बनकर गए तो श्रीनिवास तिवारी जी जैसे जबरदस्त तपस्वी और योद्धा और जानकार विधान सभा के अध्यक्ष थे। सफेद शेर जिनको बोला जाता था। मुझे एक साल विधायक बने हुआ था और उन्होंने सभापति तालिका में मेरा नाम मध्यप्रदेश की विधान सभा में डाला और 320 विधान सभा के सदस्यों के बीच में उस कुर्सी में बैठने का मध्यप्रदेश की कुर्सी में बैठने का सौभाग्य प्राप्त हुआ। (मेजों की थपथपाहट) सभापति महोदय, जब मैं पहली बार उस कुर्सी में गया तो मेरे पैर नीचे से कांप रहे थे क्योंकि मैं सामने दिग्विजय सिंह को देखता था तो बाईं तरफ सुदर्शन लाल पटवा जी को देखता था तो राहुल सिंह थे तो अजय नारायण मुशरान जैसे बड़े-बड़े नेता और एक वह बिना कपड़े वाला भी विधायक था। क्या नाम है, वह चौबे जी जानेंगे, वे रीवा तरफ के थे। कितना बड़ा विश्वास, श्रीनिवास तिवारी जी ने किया था।

श्री अजय चन्द्राकर :- वे बिना कपड़े वाले नहीं थे भैया, नीचे कपड़ा था। (हंसी)

श्री धर्मजीत सिंह :- हां, माने ऊपर नहीं था, नीचे था। (हंसी) सभापति महोदय, दूसरी घटना मैं बता रहा हूं कि मैं बिलासपुर में था। उस जमाने में टेलीफोन वाला था तो एक फोन आया कि आपको भोपाल आना है और वीरेन्द्र तिवारी जी से मिलना है। मैं श्री वीरेन्द्र तिवारी जी से मिला। वह मेरे को दिग्विजय सिंह जी के पास ले गए। उन्होंने कहा कि जो अभी राज्यपाल का अभिभाषण होगा, उसमें आपको कृतज्ञता ज्ञापन पेश करना है। मैंने कहा कि कर देंगे साहब। बोले जानते हो कि क्या होता है? मैंने कहा कि नहीं जानते साहब। तो बोले आपको सब समझाएंगे, बताएंगे। रविन्द्र चौबे जी ने भी हमारा उस वक्त मार्गदर्शन किया था। सभापति महोदय, मैंने उसके लिए दो-तीन दिन तैयारी किया कि इतने बड़े-बड़े लोगों के आगे में बोलना है और 1 घंटे 25 मिनट का कृतज्ञता ज्ञापन का मैंने प्रस्ताव दिया और जब प्रस्ताव पेश करके कार्यवाही स्थगित हुई तो श्री दिग्विजय सिंह जी मुझे हाथ पकड़ कर, पीठ थपथपा कर, अपने हाथ में हाथ डालकर बाहर ले गए। बहुत अच्छा बोले। मेरा हौसला बढ़ाया और जैसे ही हम दोनों बाहर निकले तो श्रीदेवी, बोनी कपूर, अनिल कपूर सबके संग मिला कर मेरे को चाय पीने के लिए

ले गए। यह प्रोत्साहन होता है। उसी विधान सभा में श्री रविंद्र चौबे जी ने जो वरिष्ठ विधायक तो थे ही, मंत्री भी थे, उन्होंने मुझको अपने कमरे में ले जाकर कहा कि धर्मजीत भैया एक बार विधायक कोई भी बन सकता है, टिकट मिलना कठिन है, लेकिन चुनाव जीतना बहुत सरल होता है। लेकिन दूसरी बार टिकट मिलना सरल होता है और चुनाव जीतना कठिन होता है। वह हमारे गुरुजी हमको गुरु मंत्र दिए हैं और बोले, दिमाग को सातवें आसमान में नहीं रखकर नीचे रखिए।

श्री अजय चन्द्राकर :- माननीय सभापति जी, उस गुरु मंत्र का प्रभाव माननीय धर्मजीत जी के ऊपर ऐसा हुआ कि तीन अलग-अलग विचारधारा से चुनकर आये और एकमात्र सदस्य हैं। तीन अलग-अलग विचाराधाराओं से चुनकर आये हैं।

श्री धर्मजीत सिंह :- और अलग-अलग क्षेत्र से।

श्री अजय चंद्राकर :- हां, अलग-अलग क्षेत्र से आये हैं। वह यह काबिलियत वाले आदमी हैं।

श्री धर्मजीत सिंह :- यदि गुरू की बात मानोगे तो सफलता 100 प्रतिशत मिलती है।

श्री रामकुमार यादव :- अउ उहु मा मंत्री नहीं बनात हे। ओतको में मंत्री नहीं बनात हे।

श्रीमती संगीता सिन्हा :- महोदय जी, आप मंत्र को बताइये।

श्री धर्मजीत सिंह :- मैंने मंत्र बताया है। क्या आपने नहीं सुना? आप तो उस मंत्र में पास हो गई हैं। पहली बार टिकट मिलना कठिन, जीतना सरल, दूसरी बार टिकट मिलना सरल, जीतना कठिन। आप तो दोनों में पास हो गई हैं।

श्री अजय चंद्राकर :- वह किसका टिकट कटवाकर दो बार विधायक बनी हैं?

श्री धर्मजीत सिंह :- अब सिन्हा जी का ही टिकट कटवाई हैं, लेकिन कटवाई तो हैं। (हंसी) आदरणीय सभापति महोदय, मध्य प्रदेश की विधान सभा में छत्तीसगढ़ राज्य बना। श्री अटल बिहारी वाजपेयी जी ने हमारे छत्तीसगढ़ का निर्माण करके छत्तीसगढ़ की जनता को समर्पित किया। अब वहां से हम लोग छत्तीसगढ़ आ गये। यहां एक समस्या खड़ी हुई कि कैसे करे, क्या करे, कहां बैठे तो राजकुमार कॉलेज के जशपुर हॉल में टेन्ट से विधान सभा भवन बनना शुरू हुआ। उसमें जो अध्यक्ष थे, वह झाड़ के नीचे बैठकर सारी व्यवस्था करवा रहे थे। हमारे सचिवालय के जो पुराने कर्मचारी-अधिकारी हैं, वह उस वक्त झाड़ के नीचे बैठकर पास बना रहे थे कि कहां से कौन जाएगा, कहां से कौन मंत्री आएगा, कहां पर क्या होगा और यह बड़े-बड़े डंडे वाली माइक लगी थी। 4-4 फुट के मोटे डंडे वाली माइक में भाषण हो रहा था। उसी में श्री अजीत जोगी जी ने जब अपना पहला भाषण दिया था तो उन्होंने बोला था कि हां मैं सपनों का सौदागर हूं। यदि आज मैं उनको भी याद नहीं करूंगा तो यह माना जाएगा कि मैं राजनीति से प्रेरित होकर या किसी डर में नहीं बोल रहा हूं। अध्यक्ष महोदय, वह ऐसे मुख्यमंत्री बने कि उन्होंने रात में ही राज्य परिवहन निगम को समाप्त कर दिया, जो हमें करोड़ों रूपये के खर्चे में डालता था और बेरोजगारों को परमिट देने का आदेश जारी किया। हमारे पास जो कोरबा

सी.एस.ई.बी. था, वह हमारा हुआ और उसमें जो बिजली का प्रोडक्शन होगा, उसको हम बेचेंगे। मध्य प्रदेश के लोग वह बिजली भी नहीं पा पाये। हमारी पूरी बिजली हमारे यहां थी। धान खरीदी का निर्णय भी उसी समय हुआ। उनमें कई अच्छाइयों के बाद कुछ बुराइयां भी थीं, जिनके कारण उनको बहुत अपमानित भी होना पड़ा और उनके साथ अपयश हुआ, लेकिन वह brilliant chief minister थे। उनके संसदीय कार्य मंत्री चौबे जी थे। चौबे जी में खासियत यह थी कि जब बहुत टेंस माहौल रहता था और इधर से बृजमोहन जी, अजय चंद्राकर जी, शिवरतन जी, नेता प्रतिपक्ष लोग तो ठीक ही रहते हैं, परंतु ये लोग फायर ब्रांड थे तो इनको चौबे जी संभालते थे। कभी यह गुस्साकर जाते थे तो इनको समझाने-बुझाने चौबे जी जाते थे। संसदीय कार्य मंत्री भी इस सदन की गरिमा को बढ़ाने का एक बहुत महत्वपूर्ण अंग होते हैं। अध्यक्ष महोदय, पहली बार छत्तीसगढ़ राज्य में उत्कृष्ट विधायक की परंपरा माननीय अध्यक्ष महोदय राजेन्द्र प्रसाद शुक्ल जी ने शुरू की थी। जो कि बेहद प्रभावशाली व विशाल व्यक्तित्व के धनी और बहुत विद्वान व्यक्ति थे। सबसे पहला उत्कृष्ट विधायक का पुरस्कार पक्ष में मुझे और प्रतिपक्ष में श्री महेश तिवारी जी को मिला था और वहां से उत्कृष्ट विधायक के पुरस्कार की श्रृंखला शुरू हुई। जब हम इस भवन में आये थे तो यहां पोर्च भी नहीं था। इस भवन के बनने के समय में भी हम आये थे। बीच में कोई अंभा-खंभा आकर इसका पूरा शो खराब कर रहा था। उसको इधर-उधर शिफ्ट करके यह भवन बनाया गया। लेकिन यही पवित्र सदन हमारे छत्तीसगढ़ प्रदेश के विकास के लिए एक मंदिर से भी ज्यादा पवित्र स्थान बना है, जहां छत्तीसगढ़ की 3 करोड़ जनता की आवाज हम यहां लाकर बोलते हैं और बात करते हैं। यह सदन हमको इस बात की सीख देता है और इस बात की मर्यादा सिखाता है कि हम जनता के द्वारा चुनकर आये हैं तो जनता की ही बात करें। यदि हम यहां आकर अपने अहंकारी स्वभाव में रहेंगे तो मुझे यह मालूम है। मैं 22 साल से विधायक हूं। चौबे जी तो 35-40 साल से विधायक थे। यदि कोई ज्यादा अहंकार करता है तो यही सदन है और यही विधायक हैं, उसमें से 50 प्रतिशत विधायक लौटकर नहीं आते, क्योंकि इस सदन में आ करके अगर आपने अपनी इंटरेस्ट में कोई बात की, अगर सदन में आ करके किसी को नुकसान करने के द्वेष से बात की तो जनता बहुत समझदार है, वह समझती है, इसलिए यहां अगर आते हैं तो जनहित की ही बात होनी चाहिए, जनता की आवाज उठनी चाहिए और जनता के लिए जितनी लड़ाई हो सके हम लड़ने के लिए तैयार रहेंगे। (मेजों की थपथपाहट) ये बात सच है कि मैं तीन दलों में रहा, मैं 15 साल तक कांग्रेस का विधायक था, मैंने कुछ मतभेद के कारण कांग्रेस छोड़ा। हम और जोगी जी पार्टी बनाए थे, मैं उसमें भी विधायक बना और आज भाजपा का विधायक हूं। सभापति महोदय, जब मैं जोगी जी के साथ विधायक था तो इस सदन का सम्मान बता रहा हूं, अजीत जोगी जी ने मुझे एक दिन बुलाकर कहा कि मैं पीछे बैठता हूं, अच्छा नहीं लगता, मैं डॉ. चरणदास महंत साहब के पास गया, मैंने बोला जोगी जी बोलते हैं, पीछे बैठता हूं अच्छा नहीं लगता, बोले, भैया आगे लाने का क्या इंतजाम करना है, आप देख लीजिए। विधान सभा के मार्शल,

विधान सभा के सिक्योरिटी गार्ड जोगी जी की कुर्सी गाड़ी में आई, यहां कुर्सी लाया गया, उसमें गार्ड को बैठाया गया, उसको नीचे लाने का प्रयास किया गया लेकिन वह नीचे आने के बजाए कभी भी पलटकर गिरने का अंदेशा था, हमने उनको जाकर बताया, उस बात को उसने स्वीकार किया लेकिन मैं चरणदास महंत जी को भी धन्यवाद दूंगा कि उन्होंने अजीत जोगी के मान, सम्मान और सुविधा के लिए बहुत बड़ा निर्णय ले करके इस सदन के किसी एक सदस्य की तकलीफ को दूर करने का बहुत बड़ा काम किया।

सभापति महोदय, छत्तीसगढ़ का रिकॉर्ड बहुत छोटे से आंकड़े में बताना चाहता हूं, फर्नीचर खरीदी का करीब 9 करोड़ रूपए का घपला हुआ, उसकी विधान सभा की जांच कमेटी बनी, विधान सभा की पहली जांच कमेटी बनी, फर्नीचर घोटाले की जांच करने वाली कमेटी का मैं अध्यक्ष था। इस सदन की इतनी ताकत है कि अचानकमार अभ्यारण्य के गरीब आदिवासियों के उपर होने वाले अत्याचार के खिलाफ जब मैंने कार्रवाई की मांग की तो तत्कालीन मुख्यमंत्री अजीत जोगी ने छत्तीसगढ़ का पहला न्यायिक जांच आयोग का गठन मेरी मांग पर हुआ। ये दोनों पहला-पहला है, उसके बाद तो कई आए और कई गए ।

सभापति महोदय, फिर प्रेमप्रकाश पांडे जी अध्यक्ष बने, बहुत डेयर वाले अध्यक्ष थे, बहुत विद्वान थे, उन्होंने बहुत कड़ाई से और बहुत अनुशासन से विधान सभा चलाने का काम किया, उसके कार्यकाल में कई निर्णय हुए। अध्यक्ष महोदय हम लोगों को न्यूजीलैंड, आस्ट्रेलिया, सिंगापुर ले करके गए थे। हम लोग वहां के पार्लियामेंट हाउस भी गए थे। पांडे साहब यहां कई क्रांतिकारी परिवर्तन भी लाए। क्लोज डोर मीटिंग हुई, इस सदन का दरवाजा बंद था, सचिवालय के अधिकारी भी नहीं थे, दर्शक दीर्घा खाली थी, अधिकारी दीर्घा खाली थी, यहां 10-10 घंटे तक नक्सलियों की समस्या की बात श्री पांडे जी ने अपने कार्यकाल में कराई। अब आप बोलेंगे क्यों कराई ? वह इसलिए कराई कि हमारे बस्तर के जो जनप्रतिनिधि हैं, वह आम विधायकों के समान प्रश्न, उत्तर नहीं कर सकते, यहां अगर एक प्रश्न कोई बस्तर का पूछा तो 15 मिनट बाद नक्सलियों तक मैसेज चला जाता है कि आपके इस विधायक ने ऐसा बोला, ये कहा और मारने को कहा, गोला चलाने को बोला, बंदूक चलाने का बोला, उनकी जान खतरे में पड़ जाएगी। नक्सलियों के ब्लास्ट से हमने अपने कई विधायक साथियों की जान जाते हुए देखा है, इसलिए पांडे जी ने क्लोज डोर मीटिंग करवाई। ये इस सदन की 25 वर्षों की संसदीय इतिहास का एक हिस्सा है। महंत जी, मैं यहां इस वाली कुर्सी में बैठता था। उमेश पटेल जी के बगल वाली कुर्सी में बैठता था। मैंने एक अशासकीय संकल्प रखा था, हसदेव अरण्य के बारे में अशासकीय संकल्प रखा था। जब मैं उस पर चर्चा किया तो पूरे विधान सभा के सभी सदस्य यहां पर बैठे हुए थे, 90 के 90 सदस्य यहां पर थे, मैंने एक-एक आंकड़ों सहित बात किया था कि कितनी लताएं खत्म हो जायेंगी, कितने झाड़ खत्म हो जायेंगे, कौन सी मछली खत्म हो जायेंगी, कौन सा जानवर खत्म हो जायेगा, कितना जंगल खत्म हो जायेगा, कितने पानी का कैचमेंट एरिया खत्म होगा, कैसे हसदेव बांगों में पानी आना बंद होगा

और कितनी सिंचाई कम होगी, कितनी बिजली का उत्पादन कम होगा, कितने पीने के पानी की व्यवस्था कम हो जायेगी, ये सब उस वक्त तत्कालीन अध्यक्ष जी के मौन सहमति के कारण रखा था। मैं उनको धन्यवाद देता हूं। जब मैं सदन में बोलकर गया तो माननीय चरण दास महंत जी ने कहा कि तुम बहुत अच्छा बोले। यह सम्मान होता है, यह पुरस्कार होता है और उससे हमको प्रेरणा मिलती है।

माननीय सभापति महोदय, मैं यहां से कुछ बोल रहा था। प्रेम प्रकाश पाण्डेय जी के समय, पहले 2 सीट पीछे बैठता था। मुझे याद नहीं आ रहा है, लेकिन मैं किसी विषय पर बोला था और वह चिट्ठी आज भी है। जब मैं भाषण दिया तो प्रेम प्रकाश पाण्डेय जी ने लिखकर भेजा कि आपने बहुत बढ़िया भाषण दिया। अध्यक्ष महोदय, एक विधायक को और क्या चाहिए ? अगर एक विधायक अपनी तैयारी करके आया है और यदि मुख्यमंत्री, विधान सभा अध्यक्ष, नेता प्रतिपक्ष या कोई मंत्री उसकी तारीफ कर दे तो वह गदगद हो जाता है। सभापति महोदय, छत्तीसगढ़ की यही हमारी संसदीय परम्परा है, जिसमें हम आगे बढ़ रहे हैं।

अजय चन्द्राकर :- आपने एक बहुत अच्छी बात कही थी। जब बद्रीधर दीवान जी आसंदी में बैठते थे, तब आपने कहा था। क्या कहा था ?

श्री धर्मजीत सिंह :- सभापति महोदय, मैं बद्रीधर दीवान जी से कहा था। वह एन.टी.पी.सी. सीपत के धरने में गये थे। जब वह धरने में गये थे तो पुलिस की गोली चल गई। वह तो अच्छा हो गया कि वह गोली घुटने के नीचे से निकल गई। मैं बोला कि दीवान जी, अगर वह गोली थोड़ी ऊपर से निकलती तो आपका क्या हाल होता ? यही बोला था।

माननीय सभापति महोदय, इस विधान सभा में स्वमेव निलंबित होने की आदर्श परम्परा है, उसे सबको स्वीकार करना चाहिए। खासकर आजकल के परिप्रेक्ष्य में अभी पिछले साल-दो साल से जो परिप्रेक्ष्य चल रहा है, इसे दिल्ली में लागू करना चाहिए, दिल्ली में लागू करना जरूरी है। आये दिन कोई भी विरोधी दल के लोग वेल में आकर घुसते हैं और फिर वापस जाकर बैठकर कुछ भी बातें करते हैं। हमारे छत्तीसगढ़ सरीखे निलंबन करके दिखाओ तो फिर वेल में आना बंद कर देंगे। इसलिए मैं संदेश देना चाहता हूं कि आप उसको स्वीकार करिये।

माननीय सभापति महोदय, इस सदन को श्री बृजमोहन अग्रवाल जी, श्री रविन्द्र चौबे जी, श्री रामचन्द्र सिंहदेव जी, डॉ. रमन सिंह साहब जैसे व्यक्तित्व मिले। डॉ. रनम सिंह बेहद शालीन, सौम्य, शांत मुख्यमंत्री, जिनके पास कभी भी चाहे पक्ष का हो या विपक्ष का हो, जब जाते थे तो कभी भय नहीं लगता था, वह शांति से बात सुनते थे। रामपुकार सिंह जी, बोधराम कंवर जी, महेन्द्र बहादुर सिंह जी और हमारे नंद कुमार पटेल जी जैसे सीनियर लोगों से बैठकर सीखने और उनके सामने बोलने का अवसर मिला है। सभापति महोदय, इनकी सीख आज भी हमारे काम आ रही है। सभापति महोदय, अपने वरिष्ठ लोगों से सीखा हुआ गुण आपके जीवनपर्यन्त रहेगा। भाई नारायण चंदेल हमारे मित्र हैं। वह

उपाध्यक्ष भी थे, नेता प्रतिपक्ष भी थे। श्री धरम लाल कौशिक जी भी हमारे अध्यक्ष थे, गौरीशंकर अग्रवाल साहब भी अध्यक्ष थे, इन सभी अध्यक्षों ने अपने-अपने कार्यकाल में इस सदन की गरिमा को बढ़ाने, इसका नाम रोशन करने और यहां बड़ी से बड़ी विभूतियों को लाने का काम किया। छत्तीसगढ़ की यह विधान सभा पूरे हिन्दुस्तान की विधानसभाओं में बहुत-बहुत सम्मान के साथ नाम भी लिया जाता है और इसकी चर्चा भी होती है।

माननीय सभापति महोदय, मुझे याद है कि यहां जो ऑडिटोरियम बना है, वहां बड़े-बड़े लोग आए हैं, लेकिन उसमें एक बहुत बेशकीमती व्यक्ति कवि नीरज जी आये थे। हम लोग कवि नीरज की कविता को सुनकर बाग़-बाग़ हो गये थे। यह विधान सभा न सिर्फ नेताओं को बुलाने की जगह थी और न सिर्फ उन्हीं को बुलाया गया है। डॉ. रमन जी ने यहां मैथिली ठाकुर को भी बुलाया, वह आज बिहार में एम.एल.ए. बन गई। सभापति महोदय, जिनको एम.एल.ए. बनाना हो, उनको यहीं कोई कार्यक्रम में बुला लीजिए, वह जाकर एम.एल.ए. बन जाएगा। (हंसी) (मेजों की थपथपाहट) यहां हेमा मालिनी जी आई थीं, उसी दिन हमको कांग्रेस विधायक दल के तरफ से नंदकुमार पटेल जी के साथ जगदलपुर भेजा गया, पर डॉ. साहब हेमा मालिनी के कार्यक्रम की चिंता से ज्यादा हमारी चिंता में थे। उन्होंने हमें रात को 12 बजे फोन किया और हमसे कहा कि देखिए, आप लोगों को जो राजनीति करनी है, वह करिए, आप लोगों को जहां जाना है, वहां जाईए, लेकिन मैं आप लोगों को पोलम पल्ली से आगे जाने नहीं दूंगा। पोलम पल्ली वह जगह थी, जहां पर एक पुल ब्लास्ट में टूट कर ऐसा रखा था और उससे आगे हमें डॉक्टर साहब ने जाने नहीं दिया। हमारी गिरफ्तारी हुई और वहीं के कैम्प में हम लोगों को रखा गया। यह फिक्र होता है, यह सदन के नेता की चिंता है। हम विपक्ष के भले ही हो, लेकिन हम है तो उनके अपने ही। आज सदन के नेता विष्णु देव साय जी हैं, लेकिन आप कोई अलग नहीं है। वह आपकी भी चिंता करते हैं और यह चिंता उस कुर्सी में बैठे हुए व्यक्ति को करना भी चाहिए। सभापति महोदय, मैं उसका दो उदाहरण दे रहा हूं। जब डॉ. रमन सिंह साहब मुख्यमंत्री थे, उस समय मुझे खुड़िया के नहरों के लाईनिंग का 135 करोड़ रूपये का प्रोजेक्ट मंजूर कराना था। मैं उनके पास गया, मैंने कहा कि भाई साहब, आप मदद करिए। 135 करोड़ रूपये के खुड़िया के लाईनिंग के काम की स्वीकृति डॉ. रमन सिंह साहब ने दी। (मेजों की थपथपाहट) इस सदन में मैं यहीं बैठकर बिलासपुर की हवाई सेवा की सुविधा के लिए अशासकीय संकल्प लाया, उसमें चर्चा हुई और उस अशासकीय संकल्प के चर्चा के बाद यह भी रिकॉर्ड है कि अशासकीय संकल्प के चर्चा के जवाब में माननीय मुख्यमंत्री श्री भूपेश बघेल जी ने बिलासपुर एयरपोर्ट के विकास के लिए सदन में 26 करोड़ रूपये देने की घोषणा की और उस 26 करोड़ के बाद ही वहां छोटा प्लेन उतरना और उड़ना शुरू हुआ है। यह उस पद की गरिमा है, उस व्यक्ति की गरिमा है कि वह विरोधी दल के लोगों के द्वारा भी किए गए जनहित के मांग को ताकत दें। यही धर्म है, यही राजधर्म है। मैंने चौबे जी से मांग की थी कि लोरमी में एक एग्रीकल्चर कॉलेज खोला जाये। आपने उसको स्वीकृति दी। माननीय

मंत्री जी, अब आप उनको अपने लोरमी में बुलवा लीजिए क्योंकि बिलासपुर में चल रहा है। हमको वहां पर लोरमी में खोलना है। मैं कोतरी के कॉलेज के लिए गया और मैंने डॉ. रमन सिंह साहब से बोला कि कोतरी में कॉलेज चाहिए तो वे बोले तो 6 कॉलेज तो खोलना है। मैंने कहा कि साहब, आंख बंद करके कोई भी एक काट दीजिए और उसमें कोतरी लिख दीजिए। मैं डॉ. रमन साहब को धन्यवाद देता हूं कि उन्होंने कोतरी में कॉलेज खोला और कोतरी का कॉलेज बच्चियों के पढ़ने का बहुत बड़ा केन्द्र बन गया है। जनहित के काम के लिए, जनता के आंख से आंसू पोंछने के लिए, जनता की आवाज को यहां मुखरित और गुंजित करने के लिए, होने वाले अत्याचार, अन्याय का विरोध करने के लिए ही यह सदन हम लोगों को यहां पर बुलाया है। इस सदन ने हमको इतनी ताकत दी है कि हम लोगों की बात कह सकें। अगर हम यहां पर बैठकर लोगों की बात नहीं कर सकें, अगर हम मुंह देखकर चुप रहे, अगर हम अपना फायदा और नुकसान देखकर अपनी सुविधा के हिसाब से बात करेंगे तो यह बिल्कुल गलत है और ऐसे लोगों को इस सदन में बरकत भी नहीं मिल सकती है और उसको वही 50 प्रतिशत हारने वालों की सूची में जाना पड़ेगा। इस विधान सभा में महात्मा गांधी की भी मूर्ति लगवाई गयी है। मेरे ख्याल से यह राजेन्द्र प्रसाद शुक्ला जी के समय में लगवाया गया था। गांधी जी इसलिए लगवाना पड़ा क्योंकि महंत जी और आप लोगों को ही गांधी जी का काम ज्यादा पड़ेगा। वहां धरना देने जाना पड़ता है। वहां ठीक-ठाक से व्यवस्था हो गई। यहां त्रिमूर्ति का लौह स्तंभ बना है। यहां के सदन में स्पीकर के कक्ष में बालूशाही बहुत बढ़िया मिलता है। जो सदन के विधायक नहीं गये हैं, वह जायें । स्पीकर साहब के यहां बालूशाही बहुत मिलेगा । महंत जी भी बहुत बालूशाही खिलाये हैं और डॉक्टर साहब भी खिलायेंगे । मैं एक बात और कहना चाहता हूँ कि मध्यप्रदेश की बात कर रहे हैं तो मध्यप्रदेश में फिश फ्राई, चिकन फ्राई और एग फ्राई, ये तीनों वहां के विधान सभा में मिलता है । अब तो नया बन गया है, एकाध कोंटा-कांटी में जगह देखकर उसका भी विचार कर लीजिए । देखिये, यहां सामने में कोई कुछ भी बोले कि मैं तो शाकाहारी हूँ, लेकिन अंदर से थर्मामीटर डालूँगा तो सब फिश फ्राई, चिकन फ्राई, निकलेगा । मैं आप सब की बात कह रहा हूँ, यह खाने की चीज है और इसमें प्रोटीन मिलता है, प्रोटीन से दिमाग ठीक रहता है, थोड़ा गुस्सा भी कम रहता है, आप इसको कर लीजिए । हमारे नेता प्रतिपक्ष कबीर पंथी हैं, वह तो बोलेंगे नहीं, डॉक्टर साहब भी एक प्रकार से कबीर पंथी हो गये हैं, मुख्यमंत्री जी और हम लोग कबीर पंथी हैं, लेकिन खाने-पीने के नाम से नहीं है तो इसके बारे में भी विचार कर लीजिए। (हंसी) अध्यक्ष महोदय, यह सदन हमारे बिना मार्शल के चलने वाला सदन है, इस सदन के भीतर माईक उठाकर लड़ने-झगड़ने वाली स्थिति नहीं बनती है, हम एक-दूसरे की मर्यादा का ख्याल रखते हैं, एक-दूसरे के प्रति पूरा सम्मान रखते हैं, हम लोग तो कम से कम जब नेता प्रतिपक्ष बोलें और जब सदन के नेता बोलें तो आज तक हम टोका-टाकी नहीं किये हैं । अध्यक्ष महोदय, 22 साल हो गये, कभी भी अध्यक्ष के आदेश की अवहेलना नहीं किये हैं, नेता प्रतिपक्ष की बात में टोका-टाकी नहीं किये हैं, सदन के नेता की बात में

कभी टोका-टाकी नहीं किये हैं तथा सीखने की कोशिश वर्ष 1998 से कर रहे हैं । आज भी सीख ही रहे हैं...।

श्री अजय चन्द्राकर :- हम किये हैं, लेकिन अनुमति मिलने के बाद किये हैं । (हंसी)

श्री धर्मजीत सिंह :- वैसा टोका-टाकी नहीं । टोका-टाकी मतलब है कि मर्यादित बात करनी चाहिये और हमने किया है । हम सभी का सम्मान करते हैं और सम्मान करके ही सम्मान पाया जा सकता है । हर वह चीज जो मुझे अगर बुरी लगती है, अगर मैं किसी दूसरे को बोलूँगा तो उसको भी बुरा लगेगा, इसलिये बोलने के पहले यह सोचना पड़ेगा कि जो चीज मुझे अच्छी नहीं लग रही है तो मैं दूसरे को न बोलूँ । अध्यक्ष महोदय, अगर बड़ा बनना है तो सबसे पहले छोटा बनना पड़ेगा और जब आप छोटा बनेंगे तब आप बड़े होकर कुछ कर सकते हैं, इसलिये बड़े होने की इस प्रक्रिया की ओर यह सदन हमें प्रेरणा देता है । (मेजों की थपथपाहट) अध्यक्ष महोदय, यह सदन इतना पवित्र है कि मैंने आपको पहले भी कहा है कि गूँगे को वाणी दे सकता है, नहीं चल सकने वाले को ताकत दे सकता है, नहीं समझने वाले को समझा देगा, जनता के बारे में नहीं बोलने वाले को भी मजबूर करेगा कि वह जनता की आवाज को इस पवित्र सदन में उठाये । हमारे सभी अध्यक्षों ने अपने कार्यकाल में इस सदन की गरिमा को बनाये रखने और हमारे विधायकों के मान और सम्मान तथा सुविधा का ख्याल रखने का काम किया है । हम यहां बहुत सौभाग्यशाली हैं कि इस सदन में कई वर्षों से बैठ रहे हैं और इस सदन में बैठकर छत्तीसगढ़ की संसदीय यात्रा की चर्चा कर रहे हैं । अब यह आखिरी दिन होगा, इस सदन की बहुत याद आयेगी । अध्यक्ष महोदय, एक छोटा सा बात बताकर अपनी बात खत्म करुंगा । मैं पिछली बार जब वहां एमएलए था, मेरे पास एक विधायक आये । यह आखिरी सत्र था, बोले कि धरम भईया बहुत याद आयेगा, इसको देख रहा हूँ, याद आयेगा कैसा करें क्या करें, मैं बोला टिकट वगैरह लाओ, चुनाव जीतकर दोबारा आ जाओ, उसमें क्या दिक्कत है, उस बेचारे का टिकट ही कट गया । अब बताईये उसको कितना याद आता होगा । जो एक बार का विधायक है उसको इतना याद आ रहा है तो हम 20-25 साल से यहीं बैठ रहे हैं । अध्यक्ष महोदय, पहले प्यार को कोई कैसे भूल सकता है, फर्स्ट लव है, फर्स्ट लव को कोई कभी जीवन में नहीं भूलता है और कोई दूसरा धंधा भी नहीं आता । यह लव मरते दम तक इस सदन के लिये रहेगा, इस प्रदेश के लिये रहेगा । यहां की जनता के लिये रहेगा और हमारे इन सभी वरिष्ठ नेताओं के लिये रहेगा, जिन्होंने हमें कुछ बोलने, कुछ समझने, कुछ करने और कुछ बढ़ने का संदेशा दिया है, बाकी सब चीजों में दिमाग खराब करने की जरूरत नहीं है, कौन बोले हैं ना मंत्री नहीं बने हैं तो हां नहीं बने हैं ।

ए देने वाले तूने तो कोई कमी न की
ए देने वाले तूने तो कोई कमी न की

अब किसको क्या मिला

यह मुकद्दर की बात है । (मेजों की थपथपाहट)

समझ गये ना, इसलिये चिन्ता मत करिये । इस देश में राममनोहर लोहिया मंत्री नहीं बने थे, इस देश में चन्द्रशेखर जीवन में कभी मंत्री नहीं बने थे, जयप्रकाश नारायण मंत्री नहीं बने थे, लेकिन आज भी उनको इतिहास के पन्नों में याद किया जाता है और मैंने लोगों को बहुत मंत्री बनते देखा है । कई मंत्रियों को 25 साल देखा है, लेकिन लोग याद भी नहीं करते । हमारा ब्यूरोक्रेसी भी बहुत अच्छा है। पिछली बार के काम के कारण 2-4 आईएएस आफिसरों को भगवान जाने क्या हो गया था, घर में सोना-चांदी रखने की जरूरत क्या थी, क्यों अंदर चले गए ? कहीं और रख देते, खेत में गड़ा देते । (हंसी) ये सब अंदर चले गए, बाकी सब हमारे यहां ठीक हैं । सभापति जी, यह सदन हमको हर दिन सीखने का अवसर देता है, हमको हर दिन सीखना चाहिए और अपने वरिष्ठों और बुजुर्गों से सीख ही लो तो सही रास्ते में जाओगे और उनको खुद सीखाने लगोगे तो फिर भगवान ही मालिक है । सभापति जी, आपने बोलने का मौका दिया, आपको प्रणाम । बहुत-बहुत धन्यवाद । (मेजों की थपथपाहट)

श्री द्वारिकाधीश यादव (खल्लारी) :- सभापति महोदय, मैं माननीय अध्यक्ष जी को बहुत-बहुत धन्यवाद और बधाई देना चाहूंगा कि आज विधान सभा में जो बैठक आहूत की गई है । विधान सभा के हर सत्र में हर बैठक महत्वपूर्ण होती ही है, लेकिन छत्तीसगढ़ राज्य बनने के 25 साल बाद शुरूआत की बैठक और आज की बैठक हजारों सालों तक याद रखी जाएगी और अध्यक्ष जी ने इस अवसर पर हमें बोलने का समय प्रदान किया, उसके लिए मैं उन्हें धन्यवाद देता हूं।

माननीय सभापति महोदय, मेरे पहले सभी वरिष्ठ वक्तागण छत्तीसगढ़ राज्य और छत्तीसगढ़ सदन को लेकर प्राय: सभी बातें बोल चुके हैं, लेकिन मुझे भी यह बात याद आ रही है कि आजादी की लड़ाई के बाद हमारे पुरखों ने पृथक छत्तीसगढ़ की लड़ाई बहुत लंबे समय तक लड़ी और उसी का परिणाम रहा कि हमारे कुछ पुरखे जो छत्तीसगढ़ राज्य बनने के पहले इस दुनिया से चले गए और कुछ आज भी हैं । पृथक छत्तीसगढ़ राज्य बनने के पहले जैसे विद्वान सदस्य अजय चन्द्राकर जी ने बताया कि हमने मध्यप्रदेश के सदन में इस बात की मांग की कि हम पेड़ के नीचे बैठकर सदन चला सकते हैं, लेकिन छत्तीसगढ़ राज्य अलग होना चाहिए । हमारे पूर्व मुख्यमंत्री जी ने भी यही बात बताई । छत्तीसगढ़ के संघर्ष की लड़ाई में खुशी तो उस वक्त हुई, जैसे ही छत्तीसगढ़ राज्य बना तो पहली बार छत्तीसगढ़ में छत्तीसगढ़ की सरकार ने धान खरीदी का निर्णय लिया । छत्तीसगढ़ राज्य बनने के पहले छत्तीसगढ़ को धान के कटोरा के रूप में जरूर देखा और बोला जाता था, लेकिन अन्य सामग्री का दाम मालिक तय करता है, लेकिन छत्तीसगढ़ में किसान ही एक ऐसा व्यक्ति है, जिनके धान का दाम वह खुद तय नहीं करते थे, व्यापारी तय करते थे । छत्तीसगढ़ राज्य बनने के बाद पहली बार ऐसा हुआ कि सरकार ने धान खरीदी और किसान को वाजिब दाम मिला । छत्तीसगढ़ में भी आर्थिक रूप से कमजोर,

गरीब लोग थे । छत्तीसगढ़ में पहले किसान कोठी बनाकर रखते थे, आपको भी इस बात की जानकारी होगी । लेकिन एक समय ऐसा आया कि छत्तीसगढ़ राज्य बनने के बाद बहुत बड़ा अकाल पड़ा । छत्तीसगढ़ में वह दिन भी देखने को मिला । पृथक छत्तीसगढ़ राज्य बनने के बाद धान की जगह उस कोठी में चावल रहा, यही छत्तीसगढ़ राज्य बनने का प्रारंभिक परिणाम मिला । जब छत्तीसगढ़ राज्य का आखरी आंदोलन चल रहा था तो मैं उस समय युवक कांग्रेस का अध्यक्ष था और मैंने भी शहर बंद करवाया था । उस आंदोलन में हमारे एक महान नेता गए थे और भाषण दिए थे । उनका भाषण मुझे आज भी याद है । उन्होंने कहा था कि देश के अंदर छत्तीसगढ़ में वह सम्पदा है कि छत्तीसगढ़ देश का पहला टैक्स मुक्त राज्य हो सकता है । वह महान नेता, विद्वान नेता ने कहा था, लेकिन जब मैं सदन के बजट सत्र में बैठता हूं, उसका कारण कुछ भी हो , चाहे पक्ष हो या विपक्ष और जब लाखों के कर्ज की बात सुनता हूं तो मैं उस नेता को याद करता हूं। धर्मजीत जी, वह नेता कौन होंगे, आप अंदाजा लगा सकते हैं। मैंने उनका भाषण सुना था।

सभापति महोदय, छत्तीसगढ़ राज्य बनने के बाद शिक्षा के क्षेत्र में भी प्रगति हुई है और स्वास्थ्य के क्षेत्र में भी प्रगति हुई है, यह हम सब के लिये खुशी की बात है। छत्तीसगढ़ राज्य बनने के बाद निश्चित रूप से हमारे पुरखों के मन में एक पीड़ा हुई जो पृथक छत्तीसगढ़ राज्य की लड़ाई लड़े, वह पल कब था जब छत्तीसगढ़ का सबसे सुंदर आभूषण या कोई इलाका है तो वह बस्तर है। किसी न किसी कारणवश बस्तर में माओवादियों का आतंक चला लेकिन आज खुशी की बात है कि अगली बार जब हम इस सदन से उस सदन में जायेंगे तो इस सदन की एक अच्छी उपलब्धि होगी कि माओवाद अब खात्मे की ओर है और बस्तर छत्तीसगढ़ का सबसे सुंदर आभूषण होगा। पूरे देश से लोग बस्तर को देखने आयेंगे और बस्तर को समझने आयेंगे।

माननीय सभापति महोदय, छतीसगढ़ राज्य बनने के बाद केवल और केवल बात इतने में नहीं रूकती कि गरीब का बेटा और बेटी अंग्रेजी माध्यम स्कूल को देखते थे, उस बिल्डिंग को देखते थे और बोर्ड को पढ़ा करते थे कि यहां अंग्रेजी में पढ़ाई होती है। छत्तीसगढ़ के इसी सदन में एक ऐसी व्यवस्था आयी कि अब गरीब के बच्चे केवल अंग्रेजी माध्यम स्कूल की बिल्डिंग और बोर्ड को नहीं पढ़ते हैं, बल्कि यह भी हुआ कि अब वहां पर अंग्रेजी पढ़ने के लिये गरीब के बच्चे को भी दाखिला मिला और आज गरीब का बच्चा भी अंग्रेजी बोल रहा है।

माननीय सभापति महोदय, निश्चित तौर पर छत्तीसगढ़ के सदन की अच्छी परंपरा की बात हर वक्ता ने की है और रिकॉर्ड में भी है कि जहां जहां पर लोकतंत्र है, वहां-वहां पर छत्तीसगढ़ की विधान सभा की निश्चित रूप से तारीफ होती है। यहां की परंपरा का अध्ययन भी होता है लेकिन मुझे बड़े दु:ख के साथ बोलना पड़ रहा है कि जब हम मध्य प्रदेश के अलग हुए तो मध्य प्रदेश का नया विधान सभा भवन 50 साल में मिला। मैं आपके माध्यम से हमारे पूर्व विधान सभा अध्यक्ष और नेता प्रतिपक्ष जी को

धन्यवाद और बधाई देना चाहता हूं कि उनके प्रयास से केवल और केवल 25 सालों में हम नये विधान सभा भवन में प्रवेश करेंगे। 14 दिसंबर को नये सदन में नये विधान सभा सत्र का शुभारंभ होगा लेकिन छत्तीसगढ़ की सबसे बड़ी परंपरा को उद्घाटन के दिन खत्म कर दिया गया। शिलान्यास में नेता प्रतिपक्ष का नाम हमारे पूर्व विधान सभा अध्यक्ष जी ने बड़े आदर के साथ लिखवाया था लेकिन उद्घाटन के अवसर में पहली बार ऐसा हुआ कि छत्तीसगढ़ के सदन की सबसे बड़ी परंपरा को अलग किया गया और जाते-जाते इस विधान सभा सदन की सबसे गंभीर परंपरा को विलोपित करने का काम हुआ है जो अच्छा नहीं है। मैं आपके माध्यम से बोलना चाहता हूं कि नई विधान सभा में ऐसी परंपरा की शुरूआत नहीं होनी चाहिए। माननीय सभापति महोदय, मैं आपके माध्यम से यह भी बोलना चाहता हूं कि जिस छत्तीसगढ़ के धान खरीदी को मॉडल माना जाता है, एक तरफ हम नए सदन में प्रवेश करने जा रहे हैं और दूसरी तरफ तीन दिनों से किसानों से धान खरीदी नहीं हुई है। यह चिंता का विषय है। चिंता का विषय तो यह भी है कि जो छत्तीसगढ़ विधान सभा टेण्ट में चली, टेण्ट में लगी विधान सभा की प्रगति का परिणाम यह हुआ कि 25 साल में 650 करोड़ का विधान सभा भवन बन रहा है, उस भवन में दलगत राजनीति से ऊपर उठकर किसानों के हित में बात होनी चाहिए, बेरोजगार भाइयों के हित में बात होनी चाहिए। केवल और केवल मंच में बोलना पर्याप्त नहीं होता। माननीय सभापति महोदय, मैं आपके माध्यम से बोलना चाहता हूं कि निश्चित तौर पर देश के अंदर छत्तीसगढ़ प्रदेश का जो बजट है, वह काफी संतोषप्रद है, लेकिन आज स्वास्थ्य के क्षेत्र में मेडिकल कॉलेज तो खुले, मैं इसकी प्रशंसा भी करता हूँ। लेकिन मैं आपके माध्यम से यह बताना चाहता हूँ कि आज भी प्राईवेट हॉस्पिटल में जो भीड़ है, वह सरकारी हॉस्पिटल में नहीं है। यह चिन्ता का विषय है। शिक्षा के क्षेत्र में बताना चाहूंगा कि आज भी सक्षम लोग हमारे सरकारी स्कूलों में अपने बच्चों को नहीं पढ़ा रहे हैं। जब हम नयी विधान सभा के सदन में जाएं, मैं इस बात को दलगत भावना से नहीं बोल रहा हूँ जब 14 दिसम्बर, 2025 को नयी विधान सभा के सदन में जाएं तो चाहे सिंचाई का क्षेत्र हो या शिक्षा का क्षेत्र हो, चाहे स्वास्थ्य के क्षेत्र की बात हो। इन सभी क्षेत्रों में हम सब मिलकर काम करें। निश्चित तौर पर आज का यह दिन कई वर्षों तक यादगार रहेगा। पृथक छत्तीसगढ़ राज्य की लड़ाई लड़ने वाले जो हमारे पूर्वज शहीद हुए, वे आज हमारे बीच नहीं हैं मैं उनको नमन कर रहा हूँ। जिन्होंने पृथक छत्तीसगढ़ राज्य के लिए लड़ाई लड़ी, उनके मन को दु:खाने के लिए सदन में ऐसी नीति न बनें या ऐसी बातें न हो। माननीय सभापति महोदय, आपने मुझे इस अवसर पर बोलने का अवसर दिया, उसके लिए मैं आपको बहुत-बहुत धन्यवाद देता हूँ।

सुश्री लता उसेण्डी (कोन्डागांव) :- माननीय सभापति महोदय, पृथक छत्तीसगढ़ राज्य के निर्माण की जो यात्रा है, जिन्होंने पृथक छत्तीसगढ़ राज्य का स्वप्न देखा। उनके साथ-साथ छत्तीसगढ़ के समस्त जनों ने पृथक छत्तीसगढ़ प्रदेश का सपना देखा। आज कुछ लोग हमारे बीच नहीं हैं। मैं उन्हें श्रद्धासुमन

अर्पित करती हूँ। इस यात्रा के दरमियान अभी भी अलग-अलग भूमिकाओं में उस स्वप्न को साकार करने में लगे हुए हैं। मैं माननीय अटल बिहारी वाजपेयी जी को भी श्रद्धासुमन अर्पित करती हूँ। जिन्होंने छत्तीसगढ़ की भावनाओं को समझा। छत्तीसगढ़ के लोगों की भावनाओं का सम्मान करते हुए, बिलासपुर की एक सभा में अटल जी ने यह कहा भी था कि आप 11 के 11 सांसद दीजिए, मैं आपको पृथक छत्तीसगढ़ राज्य बनाकर दूंगा, लेकिन उस समय हमारे 11 सांसद नहीं जीत पाये थे। अटल जी को यह पता था कि अगर छत्तीसगढ़ में पृथक छत्तीसगढ़ प्रदेश का निर्माण होता है तो भारतीय जनता पार्टी की सरकार नहीं बनेगी। लेकिन उन्होंने जनता की भावनाओं को ध्यान में रखते हुए, छत्तीसगढ़ राज्य का निर्माण कर दिया। यहां पर हमारे पूरे वक्ताओं ने उन सारी यात्राओं के विषय में बहुत विस्तार से बातें रखी हैं। पृथक छत्तीसगढ़ राज्य का निर्माण हुआ। हम लोगों ने भी राजनीति में नया-नया काम शुरू किया था। उस समय छत्तीसगढ़ राज्य निर्माण के बाद जब यहां पर पहली सरकार बनी तब जिन कठिनाईयों का सामना छत्तीसगढ़ की जनता को करना पड़ा है, हम सब यह जानते हैं। उस समय कभी-कभी बीच-बीच में आन्दोलन होते थे। किसी के पैर टूटते थे, किसी के मुंह पर कालिख पोती जाती थी। अपने-अपने क्षेत्र से अगर किसी धरना प्रदर्शन या आन्दोलन में आना है तो हमें छुपकर आना पड़ता था। हम लोगों को याद है यहां पर पुराने सारे विधायकगण भी उपस्थित हैं। जब रायमुनी जी जशपुर से आती थीं तो उन्हें किस तरीके से वाहन तब्दील करके, यहां तक पहुंचना पड़ता था। उस दरमियान ऐसी कई सारी बातें हुईं। लेकिन उस समय छत्तीसगढ़ प्रदेश की जो तासीर थी, भयभीत वातावरण था, कई लोग ऐसे थे जो छत्तीसगढ़ छोड़ने की भी तैयारियां करने लगे थे। समय बदला, चुनाव हुआ, भारतीय जनता पार्टी को जनता ने आशीर्वाद दिया और सेवा करने का अवसर दिया।

माननीय सभापति महोदय, यहां पर धान खरीदी की बात बहुत आयी। हमारा छत्तीसगढ़ प्रदेश धान का कटोरा कहलाता है। धान खरीदी का नियम बना । ये कहा जाता है कि हमने धान खरीदी की बेहतर पालिसी बनाई, कीमत हमारी वजह से बढ़ी। ठीक है, आपकी वजह से धान की कीमत बढ़ी। लेकिन हम लोगों को भी ध्यान है कि किसान जब बोरे में धान लेकर जाता था तो पानी में धान को डूबोकर देखा जाता था कि धान की क्वालिटी ठीक है कि नहीं है। धान किसानों के ऊपर प्रश्नचिन्ह लगाया जाता था। वैसे ही एक और परिस्थिति आई धान की कीमत बढ़ी। आप सबको धन्यवाद है। लेकिन चौथे किश्त का पता हीं नहीं लगता था, अंतिम किश्त की राशि किसानों को समझ में ही नहीं आती थी, किश्तों में प्रारंभ हुआ था। मुख्यमंत्री जी के रूप में विष्णुदेव साय जी आये। मैं माननीय मुख्यमंत्री जी को साधुवाद देती हूं जिन्होंने एकमुश्त इस राशि को देकर किसान को आर्थिक रूप से मजबूत करने का काम किया। सभापति महोदय, माननीय डॉ. रमन सिंह जी के नेतृत्व में किसानों को मजबूत करने की जो योजनायें बनाई गईं, जिस तरीके से किसान तत्कालीन मुख्यमंत्री डॉ. रमन सिंह जी के नेतृत्व में आर्थिक रूप से मजबूत हुए हैं, वह हम सबके समक्ष है। सभापति महोदय, मैं डॉ. रमन सिंह

जी को भी साधुवाद देना चाहूंगी जिन्होंने खाद्यान्न योजना लाकर सबसे पहले 3 रुपये किलो चावल देने की योजना बनाई, फिर 2 रुपये और फिर 1 रुपये किलो में देना प्रारंभ किया। हम सब लोगों का याद है, थोड़े ग्रामीण, कस्बाई इलाके में रहने की वजह से हम सब देखते थे कि रिक्शे चलते थे। रिक्शे वाले जब शाम को लौटते थे तो उनके पास एक पोटली होती थी और उस पोटली में एक पाव, आधा किलो, एक किलो चावल होता था। प्रतिदिन जब व्यक्ति रात को भोजन करके सोता था दूसरे दिन उसको ये चिंता रात भर रहती थी कि कल मैं अपने परिवार को कैसे पालूंगा, क्या खिलाऊंगा ? हम सबको याद है कि गांव से लकड़हारा लकड़ी लेकर शहर की तरफ आता था तो सिर्फ एक किलो, आधा किलो चावल के लिये अपनी लकड़ी दे देता था। इस भूख से किसी ने इस प्रदेश को निजात दिलाया है तो माननीय डॉ. रमन सिंह जी ने दिलाया है। आज उसी की वजह से आप प्रदेश के किसी भी कोने में चले जाईये, डॉ. रमन सिंह जी इस प्रदेश में ही नहीं, पूरे देश में चाउर वाले बाबा के नाम से प्रसिद्ध हैं।

माननीय सभापति महोदय, हमने देखा था कि इलाज के लिये लोगों को अपनी जमीनें बेचनी पड़ती थी। घर के परिवार का सदस्य कोई गंभीर रूप से बीमार पड़ गया है, उसे स्वास्थ्य सुविधा दिलानी है, हॉस्पिटल पहुंचाना है, इलाज करवाना है तो जमीन बेंचनी पड़ती थी। डॉ. रमन सिंह जी ने स्मार्ट कार्ड लागू करके उससे भी हमारे इस प्रदेशवासियों को निजात दिलाई। (मेजों की थपथपाहट) मुझे ध्यान है कि जब से इस प्रदेश में स्मार्ट कार्ड लागू हुआ है और आज की बात है, एक भी उदाहरण ऐसा नहीं मिलेगा जिसमें किसी को इलाज करने के लिये अपनी जमीन बेचनी पड़ी हो या अपनी कोई बहुमूल्य वस्तु गिरवी रखनी पड़ी हो। इस 25 साल की यात्रा में ऐसे कई सारे उदाहरण हम सब लोगों को देखने को मिले हैं।

माननीय सभापति महोदय, महिलाओं के सशक्तिकरण की बात आती है। सबसे पहले अगर हम महिलाओं की बात करें, अगर मैं छत्तीसगढ़ की बात करती हूं तो राशन कार्ड में घर के मुखिया के नाम से जिस दिन से महिलाओं का नाम आया, छत्तीसगढ़ की महिलायें सशक्तता के साथ आगे बढ़ने लगीं। यह हम सबके पास एक-एक कहानी कुछ-न-कुछ इस विषय को भी लेकर होगी। उस दिन से महिलायें मजबूत हुईं, उनके हाथ में राशन कार्ड आया, राशन कार्ड में घर के मुखिया के नाम में महिला का नाम रहा है। तो वह अपने परिवार को आर्थिक रूप से, शैक्षणिक रूप से मजबूत करने के लिये आगे काम करने लगीं। और दूसरी बात मैं उसमें एक चीज जोड़ना चाहूंगी, मैं माननीय डॉ. रमन सिंह जी, माननीय मुख्यमंत्री विष्णुदेव साय जी को भी साधुवाद देती हूं जिन्होंने महतारी वंदन योजना लागू करके महिलाओं को आर्थिक रूप से मजबूत किया, पूरे प्रदेश में महिलायें महतारी वंदन योजना के माध्यम से लाभान्वित हो रही हैं। माननीय सभापति महोदय, ऐसे कई उदाहरण हम सबके सामने देखने को मिले हैं । जिसकी वजह से हमारे इस प्रदेश में चाहे हम शैक्षणिक हों, आर्थिक रूप से हों, सामाजिक रूप से मजबूती के अनेक निर्णय इस सदन से हुए हैं और आने वाले समय में जिस स्वप्न को हम सब देख रहे हैं, छत्तीसगढ़ निर्माण के साथ निश्चित तौर पर तेजी के साथ माननीय विष्णुदेव साय जी के नेतृत्व में हम

सभी को देखने को मिलेगा । स्कूलों की बात की जाती है, अंग्रेजी माध्यम की भी बात होती है, बहुत अच्छी बात है । Global Language है, कभी-कभी लगता है कि Survive करने के लिये अंग्रेजी जानना भी जरूरी है लेकिन जब-जब हमारी सरकार बनी, राजनीति से ऊपर उठकर निर्णय हुआ और जो भी अच्छी योजना थी उसे कभी समाप्त करने की बात नहीं की गयी, उसे कभी समाप्त नहीं किया गया, उसे निरंतर चलाने का प्रयास किया गया लेकिन हम देख रहे थे कि व्यवस्थाएं बदलीं, सरकार बदली, सब अपने-अपने हिसाब से थोड़ी व्यवस्थाएं बदलते हैं लेकिन कई बार यह भी देखने को मिला कि यह तो पूर्व सरकार की योजना है, अगर इसको कहीं लागू कर देंगे तो यह हमारा नाम नहीं आयेगा, ऐसे उदाहरण मेरे विधानसभा में भी देखने को मिला और प्रदेश में भी देखने को मिला । यहां तक कि श्रृंगी ऋिषि जी के स्कूल का नाम भी बदल गया, कई कॉलोनियों के नाम भी बदल गये तो यह जो परम्पराएं स्थापित करने का प्रयास किया गया और देर-सबेर कभी न कभी हम उसी, चूंकि जब पृथवी गोल घूमती है तो कहीं न कहीं उसकी चपेट में सारे लोग आते हैं ।

माननीय सभापति महोदय, अटल जी ने कहा था कि सत्ता आयेगी, सत्ता जायेगी लेकिन लोकतंत्र रहना चाहिए और यह देश बचना चाहिए तो इस राज्य को बचाने के लिये भी सत्ता आयी, सत्ता गयी लेकिन यहां की जनता को यह समझ में आ गया कि छत्तीसगढ़ का विकास किसके हाथ में है और कौन कर सकता है उसके आधार पर हम देख रहे थे कि लगातार दो दफे बदलाव आया लेकिन बदलाव के साथ-साथ जनता ने भी यहां पर बदलाव लाया और विकास की डगर आगे बढ़ी है । निश्चित तौर पर यहां हम सब लोगों को भी बहुत सारी नयी संसदीय परंपराओं को सीखने का अवसर मिला और मैं भी अपने आपको सौभाग्यशाली मानती हूं कि छत्तीसगढ़ निर्माण के साथ ही हम विधायक बने और यहां पर हम सभी लोगों को हमारे वरिष्ठजनों के साथ काम करने का एक अवसर मिला और क्षेत्र की जनता का आशीर्वाद मिला । जो हम यहां पहुंचे और हमें काम करने और सेवा करने का अवसर मिला । माननीय सभापति महोदय, मैं उन सारे लोगों को भी धन्यवाद देती हूं जिन्होंने हमें यह अवसर प्रदान किया । मैं अपनी बात को यहीं पर विराम देती हूं । माननीय सभापति महोदय, आपने मुझे बोलने के लिये समय प्रदान किया इसके लिये बहुत-बहुत धन्यवाद ।

सभापति महोदय :- अभी 16 और सदस्यों को बात रखनी है तो मैं आग्रह करूंगा कि थोड़ा संक्षेप में अपनी बात रखेंगे । श्री विक्रम मंडावी जी ।

श्री विक्रम मंडावी (बीजापुर) :- माननीय सभापति महोदय, आज छत्तीसगढ़ के 25 वर्ष पूरे होने पर रजत जयंती का उत्सव हम सब मना रहे हैं । मैं इस अवसर पर हम सभी सदस्यों को और पूरे छत्तीसगढ़वासियों को बधाई देता हूं कि हम सभी इस 25 वर्ष के लंबे सफर को पूरा करते हुए आज इस मुकाम पर पहुंचे हैं और मैं इस अवसर पर हमारे पृथक छत्तीसगढ़ के लिये जो लंबी लड़ाई लड़े । वह

सभी जो हमारे बीच में नहीं हैं, उन सभी महापुरूषों को भी मैं नमन करता हूं और जो हमारे बीच हैं, उन्हें भी प्रणाम करता हूं ।

मानननीय सभापति महोदय, जहां तक मेरी जानकारी है हमारे वर्तमान विधानसभा अध्यक्ष, पूर्व मुख्यमंत्री डॉ. रमन सिंह जी, पूर्व मुख्यमंत्री भूपेश बघेल जी, भैया धर्मजीत सिंह जी, श्री धरमलाल कौशिक जी, रामविचार नेताम जी, अजय चंद्राकर जी, शायद शुरूआती वर्ष 2003 से लेकर आज तक के इस विधानसभा में लगातार हम सभी के बीच में हैं और बहुत से सदस्य भी हैं, जो लगातार इस विधानसभा में उपस्थित हुए हैं । माननीय सभापति महोदय, जब हमारा छत्तीसगढ़ राज्य बना था, जिसका हम सभी ने हमारे छत्तीसगढ़वासियों ने सपना देखा था और उस शुरूआती दौर में हम यहां पर नहीं बैठे थे, मिन्टो हॉल या जशपुर हॉल में शुरूआत होते-होते आज यहां पर पहुंचे हैं और 25 साल का सफर पूरा किये हैं। लेकिन आप कल्पना करें, जब मध्यप्रदेश से हम अलग हुए थे और छत्तीसगढ़ नया बना हुआ था, उस समय संसाधन सीमित थे और बजट भी बहुत कम था। शायद लगभग मात्र 5 हज़ार या 6-7 हज़ार करोड़ के बीच में हमने छत्तीसगढ़ जैसे नए राज्य की शुरुआत की और आज 1 लाख 79 हजार करोड़ के लम्प-सम्प के बजट में हम चल रहे हैं। उसके बावजूद भी इस 25 साल में हमारा छत्तीसगढ़ बहुत आगे बढ़ा, बहुत उतार-चढ़ाव देखा और लंबा संघर्ष करते हुए बेहतर राज्य की दिशा में हम सब आगे बढ़े और इन 25 सालों में हमने बड़े से बड़े राज्यों की स्थिति में भी बेहतर अच्छा प्रदर्शन किया और हम हर क्षेत्र में आगे बढ़े। इस विधान सभा के जितने भी हमारे वरिष्ठ सदस्य हैं और भी सदस्य हैं, सभी सम्मानित सदस्यों ने भी बहुत अच्छा काम किया। मैं इस अवसर पर यही कहना चाहता हूं कि जिस तरीके से छत्तीसगढ़ के लिए हमारे महापुरुषों ने, हमारे बहुत से लोगों ने सपना देखा, उन सपनों में बहुत से सपने पूरे हुए हैं। उन सपनों को कैसे आगे पूरा करें। उस दिशा में हम सबको दलदल राजनीति से ऊपर उठकर चलना चाहिए, सोचना चाहिए। इस दिशा में हमको प्रयास करना चाहिए। माननीय सभापति महोदय, मैं इस अवसर पर हमारे जो प्रदेश के प्रथम मुख्यमंत्री आदरणीय अजीत जोगी जी थे, जिनका तीन साल का कार्यकाल था, वह भी बहुत ही बेहतरीन कार्यकाल था। एक नए जोश, उत्साह के रूप में जब राज्य बना, हम सब अलग हुए तो मुख्यमंत्री को देखने के लिए बहुत ही उत्साहित थे। जब वे पहली बार हमारे बीजापुर जिले में आए तो हम लोग लगातार दस किलोमीटर सफर करके पहली सभा में जाने के लिए वहां पहुंचे और देखे, जो उस समय विद्यार्थी जीवन में थे। हमारे सुदूर बस्तर अंचल और बीजापुर जैसे क्षेत्रों में बहुत अच्छा लगा कि पहली बार मुख्यमंत्री को देखे। अजीत जोगी जी ने भी उस समय बहुत सारे तत्कालीन निर्णय लिये। कैसे प्रदेश को आगे बढ़ाएं, विषम परिस्थितियों में उन्होंने निर्णय लिया। जोगी डबरी से लेकर खासकर आदिवासियों की बात करूं तो उन्होंने बहुत सारे निर्णय छत्तीसगढ़ के हित में आदिवासियों के हित में लिया। उसके बाद हमारे जो वर्तमान विधान सभा अध्यक्ष पूर्व मुख्यमंत्री डॉ. रमन सिंह का कार्यकाल आया तो एक लंबा कार्यकाल, लगभग

15 साल, इन 25 सालों में 15 साल माननीय रमन सिंह जी ने मुख्यमंत्री के रूप में कार्य किया और उस कार्यकाल में भी बहुत सारा निर्णय छत्तीसगढ़ के हित में हुआ। चाहे वह चावल की बात करें, चाहे अन्य जो भी बहुत सारी योजना उन्होंने भी लायी और छत्तीसगढ़ को एक बेहतर दिशा देने का काम मुख्यमंत्री के तौर पर डॉ. रमन सिंह जी ने किया और उसके बाद छत्तीसगढ़ के तीसरे मुख्यमंत्री के रूप में हमारे आदरणीय भूपेश बघेल जी का कार्यकाल 5 साल का रहा और इन 5 सालों में आदरणीय भूपेश बघेल जी ने भी बहुत सारे निर्णय जो छत्तीसगढ़ के हित में, छत्तीसगढ़ियों के हित में होना था, वह उन्होंने भी किया। और एक नयी पहचान देने के लिए छत्तीसगढ़ के छत्तीसगढ़ियों को बेहतर से बेहतर बहुत सारी योजनाएं, जो पहले नहीं आयी थीं, उन्हें लाने का काम माननीय भूपेश बघेल जी ने किया। चाहे वह किसानों को समर्थन मूल्य 2600 रुपये देने की बात हो, चाहे गरीब बच्चों को अंग्रेजी स्कूल के माध्यम से बेहतर शिक्षा देने की बात हो, चाहे आदिवासी क्षेत्रों में रहने वाले गरीब आदिवासियों के हित में वनाधिकार पट्टा देने की बात हो। उन्होंने ऐसे बहुत सारे निर्णय चाहे महिलाओं के हित में हो, युवाओं के हित में हो, गोधन न्याय योजना, स्वसहायता समूह योजना हो, बेरोजगार युवाओं को रोजगार भत्ता देने की बात हो, छत्तीसगढ़ को ऐसी पहचान देने का काम आदरणीय भूपेश बघेल जी ने भी किया और बेहतर काम इन 5 सालों में भूपेश बघेल जी ने किया और हम इसके बाद जो नई विधान सभा में जा रहे हैं तो कहीं न कहीं इसका श्रेय भी हमारे मुख्यमंत्री भूपेश बघेल जी को जाता है, उन्होंने तुरंत निर्णय लिया और नई विधान सभा का भूमिपूजन करवाया। बजट सत्र में बजट में लाया और आज जो एक नए आकार के साथ में विधान सभा बनी है, उसमें आने वाले सत्र में हम सब, आप सब जाएंगे और वहां पर भी बहुत सारे निर्णय छत्तीसगढ़ के हित में होना है। इसलिए मैं नई विधान सभा के लिए भी माननीय मुख्यमंत्री भूपेश बघेल जी को और वर्तमान मुख्यमंत्री हमारे विष्णु देव साय जी को और विधान सभा अध्यक्ष को भी धन्यवाद देना चाहता हूं और मैं यही चाहता हूं कि जिस तरीके से हमने 25 वर्षों में हम सभी, चाहे पक्ष हो, विपक्ष हो, मुख्यमंत्री हो या विधान सभा अध्यक्ष हो या उपाध्यक्ष हो, सबने मिलकर छत्तीसगढ़ की बेहतरी के लिए काम किया तो आने वाले समय में नया रायपुर में भी नई विधान सभा भवन में भी हम सब जाएंगे तो निश्चित तौर पर कहीं न कहीं दलदल राजनीति से उठकर छत्तीसगढ़ के हित में बेहतर निर्णय लेंगे और छत्तीसगढ़ राज्य का और आगे पूरे देश में नाम हो। इस दिशा में हमारा काम होगा, हमारा प्रयास होगा, यह मैं सोचता हूं और उम्मीद करता हूं। सभापति महोदय, साथ ही मैं आपसे कहना चाहता हूं कि जो विधान सभा सत्र आहूत होती है, पहले तो बजट सत्र बड़ा होना चाहिए। हमारा जो इतना बड़ा छत्तीसगढ़ राज्य है, 90 विधायक आते हैं। अपने राज्य की, अपने जिले की, विधान सभा की की जो बातें हैं तो अपनी बात रखने के लिए बहुत कम समय मिल पाता है । तो मेरा आपसे आग्रह है कि कम से कम नई विधान सभा में अगला सत्र जो 14 दिसंबर से आहूत होना है, उसमें थोड़ा विधान सभा सत्र बड़ा हो ताकि हम सब अपनी बात वहां पर रख सकें। हमारे जो बहुत से नये-नये

विधायक साथी हैं, वह अपनी बात नहीं रख पाते हैं तो उनको भी बेहतर समय मिले। हमारे वर्तमान मुख्यमंत्री आदरणीय विष्णुदेव साय जी हैं। अभी उनको दो साल हुए हैं, वह बेहतर काम कर रहे हैं। उनके पास अभी तीन साल का समय शेष है, हम देखते हैं कि वह क्या काम कर पाते हैं या नहीं कर पाते हैं। फिलहाल मैं आपसे यही कहना चाहता हूं कि हम सभी मिलकर छत्तीसगढ़ के हित में बेहतर से बेहतर काम करें। जिस तरीके से हम लोगों ने लंबे समय तक इस विधान सभा भवन में छत्तीसगढ़ के हित के लिए काम किया, उसी तरह नये विधान सभा भवन में भी हम सभी मिलकर छत्तीसगढ़ के हित के लिए काम करेंगे। दलगत राजनीति तो रहती है, लेकिन राजनीति से हटकर छत्तीसगढ़ के हित में जो बेहतर हो, आगे आकर हम उन निर्णयों को करें, ऐसा मेरा सोचना है। हमारे जितने भी सदस्य हैं, उनसे भी मेरा आग्रह है कि हम सभी मिलकर आने वाले समय में छत्तीसगढ़ की बेहतरी के लिए काम करें। सभापति महोदय, आपने मुझे इस अवसर पर बोलने का मौका दिया, इसके लिए मैं आपका बहुत-बहुत आभार व्यक्त करना चाहता हूं। हमारे पृथक छत्तीसगढ़ का सपना देखने वाले महापुरूष, जो हमारे बीच नहीं हैं, उन्हें मैं नमन करता हूं। उनके जो अधूरे सपने हैं, वह कैसे पूरे हो, उस दिशा में हम सभी प्रयास करें। उनके सपनों को पूरा करने का प्रयास हम सब मिलकर करेंगे। इसी आशा और विश्वास के साथ मैं अपनी वाणी को विराम देता हूं। बहुत-बहुत धन्यवाद।

समय :
4.26 बजे **(सभापति महोदय (श्री धर्मजीत सिंह) पीठासीन हुए)**

सभापति महोदय :- श्री पुन्नूलाल मोहले जी।

श्री पुन्नूलाल मोहले (मुंगेली) :- माननीय सभापति महोदय, मैं विधान सभा के इस रजत जयंती वर्ष में और 25 साल का कार्यकाल पूरा होने पर सभी सदस्यों, माननीय अध्यक्ष महोदय, डॉ. रमन सिंह जी, हमारे सदन के नेता माननीय मुख्यमंत्री श्री विष्णुदेव साय जी, नेता प्रतिपक्ष डॉ. चरणदास महंत जी को बधाई व बहुत-बहुत धन्यवाद देता हूं, जिन्होंने इस चर्चा में भाग लिया। आज रजत जयंती वर्ष में इस विधान सभा भवन का आखिरी सत्र हो रहा है, इसके लिए मैं सबको धन्यवाद देता हूं। अगर मैं बात करूं तो छत्तीसगढ़ से पहले जब हम लोग मध्य प्रदेश विधान सभा में थे, उस समय यहां की स्थिति और विकास स्थिति कमजोर थी। चाहे शिक्षा के क्षेत्र में, चाहे स्कूल बनाने के क्षेत्र में, चाहे बिजली के क्षेत्र में, चाहे पानी के क्षेत्र में और चाहे अन्य क्षेत्रों में हमारी स्थिति कमजोर थी। इस कारण छत्तीसगढ़ राज्य अलग हो और छत्तीसगढ़ का विकास हो, इसके लिए पूर्व वक्ताओं में बहुत से लोग मांग करते रहे। सन् 1993-1994 में मैं भी मध्यप्रदेश का विधायक था। संकल्प प्रस्ताव छत्तीसगढ़ अलग राज्य हो, वह मेरे द्वारा भी रखा गया था। यह बात बहुत लोगों को मालूम नहीं होगी। गोपाल परमार का पहला नंबर का प्रस्ताव था और दूसरा नंबर का प्रस्ताव मेरा था। उस समय विधान सभा में मुख्यमंत्री माननीय

दिग्विजय सिंह जी थे। उन्होंने और सभी विधायकों ने मिलकर सर्वसम्मति से छत्तीसगढ़ पृथक राज्य हो, यह संकल्प पास किया और वह संकल्प दिल्ली गया। इसके लिए मैं पूर्व सरकार को धन्यवाद व बधाई देता हूं। मैं सांसद बन गया। संसद में भी एक धारा-377 होता है। जैसे जीरो ऑवर होता है, ध्यानाकर्षण होता है, वैसे ही लोक सभा में धारा-377 होता है। उसमें भी मैंने प्रश्न रखा था।

श्री राजेश मूणत :- मोहले जी, धारा-377 का अर्थ भी समझ लेना।

श्री पुन्नूलाल मोहले :- मैं समझ रहा हूं, तभी बात कर रहा हूं। परंतु वह लोक सभा की बात है, अन्य धाराओं की बात नहीं है। ऐसे प्रस्तावों में हम पृथक छत्तीसगढ़ की मांग करते रहे। उस समय माननीय अटल बिहारी वाजपेयी जी तत्कालीन प्रधानमंत्री थे। अभी हमारे तत्कालीन अध्यक्ष महोदय माननीय डॉ. रमन सिंह जी उस समय केन्द्रीय मंत्री थे, रमेश बैस जी केन्द्रीय मंत्री थे, उस समय तत्कालीन प्रदेश अध्यक्ष लखीराम अग्रवाल जी थे। सभी नेताओं ने मिलकर माननीय प्रधानमंत्री अटल जी से मांग की कि छत्तीसगढ़ राज्य हो। उन्होंने कहा कि हम छत्तीसगढ़ राज्य जरूर बनाएंगे और उन्होंने छत्तीसगढ़ राज्य बनाया, उसके लिए मैं उन्हें बहुत-बहुत धन्यवाद व बधाई देता हूं। यदि हम उस समय की स्थिति के बारे में कहे तो छत्तीसगढ़ की आर्थिक स्थिति यह थी कि प्रति व्यक्ति आय 14963 रूपये थी। आज यदि हम 25 साल की बात करे तो प्रति व्यक्ति आय 1 लाख 62 हजार 870 रूपये हो गई है। हम कितना आगे बढ़ चुके हैं। यदि हम स्कूल की बात करे तो उस समय 5000-7000 स्कूल थे, लेकिन आज 30,000 स्कूल हो गये हैं। 11000 हाई स्कूल हो गये हैं , 11 हजार हाईस्कूल हो गए, 333 महाविद्यालय हो गए। छत्तीसगढ़ 25 साल में उत्तरोत्तर दिशा की ओर बढ़ रहा है। उस समय 1 ही मेडिकल कॉलेज थे, आज 14 मेडिकल कॉलेज हैं, ITI हैं, IIIT है। अगर हम अन्य क्षेत्र की बात करें तो आगे बढ़ गए हैं। उस समय ट्यूबवेल की बात करें, ट्यूबवेल नगण्य थी, किसानों की सिंचाई की सुविधा ही नहीं होती थी। माननीय डॉ. रमन सिंह मुख्यमंत्री बने, यहां पांच बार चुनाव हुआ, पांच बार में चार बार भारतीय जनता पार्टी की सरकार बनी, एक बार कांग्रेस की सरकार बनी। उस समय ट्यूबवेल नहीं था, आज ट्यूबवेल की स्थिति हर गांव में 2,4,10,25,30 से कम नहीं है। पूरा ट्यूबवेल हो गया है, लोगों की जमीन की उर्वरा शक्ति बढ़ गई है, अच्छा विकास कर रहे हैं, 3100 रूपए धान की कीमत भी मिल रही है और 21 क्विंटल धान खरीदी जा रही है। उस समय के उत्पादन की बात करें तो सिर्फ 10-12 क्विंटल धान का उत्पादन होता था, आज 25 से 30 क्विंटल और 35 क्विंटल तक धान का उत्पादन हो रहा है, लोगों में आर्थिक विकास द्रुत गति से हो रही है। अगर उस समय पानी की समस्या की बात करें तो दो नल, एक नल के लिए डेढ़-डेढ़ किलोमीटर तक जाते थे, आज पानी की समस्या नहीं है, केन्द्र सरकार द्वारा जल प्रदाय योजना चल रही है, राज्य सरकार के द्वारा पाईपलाईन बिछाई जा रही है, लोगों के लिए पीने के पानी की व्यवस्था हर गांव में हो रही है। उस समय बिजली की समस्या भी देखे होंगे, किसी पारे में, टोले, मोहल्ले में बिजली नहीं होती थी, अगर रहती थी तो बहुत कम रहती थी, अब

हर गांव में पारे, टोले, मोहल्ले में भी बिजली पूर्ण की ओर है। सिंगल बत्ती बिजली बिल की माफ माननीय डॉ. रमन सिंह जी के समय हुआ। आपने उस समय देखा होगा, लोगों में भुखमरी थी, लोग दिल्ली, भोपाल, बाम्बे, लखनऊ कमाने भी जाते थे, उस समय परिस्थितियां एकदम गरीबी की स्थिति में थी। उस समय की परिस्थिति और आज की परिस्थिति में अंतर है। हमारे तत्कालीन मुख्यमंत्री डॉ. रमन सिंह जी ने 1 रूपए किलो में 35 किलो चावल देने की योजना लाई, 58 लाख से 70 लाख लोगों का राशन कार्ड बनाया गया और राशन कार्ड मिलने के बाद आज लोगों की स्थ‍िित सुधर गई है। अगर विष्णुदेव साय सरकार की बात करें तो 70 लाख महिलाओं को प्रतिमाह 1 हजार रूपए महतारी वंदन योजना में मिल रही है, महिलाओं की आर्थिक स्थिति सुधर रही है। अगर महिलाओं की सशक्तिकरण के बारे में बात करें तो पंचायत में, नगरपालिका में, नगर पंचायत में, नगर निगम में, जिला पंचायत में महिलाओं को 50 प्रतिशत आरक्षण दिया गया। अगर विकास प्राधिकरण की बात करें तो अनुसूचित जाति विकास प्राधिकरण है, आदिवासी विकास प्राधिकरण, पिछड़ा वर्ग विकास प्राधिकरण है, जिससे गांव के लोगों का विकास द्रुत गति से हो इसके लिए माननीय डॉ. रमन सिंह जी मुख्यमंत्री थे तब उन्होंने कार्य किया। उन्होंने 1 रूपए किलो में मुफ्त योजना लाई, दो किलो चावल 5 रूप के भाव में दे रहे हैं, जिससे लोगों को पौष्टिक आहार मिलता है, जिससे हमारे आदिवासी के बच्चों की स्थिति सुधर रही है। इन सब परिस्थितियों से बढ़कर आज हमारा छत्तीसगढ़ सबसे बढ़िया स्थिति में है, उस समय छत्तीसगढ़ को सामान्य स्थिति में देखा जाता था, आज छत्तीसगढ़ उत्तरोतर दिशा में है। माननीय प्रधानमंत्री जी ने नवीन विधान सभा भवन का उद्‍घाटन किया। अगर माननीय मुख्यमंत्री डॉ. रमन सिंह का कार्यकाल देखें तो बाबा गुरू घासीदास के जन्मस्थल में जयस्तंभ के लिए 54 करोड़ का निर्माण हुआ। अनुसूचित जाति, जनजाति विकास प्राधिकरण का गठन भी हुआ। हमने विधान सभा में अशासकीय संकल्प रखा था कि मुंगेली जिले में कॉलेज खुले, सर्व सम्मति से पास किया गया, मैं पक्ष और विपक्ष के सभी सदस्यों को बधाई देता हूं। वह संकल्प पास होने के बाद माननीय मुख्यमंत्री जी ने कॉलेज की स्वीकृति दी। फिर मैंने एक अशासकीय संकल्प मुंगेली में मेडिकल कॉलेज के लिए लाया था, उसको भी पक्ष और विपक्ष ने सर्व सम्मति से पास किया और हमारे माननीय मंत्री जी ने उसको दिल्ली भेजा है, वह पास हो जाए। ऐसे अनेक प्रस्ताव है। मैंने एक प्रस्ताव विधान सभा में रखा, जहां 25 प्रतिशत जनसंख्या एक गांव में आदिवासी समुदाय के लोग रहते हैं, उनको भी विकास प्राधिकरण में शामिल किया जाए, उस अशासकीय संकल्प को सभी लोगों ने सर्व सम्मति से पास किया और 25 प्रतिशत जहां आदिवासी समुदाय के लोग हैं, उन सबको विकास प्राधिकरण में जोड़ा जाए, उनसे भी लाभ मिलेगा। सभी तरफ पीने के पानी की व्यवस्था हो, पीने का पानी गांव में मिल रहा है। आवास की सुविधा, 24 लाख आवास पक्का मकान दे रहे हैं। पहले उसके लिए 20 हजार रूपया मिलता था, आज डेढ़ लाख रूपये तक पक्का मकान निर्माण

के लिए मिल रहा है। पक्का मकान बनने से सबका सम्मान बढ़ रहा है। सबको पक्का मकान मिल गया है।

जहां तक आवास की बात है, सभी जगह की आबादी भूमि को आवास मिल गया है। अगर हम और अन्य कार्यकाल की बात करें कि विधान सभा में कितने प्रस्ताव, कानून पास हुए तो सभापति महोदय, मैं आपको बताना चाहूंगा कि 580 प्रस्ताव पास हुए। 580 प्रस्ताव में से 470 संशोधन प्रस्ताव थे, 172 मूल प्रस्ताव इसी विधान सभा में पास हुए हैं। मैं विधान सभा को धन्यवाद देता हूं कि 25 साल में इतने सारे कानून बने हैं। यह यही विधान सभा है। आज इस विधान सभा में चर्चा करने का आखिरी दिन है। हम इस विधान सभा को नमन करते हैं, भजते हैं, धन्यवाद देते हैं, जहां इतने सारे जनता के हित में काम हुए हैं। आज उन प्रस्तावों के माध्यम से पूरे प्रदेश की जनता का हित हो रहा है। उनको आवास मिल गया, पीने का पानी मिल गया, लोगों को चावल मिल रहा है, महिलाओं को एक-एक हजार रूपया मिल रहा है। महिलाएं अपने स्वत: के पैर में खड़ी हैं, उन्हें दूसरे का मुंह ताकने की जरूरत नहीं है। लोगों को बिजली की सुविधा मिल गई।

श्री द्वारिकाधीश यादव :- मोहले जी, जो नहीं मिल रहा है, उसको भी थोड़ा बता दो।

सभापति महोदय :- उनको बोलने दीजिये। आप बोलिये।

श्री पुन्नू लाल मोहले :- जो नया सर्वे हो रहा है, उसमें भी नाम जुड़ा है। इस तरह से आज छत्तीसगढ़ एक विकसित राज्य की ओर बढ़ रहा है। हम सब मिलकर विकसित राज्य में काम कर रहे हैं। मैं बहुत-बहुत धन्यवाद देता हूं। हम नये विधान सभा में जायेंगे और नये उमंग, जोश के साथ वहां भी काम करेंगे। इस तरह मैं आपको बधाई देता हूं, धन्यवाद देता हूं। जय हिन्द, जय भारत, जय छत्तीसगढ।

श्री दिलीप लहरिया :- आज रात में पूजा-पाठ होगा या नहीं ?

श्रीमती अनिला भेंड़िया (डौण्डी लोहारा) :- माननीय सभापति महोदय, 25 साल पूरे होने के अवसर पर आज एक दिवसीय विधान सभा सत्र का आयोजन किया गया है। उसके लिए हम सब हमारे विधान सभा अध्यक्ष महोदय को बहुत बहुत धन्यवाद देते हैं। हम सबके स्वप्नदृष्टा हमारे बुजुर्ग, यहां के वरिष्ठों को भी धन्यवाद देंगे। जो हमारे बीच नहीं हैं, हम उन्हें नमन करते हैं। जो हैं, कुछ तो हमारे सदस्य भी हैं और अभी वर्तमान में हैं, उन सबको प्रणाम करते हुए भी उनके प्रति कृतज्ञता ज्ञापित करते हैं कि उन्होंने हम सब नये साथियों को यहां विधान सभा में बैठने का अवसर दे रहे हैं। हम सबको आप सबसे, वरिष्ठों से सीखने का अवसर मिल रहा है।

माननीय सभापति महोदय, जब 14 दिसम्बर 2000 को प्रदेश का नया विधान सभा राजकुमार कॉलेज के जशपुर हॉल से प्रारंभ होकर इस विधान सभा भवन तक, 25 साल तक आप लोगों ने इस विधान सभा का संचालन किया है। हमारे संचालनालय के अधिकारी लोग भी डी.के.एस. अस्पताल के 2

छोटे-छोटे कमरे में बैठकर कार्य का संचालन किया है। हम उन अधिकारियों को भी धन्यवाद देते हैं, जिन्होने पूरे छत्तीसगढ़ राज्य के लिए पूरी कार्ययोजना बनाकर हमारे जनप्रतिनिधियों के साथ मिलकर कार्य संचालित किया है। आज हमारे वरिष्ठ वक्ताओं ने अपनी बातें रखीं, अपनी जानकारियां बताईं, हम सब लोगों को तो उतनी जानकारियां भी नहीं थीं, उसको आज हम सब लोग सुने भी हैं, जाने भी हैं और सीखे भी हैं। परन्तु यहां मैं पिछले 3 कार्यकाल से इस विधान सभा की सदस्य हूं। यहां कार्यप्रणाली चल रही है, उसको देख भी रही हूं। जैसे कि कोरोना काल में सभी प्रदेशों में विधान सभा सत्र नहीं चला, परन्तु हमारे छत्तीसगढ़ में कोरोना काल में भी, हम लोगों ने हमारे पूरे 90 सदस्यों ने, हमारे विधान सभा अध्यक्ष ने, हमारे मुख्यमंत्री जी ने सभी ने मिलकर विधान सभा सत्र आहूत किया, यह हम सबके लिए बहुत बड़ी बात है। उस दौरान किसी विधायक को कुछ नहीं हुआ। उस काल में भी सावधानीपूर्वक विधान सभा सत्र का पूरे साथियों के साथ बढ़िया संचालन हुआ। उसी समय विधान सभा अध्यक्ष रहे आदरणीय डॉ. चरणदास महंत जी ने महात्मा गांधी जी की 150वीं जयंती पर पहली बार एक विशेष सत्र बुलाया गया। उसका भी बहुत सुंदर ढंग से आयोजन हुआ। उसमें हमारे सभी साथियों ने भाग लिया। उसमें हम सभी एक साथ, एक ड्रेस में आये थे। उस समय हमारे अध्यक्ष जी की तरफ हमको नया ड्रेस मिला था। हम सभी ने एक साथ परंपरागत ड्रेस में उनकी जयंती का आयोजन किया। मैं समझती हूं कि इस विधान सभा में हम लोगों ने पेपरलेस की दिशा में जो कदम बढ़ाया है, वह भी महत्वपूर्ण है। क्योंकि हमने पेपरलेस अपनाने की कोशिश तो की हैं और इसमें हम लोग सफल भी हो रहे हैं। अधिक से अधिक सदस्य ऑनलाईन प्रश्न लगाने का काम कर रहे हैं। इसके अलावा इस विधान सभा को राष्ट्रीय एवं अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन से भी पहचान मिली है क्योंकि हमारे विधान सभा में राष्ट्रीय एवं अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर कई सम्मेलन आयोजित किये गये हैं। पीठासीन अधिकारियों के साथ सम्मेलन एवं एशियाई स्तर का सम्मेलन भी आयोजित किया गया है, इससे छत्तीसगढ़ विधान सभा को राष्ट्रीय एवं अंतर्राष्ट्रीय मंच पर पहचान मिली है। गर्भगृह प्रवेश निषेध नियम के लिए हमारा छत्तीसगढ़ विधान सभा एक उदाहरण बना हुआ है। हर विधान सभा में आज छत्तीसगढ़ विधान सभा की एक पहचान है कि यह नियम हमारे छत्तीसगढ़ विधान सभा ने बनाया है। वैसे ही हमारे विधान सभा के लिए एक और गौरव की बात है कि हमारे विधान सभा में देश के तीन राष्ट्रपतियों का आगमन हुआ है। सभी राष्ट्रपतियों ने विधान सभा को संबोधित भी किया है। यह लोकतांत्रित इतिहास के लिए गौरव की बात है। (मेजों की थपथपाहट) लोकतंत्र में नेताओं की जो यात्रा है, वह भी हमारे लिए एक मिसाल है। माननीय अजीत जोगी जी जो मुख्यमंत्री रहें, बाद में विधायक के रूप में सदन में उपस्थित रहें। वर्तमान में हमारे मुख्यमंत्री श्री विष्णु देव साय जी हैं। वे पहले मध्य प्रदेश के विधायक रहे हैं, फिर सांसद भी रहे हैं, फिर मंत्री भी बनें। उसी तरह से आदरणीय डॉ. रमन सिंह जी अविभाजित मध्य प्रदेश के विधायक भी रहे, बाद में मुख्यमंत्री बने। इस तरह आज अध्यक्ष के रूप में आदरणीय रमन सिंह जी भी काम कर रहे हैं। पूर्व सरकार में आदरणीय डॉ.

चरणदास महंत जी ने भी अध्यक्ष के रूप में काम किया। सभी अध्यक्षों ने अपने-अपने कार्यकाल में बहुत अच्छा काम किया और उन्होंने सभी सदस्यों को सपोर्ट भी किया है। कभी किसी के प्रश्न में कोई दिक्कतें आती थी है तो हमेशा विधान सभा के अध्यक्ष की ओर से विधायकों को सहयोग मिला, सपोर्ट मिला। यह हम लोगों के लिए बहुत बड़ी बात है क्योंकि यहां जितने भी विधायक हैं, हम सब यहां अपने विधान सभा क्षेत्र की बात रखने के लिए आते हैं और हम अपनी-अपनी बात रखते हैं। ऐसा कोई व्यक्तिगत समस्या नहीं रहती है। हम सभी अपने विधान सभा क्षेत्र के लिए बात रखते हैं। शासन में चाहे विपक्ष या अन्य दल के लोग हो, जब तक इनको सपोर्ट नहीं मिलेगी, तब तक वह अपनी बात नहीं रख पायेंगे। यह बहुत जरूरी है और हमें हमेशा विधान सभा अध्यक्षों से सहयोग मिलती रही है। आज हमारी आदरणीय लता दीदी बोल रही थी कि जैसे पूर्व सरकार धान का पैसा किश्तों में देती थी, उसको हम लोगों ने एक साथ दिया है। वह तो किसान का हक है, चाहे उसको किश्त में दें या अलग-अलग दें। वह तो उनके हक का पैसा है। रही बात योजनाओं की कि पूर्व सरकार ने योजना को ऐसे चलाया और अभी ऐसे चल रहा है तो वही काम अभी भी हो रहा है। वह बोल रही थी कि पूर्व सरकार ने जो योजना बनाई थी, वह अभी नहीं चल रहा है तो हम लोगों ने जो योजना बनाया था, उसको भी आप अभी बंद कर दे रहे हैं। निरंतर अपनी-अपनी जो सरकार आती है, वे अपनी-अपनी विचार से, अपने-अपने नियम से कानून बदलते रहते हैं, उनमें बोलने की जरूरत ही नहीं है। आज 25 साल कैसे पूरा हुआ, हमारे यहां विधान सभा के लोग नीति कैसे बनाये, उसमें चर्चा करने के लिये यहां पर आये हैं । हमारे विधान सभा की जो अच्छाई है, उसमें बात रखें, उसमें बात करें । मुझे यहां लगता है कि जितने भी सदस्य हैं, भले ही हम आन्सर, क्वेश्चन के लिये छींटाकशी करते हैं, कभी तो बहुत उत्तेजित होकर भी बात करते हैं, परन्तु यह एक अच्छी बात है कि हम बाहर जाकर कभी साथ में चाय पी रहे हैं, कभी साथ में खाना खा रहे हैं, बीड़ी-चोंगी पीने वाले लोग बीड़ी-चोंगी भी पीते रहते हैं, हम लोगों का यह जो भाईचारा है, जो अपनापन है, वह छत्तीसगढ़ के हमारे विधायक साथियों का बहुत बड़ा उदाहरण है । यह बहुत अच्छी बात है, वैसे भी जो छत्तीसगढ़िया सबले बढ़िया कहावत है, वह यहीं परिलक्षित होती है । इन सभी भावनाओं के साथ आपने बोलने का अवसर दिया, आपको उसके लिये बहुत-बहुत धन्यवाद ।

सभापति महोदय :- धन्यवाद । श्री राजेश मूणत जी ।

श्री राजेश मूणत (रायपुर पश्चिम) :- सम्माननीय सभापति महोदय, छत्तीसगढ़ विधान सभा के रजत जयंती वर्ष के अवसर पर, छत्तीसगढ़ विधान सभा के 25 वर्ष पूर्ण होने पर हमने क्या खोया और क्या पाया तथा भविष्य की कार्ययोजना में आपका अपना छत्तीसगढ़ का अमूल्य योगदान है । हमारे वरिष्ठ लोगों का अनुभव प्राप्त हुआ और चर्चा की शुरूआत वरिष्ठ विधायक पूर्व मंत्री अजय चन्द्राकर जी ने किया । पूर्व मुख्यमंत्री माननीय भूपेश बघेल जी ने भी विषय रखी और आज यहां इस सभा में सभी वरिष्ठ लोग हैं । ऐसे बहुत से लोग हैं जो नये हैं और कई पुराने लोग हैं, जिन्होंने अनुभव के साथ में

काम किया है । राज्य के 25 वर्ष पूर्ण हुये हैं और राज्य की प्रगति की ओर आगे बढ़ रहे हैं, उसमें सभी का योगदान है । राज्य के निर्माण के समय छत्तीसगढ़ की जनसंख्या 2 करोड़ 30 लाख थी और आज हमारी जनसंख्या 3 करोड़ के लगभग हो गयी है । छत्तीसगढ़ राज्य के निर्माण के समय हमारे पास 16 जिले हुआ करते थे और आज हमारे पास 33 जिले हो चुके हैं । जब हम छत्तीसगढ़ के विकास की कल्पना करते हैं तो इसमें आप हम सभी का योगदान है, जिन्होंने छत्तीसगढ़ राज्य की कल्पना की होगी, जिन्होंने उस समय आंदोलन में भूमिका निभायी होगी, वैसे श्रद्धेय लोगों को हम नमन करते हैं और उन लोगों को भी हम याद करते हैं, जिन्होंने छत्तीसगढ़ की नींव रखने में अपना योगदान दिया है । पूर्व मुख्यमंत्री रह चुके हैं, यह मालूम था, जीवन का कमिटमेंट था, जनप्रतिनिधि होने के नाते मैं इस बात को कहना चाहता हूँ और यहीं से अपनी बात प्रारंभ करता हूँ कि जनता से किया हुआ जो कमिटमेंट है, यदि वह इसे पूरा करता है तो वह सक्सेस होता है । भारतीय जनता पार्टी ने रायपुर की लोक सभा में देश के वरिष्ठ नेता, उस समय के विपक्ष के नेता, श्री अटल बिहारी वाजपेयी जी ने जो जनता से वादा किया कि अगर आप हमें छत्तीसगढ़ में बहुमत देंगे, छत्तीसगढ़ की 11 लोक सभा सीटों में जीत दिलायेंगे तो मैं छत्तीसगढ़ राज्य निर्माण करूँगा । यह बात उस समय उन्होंने की थी और उसके पहले कई लोगों ने आंदोलन की है । कई लोगों का योगदान है, कई लोगों ने बातें उठाई, लेकिन वैचारिक दृष्टि से किसी पार्टी के नेता ने इस बात को रायपुर की सभा में कहा तो माननीय अटल बिहारी जी ने रमेश बैस जी की सभा में कहा था । 13 दिनों की सरकार आई, 18 महीने की सरकार आई तो उसने कमिटमेंट किया, देश के उप प्रधानमंत्री और केन्द्र में गृह मंत्री श्री लालकृष्ण आडवाणी जी ने लोक सभा के अंदर तीन राज्यों का प्रस्ताव लेकर आये । छत्तीसगढ़ राज्य का निर्माण 1 नवम्बर 2000 को हुआ तथा छत्तीसगढ़ राज्य निर्माण के बाद मुख्यमंत्री कौन बनना चाहिये था, इसमें छत्तीसगढ़ के अंदर पहला प्रश्नवाचक चिन्ह खड़ा हुआ । राजनीतिक विचारों की लड़ाई हो सकती है, सिद्धांतों की लड़ाई हो सकती है, लेकिन जिस समय छत्तीसगढ़ का मुख्यमंत्री बनाने की बातचीत आई, उस दिन कांग्रेस भवन के अंदर और रायपुर के किस नेता के कपड़े फाड़े गए, यह जनता जानती है और जनता पूछती है कि नींव कहां रखी थी ?

समय :-
4:50 बजे **(सभापति महोदय (श्री प्रबोध मिंज) पीठासीन हुए)**

सभापति महोदय, यह बात वहीं से प्रारंभ होती है । छत्तीसगढ़ शांति का टापू है और छत्तीसगढ़ राजनीतिक विचारधाराओं में जो लोग बांटने की बातचीत करते हैं, मैं इतना जरूर कहना चाहता हूं कि छत्तीसगढ़ के अंदर भाई चारा, प्रेम, मोहब्बत, स्नेह, प्यार है तो छत्तीसगढ़ जाति के आधार पर नहीं बंट सकता । यह छत्तीसगढ़ आपका, मेरा अपना है, इसमें रहने वाले 3 करोड़ छत्तीसगढ़िया भाई-बहन हैं ।

उनका पूरा हक बनता है । इसीलिए उस समय जब बात आई, उस समय के मुख्यमंत्री थे तो वायलेशन हुआ । राजनीति में पहला वायलेशन छत्तीसगढ़ में हुआ तो 2002 में राजनीतिक हत्या हुई । छत्तीसगढ़ के अंदर कभी यह वायलेशन नहीं हुआ । छत्तीसगढ़ की सबसे पुरानी इंडस्ट्रीज़ भिलाई स्टील प्लांट की चिमनी आजतक कभी बंद नहीं हो पाई । यह छत्तीसगढ़ है । छत्तीसगढ़ के अंदर कभी कोई ऐसा आन्दोलन नहीं हुआ, जिसमें गोलियां चले, जाति-वर्ग-समाज को बांटने की बात हो । छत्तीसगढ़ उदय की ओर आगे बढ़ा । जोगी जी ने कुछ काम अच्छे किए हैं । भविष्य की दृष्टि के लिए उन्होंने एक बात अच्छी कही थी कि छत्तीसगढ़ में फसल चक्र परिवर्तन आना चाहिए । लोगों को जागरूक करने की कोशिश की, लेकिन लोग समझ नहीं पाए । मैं भी एक राजनीतिक दल का कार्यकर्ता हूं, मैं विचारधारा से बंधा हुआ हूं, लेकिन मैं आज सदन में एक जनप्रतिनिधि के नाते बोल रहा हूं कि यह व्यक्तिगत मेरी राय है कि अगर छत्तीसगढ़ को आगे लेकर जाना था, उस व्यक्ति की दूर-दृष्टि थी कि छत्तीसगढ़ में फसल चक्र परिवर्तन होना चाहिए । यह बात उन्होंने शोध करके बोली थी, लेकिन राजनीतिक दृष्टि से क्या हो गया ? इसलिए मैंने कहा कि छत्तीसगढ़ में वायलेशन की जगह नहीं है । उस समय राजनीतिक हत्या होने के कारण छत्तीसगढ़ में वायलेशन हुआ और छत्तीसगढ़ के अगले चुनाव में भारतीय जनता पार्टी की सरकार चुनकर आई और पहली चुनी हुई सरकार के मुखिया डॉ. रमन सिंह जी बने । जब डॉ. रमन सिंह मुख्यमंत्री बने तो डॉ. रमन सिंह केन्द्र में मंत्री थे, भारतीय जनता पार्टी के अध्यक्ष थे । उनकी पहली सरकार थी और जिस दिन छत्तीसगढ़ सरकार का निर्माण हुआ, उस समय छत्तीसगढ़ का बजट 3 हजार करोड़ का था । उसमें क्या कल्पना कर सकते थे, उसमें क्या होगा ? क्या दूरस्थ वनांचल क्षेत्रों में रहकर काम कर लेंगे ? कहां जाकर बात करेंगे ? क्या सुकमा, क्या बीजापुर, क्या नारायणपुर, क्या जशपुर, क्या कोरिया, क्या मनेन्द्रगढ़, क्या चिरमिरी? चुनी हुई सरकार का पहला बजट, जोगी जी आये थे तो 6700 करोड़ रूपए खतम हुए । 3000 करोड़ रूपए का पहला बजट डॉ.रमन सिंह के बाद में चालू हुआ और मैं कह सकता हूं कि आप 1 लाख, 60 हजार करोड़ रूपए के बजट में कहीं पहुंचे हैं तो छत्तीसगढ़ के हर व्यक्ति का योगदान है । (मेजों की थपथपाहट) मैं राजनीतिक विचारधारा से ऊपर उठकर कह रहा हूं । हम अपनी पार्टियों से, अपनी विचारधारा से बंधे होंगे, लेकिन छत्तीसगढ़ की तरक्की और उन्नति का सबसे बड़ा योगदान अगर किसी बात का है तो डॉ. रमन सिंह जी की दूर-दृष्टि, उनकी सोच, उनकी कल्पना है, जिसको 15 साल में जनता ने स्वीकार किया । आज मैं छत्तीसगढ़ के वनांचल क्षेत्र की बात करूं, वनांचल क्षेत्र में रहने वाले भाइयों के बारे में कभी किसी ने कहा कि शिक्षा के क्षेत्र में क्या परिवर्तन होना चाहिए ? यदि वहां "प्रयास" जैसी संस्था लाकर वहां के बच्चों की पढ़ाई में अपना योगदान दे सकती है, दंतेवाड़ा में एजुकेशन हब बना । वहां कोई कल्पना कर सकता है क्या ? जगदलपुर में मेडिकल कॉलेज बन जाये, इसकी कल्पना कोई कर सकता है क्या ? तेंदूपत्ता का समर्थन मूल्य 5500 हजार रूपए हो जाये । यह आसान बात नहीं है । यह काम इसलिए की दूर-दृष्टि को सोचकर जब

काम किया तो आज परिवर्तन देखने को मिल रहा है । लखेश्वर भाई राजनीतिक बात बोल रहे थे । लखेश्वर भाई, ऐसा कर्म ही क्यों करना कि किसी को अंदर जाना पड़े । मैं आज भी कहता हूं कि इस सदन के अंदर कई अनसुने प्रश्न हैं, कई चीजें हैं, जिसके ऊपर मैं बात करूंगा । मैं बहुत लंबी बात कह सकता हूं । मैं युवा मोर्चे का अध्यक्ष था, उस समय इस रायपुर शहर के अंदर एक लाठी चार्ज हुआ । नेता प्रतिपक्ष को दौड़ा-दौड़ाकर मारा गया था, केन्द्र में मंत्री, पूर्व मुख्यमंत्री शिवराज सिंह चौहान को मारा गया, प्रहलाद पटेल को मारा गया, घड़ी चौक पर किसको नहीं मारा गया ? आंदोलन क्या था ? आंदोलन असली और नकली का था। आज असली मुख्यमंत्री हैं और उस समय नकली मुख्यमंत्री थे। सवाल इतना ही था कि उन्होंने इंदौर के अंदर पेट्रोल पंप के लिये जो सर्टिफिकेट दिया, वह सर्टिफिकेट अवैध था, गलत था और उसी मांग को लेकर राजधानी में 28 अप्रैल 2001 को मांग की गयी थी और वहां इतनी बर्बरता के साथ लाठी चार्ज हुई। विधान सभा की एक कमेटी उसकी जांच करती है और जांच रिपोर्ट आती है फिर जांच रिपोर्ट हाऊस के अंदर प्रस्तुत होती है और जांच रिपोर्ट आने के बाद जिन अधिकारियों ने गलत लाठीचार्ज की, उनको सजा देने के लिये यहां कटघरा तैयार हो जाता है। उस समय के तत्कालीन अध्यक्ष माननीय राजेन्द्र प्रसाद शुक्ल जी थे। माननीय राजेन्द्र प्रसाद शुक्ल जी के फैसला करने के बाद उस समय के तत्कालीन मुख्यमंत्री ने जिन शब्दों का प्रयोग किया, मैं उनके बारे में यहां कहना नहीं चाहता हूं। साहब, रातों-रात व्यवस्था चेंज हो गयी, कार्य सूची निकल गयी और कार्यसूची चेंज हो गयी और मामला खत्म हो गया। यह भी इसी विधान सभा का इतिहास है। इसी विधान सभा में राजनीतिक हत्या करने का मामला भी आया और इसी विधान सभा में चरित्र हत्या करने का मामला भी आया। मैं उसका साक्ष्य हूं। यह भी इस विधान सभा का एक इतिहास है। जब हम बात करते हैं तो मैंने कहा कि यदि किसी ने गलत किया है तो चाहे मैं रहू या आप रहिये, यदि जीवन में ऊंगली उठाओगे तो तीन ऊंगली अपनी तरफ भी आती है। यहां कोई दूध का धुला नहीं है। लखेश्वर भाई, आप भी तो हमारी पार्टी में थे। आप पहली बार जिला पंचायत के उपाध्यक्ष बने थे। आप हमारे सहयोगी रहे।

श्री रामकुमार यादव :- भैया जी, इसी बात को उधर भी समझा दीजिये।

श्री राजेश मूणत :- यादव महाराज, हम सबको समझायेंगे। कुर्सी किसी की नहीं है, न तुम्हारी है न मेरी है। आप गलतफहमी में मत जियो, न मैं जीता हूं। मैं जब यह बात कह रहा हूं कि आप जिनके भरोसे चलेंगे, आप आंख कान खुला रखना क्योंकि यह किसी के नहीं होते हैं। आप गलतफहमी में मत रहना। मैं 15 साल रह चुका हूं, मुझे सब चीजों का अनुभव है। इसलिए जब छत्तीसगढ़ तरक्की और प्रगति की ओर बढ़ता है तो हमारे मन में खुशी होती है। आप लोग क्यों काम नहीं कर पाये ? आप लोगों को किसने रोका ? अगर छत्तीसगढ़ में भुखमरी की बात आती है तो छत्तीसगढ़ के समाचार पत्रों में छपता है कि छत्तीसगढ़ से पलायन होता है, यहां के लोग वहां हजारों की संख्या में जाते हैं और जब छत्तीसगढ़ में भुखमरी और पलायन को लेकर कोई कार्य योजना बनती है तो छत्तीसगढ़ में Food

Security Bill आता है और पूरे देश में चर्चा का विषय बनता है। छत्तीसगढ़ के 90 विधायक जो यहां बैठे हैं, वह 3 करोड़ जनता का प्रतिनिधित्व करते हैं। हमें गर्व महसूस होता है कि हमने छत्तीसगढ़ की विधान सभा से Food Security Bill पारित किया है। यह एक सोच है, एक कल्पना है कि छत्तीसगढ़ में 150 दिन का रोजगार देना, 100 दिन का रोजगार देना, 50 दिन का रोजगार देना। यह किसने कहा था ? यह आपके और हमारे लोगों ने तय किया है। यह छत्तीसगढ़ के विधायकों ने तय किया है। यह हमारे लोकतंत्र के मंदिर ने तय किया। हम लोगों ने ही चर्चा की और हम लोगों ने ही पारित किया। यह बजट आप और हम ही लेकर आते हैं। कल का छत्तीसगढ़ क्या था और आज का छत्तीसगढ़ क्या है ? आप बात करें तो बस्तर की बात करें, आप बात करें तो सरगुजा की बात करें, आप बात करें तो अंबिकापुर की बात करें, आप रायपुर की ही बात करिये आप दूर क्यों जाते हैं ? यहां क्या था ? आप सब तो यहीं रहे हैं और यहीं पढ़े लिखे हैं। कई कॉलेज में पढ़े हैं। कोई इंजीनियरिंग कॉलेज में पढ़ा है तो कोई मेडिकल कॉलेज में पढ़ा है। आप उठाकर देख लीजिये कि छत्तीसगढ़ में 2008 के पहले कितने मेडिकल कॉलेज हुआ करते थे ? आज 14 मेडिकल कॉलेज है। यह एक दूरदृष्टि थी, यह एक स्वप्न था, जिसको साकार करना था कि छत्तीसगढ़ का कोई भी व्यक्ति बीमारी में न मरे, उसके लिये कोशिश की और योजनाबद्ध तरीके से काम किया। कमी-बेशी होगी, कमी-बेशी सब में होगी लेकिन दूरदृष्टि तो थी, काम करने की इच्छाशक्ति तो थी। आगे बढ़े तो हमने कदम तो बढ़ाया। इसीलिये मित्रों आज हम बजट की बात करते हैं, आज हम विकास की दृष्टि की बात करते हैं। आज छत्तीसगढ़ 5 प्रदेशों से घिरा हुआ है। चारों तरफ फोरलेन का निर्माण, गांव-गांव के अंदर इंफ्रास्ट्रक्चर, शहर-शहर के अंदर इंफ्रास्ट्रक्चर, चारों तरफ विकास के काम की गाथाएं लिखी जा रही है।

समय
5.00 बजे

यादव जी, हमने वह दिन भी देखे हैं। अगर वर्ष 2003 में बच्चे को पढ़ाना होता था तो 10 रूपये के स्टॉम्प पेपर में जनभागीदारी से स्कूल खोलिए और लिखकर दीजिए तब छत्तीसगढ़ में स्कूल खुलेगा। हमने इसी विधान सभा के अंदर वह दिन भी देखे हैं। अगर मैं गलत बात बोल रहा हूँ तो यहां पर माननीय नेता जी बैठे हैं, उनसे पूछ लीजिए कि ऐसी स्थिति थी या नहीं थी। अगर अपने बच्चे को पढ़ाना है तो 10 रूपये के स्टॉम्प पेपर में जनभागीदारी से स्कूल खोलिए। आज हमारा छत्तीसगढ़ कहां है। यह किसी राजनीतिक दल के नेता के कारण नहीं है, इसमें हमारी सोच, दूरदृष्टि, कल्पना, विजन था और उसको आगे बढ़ाने के लिए 90 विधायक हैं । सरकार में कोई इधर है तो कोई उधर है। अगर यह दूरदृष्टि नहीं होगी तो मेरे भाई क्या करोगे? इसमें हमारी दूरदृष्टि थी तो आप दोष किसको देंगे ? छत्तीसगढ़ में यह भी एक इतिहास है। धरम भईया, हम लोग कभी चारा घोटाला की बात करते हैं, बिहार की बात करते हैं, छत्तीसगढ़ में भी आई.ए.एस., आई.पी.एस. हैं। छत्तीसगढ़ पी.एस.सी. में जितने

अधिकारियों का घोटाले में नाम है, यह भी इस छत्तीसगढ़ का एक इतिहास है। यह चिन्ता का विषय है। आपको यह आश्चर्य लग रहा है । हम किस दिशा में जा रहे हैं। हम विजन के साथ काम करके आगे बढ़े। रायपुर शहर की तरक्की, नया रायपुर में मजाल है आपने नये रायपुर में एक ईंट तक नहीं जोड़ पाये। केवल नामकरण करने के लिए भीड़े रहे।

श्री रामकुमार यादव :- बबा हो, ओ जंगल ला उजाड़त हे ते कईसे हे।

श्री राजेश मूणत:- मैं आपका जंगल नहीं उजाड़ूंगा, आप चिन्ता मत करिये।

श्रीमती संगीता सिन्हा :- माननीय सभापति महोदय, नये रायपुर का शिलान्यास भी जोगी ने किया था। जब वर्ष 2000 में छत्तीसगढ़ राज्य बना था तभी उसका शिलान्यास हुआ था। नया रायपुर हमारी ही देन है।

श्री राजेश मूणत:- बहन, संगीता जी, मेरी बात सुनिये।

सभापति महोदय :- माननीय संगीता जी, उनको बोलने दीजिए।

श्री राजेश मूणत :- माननीय सभापति महोदय, नये रायपुर की आधारशिला माननीय जोगी जी ने रखी, उस समय सोनिया गांधी जी आयी थीं, वह पत्थर लगाकर गयी थीं ।

श्रीमती संगीता सिन्हा :- माननीय सभापति महोदय, हमने उस समय आधारशिला तो रखी। उसके बाद आपने विकास किया, मैं यह मानती हूँ।

श्री राजेश मूणत :- आप मेरी बात सुन लीजिए। 21 वीं सदी का एक नया शहर, एक नया विजन, एक डेवलपमेंट, आज जब उसके ऊपर अपनी फोटो छपवाते हैं तो आपको बहुत अच्छा लगता है। साहब, यह हमारा है। आप लोगों के द्वारा 5 सालों में एक ईंट नहीं जोड़ी गयी। वहां पर एक काम नहीं हुआ। आप लोगों ने नया रायपुर में 5 सालों में क्या किया ? स्मार्ट सिटी का पैसा आया, उसका भी स्वार्थपूर्ण बंटवारा हुआ। यहां पर कोई एक काम भी नहीं बता सकता है।

श्री द्वारिकाधीश यादव :- राजेश मूणत भईया, 14 दिसम्बर, 2025 को जिस विधान सभा में प्रवेश करेंगे और पूर्व में 1 नवम्बर, 2025 को प्रवेश करके आ चुके हैं। उसको किसने बनवाया ? वहां पर आप एक ईंट नहीं जोड़ने की बात कह रहे हैं।

सभापति महोदय :- श्री द्वारिकाधीश यादव और श्रीमती संगीता सिन्हा जी यह आपस में एक दूसरे से बहस का विषय नहीं है।

श्रीमती संगीता सिन्हा :- माननीय सभापति महोदय, हम जिस विधान सभा में जाएंगे उसकी आधारशिला किसने रखी है।

श्री रामकुमार यादव :- ए रायपुर के आड़ा-बाड़ा काय हे ? तेला पहिली बतावव? ओकर नीचे में जाए बर डर मा पोटा कापत हे।

श्रीमती संगीता सिन्हा :- माननीय सभापति महोदय, हम जिस विधान सभा में प्रवेश करने जा रहे हैं उसकी आधारशिला कांग्रेस पार्टी ने ही रखी थी

सभापति महोदय :- माननीय राजेश जी, आप सीधे एक दूसरे की तरफ देखकर बात न करें।

श्री राजेश मूणत :- बहन जी, आप सुन लीजिए। वह हमारे भाई लोग हैं वह तो जानते हैं। वह अपना फर्ज अदा कर रहे हैं। लेकिन मैं आपसे कहता हूँ कि आप तथ्य पढ़ लें। माननीय उप मुख्यमंत्री जी बैठे हैं। कल माननीय नेता प्रतिपक्ष जी से बोलिएगा और लोक निर्माण विभाग की फाईल मंगवाकर देख लीजिएगा और समझ लीजिएगा। उसका एप्रूव्हल किसने दिया था, किस समय दिया, उसके ड्राईंग डिजाईन की किसने एप्रूव्हल दी। हमने तो आज तक पत्थर लगाने का ही काम किया है, हमने क्या किया ? मैं यह बात हाऊस में बोल रहा हूँ। मैं अपने कार्य काल में सब कुछ करके गया हूँ। केवल मैंने टेण्डर नहीं किया था। आप उसे मंगाकर देख लीजिएगा। आपको बधाई हो, मेरी तरफ से उसके लिए कोई मना भी नहीं है। लेकिन यह अपने छत्तीसगढ़ प्रदेश का है। छत्तीसगढ़ के नये रायपुर के डेवलपमेंट में सोचिए कि क्या काम हुए थे, आज क्या हालत हो गई ? वह वापस संवर रहा है। अगर पूरे देश में चर्चा होती है तो यह कहते हैं कि छत्तीसगढ़ का नया रायपुर क्या शानदार है। ऐसी लोग बातें करते हैं। हम रायपुर का विकास देखते हैं तो हमें चारों तरफ विकसित सड़कें दिखती हैं, एक्सप्रेस वे दिखता है, अण्डर ब्रिज, फ्लाईओव्हर दिखता है। कल रायपुर में क्या था। मैं आपको उदाहरण देना नहीं चाहूंगा। अगर मैं उदाहरण दूंगा तो आप कहेंगे कि मैं राजनीतिक बात करता हूँ। वर्ष 2017 में माननीय पूर्व मुख्यमंत्री जी ने रायपुर में तीन बड़े चीजों का भूमि पूजन किया। जिसमें वायशेप फ्लाई ओव्हर, तत्यापारा चौक का चौड़ीकरण एवं महादेवघाट का सौन्दर्यीकरण कार्य शामिल था। साहब, भूमिपूजन कर दिया, उसके बाद वित्त से स्वीकृति तक नहीं दी। चुनाव के पहले खाली, मैं ऐसी कोई बात नहीं करूंगा, जिसके अंदर कहीं हो। हां, ये बात जरूर कहूंगा कि छत्तीसगढ़ आपका मेरा अपना है। अगर आप सोचिये, डेव्हलपमेंट विजन के साथ में आगे बढ़ेंगे, कुछ काम करेंगे तो आपका नाम भी लोग लेंगे कि आपने कुछ किया। आपने कुछ अच्छा काम किया तो आपकी तारीफ कर रहा हूं। मैं तो यह भी कह रहा हूं, लखेश्वर भाई ने बोला तो मैं बोला। वह हमारे हैं। मैं तो ये कहता हूं कि कि 05 साल तक वह सबूत कहां गये? माननीय नेता जी, आज फिर इस बात को बोल रहा हूं कि हमारे छत्तीसगढ़ महतारी के बेटे, कांग्रेस पार्टी के वरिष्ठ नेता झीरम घाटी में शहीद हो गये। यहां छत्तीसगढ़ का हर आदमी दु:खी है। उस समय के नेता और पूर्व मुख्यमंत्री बोलते थे कि मेरे पास जेब में सबूत रखे हैं, वह सबूत कहां हैं ? छत्तीसगढ़ की 3 करोड जनता पूछती है कि वह सबूत किसके पास हैं ?

श्री लखेश्वर बघेल :- कपडा में धूल गया।

श्री राजेश मूणत :- किसके कपड़े में ? मेरे भाई यह राजनीति मत करिये। वह भी आपके हमारे भाई हैं, छत्तीसगढ़ महतारी के बेटे हैं। हम भी चाहते हैं कि अगर किसी व्यक्ति ने मिलकर के इस

प्रकार की साजिश रची, उसके खिलाफ में कड़ी से कड़ी कार्रवाई होनी चाहिए। मन के अंदर दर्द है। मैं कई बार इस बात को बोल चुका हूं। इसीलिए इस छत्तीसगढ़ की उन्नति, प्रगति में उन सब महापुरूषों का योगदान है और हम सब मिलकर इस छत्तीसगढ़ राज्य को आगे लेकर जायें। आज ये विजन स्पष्ट होना चाहिए कि कल का छत्तीसगढ़, आज का छत्तीसगढ़। बदलने वाला छत्तीसगढ़ नहीं है, छत्तीसगढ़ आपका मेरा अपना है और इसका नेतृत्व कौन करता है, क्या फर्क पड़ता है, इससे कोई फर्क नहीं पड़ता। इस बात का फर्क पडता है कि विजन स्पष्ट होना चाहिए, सोच स्पष्ट होनी चाहिए। आज इस बात को मैं गर्व के साथ में कहता हूं कि आदिवासी भाईयों के नाम पर दुहाई देने वालों आज छत्तीसगढ़ का आदिवासी मुख्यमंत्री है। साहब, 5 साल में कितने के खिलाफ में जांच हो गई, 15 साल डॉ. रमन सिंह जी के नेतृत्व में काम करके आये हैं। कोई माई का लाल एक भी जाकर के जांच नहीं करा पाया। गुरूदेव 03 नेता प्रतिपक्ष हो चुके हैं। एक सज्जन, बस्तर के टाईगर महेन्द्र कर्मा जी की जितनी तारीफ करूं, उतनी कम है। माननीय रविन्द्र चौबे जी इतिहास के, संसदीय ज्ञान के ज्ञाता, टी.एस. बाबा जी बहुत ईमानदार सज्जन व्यक्तित्व के धनी, अभी हमारे पूर्व विधान सभ अध्यक्ष, हमारे वरिष्ठ सम्मानित चरणदास मंहत जी। लेकिन अब दुर्भाग्य तो है कि कांग्रेस पार्टी के नेताओ का जब भी बाहर मिलते हैं तो एक चस्पा लगाते हैं कि ये 14वां मंत्री है। हम ही इनकी गुटबाजी को समझ नहीं पा रहे हैं। भगवान कसम जो नेता प्रतिपक्ष बना, उसके ऊपर एक ही आरोप लगाते है कि 14वां मंत्री तुम्हारी तरफ का। नेता जी तो यही बैठें रहते हैं, कब, कौन बहिर्गमन करके चल देता है, वह समझ में ही नहीं आता है। इसीलिए ये राजनीति बातें छोड़िये। आओ मिलकर के छत्तीसगढ़ की प्रगति और उन्नति के मार्ग को प्रशस्त करें। छत्तीसगढ़ के विकास की गाथा लिखें। आपका और मेरा अपना छत्तीसगढ़ है। इसकी खुशहाली के लिये हम विनती करें। यही मैं आपके प्रार्थना करना चाहता हूं। माननीय सभापति महोदय, आपने बोलने का समय दिया, उसके लिए बहुत-बहुत धन्यवाद।

श्रीमती संगीता सिन्हा (संजारी-बालोद) :- माननीय सभापति महोदय, आज विधान सभा के अंतिम सत्र में पच्चीस सालों की संसदीय यात्रा पर चर्चा आहूत की गई है, इसके लिए मैं आदरणीय हमारे माननीय मुख्यमंत्री जी, सम्माननीय अध्यक्ष महोदय जी, हमारे नेता प्रतिपक्ष जी को धन्यवाद देती हूं कि जिन्होंने इस सत्र का आयोजन किया है। सभापति महोदय, 1 नवंबर 2000 की मध्य रात्रि को शेष भारत जब सो रहा था, तब देश के नक्शे में हमारे नवजात छत्तीसगढ़ राज्य का उदय हुआ था। आज छत्तीसगढ़ राज्य को पूरे 25 साल पूर्ण हो चुके हैं और 25 पूर्ण हो चुके हैं मतलब हमारे छत्तीसगढ़ युवा हो चुका है। शुरूआत से लेकर आज तक की हम संसदीय यात्रा की बात करें तो आज बहुत सारी बातें की जानकारी मिली। हमारे वरिष्ठ साथी ने बहुत सारी बातों को रखा, जिसका हमें ज्ञान भी नहीं था, हमें पता भी नहीं था । आज हमें वह सब बातें पता चलीं कि शासकीय संकल्प आये उसमें हमारे पूर्वजनों ने

कितना सहयोग किया और आज हमें खुशी है कि आज हम विकसित छत्तीसगढ़ राज्य की विधानसभा में बैठे हुए हैं ।

माननीय सभापति महोदय, जब वर्ष 2000 में हमारा राज्य बना । उस समय कांग्रेस पार्टी का राज्य था और मुझे बहुत खुशी है कि उस समय जोगी जी हमारे मुख्यमंत्री थे और जब किसी भी गृहस्थी की शुरूआत होती है, अगर कोई बंटावारा होता है और नयी गृहस्थी की शुरूआत करते हैं तो उन्हें हर साधन जुटाना पड़ता है । वही हमारे राज्य के साथ भी हुआ, जब छत्तीसगढ़ राज्य में विधानसभा सत्र लगा तो राजकुमार कॉलेज में टेंट में हुआ उसके बाद यहां हुआ और अब हम नये रायपुर में प्रस्थान करने जा रहे हैं । माननीय सभापति महोदय, सबसे पहले मैं इस बात का जवाब देना चाहती हूं, हमारे आदरणीय विधायक साथी मूणत जी इस बात को रख रहे थे कि नये रायपुर में जो विधानसभा बनने जा रहा है, उसको हमने बनाया या हमने उसका शिलान्यास किया है, हमने उसकी बात रखी है । माननीय सभापति महोदय, मैं यह संज्ञान में लाना चाहती हूं कि माननीय भूपेश बघेल जी की सरकार में, जो नये रायपुर में विधानसभा बना उसका शिलान्यास हमने रखा, माननीय भूपेश बघेल जी ने उसका क्रियान्वयन किया और पूरा नक्शा तैयार हुआ फिर उसमें Development हुआ और आज हमारे प्रधानमंत्री जी के द्वारा Opening किया गया और इसके लिये हम सब बहुत खुश हैं । हर्ष की बात है, हमें भी खुशी होती है कि हम नयी विधानसभा में जो ऐतिहासिक विधानसभा बना है, जिसका नक्शा देखकर लोगों ने आज भी बुक कर दिया है कि हम विधानसभा देखने जायेंगे और वह सौ सालों तक रहेगा और सबसे अच्छी बात है, उस विधानसभा की खासियत है कि भविष्य को देखते हुए उसमें 200 सीट की सीटिंग व्यवस्था की गयी है ।

माननीय सभापति महोदय, जैसा कि मैंने कहा कि वर्ष 2000 में जब हमारी कांग्रेस की पार्टी थी, सरकार थी तो उनके पास बहुत सारी परेशानियां आयीं, वह योजनायें लाये । अजीत जोगी जी हमारे मुख्यमंत्री थे और उन्होंने बहुत सारी व्यवस्था की । जैसे कि किसानों की आय की वृद्धि में फसल परिवर्तन को बहुत बढ़ावा दिया, उन्होंने डभरी को 20,000 डभरी का जो आज जल संरक्षण का नाम दिया जा रहा है उसके लिये काम किया । माननीय सभापति महोदय, उस समय एक भी स्टेडियम नहीं थे तो नये रायपुर में स्टेडियम का निर्माण जोगी जी के शासनकाल में हुआ । माननीय सभापति महोदय, जो बच्चे लोग मेडिकल कॉलेज में पढ़ते हैं उसको भी 3 साल के कोर्स की उन्होंने ही शुरूआत की थी । यह बात अलग है कि भारतीय जनता पार्टी की सरकार आयी और उसको बंद कर दिया गया लेकिन शुरूआत स्वर्गीय माननीय जोगी जी ने ही की थी । साथ में उसके बाद डॉ. रमन सिंह जी की सरकार आयी, 15 साल तक डॉ. रमन सिंह जी की सरकार थी और उन्होंने भी मेडिकल के क्षेत्र में बहुत सारा योगदान किया और साथ में डॉ. रमन सिंह जी की सरकार ने जो सबसे अच्छा कार्य किया वह 2 रूपये किलो में चावल देने का जो कार्य किया है वह बहुत सराहनीय कार्य है क्योंकि गरीबों के पास वाकई भूख

रहती थी, गरीब लोग खाने के लिये तरशते थे और उसके लिये जो 2 रूपये किलो में चावल मिला जिसके लिये रमन सरकार चऊंर वाले बाबा के नाम से जाना जाने लगा तो वह सराहनीय कार्य रहा और बहुत से कार्य किये । चूंकि हर सरकार का यह रहता है कि हम बहुत अच्छे काम करके दिखायें ताकि जनता हमको फिर से लाये । यह काम हुआ, हमारी सरकार ने भी किया, भारतीय जनता पार्टी की सरकार ने भी किया और उसके बाद फिर से हमारी सरकार आयी, कांग्रेस पार्टी की, भूपेश की सरकार और जब भूपेश बघेल जी की सरकार आयी तो मैं सही बताउं तो किसान भाई लोग इतने कर्जे में डूबे हुए थे और सबसे पहले माननीय भूपेश बघेल जी ने एक काम किया वह कर्जा माफ का काम किया । माननीय सभापति महोदय, जब जनता परेशान रहती है और उसको देखते हुए जो सबसे पहला काम करने का जो हमने, भूपेश बघेल जी की सरकार ने किया वह कर्जा माफी का । बहुत सारे काम लाये, मैं इसलिये इस बात का उल्लेख कर रही हूं कि सभी ने अपनी-अपनी बात रखी कि उनके शासनकाल में क्या हुआ । स्वामी आत्मानंद स्कूल खोलने का काम हमने किया। गरीब का बच्चा भी आज इंग्लिश मीडियम में पढ़ाई कर रहा है। यह शिक्षा स्तर को सुधारने का काम भूपेश बघेल की सरकार ने किया। सभापति महोदय जी, गोबर की हंसी उड़ायी जाती थी। जो 5 साल सभा हुई, उसमें मेरे ख्याल से जितने भी सेशन हुए, उसमें सबसे ज्यादा जो बात हुई, वह गोबर की बात हुई कि गोबर को खरीदा जा रहा है, गोबर में धांधली हो रही है। मतलब गोबर तक को भी नहीं छोड़े। सिर्फ गोबर की बात। रीपा योजना लाए ताकि गांव में सब जगह मतलब गांव में उद्योग बने। इसलिए रीपा योजना की योजना लाए, उसको भी नकारा गया। उसका भी लगातार विरोध किया गया और आज देखिए, गांव में जितने भी रीपा के उद्योग लगाने के लिए जो रीपा केन्द्र खोल कर रखे हैं, सब में तालाबंद कर दिया गया है। आदरणीय सभापति महोदय जी, बेरोजगारी भत्ता दिए। क्या बुरा किया हमने? जो बेरोजगार युवा साथी, जो सुसाइड कर रहे थे, आत्महत्या कर रहे थे। उनको बेरोजगारी भत्ता देने का काम भूपेश बघेल जी की सरकार ने किया। आदरणीय सभापति महोदय जी, छत्तीसगढ़ी बोली की बहुत बात हुई। मैं बताना चाहती हूं कि भूपेश बघेल जी की सरकार में एक दिन ऐसा सेशन हुआ था कि विधान सभा में जितने भी विधायक थे, सभी ने एक दिन सुबह से लेकर शाम तक छत्तीसगढ़ी बोली में विधान सभा चलाया था। आप लोगों को खुश होना चाहिए। यह वाली बात तो इस बार भी होनी चाहिए कि एक दिन छत्तीसगढ़ी बोली में सुबह से लेकर शाम तक सेशन चलाए। यह काम हमने किया था। छत्तीसगढ़ी बोली, रहन-सहन सब बढ़ाने का काम, छत्तीसगढ़ की संस्कृति, कला, यहां तक कि ओलंपिक गेम में भी छत्तीसगढ़ संस्कृति की सब चीज को लाया गया। क्या बुरा किया? सभापति महोदय जी, छत्तीसगढ़ राज्य है। आप अन्य राज्य में जाइए। आप बंगाल में जाइए। आप महाराष्ट्र में जाइए। वह अपने कल्चर को दिखाते हैं। आप बंगाल में जाएंगे तो बंगाली डिश परोसा जाता है। आप महाराष्ट्र में जाइए तो मराठी डिश परोसा जाता है। साउथ में जाइए तो आपको इटली दोसा परोसा जाता है। अगर हमारे छत्तीसगढ़ राज्य में आते हैं तो अगर हम अरसा, रोटी, फरा,

चटनी सब परोस रहे हैं तो क्या बुरा कर रहे हैं? आपने इसको बंद करने का काम कर दिया। अब फिर से आ गया पनीर चिल्ली। फिर से आ गया चाऊमीन। कहां गया छत्तीसगढ़ राज्य? आज छत्तीसगढ़ की बात करते हैं। सभापति महोदय जी, डेवलपमेंट होता रहा है। पहले जब बंटवारा हुआ, जब हमारा नया राज्य बना तो पैसा हमारे पास कम था। आज हम विकसित राज्य की ओर हैं और आज विकसित हो चुके हैं। आदरणीय सभापति महोदय जी, मैं एक बात कहना चाहती हूं कि छत्तीसगढ़ राज्य पूरा संसाधन से परिपूर्ण है। यहां लोहा है, यहां कोयला है, यहां बिजली है, यहां सीमेंट है, सब कुछ है। लेकिन क्यों बिजली रहते हुए हमारी जनता को बिजली बिल बढ़ा-बढ़ा कर, बढ़ा-बढ़ा कर आज दे रहे हैं। आज जनता बिजली बिल से इतनी परेशान है। जब बिजली का उत्पादन हमारे यहां है, छत्तीसगढ़ राज्य में बिजली उत्पादन है तो फिर क्यों हमारी जनता को इतना बिजली बिल दिया जा रहा है? विकसित राज्य की बात करते हैं तो उसको जनता को यह सुविधा देनी चाहिए। आदरणीय सभापति महोदय जी, झारखंड, उत्तराखण्ड, छत्तीसगढ़ यह तीन राज्य बना था और तीन राज्यों में सबसे ज्यादा जो विकसित राज्य है, वह छत्तीसगढ़ राज्य है। फिर भी हम दूसरे राज्य में डिपेंड होते हैं। हमारे यहां का जो माल है, हमारे यहां का जो संसाधन है, उसका पलायन होता है। सभापति महोदय, मेरा निवेदन है कि अभी आप जाकर देखिए, आज किसान लोग धान नहीं बेच पा रहे हैं। 15 तारीख को धान खरीदी होनी था। 15 तारीख को धान खरीदी नहीं हुई है। 15 तारीख को आधी सोसाइटी बंद रही है। क्यों? आप विकसित राज्य की बात करते हैं, आप सुविधा दीजिए न। आप बड़ी-बड़ी बातें करते हो। जब तक किसान को सुविधा नहीं मिलेगी, तब तक वह कैसे आगे बढ़ेंगे? आप सुविधा दीजिए। बच्चे पढ़ने जा रहे हैं, अभी तक पुस्तक अवेलेबल नहीं है तो शिक्षा के क्षेत्र में कैसे आगे बढ़ेंगे? आप युक्तियुक्तकरण लाकर टीचर गायब कर दिए तो हम विकसित देश की राज्य की बात कैसे करेंगे? जब तक बच्चों को उचित व्यवस्था नहीं मिलेगी, टीचर नहीं मिलेगा, पुस्तक नहीं मिलेगी तब तक बच्चे कैसे पढ़ेंगे? जब किसान को उचित सुविधा नहीं देंगे तो किसान धान कैसे बेचेंगे? आज आपके पूरे ऑपरेटर लोग धरना प्रदर्शन कर रहे हैं। यह छत्तीसगढ़ राज्य का दुर्भाग्य है । मैं आपसे निवेदन कर रही हूं कि यदि हमको विकसित राज्य बनाना है तो हम सबको मिलकर काम करना पड़ेगा और हम सबको मिल-जुलकर सब व्यवस्था करनी पड़ेगी कि हम कैसे धान खरीदी करे, कैसे बच्चों को पढ़ाये, कैसे स्वास्थ्य के क्षेत्र में लाभ पहुंचाये। आज हम बहुत अच्छी स्थिति में हैं। हम बहुत आगे बढ़ चुके हैं। मेरा आपसे निवेदन है कि यदि हमें छत्तीसगढ़ को विकसित राज्य बनाना है तो हम सब यहां पर मिलकर काम करें। मैं आपसे एक और निवेदन करती हूं कि हम विधायक हैं।

सभापति महोदय :- संगीता जी, मैं निवेदन की बात नहीं कर रहा हूं। आज के दिन हम सब लोग आरोप-प्रत्यारोप से अच्छा दूसरी बात करें। उसके लिए 14 तारीख से लेकर 17 तारीख तक का समय है। आज हम सब लोग इस सदन की विदाई के बारे में बात करें।

श्रीमती संगीता सिन्हा :- आदरणीय सभापति महोदय, मैं विषय में ही आ रही हूं। शुरूआत वहां से हुई थी। शुरूआत हमारी लता दीदी ने की थी। शुरूआत मूणत जी ने की थी, तब मैंने अपनी बात रखी है। मैंने तो अपनी पूरी रिपोर्टिंग तैयारी की थी, लेकिन मैं इसको रख दी और जो-जो समस्याएं हैं, उन पर आ गईं। अगर हम लोग बड़ी-बड़ी बातें न करके छोटे-छोटे प्रयास करे तो आज छत्तीसगढ़ राज्य बहुत अच्छी स्थिति में है। हम अन्य राज्यों से विकसित हैं। हम अन्य राज्यों से बहुत अच्छे से आगे बढ़ चुके हैं। मेरा निवेदन है कि यह मंदिर है और हम विधान सभा में अपने क्षेत्र की बातें रखने के लिए आते हैं, लेकिन अभी स्तर थोड़ा सा गिरा है। कई बार हमारी बातें नहीं सुनी जाती हैं। हमारी जनता इस उम्मीद में रहती है कि हमारे विधायक जायेंगे और हमारी बात को विधान सभा में रखेंगे, ताकि कार्य पूरा हो। मैं यही कहना चाहती हूं कि आज हम बहुत अच्छी स्थिति में हैं। हम विकसित राज्य हैं। इसी तरह चाहे विपक्ष हो, चाहे पक्ष हो, हम सब मिलकर आगे बढ़े। जब तक मजबूत विपक्ष नहीं रहता है, तब तक पक्ष भी मजबूत नहीं होता है। मैं आपको बहुत-बहुत धन्यवाद देती हूं कि आपने मुझे आज बहुत महत्वपूर्ण विषय पर बोलने का अवसर प्रदान किया। जय हिन्द।

सभापति महोदय :- अनुज शर्मा जी।

श्री अनुज शर्मा (धरसींवा) :- माननीय सभापति महोदय, आपने मुझे बोलने का अवसर दिया, उसके लिए आपका बहुत-बहुत आभार। आज यह एक साधारण सत्र नहीं है। यह बहुत विशेष सत्र है और इन 25 वर्षों में छत्तीसगढ़ ने जो विकास की एक गाथा लिखी है, उसके पड़ाव से आगे बढ़ने का दिन है। आज मुझसे पहले बहुत से वरिष्ठ सदस्यों ने अपनी बातें रखीं। कुछ सदस्य तो ऐसे हैं, जिनके पास मेरी उम्र से ज्यादा लंबा राजनीतिक अनुभव होगा। उनके ज्ञान को सुनने और इस सदन में हुई विशेष घटनाओं और विशेष बातों को स्मरण करने का अवसर था। यह भावनाओं का संगम है। यह समर्पण और सपनों का संगम है। इस विधान भवन ने हमारे निर्णय भी देखे, हमारी बहसें भी सुनी, हमारी मुस्कान भी देखी और कभी-कभी हमारे आसूं भी इस सदन ने अनुभव किये हैं। आज इस भवन को हम ससम्मान विदाई दे रहे हैं। यह मेरे लिए थोड़ा सा भावुक करने वाला क्षण है क्योंकि यह भवन उस विधान सभा क्षेत्र में है, जहां का मैं जनप्रतिनिधि हूं तो यह हमारे क्षेत्र के लिए गर्व है। हमारे क्षेत्रवासी कहते हैं कि लोकतंत्र यही से बोलता है। आज जब यह भवन हमारे क्षेत्र से बाहर जा रहा है तो विश्वास मानिये कि यह बस एक स्थानांतरण नहीं है, यह मेरे जीवन के एक अध्याय का पलट जाना भी है। लेकिन परिवर्तन हमेशा दु:ख नहीं देता है। यदि उसमें भविष्य की रोशनी हो तो वह इस भाव को बदल भी देता है कि जब भविष्य दिखाई देने लगता है तो आपके अंदर एक अलग खुशी भी जाहिर होती है। तकनीकी रूप से हमारा नया सदन बहुत अच्छा होने वाला है। वह आधुनिकता से सुसज्जित होगा। वह प्रशासनिक दक्षता का प्रतीक है और हमारे छत्तीसगढ़ को भविष्य की ओर लेकर जाने वाला होगा। हम आज पुरानी यादों को फिर से स्मरण कर रहे हैं और इसको हम आज आभार की रोशनी से विदा करेंगे। माननीय

सभापति जी, जब छत्तीसगढ़ राज्य का निर्माण हुआ तो उस राज्य के युवाओं में एक युवा मैं भी था, जब 31 अक्टूबर की रात थी, 1 नंवबर की सुबह आनी थी तो हम पूरी रात राज्य निर्माण की बेला को देखने के लिए, इसे अनुभव करने के लिए घूमते रहे । जब हम मध्यप्रदेश में रहा करते थे और छत्तीसगढ़ में जो विकास की दशा थी, वह हमें याद है । ये पवित्र सदन इस बात का गवाह है, हमने समाचार पत्रों और टी.व्ही. चैनल के माध्यम से कई सदनों में माईक को टूटते हुए देखा है, कई सदनों में मार्शल का प्रयोग होते हुए देखा है, ऐसे में छत्तीसगढ़ की इस विधान सभा ने अपनी पवित्रता को पूरी दुनिया में, पूरे देश में श्रेष्ठता को साबित किया है। जैसे भेंडिया जी कह रही थीं, छत्तीसगढ़िया सबले बढ़िया को चरितार्थ करने का काम हमारी इस सदन ने किया है। आज का दिन श्रद्धेय अटल बिहारी बाजपेयी जी को स्मरण करने का दिन है। मैं उन्हें हृदय से आभार व्यक्त करता हूं कि उन्होंने हम सब छत्तीसगढ़ियों को ये छत्तीसगढ़ राज्य दिया। ये सदन इस बात का गवाह है, जहां पी.डी.एस. को लेकर बातें हों, इन्फ्रास्ट्रक्चर को लेकर बातें हों, छत्तीसगढ़ के स्वरूप को लेकर बातें हों, धान की कीमत को लेकर बातें हों, स्वस्थ स्वास्थ्य की बातें हों, नक्सल उन्मूलन की बात हो, ये सब महत्वपूर्ण फैसले छत्तीसगढ़ के हित में इस पवित्र सदन में लिये गये। माननीय सभापति महोदय, इस सदन में जब हम नये सदस्य के रूप में आए तो मैं यहां के उन सभी वरिष्ठ सदस्यों को नमन करता हूं, प्रणाम करता हूं, जिन्होंने हम नये सदस्यों को यहां की कार्यवाही से और समय-समय पर हम लोगों का मार्गदर्शन किया। हमें हमेशा एक मेंटर के तौर पर, गाईड के तौर पर समस्त वरिष्ठ सदस्यों ने अपना संरक्षण दिया। इस सदन की पहचान अजय चंद्राकर जी जैसे ओजस्वी वक्ता, भूपेश बघेल जी जैसे तेज नेता, हमारे नेता प्रतिपक्ष जी जैसे सुमधुर बात में बड़ी-बड़ी बातों को बड़ी आसानी से कहे जाने वाले डॉ. चरणदास महंत जी, सटिकता से कहने वाले हमारे माननीय मुख्यमंत्री जी, हमारे अध्यक्ष जी के संरक्षण में इस सदन में हमारा जो अनुभव है, वह हमेशा जीवनभर हमें याद रहेगा। आज इस स्थान की पहचान......।

अध्यक्षीय दीर्घा में अतिथि

श्री तोखन साहू, केन्द्रीय राज्य मंत्री

सभापति महोदय :- आज हमारे बीच अध्यक्षीय दीर्घा में केन्द्रीय राज्य मंत्री श्री तोखन साहू जी उपस्थित हैं, सदन उनका स्वागत करता है। (मेजों की थपथपाहट)

छत्तीसगढ़ विधान सभा के पच्चीस वर्षों की संसदीय यात्रा पर केन्द्रित विषयों पर चर्चा (क्रमशः)

श्री अनुज शर्मा :- आज अगर हम देखें तो इस क्षेत्र का नाम, इस थाने का नाम विधान सभा थाना हो गया। हमारे भारतीय जनता पार्टी के संगठन में यहां के मंडल का नाम विधान सभा मंडल हो गया। यहां बैंक के ब्रांच का नाम विधान सभा ब्रांच हो गया, अब ये सब बदल जाने वाला है। यहां के स्थानीय लोगों की भावनाएं जुड़ी हैं। ये एक स्थानांतरण नहीं है, एक भविष्य को लेकर सबकी भावनाएं भी हैं। माननीय सभापति जी, इसको लेकर मैं कुछ पंक्तियां आपके समक्ष रख रहा हूं :-

पच्चीस बरस की यात्रा, छत्तीसगढ़ का गौरव गान,
पच्चीस बरस की यात्रा, छत्तीसगढ़ का गौरव गान,
पुराना सदन एक मंदिर है, लोकतंत्र का महान।
यहीं लिये थे फैसले, यहीं उठी थीं आवाजें,
यहीं गढ़ा गया भविष्य, यहीं सुशासन की बातें।
धरसींवा क्षेत्र की मिट्टी में है, ये आंगन,
हर पत्थर से गढ़ता था, छत्तीसगढ़ का जीवन।
आज यह सदन इन सीमाओं से बाहर जाएगा,
पर हमारे दिल से नहीं, मेरी स्मृतियों से नहीं।
नया सदन-नए सपनों का दीप जलाएगा,
तकनीक का, आधुनिकता का पुष्प सजाएगा।
पुराना घर भले छूट जाए,
पर उसकी दीवारों की हर सांस सदा हममें समाये।
पच्चीस साल की इस यात्रा में,
हमने संघर्षों का ताप भी झेला और उम्मीदों का प्रकाश भी,
पुराना सदन रहा है, हमारी लोकतांत्रिक परंपरा का विश्वास भी।
जय जोहार, नया अध्याय शुरू हो आज,
यही छत्तीसगढ़ की है असली आवाज। बहुत-बहुत आभार।

सदन को सूचना

सभापति महोदय :- आज की कार्यसूची में पद क्रमांक-3 का कार्य पूर्ण होने तक सदन के समय में वृद्धि की जाए, मैं समझता हूं सदन सहमत है।

(सदन द्वारा सहमति प्रदान की गई)

छत्तीसगढ़ विधान सभा के पच्चीस वर्षों की संसदीय यात्रा पर केन्द्रित विषयों पर चर्चा (क्रमशः)

श्रीमती सावित्री मनोज मण्डावी (भानुप्रतापपुर) :- माननीय सभापति महोदय जी, सर्वप्रथम आप सभी को रजत जयंती वर्ष की बहुत बहुत बधाई। इस रजत जयंती वर्ष में छत्तीसगढ़ विधान सभा की जो संसदीय यात्रा है, उस पर बोलने के लिए यहां खड़ी हुई हूं।

माननीय सभापति महोदय, 1 नवम्बर, 2000 का वह अविस्मरणीय पल, जब मध्यप्रदेश प्रांत से पृथक होकर भारत के 26वें राज्य के रूप में हमारे छत्तीसगढ़ राज्य का उदय हुआ। आप सभी जानते हैं कि छत्तीसगढ़ राज्य की पहली कल्पना सन् 1918 में छत्तीसगढ़ के गांधी पं. सुन्दर लाल शर्मा जी ने की थी। जब हमारा सपनों का छत्तीसगढ़ साकार रूप लेने लगा, तब छत्तीसगढ़ का पहला मुख्यमंत्री बनने का सौभाग्य श्री अजीत जोगी जी को मिला। उन्होंने राज्य के विकास की नींव रखीं। इस बाल्य अवस्था में छत्तीसगढ़ विधान सभा के प्रथम अध्यक्ष का दायित्व दिसम्बर, 2000 से दिसम्बर 2003 तक श्री राजेन्द्र प्रसाद शुक्ल जी ने संभाली। फिर जोगी शासनकाल में ही नवा रायपुर की कल्पना की गई थी और छत्तीसगढ़ के क्रिकेट प्रेमियों के लिए अन्तर्राष्ट्रीय क्रिकेट स्टेडियम की सौगात भी उस समय मिला था। किसानों को आसानी से सिंचाई सुविधाएं मिल सकें, इसके लिए उस काल में, जोगी शासनकाल में गांव-गांव में जोगी डबरी बनवाई गई। इस प्रकार से 3 साल के छोटे से कार्यकाल में कांग्रेस ने कई महत्वपूर्ण काम किये। फिर सन् 2003 से 2018 तक जनता ने प्रदेश की बागडोर बी.जे.पी. को सौंपी। उस समय प्रदेश का मुखिया डॉ. रमन सिंह जी को बनाया गया, जिन्होंने जिस नवा रायपुर की परिकल्पना कांग्रेस शासनकाल में की गई थी, उसको बड़े ही सूझ-बूझ के साथ साकार रूप देने का काम किया गया। छत्तीसगढ़ में कोई भूखा ना सोये, इस बात को ध्यान में रखकर गरीबों को 2 रूपये किलों में चावल देने की शुरूआत इस छत्तीसगढ़ में की गई। इस प्रकार छत्तीसगढ़ के पी.डी.एस. सिस्टम को भारत में एक नई पहचान मिली। नक्सली संगठनों पर प्रतिबंध लगाने हेतु उस समय सलवा जुडूम अभियान चलाया गया। उस समय स्कूल-कालेज और मेडिकल कॉलेज भी बनवाये गये। इस प्रकार से जनहित के कई महत्वपूर्ण काम किए गए, जिसके परिणामस्वरूप छत्तीसगढ़ राज्य को कई राष्ट्रीय पुरस्कार भी मिले। इन 15 सालों में छत्तीसगढ़ की दिशा और दशा के निर्धारण में हमारे जिन माननीय

अध्यक्षों ने निष्पक्ष रूप से अपनी भूमिका निभाई, जिनके योगदान को नहीं भूल सकते, उस समय जिनमें क्रमश: श्री प्रेम प्रकाश पाण्डेय जी, श्री धरम लाल कौशिक जी और श्री गौरी शंकर अग्रवाल जी हैं। फिर 15 साल के बाद जनता ने सत्ता की चॉबी कांग्रेस को सौंपी और प्रदेश की कमान श्री भूपेश बघेल जी को सौंपा गया, जिन्होंने 'गढ़बो नवा छत्तीसगढ़' की परिकल्पना को लेकर शपथ लेते ही एक साहसिक कदम उठाते हुए प्रदेश के किसानों का 6100 करोड़ रूपये का कर्ज माफ किया। इसका लाभ उन छोटे किसानों को मिला, जो अपनी आर्थिक तंगी के चलते कर्ज पटाने में वे किसान भाई असमर्थ थे। इसके अलावा अपने चुनावी वादों को पूरा करते हुए 2500 रूपया प्रति क्विंटल के हिसाब से धान की खरीदी की, जिसके फलस्वरूप किसान आत्मनिर्भर हुए। उसी कांग्रेस के शासनकाल में हर माता-पिता का सपना होता था कि उनका बच्चा भी अंग्रेजी स्कूल में पढ़ें। इस बात को ध्यान में रखते हुए श्री बघेल जी ने स्वामी आत्मानंद अंग्रेजी माध्यम के स्कूल खोले, ताकि गरीब का बच्चा भी नि:शुल्क शिक्षा ग्रहण कर सकें।

माननीय सभापति महोदय, प्रदेश के शिक्षित बेरोजगारों को बेरोजगारी भत्ता, सड़क, पुल-पुलिया, स्कूल-कॉलेज, मेडिकल कॉलेज और नया रायपुर में भव्य और नवीन विधान सभा भवन की आधारशिला रखी। जिनका 80 प्रतिशत काम आपने अपने शासनकाल में पूरा करवाया। उस समय कोरोना काल जैसी विषम परिस्थिति में भी आपने अपनी दृढ़ इच्छाशक्ति दिखाते हुए पंचम विधान सभा के माननीय अध्यक्ष डॉ. चरणदास महंत जी के अनुभव का लाभ लेते हुए कई महत्वपूर्ण कार्य किए और राष्ट्रीय स्तर पर पुरस्कृत भी हुए। चूंकि छत्तीसगढ़ की बागडोर श्री विष्णु देव साय जी के हाथों में है और आप अपने दो वर्षों का कार्यकाल सफलतापूर्वक पूरा कर चुके हैं। षष्ठम विधान में अध्यक्ष के रूप में हमें एक सरल और सहज व्यक्तित्व के धनी डॉ. रमन सिंह जैसे सबसे अनुभवी नेतृत्व का मार्गदर्शन मिल रहा है और आप सभी ने नारा भी दिया है कि हमने बनाया है और हम ही संवारेंगे। इसी स्लोगन को लेकर प्रदेश की जनता आशान्वित है कि हमारा सपनों का छत्तीसगढ़ कब संवरेगा। इन 25 सालों की यात्रा में छत्तीसगढ़ के चहुंमुखी विकास के लिए सदन में पक्ष और विपक्ष का हमेशा सकारात्मक सहयोग मिला, जिसका सुपरिणाम रहा है कि आज विश्व पटल पर हमारा छत्तीसगढ़ का एक अलग ही स्थान है। छत्तीसगढ़िया सबले बढ़िया। माननीय सभापति महोदय, आपने मुझे बोलने का अवसर दिया, उसके लिए आपको धन्यवाद।

सभापति महोदय :- माननीय मंत्री श्री श्याम बिहारी जायसवाल जी।

लोक स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण मंत्री (श्री श्याम बिहारी जायसवाल) :- माननीय सभापति महोदय, आज हम सभी के लिए एक ऐतिहासिक पल है। मैं इस पावन विधान सभा को नमन करता हूं, जिसने राज्य निर्माण के बाद से 25 सालों तक ऐसे सैकड़ों विधायकों को, मंत्रियों को, मुख्यमंत्रियों को और तमाम जनप्रतिनिधियों की बात को रखने का अवसर दिया। इस अवसर पर यह भारत की सनातन

और गौरवशाली परंपरा, जिसमें हम डूबते हुए सूर्य को भी प्रणाम करते हैं। ऐसी कहावत को हमारे माननीय विधान सभा के अध्यक्ष महोदय जी ने चरितार्थ किया है कि आज अंतिम दिवस है। यहां से नये भवन प्राप्त होने के बाद भी उन्होंने आज इस विधान सभा पर एक दिन की सदन की कार्यवाही रखा है, इस बात के लिए मैं विधान सभा अध्यक्ष जी का हृदय से अभिनंदन करता हूं। माननीय सभापति महोदय, यह छत्तीसगढ़ का आज नहीं, बल्कि हजारों साल पहले से एक वैभवशाली इतिहास रहा है। हमारे कई सदस्यों ने इसके बारे में काफी विस्तार से कहा है। जब हम छत्तीसगढ़ की बात करते हैं तो यहां सर्वप्रथम आज से एक हजार साल पहले जब कलचुरियों का शासन था। यहां कलचुरीवंश 9वीं शताब्दी से 18वीं शताब्दी तक रहें। जब छत्तीस गढ़ों का निर्माण हुआ, उसका कलचुरियों ने निर्माण किया। 15वीं शताब्दी में शिवनाथ नदी के इधर छत्तीसगढ़ का आधा गढ़, जिसकी राजधानी रायपुर हुई और 18 गढ़ शिवनाथ नदी के उधर हुआ, जिसकी राजधानी रतनपुर हुआ। ऐसे छत्तीस गढ़ों का निर्माण के साथ-साथ विकास और उत्थान करने का काम कलचुरियों ने किया। 18वीं शताब्दी में कलचुरियों के पतन के बाद छत्तीसगढ़ का जो गढ़ों की व्याख्या है, वह धीरे-धीरे धुंधला होने लगा। मैं यह दावे से कह सकता हूं कि हममे से इधर के भी हैं और उधर के भी हैं, लेकिन छत्तीसगढ़ के बारे में हम नहीं जानते हैं, इसका एक बड़ा कारण है कि भारत की जो सांस्कृतिक विरासत है, यहां की जो ऐतिहासिक विरासत है, इसे मुगलों के समय और इसके बाद अंग्रेजों के समय, यहां की जो हमारी धरोहर है, उसको छिपाने का काम किया गया । हम किताब में आज भी पढ़ते हैं कि अकबर महान, द ग्रेट टीपू सुल्तान, सिकन्दर महान, यह कैसे हो सकता है ? अकबर कैसे महान हो सकता है, टीपू सुल्तान ग्रेट कैसे हो सकते हैं, यह केवल हमारे इतिहास को छिपाने के लिये, हमारी समृद्धशाली विरासत को छिपाने के लिये, यह सब इतिहास बनाया गया । अब छत्तीसगढ़ के इतिहास को लिखने का और उसे खोजने की भी जरूरत है । इस छत्तीसगढ़ प्रदेश का निर्माण माननीय अटल बिहारी वाजपेयी जी ने 1 नवम्बर 2000 को किया, लेकिन इस प्रदेश का इतिहास केवल 25 साल का नहीं है, बल्कि छत्तीसगढ़ का 1 हजार साल का पुराना वैभवशाली इतिहास है और ऐसा नहीं है कि छत्तीसगढ़ का निर्माण हम अभी 50-100 साल से कर रहे हैं, जैसा माननीय अजय चन्द्राकर जी ने कहा है कि खैरागढ़ के कवि दलपतराम जी ने पहली बार 1497 में छत्तीसगढ़ राज्य शब्द का प्रयोग किया । इसके बाद दूसरी बार रतनपुर राज्य के कवि गोपाल मिश्र जी ने "खूब तमाशा" एक साहित्य में लिखा और उसमें छत्तीसगढ़ शब्द का उपयोग किया । तीसरी बार, 150 साल के बाद रतनपुर के ही 1686-1836 में बाबू रेवाराम जी ने "विक्रम विलास" एक ग्रन्थ में छत्तीसगढ़ शब्द का उपयोग किया । इससे यह पता चलता है कि छत्तीसगढ़ आज से 1000 साल पहले अस्तित्व में था और जब हम अंग्रेजी गजेटियर की बात करेंगे तो सर्वप्रथम आन द रिकार्ड एक अंग्रेज अधिकारी, जिसका नाम एन्यू था, उसने 1820 में एक पारिवारिक जनगणना तैयार किया । उस समय छत्तीसगढ़ की परिवार संख्या 1 लाख 653 परिवार थी । आन द रिकार्ड उस समय उसका

नाम छत्तीसगढ़ प्रोविंसिस दिया । माननीय सभापति महोदय, यह छत्तीसगढ़ का समृद्धशाली इतिहास है । मैं आपसे निवेदन करूँगा कि छत्तीसगढ़ का इतिहास और विकास 1000 साल से, कल्चुरियों के काल से, जो भी राजवंश हुये होंगे, जो भी राजकीय प्रणाली हुई होगी, उसके माध्यम से शोध करना चाहिये ताकि छत्तीसगढ़ का वैभव प्राप्त हो सके । हम छत्तीसगढ़ को अपने पुराने रूप में देखते हैं तो लगता है कि वही छत्तीसगढ़ है, जहां भूखमरी के कारण तत्कालीन प्रधानमंत्री राजीव गांधी जी को यहां आना पड़ा था । यह मेरे जिले का ही है । उस समय प्रधानमंत्री आये थे । यह वही छत्तीसगढ़ है जहां बस स्टैण्ड में लाईन लगी रहती थी । बड़े-बड़े झौंहा, झलगी, टुकना लेकर लोग पलायन करते थे । बसों के केबिन में बांस से बने मिट्टी खोदने के सामान और ढ़ोने का सामान रहता था । यह छत्तीसगढ़ का वैभव है, श्रद्धेय अटल बिहारी वाजपेयी जी ने जिस सोच के साथ छत्तीसगढ़ राज्य का निर्माण किया, इन 25 सालों में तमाम कीर्तिमान हर दिशा में छत्तीसगढ़ में स्थापित किये हैं। चाहे प्रथम मुख्यमंत्री स्व.अजीत जोगी जी हों या फिर हमारे 15 सालों तक मुख्यमंत्री रहने वाले डॉ.रमन सिंह जी ने छत्तीसगढ़ का कायाकल्प कर दिया है । अब उन बातों का जिक्र नहीं करना चाहूँगा, लेकिन एक-दो बातें बताना चाहूँगा और स्वास्थ्य मंत्री के नाते उस पर कोड करना चाहूँगा कि कि जिस प्रदेश में 1 मेडिकल कॉलेज थे, वहां आज 15 मेडिकल कॉलेज हैं । जब हम तमाम विधान सभा में जायेंगे तो हेल्थ पर उपलब्धि भी रखूँगा । चूँकि आज समय कम है, मैंने इसलिये सिर्फ मेडिकल कॉलेज को कोड किया । हमारे यहां बड़े-बड़े शैक्षणिक संस्थान बने हुये हैं । छत्तीसगढ़ का 1000 साल पहले से भी रिसर्च होना चाहिये, यह भगवान राम का ननिहाल है । इसे कल्चुरियों से पहले दक्षिण कोशल के रूप में जाना जाता था, उससे पहले इसका नाम दण्डकारण्य था । दण्डकारण से दक्षिण कोशल और कल्चुरियों का 1000 साल का विरासत, उन्हें भी संरक्षण करना आवश्यक है । यदि उनका संरक्षण नहीं किया गया तो 100-200 साल के बाद छत्तीसगढ़ के लोग यह नहीं जान पायेंगे कि छत्तीसगढ़ कहां है, किन गढ़ों के कारण छत्तीसगढ़ बना, उसका निर्माण कैसे हुआ ? मैं सदन से चाहूँगा कि सभी सदस्यों की जिम्मेदारी है कि छत्तीसगढ़ के बारे में जो भी जानकारी हों, उसको दें। आज इस अवसर पर श्रद्धेय अटल बिहारी वाजपेयी जी के साथ-साथ राज्य निर्माण के लिए आचार्य नरेन्द्र दुबे, ठाकुर रामकृष्ण सिंह, चन्दूलाल चन्द्राकर जी, जगदीश मेहर जी, पुरूषोत्तम कौशिक जी, हरि ठाकुर जी, केशव सिंह जी, दिनेश मिश्रा जी जैसे सभी महानुभाव ने राज्य के निर्माण को लेकर अपनी भूमिका निभाई और जिनका नाम नहीं ले पाया, उनको भी मैं आज नमन करता हूं । सभापति महोदय, आपने मुझे बोलने का समय दिया, उसके लिए बहुत-बहुत धन्यवाद ।

श्री राघवेन्द्र कुमार सिंह (अकलतरा) :- धन्यवाद माननीय सभापति । जैसा कि आदरणीय मंत्री जी बता रहे थे कि हमारा इतिहास बहुत लंबा रहा है । चाहे कल्चुरी शासन हो, कल्चुरी शासन के बाद भोसलों का शासन हों, उसके बाद अंग्रेजों का शासन हो । छत्तीसगढ़ एक लंबे समय से छटपटाहट

महसूस कर रहा था और मैं दो पंक्तियां, जो आदरणीय महंत जी के लोकसभा में जो भाषण हुआ था, जिसमें छत्तीसगढ़ निर्माण की बात कही गई थी । मैं उसको बोलकर अपनी बात की शुरूआत करना चाहता हूं :-

ये सारा जिस्म झुककर बोझ से दोहरा हुआ है ।
हम सज़दे में नहीं हैं, आपको धोखा हुआ है ।

छत्तीसगढ़ में छटपटाहट थी कि हमारे राज्य का निर्माण होना चाहिए । अगर हम छत्तीसगढ़ की बात करें तो राज्य के मामले में हम लोग बहुत युवा हैं, लेकिन छत्तीसगढ़ बहुत प्राचीन है, इस बात को नकारा नहीं जा सकता । आज हम रजत जयंती की बात कर रहे हैं । जब देश की आयु 28 वर्ष की है तो छत्तीसगढ़ में एक औसत आयु 24 वर्ष की है तो यह एक युवा प्रदेश है और युवा प्रदेश के बारे में अगर मैं बात करूं तो जैसे एक बार राजीव गांधी जी ने हिन्दुस्तान के लिए कहा था, वह बात आज छत्तीसगढ़ पर भी लागू होती है । India is an Old country but a young nation. We are impatient, I am young and I too have a dream of India Strong, Independent, Self-Reliant and in the front rank of the nations of the world, in the service of mankind. आज जब हम युवा हैं, हम भी चाहते हैं कि छत्तीसगढ़ आगे बढ़े । छत्तीसगढ़ ऐसी जगह पहुंचे, जहां पर हम सबने उसका सपना भी देखा है । अगर हम छत्तीसगढ़ के इतिहास की बात करें तो मैं धन्यवाद दूंगा । आदरणीय मंत्री जी यहां पर बहुत अच्छी बात बोल रहे थे । इसमें सी यू विल्स का एक बहुत अच्छा काम है । सी यू विल्स का जो काम है, उसमें इन सारी बातों का उल्लेख किया गया है । अगर आज हम बोलचाल की भाषा में देखें तो बोलचाल में हम उस इतिहास को लेकर चलते हैं । आज भी अगर आप देखें तो हम बात करते हैं, जब हम लोग गांव में जाते हैं तो हम लोग गौंटिया, दाऊ, दीवान इन सब शब्दों का उपयोग करते हैं । ये रेवेन्यू के शब्द हैं, जो कल्चुरी शासन में उपयोग होते थे । जो दो से चार गांव के टैक्स कलेक्टर थे, उनको गौंटिया कहते थे । 12 गांव वालों को दाऊ कहते थे, 54 दीवान हो जाते थे, उसके ऊपर राजा हो जाते थे। तो कल्चुरी शासन से लेकर अपने इतिहास को हम आज भी अपने आम की भाषा में समेटे हुए हैं, जिसको हम रोज बात करते हैं । उसके बाद भोसलों का राज आया, भोसलों के बाद मालगुजारी का सिस्टम यहां आया था । वह भी आज हम अपनी बोलचाल की भाषा में मानते हैं । मैं अपने आप को सौभाग्यशाली मानता हूं कि अकलतरा की जनता के आशीर्वाद से मेरा परिवार क्रमशः तीसरी पीढ़ी है, जो यहां पर आकर विधान सभा में हमने अपने जनता की आवाज उठाई है । इसके लिए मैं उनको धन्यवाद भी देता हूं । लगभग 1957 से हम लोग जुड़े हुए हैं, जैसे यहां पर बात होती है । जैसे आज राघेश्याम शुक्ल जी की बात हुई । वे कौन सी पार्टी में रहे, कांग्रेस में रहे या बीजेपी में रहे, लेकिन इतने लंबे समय से चूंकि परिवार का नाता रहा है, ऐसा लगता है कि हमारे बीच का ही कोई व्यक्ति हमारे बीच से चला गया है। इन दो साल में अगर मैं युवा के तौर पर बात करूं

तो हमें बहुत कुछ सीखने का मौका मिला । जैसे हम युवा थे तो अध्यक्ष महोदय हम लोगों को कितना समय देते हैं, मार्गदर्शन देते हैं, उसके लिए उनका भी धन्यवाद है । सभी वरिष्ठजन, जब हम युवा बोलने के लिए खड़े होते हैं तो हमें टोकते कम हैं, उनका भी धन्यवाद है । कैसे मुख्यमंत्री जी सरलता से जवाब न देकर भी जवाब दे देते हैं, यह भी सीखने की बात है । कैसे महंत जी सरलता से कटाक्ष कर देते हैं, यह भी सीखना इनसे हम लोगों ने सीखा । बघेल से लड़ना सीखा तो चन्द्राकर जी और कौशिक जी, पुन्नूलाल मोहले जी जैसे वरिष्ठजनों से अपने की सरकार के मंत्रियों को घेर देना, सवाल कैसे पूछना यह हमने इनसे सीखा है। हर व्यक्ति से कहीं न कहीं हम युवाओं को कुछ सीखने को मिल रहा है। जब हम लोग बाहर जाते हैं और हम अपने दूसरे राज्य के साथी विधायकों को बताते हैं कि हमारी कितनी बैठकें होती है और हमको कितना बोलने का मौका मिलता है तो पहले तो वह लोग विश्वास नहीं करते हैं। मैं एक बार उत्तर प्रदेश गया था, वहां पर जब मैंने अपने साथी विधायक को बताया तो उन्होंने कहा कि आप लोग जितना बता रहे हैं कि आप लोग बोलते हैं उतना हम लोग शायद 5 साल में बोल पाते हैं। उनको बोलने का मौका नहीं मिलता। जितना समय हम लोगों को आप लोग देते हैं, इसके लिये मैं आपको बहुत-बहुत धन्यवाद देता हूं।

सभापति महोदय, यहां की यात्रा जब अजीत जोगी जी के मुख्यमंत्रित्व काल से शुरू हुई तो मैं उनके काम को भी याद करना चाहूंगा जो काम के बदले अनाज और एक वरिष्ठ सदस्य इलेक्ट्रिसिटी बोर्ड की बात कर रहे थे, सड़कों की शुरूआत और उन्होंने आदिवासी अस्मिता की बात की। आज हम सबको उस नींव को भी याद रखना चाहिए जो उस समय छत्तीसगढ़ की रखी गयी थी। डॉ. रमन सिंह जी के कार्यकाल में चाहे वह पी.डी.एस. हो या लोक सेवा गारण्टी हो, अनेक ऐसे कार्य हुए जिसको आज हम लोग याद करते हैं। बोनस की शुरूआत हुई, बोनस की शुरूआत के बाद आदरणीय बघेल जी के कार्यकाल में 2500 रूपये देने की शुरूआत हुई। वह अब निरंतर जारी होकर आज सरकार 3100 रूपये दे रही है। एक यह लाईन सेट हो गयी है कि अब इसके ऊपर ही जाना है और अब इसके नीचे नहीं जाना है और इसका फायदा कहीं न कहीं हमारे किसानों को और हमारी जनता को मिल रहा है। चाहे वह राजीव गांधी किसान न्याय योजना हो जिससे किसानों में जीवन स्तर में सुधार आया, स्वामी आत्मानंद स्कूल हो, बिजली बिल हॉफ हो, रिपा हो, यह सारे ऐसे निर्णय यहां पर इस सदन में हुए हैं, जिससे आम लोगों की जिंदगी बदली है। इन 25 वर्षों में यह सदन कई ऐतिहासिक पलों का साक्षी रहा है। विधेयकों के माध्यम से प्रदेश का विकास एवं जनकल्याण के कई निर्णय इस सदन में हुए हैं। नोक-झोंक भी हुई है, हास-परिहास भी हुआ है लेकिन यहां पर हमने देखा कि संसदीय मर्यादाओं का बड़ा सम्मान रखा गया। अगर हम संसदीय मर्यादाओं के सम्मान की बात करें तो आज पुराने भवन में आखिरी दिन है और नए भवन की ओर जाने वाले हैं तो सभापति महोदय एक छोटी सी पीड़ा मैं आपके समक्ष पेश करूंगा। जब हम लोग नए भवन के उद्घाटन में गये तो वहां एक नाम ऐसा था जो शायद पट्टिका में होना चाहिए था

और नेता प्रतिपक्ष जी का नाम उसमें नहीं था। आगे अगर हम इस परिपाटी और पंरपरा की बात करके जा रहे हैं और उनका नाम वहां नहीं है तो हम कौन-सी नई परंपरा की नींव रखने जा रहे हैं, इस बात को शायद हमको सोचना होगा। आज इस मौके पर मैं छत्तीसगढ़ की कल्पना करने वाले ठाकुर प्यारेलाल, ठाकुर छेदीलाल बैरिस्टर, पंडित सुंदर लाल शर्मा, सप्रे जी और खूबचंद बघेल जी को नमन करता हूं। आज मैं आदरणीय अटल जी को, दिग्विजय सिंह जी को, रविन्द्र चौबे जी को याद करना चाहता हूं जो इस पूरी प्रक्रिया में आगे रहे।

सभापति महोदय, आज हमारा बजट जो लगभग 1 लाख 65 हजार करोड़ पर चला गया है। जब हमने शुरूआत की थी तो लगभग 5 हजार करोड़ रूपये का बजट पेश हुआ था। उस नींव रखने वाले कुमार साहब कोरिया को भी मैं याद करना चाहूंगा जिन्होंने वित्त मंत्री के रूप में नींव रखी और उस नींव की वजह से धीरे-धीरे बढ़ते हुए सभी वित्त मंत्री और मुख्यमंत्रियों की अगुवाई में आज हम लोग यहां पर पहुंच पाये हैं। 2001-02 की बात करें तो हमारी प्रति व्यक्ति औसत आय साढ़े 12 हजार रूपये के आस पास थी जो आज बढ़कर 1 लाख 62 हजार रूपये के आस पास हो गयी है। हर सरकार, हर छत्तीसगढ़ियां इसकी बधाई का पात्र हैं। इस विधान सभा में साढ़े 500 से ऊपर विधेयक पास किये गये और जब वर्ष 2015 में अविश्वास प्रस्ताव आया तो एक रिकॉर्ड बना और शायद 24 घण्टे की बैठक चली थी। उसमें महाराज, सरगुजा और इन लोगों ने जो लंबे भाषण दिये थे, इसका परिचायक है कि कैसे कोई भी सदन अपनी सरकार के लिये अपने विपक्ष के लिये कितना सीरियस हो सकता है। तमाम विफलताओं के बाद हमारे सामने आज बहुत बड़ी चुनौती खड़ी हुई है।

सभापति महोदय, हम लोगों ने पिछले 25 सालों का तो आकलन कर लिया है लेकिन अब आगे हम लोग कहां जाने वाले हैं, इसके बारे में हमको सोचना पड़ेगा और इसके साथ ही हम लोगों को इस बारे में भी बात करनी पड़ेगी कि आज छत्तीसगढ़ का युवा नशे में संलिप्त हो गया है। हमें इस बारे में सोचना होगा कि हम उसको बाहर कैसे निकाले। यह कोई आरोप-प्रत्यारोप नहीं है। आज यदि युवा नशे में है तो वह समस्या जितनी मेरी है, उतनी सभी की है और आज इस चीज को हम लोग देख रहे हैं। हमें इस बारे में भी सोचना होगा कि 44 प्रतिशत वन क्षेत्र लेकर आज भी अगर हम बात करें तो हम कोई ऐसा नेशनल पार्क डेव्हलप नहीं कर पाये हैं, जिसकी हम नेशनल लेवल पर बात कर सके। आज भी हम लोग बांधवगढ़, कान्हा और बाहर जाने की बात करते हैं और यदि हमारे पास 44 प्रतिशत वन क्षेत्र है तो हम क्यों नहीं उसको राष्ट्रीय स्तर पर लेकर आ रहे हैं । अगर हम खनन की बात कर रहे हैं तो हम सिर्फ हसदेव उजाड़ने की बात क्यों कर रहे हैं? हमें इसको आगे विकास में क्यों नहीं लाना चाहिए। ऐसी बहुत सारी बातें हैं। अगर हम पुरानी बातें याद करते रहें । हमसे कहां गलतियां हुईं उसको सुधारने की आवश्यकता है, लेकिन हम आगे कहां जाएंगे, इस सकारात्मक सोच की भी आवश्यकता है। अकबर क्यों महान हुआ, महाराणा प्रताप का सेनापति क्यों मुसलमान हुआ। अकबर का सेनापति क्यों महाराजा

जयसिंह हुआ, इस बारे में बात तो करनी चाहिए, लेकिन इसके साथ-साथ आगे के भी विजन की बात करनी चाहिए कि हम छत्तीसगढ़ प्रदेश को कहां लेकर जा रहे हैं। हम छत्तीसगढ़ प्रदेश को युवाओं के लिए क्या बनायेंगे ? माननीय सभापति महोदय, मैं सिर्फ इतना ही कहूंगा कि पुरानी विधान सभा हमारी सिर्फ ईंट पत्थरों की संरचना नहीं है, बल्कि हमारे लोकतांत्रिक सफर का साक्षी है। यह भवन हमारी लोकतांत्रिक यात्रा का अध्याय है और अब हम एक नये अध्याय की ओर जा रहे हैं। तो सारे सदस्यों और समस्त छत्तीसगढ़वासियों को उसकी बधाई एवं शुभकामनाएं। आपने मुझे यहां बोलने का मौका दिया, उसके लिए आपको बहुतबहुत धन्यवाद् देता हूँ एवं आभार व्यक्त करता हूँ।

कृषि मंत्री (श्री रामविचार नेताम) :- माननीय सभापति महोदय, आज छत्तीसगढ़ की हमारी इस विधान सभा का यहां एक तरह से यह सत्र अंतिम सत्र के रूप में इस भवन में हम लोग अपनी बात को रख पा रहे हैं। छत्तीसगढ़ स्थापना के पहले और छत्तीसगढ़ राज्य की स्थापना के बाद की जो परिस्थितियां थीं, उस बारे में माननीय हमारे विद्वान सदस्यों ने खासकर आदरणीय अजय चन्द्राकर जी ने बड़े ही विस्तार से चर्चा की और बाकी माननीय सदस्यों ने बहुत ही विस्तारपूर्वक अपनी बातों को रखा है।

सभापति महोदय, अभी आप आसंदी में विराजमान हैं। लेकिन मैं अगर वर्ष 2000 के पहले की बात करूं तो उस समय की स्थिति बताना चाहूंगा। जब हम लोग मध्यप्रदेश में रहते थे वह कल्पना से बाहर है। आज के जो माननीय सदस्य हैं वह सोचेंगे और देखेंगे। हम लोगों को भोपाल जाने के लिए बस का पास मिलता था। उस समय बस से केवल दो लोग जा पाते थे। मैं सरगुजा के सुदूर अंचल का रहने वाला था उसके लिए भोपाल जाना कितना दूभर था, यह कितनी मुश्किल का काम था। उस समय हम ट्रेन की बात करें तो जब मैं अपने गांव से ट्रेन के लिए बस पकड़कर 6 घण्टे में अंबिकापुर आता था, मैं एक रात अंबिकापुर रूकता फिर दूसरी रात ट्रेन पकड़कर हम लोग कटनी, अनूपपुर जाते थे। फिर वहां से दूसरी ट्रेन पकड़ते थे। फिर उस ट्रेन से भोपाल पहुंचते थे। उस समय दो-तीन का आना-जाना होता था। यह कितनी मुश्किल का काम था। यह मेरा सौभाग्य है कि मुझे आज क्षेत्र की जनता, सरगुजा की जनता का बहुत प्यार मिला। अगर हम बीच में वर्ष 2013 एवं वर्ष 2018 की बात छोड़ दें तो उस घोर सुदूर अंचल से वर्ष 1990 से लगातार विधायक निर्वाचित हुआ। इसी बीच में मुझे राज्यसभा में रहने का भी सौभाग्य मिला। हम यह कह सकते हैं कि मध्यप्रदेश की जो स्थिति थी मैं माननीय सदस्यों को यह भी बता दूं कि उस समय शुरूआत में माननीय विधायकों को जो मानदेय मिलता था वह केवल 4000 रूपये होता था। उस समय कोई मद नहीं होता था। वर्ष 2000 के पहले 4000/- रूपये के बाद वर्ष 1990 में माननीय पटवा जी ने सोचा कि कम से कम इन विधायकों को सस्ते में लोन देकर, विधान सभा 10 प्रतिशत वहन करे और 6 प्रतिशत ब्याज पर विधायक लोन पटा सके।

समय
6.00 बजे

माननीय सभापति महोदय, प्रदेश के सभी 320 विधायकों को जीप दी गई। अब जीप की ऐसी हालत हो गई कि जीप का कर्ज बढ़े और जीप कम चले। कहने का आशय यह है कि जीप पुरानी होती गई और कर्ज का आकार बढ़ता गया और कर्ज इतना बढ़ा, इतना बढ़ा कि उस जीप गाड़ी को बैंक वाले खींच-खींच कर ले गये और विधायकों के ऊपर कर्ज बढ़ गया। मैं कई विधायकों को देखा कि उनकी गाड़ी खींचा गई। माननीय सभापति जी, 16 प्रतिशत ब्याज था, उप मुख्यमंत्री जी भी हैं। आज तो हम जीरो प्रतिशत ब्याज पर बात कर रहे हैं। कितना परिवर्तन है। आदरणीय पुन्नूलाल मोहले जी को मालूम है। उसमें भी 1990 गये, 1993 में वहां जो इतनी बड़ी घटना हुई। वहां अयोध्या उत्तरप्रदेश में मंदिर, मस्जिद टूटा। लेकिन हम लोगों का क्या अपराध था कि वहां हमारी 4 प्रदेशों की सरकार को भंग कर दिया। मधयप्रदेश, राजस्थान, हिमांचल, गुजरात इन राज्यों की सरकारों को बर्खास्त कर दिया गया। अब हम लोग तो वैसे बेरोजगारी के आलम में आ गये। नये-नये चुनकर चले गये थे। बढिया से दांत नहीं जम पाया था। 25 साल में पूरा करके गये थे। आप तो उस समय हमारे प्रभारी मंत्री थे। उस समय सरगुजा के प्रभारी मंत्री नेता प्रतिपक्ष थे, उनके पास आबकारी विभाग और गृह विभाग भी था। साहब, वह दौर हम लोग देखे हैं। वह मिन्टो हाल से चलते-चलते बड़ा धक्का-मुक्की करके अपनी सीट में घुसते थे। 320 की सीट थी। यहां हम लोगों की ये स्थिति थी कि जब नये-नये चुनकर गये तो वहां सख्ती ज्यादा होती थी। मैं शरीर से बड़ा दुबला-पतला और छोटा सा था। पटवा जी बोले कि भाई किसको उठाकर ले आये हो। वह बोले कि नहीं ये विधायक बने हैं। स्वर्गीय शिवप्रताप जी नहीं हैं, हमारे नेता उस समय वही हुआ करते थे। उनकी सरकार में मंत्री भी बने। सभापति जी, वह दौर और था। वहां से चलते-चलते हम लोग लगातार संघर्ष किये। एक बार की मैं कहानी बताऊं। आज मध्यप्रदेश विधान सभा के अध्यक्ष आदरणीय तोमर जी हैं। वह हमारे प्रदेश के युवा मोर्चा के अध्यक्ष बने और उन्होंने मुझे प्रदेश का मंत्री बना दिया। हम लोग बराबर बैठक लेने वाली पार्टी हैं। हम लोगों की पार्टी में सीटिंग चलती रहती है। हम लोगों की बारहों महीने बैठक चलती है। हर मुद्दे को लेकर बैठक होती है। बैठक जब कम होती थी, मैं नहीं जा पाता था तो पेशी होती थी और बोले कि रामविचार जी इस बैठक में नहीं आये। मैं बोला कि महोदय ये बताईये कि मैं बैठक में आऊं या विधायकी करूं? वह बोले कैसे? मैं बोला कि विधायकी करते हुए मैं दोबारा विधान सभा आऊं या नहीं? वह बोले कि नहीं यार आना तो जरूरी है, चुनकर आना जरूरी है। मैं बोला कि चुनकर आ सकूं, इसीलिए बैठक में बराबर नहीं आ पा रहा हूं। एक बार जाता हूं तो एक हफ्ता लगता है तब तक से आपकी बैठक हो जाती है। वहां पहुंचते तक पता चला कि बैठक शुरू हो गई। उस समय गैप हो जाता था। ये स्थिति थी। आवागमन के बिल्कुल साधन नहीं

थे। और इसके बार आगे चलते-चलते बहुत सारी योजनाओं में, जब दूसरी विधान सभा हुई, हमने जनता की आवाज का उठाया, लड़ा और उस समय तो एक हैण्डपंप स्वीकृत होना मुश्किल था। सिंगल एक हैंण्डपम्प के लिये विधानसभा प्रश्न लगता था कि मेरे विधानसभा में इस वर्ष कितने हैंण्डपम्प लगे ? एक बार लगाया था तो 10 मिला था, 10 विधानसभा में हैंण्डपम्प । रोड तो जीरो, सिंचाई की कोई योजना नहीं । बाकी कोई योजना पर काम नहीं होता था, पूरा क्षेत्र अंधकार में डूबा था, रोड का कहीं नामो-निशान नहीं था । रोड, पुल-पुलिया कहीं नहीं था, उस अभावग्रस्त से, वह अभाव की जिंदगी जीते-जीते, वह संघर्ष करते-करते उस दौर से निकलकर आज यहां पहुंचे हैं । मैं क्षेत्र की जनता को, चूंकि लोगों ने आशीर्वाद में कमी नहीं की । बराबर जीताते रहे कि इस बार, इस बार, इस बार और उसको पूरा करने के लिये हम लोग यहां पहुंचे हैं । यह पवित्र सदन है, धर्मजीत सिंह जी ने यह सही बात बोली कि आज हम लोगों की आवाज बनकर यहां पर हैं, लोगों की आवाज को देने के लिये, लोगों की समस्याओं को रखने के लिये हैं। 5 साल का समय कब-किधर निकल जायेगा, 2 साल पूरा हो गया है और इस बीच में हम अगर अपनी कार्ययोजना के आधार पर उन क्षेत्रों के बेहतर विकास की अगर हम योजना बनाकर काम नहीं करेंगे तो समय निकल जायेगा और पता नहीं चलेगा ।

माननीय सभापति महोदय, इस दौर के बाद एक दौर और भी आया । यह दौर आया, हमारे छत्तीसगढ़ बनने का मार्ग प्रशस्त हुआ । संकल्प आया, संकल्प पर हम सबने बोला भी, जब एक-एक विषय आता था । एकाध ध्यानाकर्षण अगर मध्यप्रदेश में लग जाये तो उस समय लगता था कि मुझे बोलने का मौका मिला । एक प्रश्न लगाने के लिये हम लोग अपने भाजपा कार्यालय के नीचे टाईपराईटर बैठता था, वैसे ही । उसके पास हम लोग सुबह 7 बजे डेरा डालते थे । मेरा ध्यानाकर्षण टाईप कर दे, फोन लगता था, फोन घुमाने वाला होता था । फोन करने के लिये वहां लाईन लगती थी कि भैया पहले आ गये, वहां पर कौशल जी हमारे कार्यालय के मंत्री थे । कौशल जी कार्यालय देखते थे, बोलते कि भई नेताम जी आ गये हैं, इनका थोड़ा देख लेना । ध्यानाकर्षण लगाते-लगाते, प्रश्न लगाते-लगाते टाईप करना पड़ता था । वहीं पर टाईप कराते थे, एक ही टाईपर, केवल एक ही । फोन लगाने वाला एक ही । उसमें भी फोन को लॉक कर देते थे कि बिजली का बिल देना है । यह दौर था, बिजली का बिल न आये, इसके लिये टेलीफोन में लॉक सिस्टम था क्योंकि बिल बहुत आता था, यह दौर था । विधानसभा में रहने के लिये दो कमरे मिलते थे, विधायकों को शुरूआत में 4500 रूपये उनकी सैलरी होती थी, मानदेय होता था फिर उसके बाद 5 साल के बाद होते-होते वह करीब 10,000 के लगभग हुआ । 10,000 के बाद फिर तीसरा में वर्ष 1998-2000 के लगभग में उस समय लगभग 20 लाख रूपये लोगों को बांटने का हुआ, जो हम लोग विकास निधि बोलते हैं । एम.एल.ए. फंड की उस समय धीरे से शुरूआत हुई और आज तो 4-4 करोड़ इतनी बड़ी योजना लेकर चल रहे हैं तो वह दौर, किस दौर से निकले हैं ।

माननीय सभापति महोदय, मैं एक समय की बात करूं । मैं समझता हूं कि इसको बोलना जरूरी है, जनता बहुत सारी बातों को नहीं बोल पाती है लेकिन मन में बोलती है, दिल में उस चीज को बैठाकर रखती है । हम लोगों का तो 6-7 बार का दौर हो गया, हमारी जो पीढ़ी के लोग हैं, हमारे जो बाकी लोग हैं । इन सबको अगर आपको लंबा सफर तय करना है, अगर आपको आगे जाना है तो बोलिये कम, सुनिये ज्यादा । लोगों का सुनाने का अधिकार है, बोलने का अधिकार है, उसके मुंह को, जुबान को बंद करने की कोशिश नहीं करना वरना वह समय पर उलटकर जवाब देगा। वह चुनाव में बोलेगा इसलिये सुनिये, दिल में रखिये, इस बात को रखिये, नजरअंदाज नहीं करियेगा । इस भाव से अगर हम आगे बढ़ेंगे तो हमारे बहुत सारे जनप्रतिनिधिगण हैं, उस दौर को आगे ले जा सकते हैं। बहुत सारी बातें हैं। विकास के बहुत सारे पैमाने हो सकते हैं। विकास की ललक किसको नहीं होती है। ललक हर किसी में होनी चाहिए और इसीलिए तो हम चुनकर आये हैं, लेकिन जितना हम करते हैं, जितनी हम मांग करते हैं, जितना हम बोलते हैं, उतना काम हो जाता है क्या? नहीं होता। लेकिन हम लोगों को कैसे विश्वास दिलायें, अपने कर्म से, अपने वचन से, अपने व्यवहार से इससे आप दिला सकते हैं। हम लोगों ने वर्ष 1990 में कोई सोच नहीं सकता और सरगुजा की हालत वैसी थी। एक अलग ही उपनिवेश था। एक ही अलग ही औपनिवेशिक राज ही था और वहां का राज किसी के अधीन ही था। आप वह अच्छी तरह से जानते हैं, लेकिन उसके बावजूद विपक्ष में रहते हुए संघर्ष का दौर देखा। एक समय ऐसा भी आया, वह अभावग्रस्त क्षेत्र का एक ऐसा मामला आया। आदरणीय धरमलाल कौशिक जी ने इस बात का जिक्र किया कि एक वहां रिबई पंडो नाम व्यक्ति के मरने की शिकायत हुई। उसको इस तरह से हाईलाइट किया गया कि वहां लोग भूख से मर रहे हैं। कीड़े-मकौड़े खा रहे हैं। लोग बंदर भालू खा रहे हैं। इस तरह का एक अतिरंजित समाचार आया। यह अतिरंजित समाचार जब आया तो पूरे देश की मीडिया में छाया। देश की मीडिया में छाने के बाद पी.एम.ओ. तक मामला गया और उस समय तत्कालीन मध्यप्रदेश के हमारे जो प्रदेश कांग्रेस के नेता हुआ करते थे, उस समय एक यंग दौर में था। आप लोग संघर्षरत थे। आप ये आदरणीय चरणदास महंत जी हो गये, धनेन्द्र साहू जी हो गये। बाकी हमारे भारद्वाज जी हो गये। आप लोगों का पूरा ग्रुप और उस समय के वहां के लोग इन लोगों ने प्लानिंग की कि इस समय की सरकार पटवा जी की नेतृत्व वाली सरकार है, यह सरकार जम न पाये, इसलिए पहले से ही इसकी ऐसी योजना बनाओ, ऐसा मुद्दा ढूंढो कि इसको बर्खास्त कर दे। बर्खास्त करने की योजना बनी थी। बर्खास्त करने की मांग होने लगी और चारों तरफ इतना वातावरण बना, जितने प्रदेश के बड़े-बड़े नेता मध्यप्रदेश के कांग्रेस के वरिष्ठ नेता, सभी नेता उस मंच में आये और प्रधानमंत्री जी को लाये। प्रदेश के समस्त बड़े नेता गये थे। स्व. अर्जुन सिंह भी उस मंच में रहे। स्व. विद्याचरण शुक्ल जी भी रहे। श्यामाचरण शुक्ल जी भी रहे। वोरा जी भी रहे। सिंधिया जी भी रहे। मैं सौभाग्यशाली हूं, उस मंच का और उस क्षेत्र का विधायक मैं आज भी इस सदन का सदस्य हूं। यह सौभाग्य है कि वहां से प्रतिनिधित्व

करते-करते, लड़ाइयां लड़ते-लड़ते, इसके बावजूद लोगों ने विश्वास नहीं खोया। मेरे साथ लगे रहे। तरह-तरह के उपाय करने के बावजूद लोग आशीर्वाद देते रहे। उनको भरोसा था कि हमारा जो नेता है, ये किसी तरह का गलत काम करने वाला नहीं है। गलत साथ देने वाला नहीं है। हमारे लिए लड़ाई लड़ रहा है। निश्चित ही उनका सहयोग था। इसलिए उस दौर के बाद छत्तीसगढ़ का निर्माण हुआ और हम लोगों ने विधान सभा में अपनी-अपनी तकलीफें, अपनी-अपनी बात रखी, मैंने अपनी बात को रखा था। मैंने उस समय बोला था, अब हम लोग तो मध्यप्रदेश से अलग होकर अलग जा रहे हैं, कहां इतना विशाल मध्यप्रदेश पिंड मुरैना, पूरा बघेलखण्ड, बुंदेलखण्ड से लेकर पूरा मालवा का क्षेत्र, पूरा महाकौशल का क्षेत्र, उन क्षेत्रों में नेतृत्व करना और उसकी विशालता, उनके साथ में हम लोगों का इतने अच्छे संबंध, कहां इंदौर भोपाल से लेकर, छतरपुर से लेकर हर जगह इतने अच्छे संबंध, मैं उस समय के नेतृत्व को भी धन्यवाद देना चाहूंगा कि हम लोग डिबेट जरूर करते थे । विरोध बहुत जबरदस्त होता था। यहां हमारे नेता प्रतिपक्ष जी विधान सभा में हमारे आदरणीय स्वर्गीय तिवारी जी का नाम ले रहे थे। जिस प्रकार से वह दिखते थे, वह वास्तव में सफेद शेर की तरह दिखते थे। कभी-कभी तो मैं देखता था कि महाभारत में जो द्रोणाचार्य का पात्र दिखता था, वही द्रोणाचार्य राम निवास तिवारी जी दिखते थे। ऐसा विशाल शरीर, विशाल भृकुटी तना हुआ, लेकिन ऐसी आसंदी को भी चैलेंज करने वाले हमारे दरबारा सिंह जी जैसे उस समय के नेता भी थे। दरबारा सिंह जी, रामलखन शर्मा जी, रामलखन सिंह त्योंथर जी, लक्ष्मीनारायण यादव जी जैसे लोगों ने और यहां तक कि हमारे पक्ष के आदरणीय गौरीशंकर शेजवार जी उस समय हमारे नेता प्रतिपक्ष होते थे। जब मैं उनका तेवर देखता था तो लगता था कि क्या हो जाएगा। उस समय उस दौर के बाद जब हम लोग छत्तीसगढ़ राज्य की स्थापना की बात करने लगे तो हम लोगों ने यह बोला था कि अब हमें जाने दीजिए। हम लोगों को यह दु:ख जरूर है कि इतना बड़ा महल छोड़कर हम घर में जाएंगे, लेकिन अपने घर जाएंगे, अपनी जमीन में जाएंगे। हमें वहां प्रसन्नता होगी। हम वहां जाकर कष्ट भी सहेंगे, लेकिन अपने क्षेत्र और प्रदेश का विकास करेंगे। हम लोगों को यहां की जरूर याद सताएगी। जिस कमरे में हम रहते थे, वह कमरा भी याद दिलाएगा, जिस भवन में बैठते थे, जिस चेयर में बैठते थे, जिनके आजू-बाजू बैठते थे, वह भी याद सताएगा। जिनके साथ हम लोग टी.टी. नगर में न्यू मार्केट में जाकर जूस पीते थे, पान खाते थे, होटल की कुटिया में कभी-कभार भोजन कर लेते थे, यह सब तो याद आएगा, लेकिन जब हमारा नया बसेरा होगा तो वहां जाकर हम अपना ठिकाना ढूंढेंगे और अपने ठिकाने को ठीक करेंगे। हम झोपड़ी से अपना महल बनायेंगे। हम लोग यह सपना लेकर आये। हम लोगों ने जो सपना देखा था, उस सपने के आधार पर इसे गढ़ने, संवारने और सजाने का हम लोगों ने संकल्प लिया। उस समय हमारे तत्कालीन जितने माननीय विधान सभा अध्यक्ष हुए, सबने विधान सभा की गरिमा को बढ़ाने का काम किया। जितने माननीय मुख्यमंत्रीगण हुए, उनमें प्रदेश का चहुमुखी विकास करने के लिए ललक थी। यह अलग बात है कि हर पार्टी की एक प्रतिबद्धता होती है। वह विचारधारा की

प्रतिबद्धता होती है। प्रतिबद्धता के आधार पर लोगों ने काम किया होगा। अपना-अपना जो कमिटमेंट था और जनता के बीच में जाकर लोगों ने कमिटमेंट किया था। अपनी पार्टी की ideology के आधार पर जो विचार रखा था, उसके आधार पर लोगों ने काम किया। हम इतना कह सकते हैं कि हम लोगों ने जिस प्रकार से काम किया, गांव, गरीब, किसान, मजदूर, नवजवान, बच्चे, बुजुर्गों, माताओं-बहनों के लिए जिस प्रकार से योजना बनाकर काम किया, उसी को देखते हुए आज हमारा छत्तीसगढ़ युवावस्था में आया है तो हम कह सकते हैं कि जब हम विकसित प्रदेशों की बात करते हैं तो विकसित प्रदेशों की श्रेणी में छत्तीसगढ़ प्रदेश को हम खड़ा पाते हैं। हम उस दिशा में बढ़े हैं। हम कृषि के सेक्टर में आगे बढ़े हैं। हम शिक्षा के क्षेत्र में आगे बढ़े हैं। पूर्व में जहां पर कृषि की केवल 1 यूनिवर्सिटी होती थी, आज हमारी उद्यानिकी की अलग यूनिवर्सिटी हो गयी है। हमारी एजुकेशन की एकमात्र यूनिवर्सिटी हुआ करती थी। पंडित रविशंकर शुक्ल यूनिवर्सिटी के तहत ये सभी थी, लेकिन आज न जाने कितनी यूनिवर्सिटी हो गयी हैं। हम लोगों ने एक लंबी छलांग मारी है। इस लंबी छलांग में हम लोगों ने यह भी ध्यान रखा है कि हम छलांग मार रहे हैं, लेकिन हमारी जमीन भी बचनी चाहिए और जमीन धंसनी नहीं चाहिए। उस जमीन को सुरक्षित रखते हुए, जहां पर हम चले थे, उस रास्ते को हम कैसे ठीक कर सके, यह ध्यान में रखते हुए हम लोगों ने काम किया है। सभापति महोदय, आप सब ने अपनी भावनाओं को यहां पर व्यक्त किया कि हमारी विधान सभा देश की उत्कृष्ट विधान सभा है। इस विधान सभा में ही हम लोगों ने स्वमेव निलंबन करने का नियम बनाया। तीन अवसर पर देश के राष्ट्रपतियों का आगमन हुआ, उनका उद्‌बोधन हम सबको प्राप्त हुआ, दो अवसर पर उप राष्ट्रपति जी आए, 5 अवसर पर लोकसभा अध्यक्ष जी का आगमन हुआ, पी.ओ.सी. संसदीय सम्मेलन 2005 में हुआ, सी.पी.एल. संसदीय सम्मेलन 2010 में हुआ। देश के माननीय गृह मंत्री जी का एक बार संबोधन हुआ जो हम सबके लिए अच्छा रहा। सभापति महोदय, विधान सभा में कोविडकाल को छोड़कर चर्चा के उपरांत भी बजट पारित किया गया। कोविडकाल में जिस प्रकार से प्रोटोकाल तय किया गया था, उस प्रोटोकाल के तहत् विधान सभा में भी और मुझे उस समय राज्यसभा में रहने का सौभाग्य मिला था, जो कभी लोकसभा में नहीं बैठे थे, न आज हम बैठ सकते हैं, लेकिन उस दौर में हम लोग लोकसभा में बैठते थे, क्योंकि डिस्टेंस मेंटेन करना था, उस हिसाब से ये दौर तो हर किसी के लिए परिवर्तनकारी है। ये परिवर्तन आया है, उससे हम लोगों ने बहुत कुछ सीखा है। उन परिस्थितियों से निकलकर हमें और क्या आगे बढ़ना है, इस दिशा में हम लोगों ने कुछ लाईनें तय की है। सभापति महोदय, सदन में कभी भी मार्शल का उपयोग नहीं किया गया, अच्छी बात है। मार्शल का उपयोग इसलिए नहीं हुआ कि छत्तीसगढ़ की जनता इतनी भोली-भाली है, छत्तीसगढ़ के लोग बहुत सहज और सरल हैं और सरल और सहज के बीच का उसका नेतृत्व करने वाला, उसका जो लीडर होगा, स्वाभाविक है, वह भी सरल, सहज और मिलनसार होगा, यही कारण है कि यहां पर किसी पर किसी प्रकार की मार्शल के उपयोग की जरूरत ही नहीं पड़ती। लोग अनुशासन के

दायरे में रहकर अपनी बात रखते हैं। हम लोगों ने अभी तक वही आचरण और व्यवहार किया है। कहना चाहिए, ये हमारी खूबियां हैं। ये छत्तीसगढ़ की तासीर है, यह छत्तीसगढ़ की धरती की मिट्टी में है, मैं समझता हूं कि ये बाकी जगहों में नहीं हो सकता। सभापति महोदय, यहां उन्मूलन के बारे में भी क्लोज डोर मीटिंग हुई, मेरा भी सौभाग्य है कि उस विभाग को देखने का मुझे एक अवसर मिला था। एक दौर वह भी था कि नक्सलियों का चारों तरफ आतंक था, आज इस 25 साल के समय में आज नक्सली गिने से और नाममात्र के शायद कहीं बचे होंगे, शायद बचे हैं, लेकिन हम लोगों की ये भी संकल्पना है कि 2026 मार्च तक पूरे देश से नक्सलवाद को समाप्त करने का संकल्प माननीय प्रधानमंत्री जी का, माननीय देश के यशस्वी गृहमंत्री जी का और हमारी वर्तमान सरकार का ये लक्ष्य है। ये हम लोगों ने तय किया कि यहां पर हर किसी को गरीबों का आवास मिलना चाहिए।, हमारी इस विधान सभा ने तय किया कि हम गरीबों के आवास का पूरा पैसा देंगे। हम लोगों ने तय किया कि 70 लाख माताओं, बहनों के खाते में हम पैसा डालेंगे। ये बजट इसी विधान सभा ने तय किया है। सभापति महोदय, यहां बहुत सारी बातें कहने के लिए है, मैं समझता हूं कि कृषि के उत्पाद की बात करें, छत्तीसगढ़ में कृषि उत्पादन में वृद्धि हुई है, किसानों के हित में कृषि उन्नति योजना ला करके, किसानों का वाजिब हक भी मिल सके, उनको प्रोत्साहन मिल सके, ऐसी सोच करके भी हम लोगों ने बहुत सारा काम किया है, आगे हम सबको बहुत सारा काम करना है। हम लोग विधान सभा का भवन छोड़ रहे हैं, एक भवन से बड़े भवन में जा रहे हैं। हमारा लक्ष्य भी बड़ा है। विकसित छत्तीसगढ़ बनाने का बड़ा लक्ष्य है। विकसित भारत बनाने के लिए विकसित छत्तीसगढ़ बनाना है। इसलिए हम अपने कर्म से, अपने वचन से...।

श्री अजय चंद्राकर :- छत्तीसगढ़ विकसित तब होगा जब बलरामपुर, रामानुजगंज विकसित होगा।

श्री रामविचार नेताम :- सभापति महोदय, हमारी पार्टी या हमारी सरकार अंत्योदय की परिकल्पना के आधार पर चलती है। अंत्योदय सबसे पीछे, सबसे नीचे, सबसे पिछड़े, बलरामपुर तो मेरा उसी में है, बस्तर का सुदूर अंचल उसी में है। वहां का विकास होगा तब तो हम बाकी उसकी बराबरी में आ पाएंगे। आपके धमतरी में देश का शायद ही ऐसा कोई जिला होगा, मैं वास्तव में बोलता हूं, मुझे गर्व होता है, आप छत्तीसगढ़ के हैं, छत्तीसगढ़ ने देश के जितने भी मापदंड विकास के जो तय किए हैं, उसमें सर्वाधिक अगर कोई सफल जिला है तो धमतरी जिला है, मैं उनको बधाई देता हूं। वहां के लोगों को वहां के जनप्रतिनिधियों को, वहां के तमाम लोगों को बधाई देता हूं। उसमें भी सभी योजनाओं में सर्वाधिक विकास कुरूद में है। तो कुरूद की जनता को बधाई ही है। वहां के हमारे माननीय सदस्य को भी बधाई है। माननीय अजय जी के बिना कौन कर सकता है। अजय जी, आपने बहुत सारी बातों को रखा है। मैं समझता हूं कि आज हम सब इस विधान सभा से एक संकल्प लेकर जाने वाले हैं। स्वाभाविक है कि हम जिस पेड़ के नीचे बैठते हैं, हम जिस रास्ते से गुजरते हैं, उसको भी याद करते हैं। हम लोगों की इस विधान सभा में हमारी राजनीति की एक यात्रा रही है, संसदीय यात्रा रही है, 25 सालों का रहा है। 25

साल यहीं पर नहीं होता। यह 25 साल का सम्बन्ध है, यह सम्बन्ध तो रहेगा ही। आदरणीय आप कहां बैठते थे, पुन्नूलाल जी कहां बैठते थे, पुन्नू लाल जी की उपलब्धि के बारे में बात कर रहे थे, उन्होंने अलग-अलग उपलब्धियां बताई। मैं अलग उपलब्धि बताऊंगा तो वह अलग बात है। इनका विधायक काल में क्या उपलब्धि रहा ? विधायक के बाद सांसद काल में क्या उपलब्धि रहा ? विधायक के पहले क्या उपलब्धि था, उन्होंने अभी बताया नहीं है। मैं समझता हूं कि बाकी जो वक्ता हैं, वह बतायेंगे।

माननीय सभापति जी, आप सबने, हम सबने मिलकर एक बेहतर छत्तीसगढ़ बनाने के लिए एक संकल्प लिया है। जब हम इस दिशा में बढ़े हैं। हम नये विधान सभा भवन में जायेंगे। हम छत्तीसगढ़ की जो आवश्यकताएं हैं, जो समस्याएं हैं, उन सब का निराकरण करने हेतु उस मन्दिर में निश्चित ही जो आवाज जायेगी, वह पूरा होगा। मैं इन्हीं भावनाओं के साथ अपनी बात को समाप्त करता हूं। वन्दे मातरम्, जय हिन्द।

सभापति महोदय :- माननीय रामकुमार यादव जी। आप थोड़ा समय का भी ध्यान रखेंगे। माननीय मुख्यमंत्री जी, नेता प्रतिपक्ष जी, काफी लोग बचे हैं। उप मुख्यमंत्री भी बोलेंगे। समय की बाध्यता है, इसको ध्यान में रखते हुए अपनी बातें कहें।

श्री रामकुमार यादव (चन्द्रपुर) जी। माननीय सभापति जी, आज हमर छत्तीसगढ़ ला 25 साल होइस ए, आज ओखर बर हमर अध्यक्ष जी विशेष सत्र बलाय ए, ओखर लिए बहुत बहुत धन्यवाद देवत हंव।

समय
6.27 बजे **(अध्यक्ष महोदय (डॉ. रमन सिंह) पीठासीन हुए)**

आज हमन पुराना विधान सभा भवन ला छोड़ के नया भवन मा जाबो तो यहां के जो भी याद हावय, इहां जो नेता मन छत्तीसगढ़ के लिए आवाज बन के ये प्रदेश के लिए लड़े ए, ओ सब यादगार पल के चर्चा करे के लिए विशेष सत्र बलाय ए, ओखर लिए बहुत बहुत धन्यवाद देवत हंव। मैं ये दोहा के साथ देवत हंव। जो हमर पुरखा मन छत्तीसगढ़ अलग करे बर लड़िन, मैं ओला दोहा के माध्यम से बधाई देते हुए अपन बात शुरू करिहंव।

राम दुलरवां ला छोड़ दे भइया, अब पाण्डव दुलरवा भीम ओ
हमर छत्तीसगढ़ दुलरवां हमर पुरखा ए, जेमन अलग करे बर रात
करिन अउ दिन एक।

अध्यक्ष महोदय जी, हमर पुरखा के भाई मन, हमर ददा दाई मन सोचिन, ये बात के कल्पना करिन कि छत्तीसगढ़ मा अतेक कन खनिज सम्पदा ए, इहां अतेक कन तरिया नरवा ए, काबर कहे गये हे - जहां पर पानी रथे, जहां पर जंगल रथे, जहां खनिज सम्पदा रथे, ओही प्रदेश के विकास होथे। हमर

पुरखा मन महसूस करिन कि जब मध्यप्रदेश जावन तो हमी मन के सोना, चांदी, पानी ला उपयोग करके हमन ला लगय कि दूजा भाव लागत ए तो हमर पुरखा मन अलग करे बर सोचिन। जब ऐसन सोचके अलग होइन अउ पुरखा कहे रहिस ए, रामविचार नेताम जी मोर गुरू बबा ए, सुनिहा, पुरखा का कहथे, सुनिहा- छत्तीसगढ़ के पानी अउ छत्तीसगढ़ के जवानी, इहां कोई मुकाबला नइ ए।

अध्यक्ष महोदय, आउ कहे रहिन ए कोस-कोस मा पानी बदले अउ 15 कोस मा बानी। ये हमर छत्तीसगढ़ के ताकत ए। 15 कोस मा बोली बदल जाथे। बस्तर अलग गोठियात ए, सरगुजा अलग गोठियात ए, रायगढ़ अलग गोठियात ए, राजनांदगांव अलग गोठियात ए। आप उत्तरप्रदेश जावा, उहां भोजपुरी गोठियात ए। उड़ीसा मा चल देवा, सब कोंताबोड़ो गोठियात ए। लेकिन छत्तीसगढ़ अलग ए। इहां के अलग महत्व ए। मैं आज ए अवसर मा धन्यवाद देवत हंव कि ओ छत्तीसगढ़ के सपूत जे हा पहली बार मुख्यमंत्री बनकर के, एक गरीब के कोख से जन्म लेकर के कलेक्टर बनिस, मुख्यमंत्री बनके सेवा करिस। अध्यक्ष महोदय, हमन ओ समय नेतागिरी नई करे रहे हन, लेकिन मैं ये पवित्र सदन में सही बतावत हौं कि मैं ओ समय गरवा चरात रहे। जेन समय अध्यक्ष जी हर मुख्यमंत्री रिहीस हे, ओ समय मैं हर गरवा चरावौं, लेकिन मोर चेत हर गरवा मा घलौक रहय अउ मोर चेत हर छत्तीसगढ़ के राजनीति मा भी रहय। मैं ओ समय देखव कि मोर अध्यक्ष जी हर मुख्यमंत्री रहीस। पार्टी आथे-जाथे, लेकिन सच्चाई-सच्चाई होथे। जब ओहर मुख्यमंत्री रहीस ता ओखर मन में करूणा, ओखर मन में दया भाव अउ आजकल नई तोर-मोर नई देखय कि इसको अंदर डालो, इसको जांच करो, इसको खोदो, इसको पाटो। ओ हर 15 साल से मुख्यमंत्री रहीस। ओ हर बहुत सौम्य रहीस। एक-दू बार महू हर ओखर से मिले चल देहे रहे। ओ समय हमन बैराज के आंदोलन करत रहेन कि प्रदेश मा बैराज बने हे तेखर किसान मन ला पैसा देवा। एक दिन मुख्यमंत्री करा चल देहे, ओ समय मैं गरवा चरावत रहे तभो मुख्यमंत्री जी हर मोला चिनहय। ये हर सही बात हे। ओहर बइठे हावय, कोई आघू मा अइसनहे थोड़ी लबारी मारही। (हंसी) नई तो मोर कान ल पकड़ जिही कि तै हर लबारी मारत रहे। एक ठन अउ बात हावय कि [xx][1] लेकिन मैं अध्यक्ष जी ला धन्यवाद दिहौं कि ओ हर अइसे आदमी हे जेन हा बड़े कुर्सी म भी घलो बइठथे अउ छोटे कुर्सी मा बइठ के भी पूरी दुनिया ला अपन पवित्र (व्यवधान) करथे। एक बार जरूर ताली बजाकर ओखर स्वागत करना चाहिए। ये अइसे मुख्यमंत्री हे, जो कभी अपन आप ला ये नई समझय कि मोला अइ कुर्सी में रहकर सेवा करना हे।

आदिम जाति विकास मंत्री (श्री राम विचार नेताम) :- सभापति महोदय, हवलदार बनाने वाले बात को विलोपित करना चाहिए।

श्री रामकुमार यादव :- मोदी जी कहे रिहीस हे तेला कइसे करिहा? ठीक हे, मोर दिल के भावना हे। ओ पवित्र आदमी हे, तेखर बर मैं कहे हौं। मोर ओसना कुछ भावना नई हे। ओ हर तो मोर गुरू बबा

[1][xx] अध्यक्षीय पीठ के आदेशानुसार निकाला गया।

हे। आज मैं ये सदन में ज्यादा लंबा बात नई करवौ। मैं पहिली एखर कार्यकाल मा रहे। मैं यहां बड़े-बड़े आदमी देखे हौं। यहां राजा-राठी विधायक भी देखे हौं। हमर चरणदास महंत जी कबीर साहब के दोहा देकर ओती रिसाय रहय उहूं ला मना देवय। वो कबीर साहब के अइसे वाणी बोलय, ओहा कहीस कबीरा जब हम पैदा हुए, जग हंसा हम रोये, अइसे करनी कर चलो, हम हंसे जग रोये। ओला हमन गठिया मा बांध के धरे हावन। जे-जे मन धरे हे, तेमन आइन। आज अध्यक्ष जी के कार्यकाल ला देखाथौ ता मोला अइसे लागथे कि छत्तीसगढ़ ला और आगे बढ़ाय के काम करिस। जो मुकाम मा पहुंचाना रहीस ते मुकाम मा ओ हर पहुंचाय के काम करीस। ओखर बाद भूपेश बघेल जी आथे। हमर ज्ञानी जी, मोर बड़े भैया हर बतात रिहीस कि ओखर दिल में आग हे। हर आदमी के अलग-अलग क्वालिटी होथे। जब छत्तीसगढ़ में ओहर मुख्यमंत्री बनके आइस ता छत्तीसगढ़ मा छत्तीसगढ़ी गोठियाय बर आदमी हर थोकन लजावत रहीस हावय। कहूं मेर ऑफिस में जान त हमन लजावन, लेकिन जब ओहर छत्तीसगढ़ी मा मुख्यमंत्री बनिस अउ बांटी-भंवरा ला चलाइस ता हमन छत्तीसगढ़िया के घलौक पावर हर बढ़ गय। ये हर सच्चाई बात हे। छत्तीसगढ़ मा बासी के, छत्तीसगढ़ मा रोटी के, मैं कहना चाहत हौं कि अमिताभ बच्चन हर सुपर-डुपर हे ता धर्मेन्द्र हर भी कोई कम नोहय। प्रदेश के सब अलग-अलग जगह से यहां से चुनकर आइस, ओखर से यहां सम्मान बढ़िस। आज छत्तीसगढ़ के सदन मा कलेक्टर भी विधायक बने हावय। अनुज शर्मा जी हीरो, ओहर भी विधायक बने हावय, गुरू घासीदास जी के वंशज, ओहर भी इहां मंत्री बने हावय ता एक गरवा चराने वाला, तीन दिन के बासी ला खाने वाला भी आज सदन मा विधायक चुनकर आय हावय। (मेजों की थपथपाहट) मैं कभू-कभू देखथौं, जब हमन चन्द्राकर जी कति गोठियाथन, ओखर ज्ञान के सामने मा सूर्य हे। हमन ओखर सामने दीया के समान भी नई हन, लेकिन फिर भी हमन गोठियाथन ता ओहर बुरा नई मानय। ओ हर हमन ला हंसते हुए गोठियाथे। ओ हमन ला अच्छा लागथे, काबर कि ओहर हमन ला समझाथे।

नेता प्रतिपक्ष (डॉ. चरण दास महंत) :- तोर बात ला ओहर सुनते नई हे।

श्री रामकुमार यादव :- ओहर अभी सिट डाउन हो गय हे। (हंसी) आज हमर राजा साहब बइठे हे। ओहर जब भी देखथे ता कइथे, माई डियर अइसे लागथे कि मैं धरती के सबले बड़े आदमी बन गें हव । (हंसी) आज ए सदन म हम सब चुनके आये हन ।

अध्यक्ष महोदय :- चलिये, समाप्त करिये ।

श्री रामकुमार यादव :- हम चुनके आये हन अऊ क्षेत्र के जनता मन हमर उपर विश्वास करके हमला भेजे हे । ठीक हे, आप मन मंत्री-विधायक बन गे हव, हमन विधायकेच हन, आपसे निवेदन करना चाहथन कि डॉ. रमन सिंह जी हमर अध्यक्ष रहिस, वोहा कभु दूजा भाव नइ करिस । वइसने आप मन ला चले बर हे। मैं विष्णु देव साय जी ला घलो कहाथंव, वो बहुत अच्छा चलावथे । हमला त व्यक्तिगत रूप से आर्शीवाद दिसे, थोकन अऊ आर्शीवाद दे दिही त बने रहितिस । "काबर कि भरे ला भरे अऊ

जुच्छा ला ढ़रकाय" एक छत्तीसगढ़ी म कहावथे । जेखर पेट हा भरे हे, तेला अऊ भरबे तेन काम नई आय, चन्द्रपुर के जनता हा एक गरीब ला विधायक बनाके भेजे हे, मैं मंत्री अऊ मुख्यमंत्री जी ला कहाथंव मोर डहार ज्यादा ध्यान देहव । अइसे कहिके अपन वाणी ला विराम देथंव । आप मन मोला बोले के मौका देव तेखर पाय के बहुत-बहुत धन्यवाद ।

अध्यक्ष महोदय :- श्री विजय शर्मा ।

श्री विजय शर्मा :- XX XX

अध्यक्ष महोदय :- श्री अरूण साव जी । (मेजों की थपथपाहट)

उप मुख्यमंत्री (श्री अरूण साव) :- माननीय अध्यक्ष महोदय, सबले पहली त मैंहा आपला गाड़ा-गाड़ा धन्यवाद देथंव कि छत्तीसगढ़ विधान सभा के 25 साल के संसदीय यात्रा बर अतका सार्थक चर्चा रखे हव, एखर लिये बहुत-बहुत बधई देवथंव कि ए 25 साल में जेन-जेन बड़े-बड़े नेता मन विधान सभा के संचालन म भूमिका निभाय हे, उन सब ला साक्षी बनाके आप सब ला आमंत्रित करेव, एखर लिये माननीय अध्यक्ष महोदय आपला गाड़ा-गाड़ा धन्यवाद, बहुत-बहुत बधई देवथंव । मोर लिये बहुत सौभाग्य के बात हे कि जब लोक सभा के सदस्य रेहेंव, त लोक सभा के भी नवा भवन वही समय बनिस अऊ जब आज विधान सभा के सदस्य हंव, त विधान सभा के भी खुद के भवन, नवा भवन बनके तैयार हे, वोमा हम जाने वाला हन। ये मोर लिये बहुत सौभाग्य के बात हे । अऊ अइसने सौभाग्यशाली हमर दूझन अऊ सदन में सदस्य हे, गोमती साय जी बइठे हे, सुनील सोनी जी हैं, हमन लोक सभा के सदस्य रहेन अऊ नवा भवन केवल नवा भवन नइ ए, ए हमर जो छत्तीसगढ़ के नवा भवन बने हे, हमर संसाधन से, हमर परिकल्पना से, हमर द्वारा बनाये हुये भवन, ये बहुत बड़े गौरव के बात हे । ये सम्मान अऊ स्वाभिमान के बात हे । आज ए भवन में विधान सभा के अंतिम सत्र हे, अऊ ए अंतिम सत्र के आज अंतिम दिन, अऊ एखर इतिहास बहुत वैभवशाली और गौरवशाली रेहे हे । हमर सदन के पूरा हिन्दुस्तान में अलग पहिचान हे, इंहा के परम्परा के पूरा हिन्दुस्तान में अलग पहिचान बने हे । आज जब हम ए भवन ले बिदा होने वाला हन तो आज ए भवन ए बात के गवाह हे कि छत्तीसगढ़ इही भवन म रहिते हुये भूखमरी से मुक्त होने वाला छत्तीसगढ़ बने हे । ए भवन वोखर गवाह हे । ए भवन गवाह हे, शिक्षा के अलख जगाय के लिये । ए भवन गवाह हे, नारी सशक्तीकरण के काम के लिये । ए भवन गवाह हे, गांव में 100 प्रतिशत विद्युतीकरण होय । ए भवन गवाह हे कि आज कोई बच्चा भूखा नइ सोवय । वोखर योजना बनाय के कोई गवाह हे त ए भवन गवाह हे। ए भवन गवाह हे, छत्तीसगढ़ के तरक्की के । इंहा नवा-नवा कइसे स्कूल बने हे ? कइसे कालेज बने हे ? कइसे मेडिकल कॉलेज बने हे ? ए सब बात के गवाह ए भवन हावय । अऊ ए पायके ए भवन बहुत ऐतिहासिक हे । ए भवन बने से पहली आखिर छत्तीसगढ़ विधान सभा के हमर सपना कइसे साकार होईस ? ए सपना हमर सियान मन देखिन । अऊ सियान मन देखे के बाद वो अंतिम चरण में ए विधान सभा के परिकल्पना हा जो

साकार होईस, जब 25 जुलाई, 2000 मा तत्कालीन गृहमंत्री श्री लालकृष्ण आडवानी जी लोकसभा में एकर प्रस्ताव रखिन । ये प्रस्ताव 31 जुलाई, 2000 को लोकसभा मा पारित होईस । 3 अगस्त, 2000 को राज्य सभा में प्रस्तुत होईस अउ 9 अगस्त के राज्यसभा से भी पास होईस अउ राष्ट्रपति जी के दस्तखत 28 अगस्त के होके बाद ये छत्तीसगढ़ के अलग विधान सभा और छत्तीसगढ़ अलग राज्य के सपना ह साकार होईस ।

अध्यक्ष महोदय, छत्तीसगढ़ राज्य ह 1 नवम्बर, 2000 के अस्तित्व में अईस, लेकिन ये जो प्रक्रिया होए हे, ये कोई एक दृढ़ संकल्प वाले नेता, कोई अईसे राजनीतिक दल के कार्यकर्ता, अईसे प्रधानमंत्री जो देश प्रथम के राजनीति के संस्कार से काम करने वाला हे, ऐसे राजनीतिक दल के प्रधानमंत्री, अईसे राजनीतिक दल के नेता जेन विकास के लिए राजनीति करने वाला हे, विकास मा राजनीति करने वाला नेता नहीं हे । श्रद्धेय अटल बिहारी वाजपेयी जी के दृढ़ संकल्प के कारण अलग छत्तीसगढ़ राज्य के हमर सपना साकार होईस । अउ आज जब छत्तीसगढ़ अलग राज्य बने हे, छत्तीसगढ़ जेन दिशा मा आज आगे बढ़ चले हे, अब हम अपन नवा भवन मा जाने वाला हन । ओ नवा भवन यहां के जो मिले हुए संस्कार हे, यहां से विकास के जो गाथा आगे बढ़े हे, यहां से जो परम्परा बने हे, ओ परम्परा ला ले जाते हुए एक नये उत्साह के साथ, एक नये ऊर्जा के साथ हम ओ भवन मा प्रवेश करने वाला हन । 14 दिसम्बर, 2000 के जशपुर हॉल राजकुमार कॉलेज में छत्तीसगढ़ विधान सभा के शुरूआत होईए । ए भवन में 27 फरवरी, 2001 के यहां पहला विधान सभा के सत्र ये भवन में ये हॉल में प्रारंभ होईस अउ आज हमर एक अईसे भवन बनके तैयार हो गे हे, जेन भवन में जाके नया उत्साह के साथ अटल बिहारी वाजपेयी जी के सपना ला साकार करेबर, विकसित छत्तीसगढ़ के कल्पना ला पूरा करे के काम हम करने वाला हन और जब 1 नवम्बर, 2025 जेन दिन हमर नवा छत्तीसगढ़ भवन के लोकार्पण होईस, ओ दिन हमर देश के यशस्वी प्रधानमंत्री माननीय नरेन्द्र मोदी जी के आगमन होए रिहीस हे । ओकर हाथ से हमर नवा भवन के लोकार्पण होए हे और वो लोकार्पण करत हुए जोन बात कहे रिहीन हे, ओ बात हम सबला प्रेरणा देने वाला हे। ओ कहे रिहीन कि हम सबको याद रखना है कि यह विधान सभा केवल कानून बनाने का स्थान नहीं है, बल्कि यह छत्तीसगढ़ के भाग्य निर्माण का प्रखर केन्द्र है, जीवंत ईकाई है तो हम नवा भवन मा जाने वाला हन, नया उत्साह के साथ, नया ऊर्जा के साथ हम सब मिलके छत्तीसगढ़ ला आगे बढ़ाए बर काम करबो । ये 25 साल के यात्रा मा जेन-जेन भी सहयात्री रहिन हे, उन सब झन ला मैं नमन करते हुए ओमन के सबके स्मरण करत हुए मैं अपन बात समाप्त करथौं । अध्यक्ष महोदय, आप मोला बोले के समय देव, तेकर लिए बहुत-बहुत धन्यवाद ।

संसदीय कार्यमंत्री (श्री केदार कश्यप) :- माननीय अध्यक्ष महोदय, रजत जयंती के अवसर पर पूरे प्रदेश और विधान सभा में आयोजित यह विशेष सत्र हम सबके लिए क्योंकि 25 वर्षों का यह गौरवशाली

इतिहास है, जहां छत्तीसगढ़ की इस धरती पर प्रभु श्री राम का वनगमन क्षेत्र दण्डकारण्य के नाम से हम लोग इसको जानते हैं । श्रृंग ऋषि, गुरू घासीदास, गहिरा गुरू, शहीद वीर नारायण सिंह, शहीद गैंदसिंह, शहीद गुंडाधूर ऐसे महान विभूति जिन्होंने इस धरती पर जन्म लिया, लेकिन देश दुनिया के लोग छत्तीसगढ़ को उस तरीके से नहीं जानते थे, लेकिन उसको अस्तित्व में लाने का कार्य, पहचान दिलाने का कार्य भारत रत्न पूर्व प्रधानमंत्री श्री अटल बिहारी वाजपेयी जी ने 01 नवंबर, 2000 को छत्तीसगढ़ राज्य का निर्माण करके किया और आज छत्तीसगढ़ लगातार विकास की ऊंचाइयों को प्राप्त कर रहा है। मेरा यह सौभाग्य है कि जब मैं 2003 में पहली बार विधायक बनकर आया और जब आपके नेतृत्व में सरकार बनी और सरकार बनने के बाद 15 साल अलग-अलग दायित्वों का निर्वहन करते हुए इस विधान सभा में ऐसे अनेक महत्वपूर्ण विधेयक, कानून बने, जिसके हम सब साक्षी बने। मैं याद करता हूं हमारे बस्तर के दूरांचल उन क्षेत्रों का जहां पर गरीबी थी, भुखमरी थी, वहां पर चावल के लिये लोग तरसते थे और आपने Food security bill लाकर उन गरीबों के घर तक चावल पहुंचाने का काम किया। मैं आपका हृदय से आभार व्यक्त करता हूं। आपके कारण आज कहीं पर कोई गरीबी नहीं है, यह आपकी दूरदर्शिता के कारण संभव हो पाया है। मैं अनेक ऐसे कार्य याद करता हूं क्योंकि मुझे याद है कि जब मैं पहली बार दंतेवाड़ा का प्रभारी मंत्री बना था तो वहां एक गुरगुम क्षेत्र होता था। मैं गुरगुम गया था तो वहां पर हमारे आदिवासी जनजातीय समुदाय के जो बच्चे हैं, वह कुपोषण के कारण बहुत कमजोर हुआ करते थे। आपने उस पीड़ा को समझकर इस कानून को लाया। निश्चित तौर पर हम उन क्षेत्रों में कभी कल्पना करते थे, हम लोग उन आंदोलनों को भी देखा करते थे। भोपालपट्टनम वाले मांग करते थे कि हमको महाराष्ट्र में जोड़ा जाये, कोंटा के क्षेत्र वाले मांग करते थे कि हमको आंध्रा में जोड़ा जाये। उस समय ऐसी स्थिति हुआ करती थी लेकिन आपने उन क्षेत्रों में जिस तरीके से डेव्हलपमेंट किया, अधोसंरचना से लेकर, शिक्षा से लेकर, चिकित्सा से लेकर हर क्षेत्र में जो संबल बनाया, निश्चित तौर पर आज उसका परिणाम है कि उन क्षेत्र के बच्चे भी अपने आप को साबित कर पा रहे हैं। मैं अपने क्षेत्र की बात करूं तो आपके आशीर्वाद से हमारे बच्चे, प्रिमिटिव्ह ट्राईब्स के बच्चे क्रीडा के क्षेत्र में मलखंब में राष्ट्रीय नहीं बल्कि अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर अपना नाम रौशन कर रहे हैं, इसकी कभी किसी ने कल्पना नहीं की थी। यह आपके प्रोत्साहन के कारण संभव हो पाया नहीं तो उस अबूझमाड़ क्षेत्र में वर्ष 2006-07 के पहले कोई जाने को तैयार नहीं होता था। वहां पर बंदिश थी कि कोई अंदर नहीं जा सकता। विक्रम उसेण्डी जी उस बारे में जानते हैं। उन क्षेत्रों के बच्चे कभी-भी कल्पना नहीं किये थे कि वह तृतीय और चतुर्थ श्रेणी कर्मचारी से ऊपर का सपना देख सके। लेकिन आज वह बच्चे न केवल अपने आप को साबित कर रहे हैं बल्कि दिल्ली के बड़े-बड़े शिक्षण संस्थानों में जाकर अध्ययन कर रहे हैं। यू.पी.एस.सी. की तैयारी कर रहे हैं। यह आपके कारण संभव हो पाया और आपने जो आधार दिया, उस आधार के आधार पर आज हमारा छत्तीसगढ़ आगे बढ़ रहा है और निश्चित तौर पर विधान सभा के माध्यम से ऐसे बहुत सारे कार्य शिक्षा

के क्षेत्र में और चिकित्सा के क्षेत्र में हुआ है। मैं हमारी बालिकाओं को शिक्षा की दृष्टि से याद करता हूं कि जब सरस्वती सायकल योजना प्रारंभ हुई तो उससे पहले हमारी बालिकाओं का जो शिक्षा का रेशियो है, वह बालकों की तुलना में बहुत कम था लेकिन आज बालिकाओं की शिक्षा का जो रेशियो है वह हमारे बालकों से ज्यादा बढ़ गया है। यह आपकी दूरदर्शिता का परिणाम है, जिसके कारण यह संभव हो पाया है। महिला सशक्तिकरण के क्षेत्र में मुझे याद है कि आपने वर्ष 2006 में बस्तर में तत्कालीन उप प्रधानमंत्री रहे, माननीय लालकृष्ण आडवानी जी का कार्यक्रम करवाया था। एक बड़ा आयोजन हुआ था और उसके बाद आपने उनको समझा। वहां पर जो टोनही प्रताड़ना थी। यहां लता जी बैठी हैं, उन्होंने इसको विशेष तौर पर देखा है। उस टोनही प्रताड़ना के कारण हमारी जो बहन-बेटियां हैं उनको किस तरीके से प्रताड़ित किया जाता था, उसको खत्म करने का कार्य भी आपके जिम्मे जाता है। आपने इसको खत्म करवाया। उनको सम्मान से जीने का अधिकार दिलवाया। कभी हमारा जनजाति समुदाय उस बात को नहीं भूल सकता है। जब हमारे यहां पर कौशल विकास की बात आती है तो आपने कौशल विकास की दृष्टि से दंतेवाड़ा को पहले चुना और क्योंकि हम लोग दंतेवाड़ा को नक्सलवाद के नाम से जानते थे। पूरा देश नक्सलवाद के नाम से दंतेवाड़ा को देखता था, लेकिन आज वहां पर जो हमारा एजुकेशन हब बना हुआ है या फिर हमारा लाईवलीहुड कॉलेज बना हुआ है। वह आपकी सोच के कारण से ही संभव हो पाया। उस क्षेत्र में लाईलीहुड कॉलेज हमारे देश के लिए एक उदाहरण बना और कौशल विकास की दृष्टि से एक कानून बनकर, आज देश में इस बात को लागू किया जा रहा है। यह भी एक उदाहरण है। हमारे माननीय विधायकगण बैठे हुए हैं। मैं इस बात को याद दिलाना चाहूंगा जब आप मुख्यमंत्री के रूप में दायित्व का निर्वहन कर रहे थे तब हमारे विधायकों के पास क्वार्टर (आवास) नहीं हुआ करते थे, उनको पीड़ा रहती थी कि उनको कहीं पर जमीन मिले और उनके लिए आवास की व्यवस्था हो। आपने उस पीड़ा को समझा। आपने पहली बार विधान सभा में गृह निर्माण मण्डल के माध्यम से विधायकों के लिए विधायक आवास दिलाने का काम किया। ऐसा पहली बार हुआ। आपने यह परम्परा विकसित की ताकि जो हमारे सुदूर वनांचल क्षेत्र में चाहे वह सरगुजा का क्षेत्र से लेकर हमारे बस्तर का रहने वाला है, वह यहां पर आये तो उसके लिए आवास की व्यवस्था हो। आपने यह चिन्ता की। ऐसे अनेक विषय हैं जिस पर हमारे सभी सदस्यों ने प्रकाश डाला है। मैं दो-तीन विषयों पर और कहना चाहूंगा। एक तो चरणपादुका योजना के बारे में बताना चाहूंगा। हमारे वनवासी क्षेत्र में तेन्दूपत्ता तोड़ने वालों के पैरों में छाले न पड़ें, कांटा न लगे इसके लिए आपने चरणपादुका योजना चालू करवायी। कोई योजना किस तरीके से लोगों को जोड़ती है, उनकी पीड़ा को किस तरीके से देखती है यह आपकी दूरदर्शिता का परिणाम है। उन क्षेत्रों में हमारे जो तेन्दूपत्ता संग्राहकों को पहले 300-400 रूपये कीमत मिलती थी आज वह 5500 रूपये हो गया है। आज उस तेन्दूपत्ता की कीमत ढाई-तीन हजार रूपये लेकर साढ़े पांच हजार रूपये तक हो गई है। इसे लोग हरा सोना कहते थे, लेकिन उन्होंने कभी हरे सोने की कीमत नहीं दी। यह भी बहुत बड़ी विडम्बना

थी। कहीं न कहीं से उन जनजाति क्षेत्रों में हमारे वनवासी भाईयों के लिए आपने एक बहुत बड़ी सौगात दी है। उसके साथ-साथ नमक के लिए हमारे लोगों को कितनी पीड़ा झेलनी पड़ती थी। हमारे यहां पर चार, चिरौंजी, हमारे जो अनेक लघु वनोपज हैं उसको हम बदली करवाते थे। एक किलो नमक के बदले 1 किलो चिरौंजी देते थे । आपने उस पीड़ा को देखा और आपने नमक देने का प्रावधान भी चालू किया। ऐसे आपने बहुत सारे काम किए जिसके माध्यम से हमारा जो जनजाति समुदाय है, हमारे जो छत्तीसगढ़ के लोग हैं उनकी आर्थिक स्थिति अच्छी हो, उनकी शिक्षा की स्थिति अच्छी हो, उनकी चिकित्सा की स्थिति अच्छी हो, आवागमन की सुविधा अच्छी हो, आपने इसकी कल्पना की। आज लगातार उस पर आगे बढ़ते हुए हमारे माननीय मुख्यमंत्री श्री विष्णु देव साय जी अभी महतारी वंदन के माध्यम से जिस तरीके से महिला सशक्तिकरण को हमारी महिलाओं को आगे बढ़ा रहे हैं, वह भी अभूतपूर्व है। अभी हमारे किसानों को जो 3100 रूपये धान की कीमत दी जा रही है। मुझे यह बात याद है। आपने अपने कार्यकाल में धान की कीमत 1000 रूपये करने के लिए दिल्ली में पोस्ट कार्ड अभियान चलवाया था। तब हमारे यहां के लाखों लोगों ने पोस्ट कार्ड के माध्यम से धान की कीमत बढ़ाने के लिए आग्रह किया। आपकी दूरदर्शिता के कारण से यह संभव हो पाया। जिसके कारण से आज धान की वास्तविक कीमत हमारे लोगों को प्राप्त हो पा रही है।

समय
6.50 बजे **(सभापति महोदय (श्री विक्रम उसेण्डी) पीठासीन हुए)**

माननीय सभापति महोदय, ऐसे अनेक उदाहण हैं, लेकिन मैं उन उदाहरणों पर नहीं जाऊंगा, क्योंकि हमारे बहुत सभी वक्ताओं ने बहुत सारी बातें कहीं हैं। मैं एक बात जरूर कहना चाहूंगा कि जब छत्तीसगढ़ राज्य का निर्माण हुआ तो छत्तीसगढ़ राज्य में कांग्रेस की सरकार बन रही थी। लेकिन उसके बावजूद भी भारतरत्न माननीय अटल बिहारी वाजपेयी जी ने छत्तीसगढ़ राज्य का निर्माण किया। उन 03 वर्षों का भी शासनकाल हमने देखा है और 03 वर्षों के शासनकाल से हमारे कार्यकर्ताओं ने संकल्प लिया कि कि आने वाले समय में हमारे यहां पर भारतीय जनता पार्टी की सरकार बनेगी और ये हुआ भी। 03 साल के कांग्रेस के सुशासन में, 3 बार 15 साल की भारतीय जनता पार्टी की सरकार डॉ. रमन सिंह जी के नेतृत्व में रही। अभी 5 साल की कांग्रेस की सरकार फिर रही और किस तरीके से फिर प्रताड़ित हुए। आप सोचिये कि 3 साल के कुशासन में 15 साल तो 5 साल के कुशासन में 25 साल। आप यह मानकर चलिये कि जब हम आजादी के 100 वर्ष मना रहे होंगे, तब भारतीय जनता पार्टी की ही सरकार रहेगी।

श्री द्वारिकाधीश यादव :- जब तक मशीन रहेगी, तब तक। माननीय मंत्री जी आप जो दावा कर रहे हैं, वह मशीन में ही संभव है। लोकतंत्र में संभव नहीं है।

श्री केदार कश्यप :- जब आपकी सरकार बनती है, तब मशीन नहीं रहती है। नहीं मालूम आप लोगों को अब कौन-कौन से राज्य में और कौन-कौन से स्तर में आपको सीखना पड़ेगा।

श्री द्वारिकाधीश यादव :- आप वरिष्ठ मंत्री हैं।

श्री केदार कश्यप :- माननीय सभापति महोदय, मैं अपनी बातों में आता हूं।

श्री द्वारिकाधीश यादव :- आप वरिष्ठ मंत्री हैं इसलिए मैं बीच में नहीं बोलना चाहता। इस विषय पर एक दिन सदन में अलग से समय दे दीजिए, चर्चा करवा लीजिए। हम भाग लेंगे और बतायेंगे। आप वरिष्ठ हैं करके मैं आदर करते हुए उसमें और आपके बीच में नहीं आना चाह रहा हूं।

श्री केदार कश्यप :- माननीय सभापति महोदय, हमने उन परिस्थिति को यहां पर देखा है। आज चाहे वह सड़कों का निर्माण हो, पेयजल की व्यवस्था हो। सभापति महोदय, बस्तर के आप भी रहने वाले हैं, मैं भी बस्तर का रहने वाला हूं। हम लोग बस्तर में कभी मेडिकल कॉलेज की कल्पना किया करते थे। जब 2006 मे मेडिकल कॉलेज की स्थापना हुई तो हम लोगों की आंख में आंसू आ गये कि बस्तर में मेडिकल कॉलेज होगा, लेकिन मेडिकल कॉलेज बना। आपके यहां पर कांकेर मे मेडिकल कॉलेज बना। अभी हमारे दंतेवाड़ा जिले में मेडिकल कॉलेज बन रहा है। कल्पना करिये कि पहले किस तरीके से सरकार उन क्षेत्रों को उपेक्षित करके रखती थी। आदिवासी और जनजाति के नाम से हमको केवल और केवल उपयोग की वस्तु माना जाता था। ये हम लोगों ने देखा है और उसकी पीड़ा को भी हम लोगों ने सहा है। आज हमारा छत्तीसगढ़ विकास की उस गति को प्राप्त कर रहा है। ये विधान सभा हम सबका मंदिर है। इस विधान सभा के माध्यम से ऐसे हमारे अनेकों नियम, कानून, प्रस्ताव पारित होते हैं जो हमारे छत्तीसगढ़ के निर्माण के लिये बहुत कारगर सिद्ध होते हैं। विधान सभा के संदर्भ में बहुत सारे विषय हमारे माननीय सदस्यों ने कहा है। वेल में जाने पर जिस तरीके से स्वस्फूर्त निलंबन होना, ये भी देश के नहीं बल्कि दुनिया के देशों में जहां पर संविधान, लोकतंत्र है, उसके लिये हमारा ये छत्तीसगढ़ एक अनुपम उदाहरण है, जहां पर इस तरीके से व्यवस्था बनाई गई है। अनेकों ऐसे कानून बनाये गये हैं जिसके माध्यम से हम इस परंपरा का निर्वहन करते आ रहे हैं। ये इस बात को साबित करता है। मैं पहले ही बोला हूं कि हमारे मतभेद हो सकते हैं, मनभेद नहीं हैं। हमारे यहां इस विधान सभा में हमने उस दौर को भी देखा है जब क्लोज डोर मीटिंग होती थी। नक्सलवाद की पीड़ा को लेकर के आपने भी उस प्रताड़ना को झेला है, हमने भी झेला है। लेकिन हम चाहेंगे कि आने वाले समय में जब हम नये विधान सभा में जायें तो नक्सलवाद हमारे इतिहास के पन्नों में हो, भविष्य के पन्ने में न हो। ये हम संकल्प लेकर के जा रहे हैं। ये सरकार का उद्देश्य है। हमारे माननीय मुख्यमंत्री विष्णुदेय साय जी ने लगातार उन क्षेत्रो में नक्सलवाद पर कील ठोंकी है। आज भी नक्सली हिडमा और उसकी पत्नी राजे और अन्य नक्सली मारे जाने की भी घटना सामने आई है। अनेकों ऐसे उदाहरण सामने आ रहे हैं जब लगातार हमारे जवानों का हौसला बुलंद हो रहा है। नहीं तो, हम लोग तो बचपन से देखते आ रहे थे कि

नक्सलवाद कब खत्म होगा, 50 सालों से हमारे देश में लगभग यहां पर छत्तीसगढ़ में तो हम लोगों ने नक्सलवाद को झेला है और उससे मुक्ति दिलाने का काम हमारे माननीय विष्णुदेव साय जी लगातार कर रहे हैं और सभी का सहयोग है, सभी का योगदान है।

समय :
7.00 बजे

निश्चित तौर पर इस विधानसभा में हम सभी का यह अंतिम सत्र होगा लेकिन इस सत्र के बाद जो नया सत्र होगा, शीतकालीन सत्र वह हमारी नयी विधानसभा में होगा। लेकिन जो भावना, हमारा जो प्रेम इस विधानसभा से जुड़ा हुआ है वह छूट भी नहीं सकता है क्योंकि हमने इस विधानसभा में ऐसी अनेकों चीजों को शीर्ष नेतृत्व के माध्यम से गढ़ने का काम किया है, जो छत्तीसगढ़ के भविष्य के लिये, जो छत्तीसगढ़ की आने वाली पीढ़ी को याद रहेगी, ऐसा मेरा मानना है और हमारा यह सौभाग्य है कि आज यहां पर इस विधानसभा के इस रजत जयंती के अवसर पर हम उपस्थित हैं और जब हम नये सदन में जायेंगे तब हमारे माननीय मुख्यमंत्री जी ने विकसित भारत की तर्ज पर विकसित छत्तीसगढ़ का जो संकल्प लिया है, उस संकल्प को पूरा करने का जो कार्य है वह नयी विधानसभा के माध्यम से पूरा होगा । ऐसी भावना के साथ मैं पुन: आज इस अवसर हमारे सारे जितने भी पत्रकारबंधु हैं उन सबका सहयोग हम सभी को प्राप्त होता रहा है । हमारे पूर्व के जो विधानसभा के साथीगण हैं, ऐसे बड़े हस्ताक्षर जिन्होंने हमारे छत्तीसगढ़ के लिये बहुत कुछ किया और छत्तीसगढ़ के भविष्य के लिये जिन्होंने अपनी कल्पना रखी थी, उन सभी को मैं नमन करते हुए, जिन्होंने अब तक योगदान दिया और आने वाले समय में हम छत्तीसगढ़ को और बेहतर बनायेंगे । माननीय सभापति महोदय, इन्हीं बातों के साथ आपने मुझे बोलने का अवसर दिया, बहुत-बहुत धन्यवाद । (मेजों की थपथपाहट)

सभापति महोदय :- नेता प्रतिपक्ष, डॉ. चरणदास महंत जी ।

नेता प्रतिपक्ष (डॉ. चरणदास महंत) :- माननीय सभापति महोदय, यदि और कोई बोलना चाहें तो मैं अपने समय में कटौती करते हुए अपनी ओर से 5-10 मिनट का समय दे सकता हूं ।

सभापति महोदय :- नहीं, अभी फिलहाल ।

डॉ. चरणदास महंत :- कोई है तो नहीं न ?

सभापति महोदय :- नहीं है, आप बोलिए ।

डॉ. चरणदास महंत :- माननीय सभापति महोदय, आज हम यहां माननीय अध्यक्ष जी के नेतृत्व को बधाई देने के लिये जमा हुए हैं । छत्तीसगढ़ की विधानसभा, हमारे आदरणीय डॉ. साहब, हमारे अध्यक्ष महोदय के नेतृत्व में रजत जयंती मना रही है और आज का यह अवसर, मैं इसे सत्र समापन का अवसर नहीं मानता, न ही इस भवन से दूसरे भवन में जाने का या स्थानांतरित होने का अवसर नहीं मानता । मैं इसे मानता हूं कि यह इतिहास के एक गौरवशाली अध्याय की विदाई और लोकसभा के एक

नये युग के भव्य शुभारंभ का संगम है और ऐसे में हमारे जितने भी साथियों ने यहां अपने विचार रखे हैं । अपने पूरे संसदीय जीवन के सपनों को या इच्छाओं को यहां व्यक्त करने की जो बात कही है । मैं उन सभी साथियों का बहुत-बहुत स्वागत करता हूं । आज हम सब लोग छत्तीसगढ़ की विधानसभा के 25 वर्ष पूरे होने पर इस संसदीय यात्रा के रजत जयंती के अवसर पर यहां माननीय अध्यक्ष जी को, माननीय मुख्यमंत्री जी को और सभी साथियों को, मैं बहुत-बहुत बधाई देना चाहता हूं और उनसे निवेदन करना चाहता हूं कि जिस भावना से उन्होंने अपने संसदीय जीवन की शुरूआत की, जिस भावना से उन्होंने अपने क्षेत्र के विकास, क्षेत्र की उन्नति और क्षेत्र को लगातार आगे बढ़ाने की बात यहां रखी और अब तक की यात्रा में उन्होंने क्या देखा, क्या भोगा, क्या पाया, इन सब बातों का जिक्र किया । उसके लिये उन सबको मैं बहुत-बहुत धन्यवाद देता हूं । विदाई सत्र ही मान लेते हैं। मगर इस सदन का एक गहरा, एक अमिट छाप लेकर हम लोग अपने नये भवन में प्रवेश करने जा रहे हैं। मैं इसे सिर्फ ईट और सीमेंट से बना हुआ भवन नहीं मानता, बल्कि इसे मैं मंदिर मानता हूं, वह मंदिर जिसे आप लोकतंत्र का मंदिर भी कह सकते हैं। वह मंदिर, जहां हम अपनी आशाओं, अपनी आकांक्षाओं को लेकर यहां आते थे और यही कारण है कि हमारी सुखद स्मृतियां इस मंदिर से इस भवन से जुड़ी हुई हैं, इसलिए इसे छोड़ने में थोड़ा गम तो हो रहा है, दुख भी हो रहा है और इसे हम लोग आने वाले दिनों में ठीक करेंगे, ऐसा मैं मानता हूं।

समय :
7.06 बजे **(अध्यक्ष महोदय (डॉ. रमन सिंह) पीठासीन हुए)**

सभापति महोदय, जैसा कि सब ने कहा कि हमें एक नया भवन मिल गया है। उस भवन का उद्घाटन देश के प्रधानमंत्री माननीय नरेन्द्र मोदी जी ने हमारे अध्यक्ष महोदय की उपस्थिति में हमारे मुख्यमंत्री जी के सहयोग से, हम सब के उस सपने को पूरा किया और माननीय अध्यक्ष जी ने जितनी मेहनत उस नये भवन को बनाने में, पूर्ण करने में लगाया, उसके लिए मैं उनको धन्यवाद देता हूं और मैं यह भी कहना चाहता हूं कि हालांकि वह हमारे कार्यकाल में शुरू हुआ था, आपके कार्यकाल में बना, बहुत अच्छी बात है। इसलिए उसकी आधारशिला जहां रखी गयी, रखते समय हम लोगों ने कोरोना के बावजूद भी यह दु:साहस किया था कि जल्द से जल्द बन जाये, मगर 2 वर्ष के कोरोनाकाल के बाद भी कम समय में आपने उसे बनाने का जो दृढ़ संकल्प लिया था, उसके लिए मैं आपको धन्यवाद देना चाहता हूं। आदरणीय अध्यक्ष महोदय, सबने अपनी यात्रा की शुरूआत की बात कही है। मेरी यात्रा यहां से नहीं, बल्कि वर्ष 1980 में मिंटो हॉल से हुई है। उसके बाद हम लोग नये भवन में गये। आप भी वहां पहुंचे और जब हम लोग छत्तीसगढ़ में आये तो जशपुर हॉल में इसकी शुरूआत हुई। इसके पहले इस भवन को हमने राजीव गांधी जल मिशन के नाम से बनाया था, शुरू करने जा रहे थे और उस भवन में आपने

स्थापित करके ये 25 साल इस भवन को दिये हैं। मैं कुछ बताना चाहता हूं। अभी साथ ही साथ केवल ऐसे साथी हैं, जो दोनों भवन जशपुर भवन से इस सदन तक साथ-साथ चले हैं, उनमें से एक साथी को छोड़कर सब यहां उपस्थित हैं। श्री रामविचार नेताम जी ने अपने लगभग 45 मिनट के भाषण में छत्तीसगढ़ कहां से कहां पहुंचा है, इस बात का जिक्र किया। श्री धर्मजीत भाई ने यहां किस तरह की कठिनाइयों के बीच, समझौता के बीच, आशाओं के बीच क्या-क्या उन्होंने अपने जीवन को कैसे बिताया है, इसका जिक्र किया। अमर अग्रवाल साहब शायद नहीं बोल पाये हैं। शायद नहीं थे। श्री धरमलाल कौशिक जैसे कि उनकी आदत है, लगभग 40-45 मिनट बोलते ही हैं, वे हमारे अध्यक्ष भी रहे हैं, हमारे नेता प्रतिपक्ष भी रहे हैं। श्री अजय चन्द्राकर जी, जैसा कि उनका हमेशा का आचरण रहा है, पूरी बात की शुरूआत ऐसे समय से की है, जिसकी कल्पना हम लोग नहीं कर सकते थे। भूपेश भाई ने अपना जो भाषण दिया, आप लोगों को उनकी कुछ बातें अच्छी लगी, कुछ बुरी लगी, उनका भी मैं धन्यवाद करता हूं। आज मैं श्री कवासी लखमा जी को याद करता हूं, जो आज जेल में हैं और आज यहां हमारे बीच में नहीं आ सके। इस पर मैं दु:ख व्यक्त करूं या क्या करूं, इसको आप सब समझ सकते हैं। मैं राज्य के गठन से शुरू करूं तो इन 25 वर्षों में 8 वर्ष तो कांग्रेस का शासनकाल था। 17 वर्ष तक आपका शासनकाल था। मगर एक राजनीतिक द्वंद के बावजूद भी इस सदन में कभी भी असाधारण राजनीतिक स्थिरता नहीं आई। जो मुख्यमंत्री थे, उन्होंने अपना पूरा कार्यकाल पूरा किया और यहां तक कि जो अध्यक्ष थे, उन्होंने भी अपने पूरे कार्यकाल में यहां कार्य किया। यह सौभाग्य मुझे भी मिला था। इस ऐतिहासिक कुर्सी में जहां पर आप बैठे हैं, इस पर मुझे भी बैठने का सौभाग्य मिला था। इसे मैं परमात्मा की कृपा मानता हूं। साथियों ने पूरी बात कह दी है, इसलिए मैं ज्यादा लंबा नहीं खींचना चाहता हूं। मेरे पास कुछ जानकारी है, उसके हिसाब से 25 वर्षों में यहां पर 77 सत्र आहूत किये गये। इनमें से अब तक 770 बैठकें हो चुकी हैं, जिसकी जानकारी आप सबके पास हो सकती है। आज यह संख्या 771 हो जाएगी। कुछ अपवाद को छोड़कर आपने व साथियों ने जिस तरह से यहां की परंपरा को, यहां के आदर्श को बनाए रखने का हम सबको अवसर दिया, उसके लिए मैं बहुत-बहुत धन्यवाद देता हूं। यह हमारे छत्तीसगढ़ की पहचान है, जो देश की पहचान बन रही है। यहां की परंपराएं देश में भी जानी जाती हैं। जब मैं सांसद था तो कई बार बैठकों में मैंने जिक्र किया था कि हमारे यहां जो वेल में चला जाता है, वह आप ही आप निलंबित हो जाता है। इसको सुनकर लोग आश्चर्यचकित हो जाते थे, मगर यह सही है। लोक सभा में भी ऐसी बातें हो सके, इसका प्रयास किया जा रहा है। वह इन सब साथियों की मेहनत का फल है। संसदीय प्रक्रियाओं की तरफ माननीय अध्यक्ष महोदय, यहां 9 बार अविश्वास प्रस्ताव प्रस्तुत हुए हैं और सबसे लंबी बहस तो सन् 2011 में 23 घण्टे 19 मिनट तक हुई थी। नतीजा क्या निकला, वह अलग बात है, मगर यहां जिस परंपरा को लेकर, जिस आदर्श को लेकर, जिस लोकतंत्र की भावना को लेकर हम लोग चर्चा करते हैं, वह उल्लेखनीय है। आपने यहां पर बहुत सारे विधेयक प्रस्तुत किये और

बहुत सारी बातें हुईं। आपने 2 विशेष सत्र आहूत किया। एक तो जी.एस.टी. के संबंध में 122वां संविधान संशोधन का और दूसरा सत्र हमने 2 अक्टूबर, 2019 को दो दिवसीय बुलाया था। जो पूरी तरीके से गांधी जी को समर्पित था और उस 150वीं जयंती के अवसर पर हमने कोशिश की कि गांधी जी जिन विचारों के साथ यहां भारत के गांवों को विकास के रास्ते पर लाना चाहते थे या जिस तरह से यहां के गरीबों को उन्होंने अपना आशीर्वाद प्रदान करते हुए आगे बढ़ाने की बात सोची थी, उसी को हम भी अंगीकार करके आगे बढ़े। उस दिशा में हम लोगों ने बहुत प्रयास भी किया और हम आगे भी बढ़े। कुछ कलंक इस विधान सभा को लगा। एक तो झीरम घाटी कांड हुआ, जिसमें कांग्रेस के 2 विधायक, पूर्व मंत्री और 1 केन्द्रीय मंत्री भी शहीद हुए। यह हमारे लिए एक कलंक का टीका है।

श्री अजय चंद्राकर :- माननीय नेता प्रतिपक्ष जी, एक सेकण्ड। यह झीरम घाटी कांड हुआ, उसमें विधान सभा को कैसे कलंक लगा? विधान सभा तो बिल्कुल दूसरी चीज है, वह तो लॉ एंड आर्डर का इश्यू हो सकता है और कुछ दूसरी इश्यू हो सकते हैं। विधान सभा को कलंक लगा इसको थोड़ा क्लियर करते तो अच्छा रहता। विधान सभा को क्यों कलंक लगेगा, क्यों कलंकित होगा ?

डॉ. चरणदास महंत :- अध्यक्ष महोदय, विधान सभा के कार्यकाल के 25 साल के इस कार्यकाल के दौरान ही झीरम घाटी की घटना हुई और इसलिए मैं इसको कलंक मानता हूं, क्योंकि देश में ऐसी घटनाएं नहीं हुई हैं, आप कह सकते हैं कि एक बार लोकसभा में कलंक लग चुका है, जब पाकिस्तान के लोग आकर हम पर हमला किए, गोलिया चलीं, सौभाग्य है कि उसमें किसी का कोई नुकसान नहीं हुआ, मगर यहां विधान सभा भले न चल रहा हो, मगर इस 25 साल के दौरान यदि किसी कलंक का कोई एकाध टीका आप खोजेंगे तो वह कलंक के टीके के रूप में आपके सामने आएगा। दूसरा, धर्मजीत भाई चले गए, उन्होंने कहा था कि सर्वसम्मति से स्वीकृत अशासकीय संकल्प हसदेव अरण्य कोल फिल्ड से कोयला उत्खनन नहीं किया जाए, ये उन्होंने प्रस्तुत किया था, अगर विधान सभा से पास कोई संकल्प होता है, उसकी अवमानना करना क्या लोकतंत्र की भाषा में उसको क्या कहेंगे ?

श्री अजय चंद्राकर :- यदि संकल्प सर्व सम्मति से पारित होता है तो जरूरी नहीं है कि कौन सी स्थिति में जाएगी, उसमें अवमानना दर्ज नहीं होती। अवमानना तो बिल्कुल दूसरी चीज है। आज उल्लेख हुआ था, जब विधान सभा की अवमानना हुई तो यहां पर कटघरा लगा था, राजेन्द्र प्रसाद शुक्ल जी लगवाए थे, ये अर्धन्यायिक संस्था है, अवमानना पर सजा भी दे सकती है, उसका एक प्रदर्शन प्रथम विधान सभा में छत्तीसगढ़ में हुआ था और वह बड़ी घटनाक्रम है, उस दिन राजेन्द्र प्रसाद शुक्ल जी और विधान के सचिव के साथ क्या व्यवहार हुआ था, उसको भूल जाना ज्यादा अच्छा है।

डॉ. चरणदास महंत :- चलिए लोकतंत्र का अपमान तो कह सकते हैं ? जो इस सरकार के द्वारा किया गया। कुछ बातें बहुत अच्छी हुई हैं तो कुछ बातें थोड़ी-थोड़ी बुरी तो हुई हैं। आपको मान लेने में क्या दिक्कत है ? आपका 45, 47 मिनट का भाषण सुने हैं।

अध्यक्ष महोदय :- आपका पूरा मान लिए, आप थोड़ा मान लीजिए। ये बोल रहे हैं। (हंसी) चलिए आप कन्टीन्यू करिए।

डॉ. चरणदास महंत :- आपने 47 मिनट में क्या-क्या कहा, सब सुनते रहे, कुछ नहीं बोला।

अध्यक्ष महोदय :- ठीक है बढ़िया, आप आगे बढ़िए।

डॉ. चरणदास महंत :- आदरणीय अध्यक्ष महोदय, हम लोगों ने आदरणीय पंडित राजेन्द्र प्रसाद शुक्ल जी को याद किया, प्रेम प्रकाश पांडे जी को याद किया, धरमलाल कौशिक जी को याद किया, माननीय गौरीशंकर अग्रवाल जी को याद किया और डॉ. चरणदास महंत जी को किसी-किसी ने याद किया, सुन रहे हो ?

(माननीय सदस्य श्री अजय चंद्राकर जी की ओर इशारा करते हुए)

अध्यक्ष महोदय :- अजय जी, थोड़ा भाषण सुनिए।

श्री धरमलाल कौशिक :- एक बार चरणदास महंत जी को रिपीट करिए न।

डॉ. चरणदास महंत :- हम लोगों ने माननीय गौरीशंकर अग्रवाल जी को भी याद किया और डॉ. चरणदास महंत जी को भी कुछ मित्रों ने याद किया। इसमें कुछ बुराई तो नहीं है न ? इन सबके योगदान इस सदन को भरपूर मिला है। आप सबने उस समय मेरा व्यवहार देखा होगा तो मैंने लोकतंत्र की बड़ी इज्जत की, मैंने कभी किसी को अलग नहीं समझा और यदि कहूं तो वही वाली बात हो जाएगी। मैं कबीरा हूं इसलिए कबीर साहब को ज्यादा याद करता हूं :-

कबीरा खड़ा बाजार में, मांगे सबकी खैर,
ना काहू से दोस्ती, ना काहू से बैर।

मैंने यहां जिस प्रकार से सदस्यों के साथ सदन में अपना व्यवहार प्रस्तुत किया, वह लोकतंत्र का मूल आधार है, जिसको मैंने प्रदर्शित किया।

श्री अजय चन्द्राकर :- मैं कुछ बोलूं, यदि आप अनुमति देंगे तो मैं बोलूं ?

डॉ. चरण दास महंत :- बोलिये न, आपको कौन रोक सकता है।

श्री अजय चन्द्राकर :- आपकी तटस्थता इतनी उच्च क्वालिटी की थी कि हम लोगों ने आपके खिलाफ एक बार अविश्वास प्रस्ताव का नोटिस दिया था, आपके खिलाफ अविश्वास प्रस्ताव का नोटिस दिया था। फिर आपसे चर्चा के बाद हम लोगों ने वापस ले लिया।

डॉ. चरण दास महंत :- इससे क्या फर्क पड़ता है ?

श्री अजय चन्द्राकर :- लेकिन आप हमको वहां तक तो भेज ही दिए थे कि हम आपके खिलाफ नोटिस दें।

डॉ. चरण दास महंत :- आपने किस दुर्भावनावश दिया था, वह पता नहीं। (हंसी) ठीक है, चलिये। अध्यक्ष जी, आज हमारे साथियों ने भरपूर चर्चा की है और इन लोगों ने मेरे लिए कुछ नहीं बचाया है।

हम सबने, हमारे साथियों ने भी इस बात को स्वीकार किया, विपक्ष के सभी साथियों ने आदरणीय अटल बिहारी बाजपेयी जी का नाम लिया। सबने कहा कि छत्तीसगढ़ उनके योगदान से मिला है, उनके आशीर्वाद से मिला है। मैं भी इसे स्वीकार करता हूं। मगर उन्होंने एक बात कही थी, आप उसे स्वीकार करते हैं या नहीं करते हैं, मैं तो नहीं जानता। हमारी बहन जी ने लोकतन्त्र के बारे में हमको बताया, उसको जरूर स्वीकार करना चाहिए। मैंने तो प्लेटो की छोटी सी किताब, बड़े वाले में नहीं जो आप पढ़ते हैं, वह पढ़ी। The Republic, में लिखा है कि न्याय को केवल एक कानूनी व्यवस्था नहीं, बल्कि आत्मा की व्यवस्था माननी चाहिए। एक न्याय प्रिय राज्य वह है, जो भव्य ईमारतों के निर्माण से पहले मानवीय गरिमा के सम्मान की नींव पर खड़ा हो। शासक का कर्तव्य स्वयं को पूजने के बजाय समाज की सेवा करना है। जो हमारे बड़े-बड़े विचारक हैं, दार्शनिक हैं, उनकी बातें पढ़ते-लिखते रहते हैं। इसलिए हम लोग हमेशा, कम से कम विधानसभा में लोकतन्त्र पक्ष और प्रतिपक्ष यह आशा रखते हैं कि बिना जीवंत प्रतिपक्ष के लोकतन्त्र की कल्पना भी नहीं की जा सकती है। इसे अपनी गलतियों को सुधारने के लिए आप हमारी तरफ दर्पण की तरह रखे हैं। हम आपके लिए सिर्फ दर्पण हैं। हमें देखेंगे, हो सकता है कि आपसे कोई चूंक हो रही हों, हो सकता है कि आप कुछ ज्यादा नहीं कर पा रहे हों, आपको उस पर ध्यान देना चाहिए, यह आज की आवश्यकता है। हमारे और आपके परमप्रिय नेता भारत रत्न प्रधानमंत्री अटल बिहारी जी ने कहा था कि सत्ता, सरकारें आती-जाती रहती हैं, लोकतन्त्र केवल बहुमत का खेल नहीं है। किन्हीं भी परिस्थितियों में लोकतन्त्र जीवित रहना चाहिए। तो जब हम सब उनको इतनी गंभीरता से बात करते हैं, उनकी बातों को, उनके भाषणों को ध्यान पढ़ते हैं तो इस तरह की बातों को दिल में रखने की जगह भी आपके पास होना चाहिए, ऐसा मैं आपसे निवेदन करता हूं।

माननीय अध्यक्ष महोदय, सीधे-सीधे कुछ ना कहते हुए कहना चाहता हूं कि सभी साथियों ने अपना-अपना प्रस्ताव दे दिया है। मैं एक छोटा सा प्रस्ताव रखना चाहता हूं, वह छोटा सा है। वह वोटिंग के लिए नहीं है। जब हम लोग विधायक हैं, जब तक यहां विधान सभा चलती है, हम यहां आते हैं। लेकिन जब विधान सभा नहीं चलती, उस बीच जनता के कई ऐसे सवाल होते हैं, जिसको विधान सभा तक पहुंचना चाहिए, लेकिन वह नहीं पहुंच पाता है। तो क्या ऐसी व्यवस्था, आज की टेक्नालॉजी में हो सकती है ? कुछ आम आदमी विधान सभा से प्रश्न के रूप में जो जानना चाहता है, वह अपना प्रश्न सीधे विधान सभा को भेजे। यहां कुछ समितियां बनाई जाये, जो उनके प्रश्नों के उत्तर को खोजे और उसको एक जन सत्र के रूप में महीने में नहीं तो साल में एक बार, दो बार लेकर उन प्रश्नों का सीधा जवाब दें। मैं यह इसलिए कह रहा हूं क्योंकि ऐसा करने से जनता का विधान सभा से लगातार संवाद बना रहेगा और हम यहां जिसके लिए काम करते हैं, वह काम हम लोग नहीं कर पाते हैं तो उन लोगों को काम करने का अवसर मिलेगा। मैं दूसरा यह प्रस्ताव देना चाहता हूं कि इस मंदिर से हमारा बहुत लगाव हो चुका है, हमारा इससे गहरा संबंध है। इसलिए आप जब भी इस भवन को किसी को देने की

सोचे तो मैं समझता हूं कि इसको एक प्रशिक्षण संस्थान के रूप में तैयार कर लिया जाये। इसे विधायकों के प्रशिक्षण संस्थान या विधायकों के माध्यम से किसी बड़े संस्थान को दे दिया जाये या इसे एक संग्रहालय के रूप में बनाया दिया जाये। जैसा कि पुरानी लोक सभा को संसदीय संग्रहालय बनाया गया है। उसी तरीके से इसका स्वरूप न बिगाड़ते हुए आप इसे संग्रहालय के रूप में दे दें तो निश्चित रूप से मैं यह मानता हूं कि यह छत्तीसगढ़ का नाम आगे बढ़ाएगा। अध्यक्ष महोदय, हमारे सभी साथियों ने अपनी-अपनी बातें कही है, मैं उन सबके साथ अपनी बात को जोड़ता हूं और किसी का विरोध न करते हुए, मैं उन सभी पूर्व सदस्यों को जो 25 साल की यात्रा में साथ रहे, उन्होंने बहुत योगदान दिया है, मैं उन सभी का धन्यवाद करता हूं। आज के जो अधिकारी-कर्मचारी हैं, जिन्होंने 25 साल तक हमें इस भवन में कार्य करने में सुगमता प्रदान की है, उनको मैं धन्यवाद देना चाहता हूं। यहां श्री दिनेश शर्मा जी के जो साथी काम कर रहे हैं, जो हमारी हर बातों को सुनकर हमारी सुरक्षा, रक्षा की कार्रवाई करते हैं, मैं उन सबको को धन्यवाद देता हूं। लोकतंत्र का जो चौथा स्तंभ है, जो यहां ऊपर बैठे हुए हैं, हमारी जो संख्या है, वह भी उसी तरीके से धीरे-धीरे घर जा रहे हैं, मैं उनको भी बहुत-बहुत धन्यवाद करता हूं कि उन्होंने हमको इस विधान सभा के अंदर और बाहर की बातों को सुनकर हमारे क्षेत्रों में प्रचार-प्रसार करते रहते हैं। मैं उन सुरक्षाबालों को भी बहुत-बहुत धन्यवाद देना चाहता हूं, जो हमारी सुरक्षा करते हैं और रक्षा भी करते हैं। हालांकि, यहां अभी तक उनकी जरूरत नहीं पड़ी है। आने वाले दिनों में जब हम नये भवन में जायेंगे तो हमारा भवन इससे भी बड़ा होगा, वहां सुरक्षा की और ज्यादा व्यवस्था होगी, वे उसमें भी सफल हो, यह मेरी शुभकामनाएं हैं। आज विधान सभा की विदाई के क्षण में मैं सिर्फ इतना ही चाहता हूं कि उन्नत और मर्यादित विधान सभा के रूप में हम सब मिलकर नये भवन में, नये भवन को, हमारे नये घर को स्थापित कर सकें, यह मेरी हार्दिक इच्छा है। आप सबने बड़े ध्यान से आज के इस चर्चा में भाग लेकर सबको अपनी-अपनी पुरानी बातें याद कराई, उसके लिए आप सबको धन्यवाद। अध्यक्ष महोदय, आपको विशेष रूप से बहुत-बहुत धन्यवाद कि आप इस रजत जयंती वर्ष में यहां अध्यक्ष पद पर विराजे हुए हैं और हम सबको आपका आशीर्वाद मिला। धन्यवाद। जय हिंद। जय छत्तीसगढ़। (मेजों की थपथपाहट)

अध्यक्ष महोदय :- धन्यवाद।

श्री किरण देव (जगदलपुर) :- माननीय अध्यक्ष महोदय, मैं आपकी अनुमति से दो लाईन में अपना विषय रखना चाहता हूं।

अध्यक्ष महोदय :- सामान्यत: नेता जी के बाद बोलते नहीं हैं, लेकिन आप संक्षिप्त में बोल दीजिए।

श्री किरण देव :- जी। अध्यक्ष महोदय, मैंने माननीय मुख्यमंत्री जी से भी अनुमति ली है। धन्यवाद।

अध्यक्ष महोदय :- ठीक है।

श्री किरण देव :- आदरणीय अध्यक्ष महोदय, आज सभी वरिष्ठ सदस्यों ने, जो इस विधान सभा से लंबे समय तक जनप्रतिनिधि, विधायक के नाते, मंत्री के नाते जुड़े रहे, उन्होंने अपना-अपना विषय एवं संस्मरण रखा है। इस सदन में 51 सदस्य पहली बार चुनकर आए हैं और निश्चित रूप से इन दो वर्षों में आप सबके बात करने की पद्धति, विषय रखने की पद्धति, आदरणीय अध्यक्ष जी का समय-समय पर संज्ञान लेना और इस सदन को व्यवस्थित एवं सुचारू रूप से चालान, इस सभी चीजों को हम सबने अनुभव के रूप में लिया है। यह हम सभी के लिए अद्भुत है। मिन्टो हॉल से जो चालू होकर ओपनिंग बैट्समेन अजय चन्द्राकर जी ने जो विषय पूरा विस्तार से लिया, सभी वरिष्ठों ने जो अपनी बात रखी है, वह हम सभी के लिये प्रेरणादायी है। इस विधान सभा भवन का निश्चित रूप से आज अंतिम दिन है, आपने इस पर विशेष सत्र बुलाया है, उसके लिये आपका बहुत-बहुत धन्यवाद और अभिनंदन करता हूँ । मैं सिर्फ एक निवेदन करना चाहूँगा कि आदरणीय मुख्यमंत्री जी की इसमें बात आयेंगी, यहां अपने मन की बात भी रखना चाहता हूँ कि आज का दिन जो है, वह यादगार हो जाये, लोग इसको स्मरण करें कि जब इस विधान सभा पर अंतिम दिवस या बिदाई का समय है और नये विधान सभा भवन में हम जायें तो उसके पहले आदरणीय मुख्यमंत्री जी से आग्रह है कि छत्तीसगढ़वासियों के लिये कुछ ऐसा उपहार दें, जिससे कि आज का दिन हमेंशा के लिये यादगार हो जाये । सभी माननीय सदस्यों ने अपने स्मरण सुनायें हैं, आज का विषय अविस्मरणीय हो जाये, उसके लिये उपयोगी हो और इस बात को हमेंशा याद रखें कि विधान सभा के अंतिम सत्र पर यह उपहार मिला था । बहुत-बहुत धन्यवाद ।

अध्यक्ष महोदय :- माननीय मुख्यमंत्री विष्णु देव साय जी । (मेजों की थपथपाहट)

मुख्यमंत्री (श्री विष्णु देव साय) :-माननीय अध्यक्ष महोदय, सबसे पहले तो आपका बहुत-बहुत धन्यवाद । आपका आभारी हूँ कि आपने लोकतंत्र के इस मंदिर विधान सभा भवन में जो 25 वर्षों तक छत्तीसगढ़वासियों के आशा और उम्मीद का केन्द्र और प्रतीक रहा है, उसमें अंतिम दिन एक बैठक रखकर हमारे माननीय सदस्यों को अपने संस्मरण और अनुभव पर चर्चा करने का अवसर दिया है, इसके लिये पूरे सदन की ओर से बहुत-बहुत धन्यवाद देता हूँ । (मेजों की थपथपाहट) आज इस सदन की शुरूआत विद्वान सदस्य श्री अजय चन्द्राकर जी ने किया है और इसमें हमारे माननीय नेता प्रतिपक्ष डॉ.चरणदास महंत जी, हमारे मंत्रीगण, हमारे पक्ष-विपक्ष के बहुत से साथियों ने हिस्सा लिया, अपने संस्मरण सुनाये हैं । हमारे बहुत से माननीय सदस्य ऐसे हैं, जो कई-कई बार इस सदन के सदस्य रह चुके हैं तो उनको भी हम इस अवसर पर धन्यवाद देना चाहेंगे । आगे हम कुछ बोलें, उसके पहले छत्तीसगढ़ के निर्माता श्रद्धेय और इस देश के पूर्व प्रधानमंत्री भारत रत्न श्री अटल बिहारी वाजपेयी जी को नमन करना चाहेंगे, जिन्होंने 1 नवम्बर 200 को छत्तीसगढ़ राज्य का निर्माण करके दिया । हालांकि उस समय हम मध्यप्रदेश विधान सभा के सदस्य नहीं थे, लेकिन इस देश के पार्लियामेंट में थे और जो

छत्तीसगढ़ राज्य निर्माण का विधेयक लोक सभा में पास हुआ उसके साक्षी रहे हैं तथा राज्य सभा में जब यह पास हुआ तो उसके दर्शक दीर्घा में भी इस ऐतिहासिक क्षण के गवाह बने हैं। मैं इस अवसर पर श्रद्धेय अटल बिहारी वाजपेयी जी को बहुत-बहुत नमन करता हूँ और धन्यवाद देता हूँ । अध्यक्ष महोदय, आप भी उस समय लोक सभा में थे और केन्द्र में मंत्री थे । आदरणीय रमेश बैस जी भी लोक सभा में थे और वह भी केन्द्र में मंत्री थे । राज्य सभा में हमारे बहुत ही वरिष्ठ सदस्य आदरणीय लखीराम अग्रवाल जी और स्व. श्री दिलीप सिंह जूदेव जी, दोनों राज्यसभा के सदस्य थे और राज्यसभा में जो चर्चा हुई, उसमें दोनों ने भाग लिया, जिसको हमने दर्शक दीर्घा में बैठकर सुना तो यह सौभाग्य हमको सांसद के रूप में वहां पर मिला । 1 नवम्बर, 2000 के पहले हमारा यह क्षेत्र बड़ा उपेक्षित था, मध्यप्रदेश का यह आखरी छोर था । यहां पर सरकार बहुत कम पहुंचती थी और हमारे सारे साथियों ने उसका जिक्र किया है, लेकिन मुझे बोलने के लिए कोई दूसरा विषय नहीं है तो उन्हीं बातों को दोहराना पड़ेगा । एक तो उस समय सबसे बड़ा अभिशाप था-भुखमरी का । लोग भूख से मरते थे, विशेषकर सरगुजा और बस्तर जैसे क्षेत्र में कोदो, कुटकी, महुआ खाना पड़ता था । कभी-कभी वह भी नसीब नहीं होता था तो 24 घंटे में एक टाईम ही खाना खाते थे । मुझे याद है, जब हम 1993 से 98 तक मध्यप्रदेश विधान सभा के सदस्य थे तो हमारे ही जिला जशपुर में विशेष पिछड़ी जनजाति के लोग रहते हैं, कोरवा, बिरहोर रहते हैं तो वहां पर कोरवा जनजाति के 4 लोग भूख से मर गए थे और उस समय विधान सभा की जांच कमेटी बनी थी और उस कमेटी ने उसकी जांच की थी तो वह सही पाया गया था तो यह स्थिति है । एक अभिशाप था। 1 नवम्बर, 2000 में श्रद्धेय अटल बिहारी वाजपेयी जी ने छत्तीसगढ़ राज्य का निर्माण किया तो उनको मालूम था कि बहुमत के आधार पर यहां पर कांग्रेस की सरकार बनेगी, लेकिन 2003 के पहले विधान सभा चुनाव में यहां की जनता ने भारतीय जनता पार्टी को चुना और आपके नेतृत्व में, आपने मुख्यमंत्री के रूप में यहां पर शासन का बागडोर सम्हाली, तब से यह भूख को आपने दूर किया । एक फूड सिक्योरिटी कानून यहां पर आपने पास किया, जो आजतक चल रहा है और वह पूरे देश के लिए एक मॉडल बना और आप चाऊर वाले बाबा के नाम से भी विख्यात हुए (मेजों की थपथपाहट) तो वहां से शुरूआत होती है । उस समय कुछ भी नहीं था, न सड़कें थीं, न बिजली था, न पानी था । जब हम अविभाजित मध्यप्रदेश थे और पढ़ते थे तो जिस गांव में हम पढ़ते थे, वहां पर 5वीं का परीक्षा केन्द्र भी नहीं था । 6-7 किलोमीटर दूर हम 5वीं की परीक्षा दिलाने गए थे, लेकिन छत्तीसगढ़ राज्य के निर्माण और उसके बाद आपके मुख्यमंत्री बनने के बाद एक तो भूख को आपने दूर किया, उसके साथ ही साथ आपने चारों ओर चहूंमुखी विकास किया तथा सड़क, बिजली, पानी, सब कुछ यहां पर हुआ । आपने शिक्षा की व्यवस्था की, जो विकास के लिए सबसे आवश्यक होता है । शिक्षा विकास का मूल मंत्र है । इसका महत्व जानते हुए आपने हर एक किलोमीटर में प्राईमरी स्कूल, 2-3 किलोमीटर में मीडिल स्कूल, 4-5 किलोमीटर में हाईस्कूल, हायर सेकेण्डरी स्कूल और हर विकासखण्ड में

आपने कॉलेज की स्थापना की । इतना ही नहीं आपने 15 वर्षों के कार्यकाल में शिक्षण की जितनी संस्थाएं होती हैं चाहे वह आईआईटी हो, आईआईएम हो, ट्रिपल आई टी हो, नीट हो, एम्स जैसी संस्था, लॉ यूनिवर्सिटी, यह सब कुछ आपने यहां पर स्थापित किया । जब छत्तीसगढ़ राज्य का निर्माण हुआ तो यहां पर एक मेडिकल कॉलज हुआ करता था, लेकिन आपके शासनकाल में छत्तीसगढ़ में 14-15 मेडिकल कॉलेज स्थापित हो गया। इन 25 वर्षों में 18-19 से ज्यादा यूनिवर्सिटी हो गईं, यह विकास हुआ । हम छत्तीसगढ़ के निर्माता श्रद्धेय अटल बिहारी वाजपेयी जी धन्यवाद देना चाहेंगे कि उन्होंने छत्तीसगढ़ राज्य का ही निर्माण नहीं किया, बल्कि भारत सरकार में पहली बार आदिमजाति कल्याण मंत्रालय का भी गठन किया । उन्होंने महसूस किया कि इस देश में आज 12 करोड़ से ज्यादा अनुसूचित जनजाति के लोग हैं, उस समय कम रहे होंगे, लेकिन उनको आवश्यकता महसूस हुई कि इनके विकास के लिए अलग से मंत्रालय का गठन होना चाहिए और उन्होंने पहली बार आदिमजाति कल्याण मंत्रालय का गठन किया । एस.सी., एस.टी. कमीशन जो एक था, उसको उन्होंने अलग बनाया, ताकि यहां के जो 32 प्रतिशत जनजातीय जनसंख्या है उनका ठीक से विकास हो तो उन्होंने यह सारा विकास किया। हमको मालूम है कि उन्हीं के समय उन्होंने प्रधानमंत्री ग्राम सड़क योजना इस देश को दिया जिसके कारण आज हमारे छत्तीसगढ़ के भी लाखों गांव बारह मासी डामर रोड से जुड़े हुए हैं, यह श्रद्धेय अटल बिहारी वाजपेयी जी की ही देन है। किसी गांव में यदि बारह मासी रोड हो जाती है तो वहां विकास की सारी संभावनाएं खुल जाती है, विकास की प्रथम कड़ी आवागमन है, इसका काम भी श्रद्धेय अटल बिहारी वाजपेयी जी ने किया। यह हमारा देश किसानों का देश है। हमारा छत्तीसगढ़ भी धान का कटोरा है। आज 80 प्रतिशत लोग यहां खेती पर आधारित है। आप सभी को मालूम होगा कि किसान क्रेडिट कार्ड योजना अटल बिहारी वाजपेयी जी ने शुरू की और उसके पहले हमारे किसान बहुत मुश्किल से खेती करते थे। अगर महाजन से ऋण लेते थे तो उनको साल के अंत में सौ या डेड़हा, बहुत लोग शायद सौ या डेड़हा नहीं समझेंगे लेकिन अगर 100 रूपये ऋण लेते हैं तो साल के अंत में सवा सौ या डेढ़ सौ रूपये वापस करना पड़ता था। किसानों की यह स्थिति थी जिससे किसानों की लागत बढ़ जाती थी। लेकिन हमारे श्रद्धेय अटल बिहारी वाजपेयी जी ने इस देश के किसानों को किसान क्रेडिट कार्ड दिया (मेजों की थपथपाहट)। यह सब सारी व्यवस्थाएं छत्तीसगढ़ राज्य निर्माण के बाद से ही संभव हुआ। अध्यक्ष महोदय, आज 25 वर्षों में 15 साल आपके नेतृत्व में सरकार चली और आज 2 वर्षों से हम लोग यहां सरकार में है। हम यह कह सकते हैं कि हमारे प्रधानमंत्री जी का जो नारा है कि "सबका साथ, सबका विकास, सबका विश्वास और सबका प्रयास", उसी को लेकर और हमारे दीनदयाल उपाध्याय जी का जो अंत्योदय का नारा है कि जो सबसे जरूरतमंद, सबसे गरीब व्यक्ति है, पहले उसका उत्थान करो तो हम लोग सबको लेकर आगे चल रहे हैं। छत्तीसगढ़ राज्य निर्माण से यह सब फायदा हुआ है और हमारी सरकार को 2 साल होने को आ रहा है। पूरे प्रदेश ने देखा है कि मोदी की गारंटी का जो वादा था उसको

हमारी सरकार ने पूरा करने का प्रयास किया है (मेजों की थपथपाहट)। चाहे वह 18 लाख गरीब लोगों के लिए प्रधानमंत्री आवास हो, हमारी सरकार ने उसको एक साथ पास किया है। आज इतने प्रधानमंत्री आवास स्वीकृत हो गये हैं कि मिस्त्रियों का अभाव हो गया है। यह स्थिति है कि सेंटरिंग प्लेट नहीं मिल रहा है। हमने किसानों का वादा भी पूरा किया है। हम दो साल से 21 क्विंटल प्रति एकड़ धान खरीद रहे हैं। 3100 रूपये धान की कीमत भी दे रहे हैं। जैसे ही धान खरीदी बंद होती है तो एक सप्ताह के अंदर उनको अंतर की राशि भी दे रहे हैं। हमने 2 साल का बकाया बोनस भी दिया है। आज हम 70 लाख से ज्यादा माताओं को आर्थिक रूप से सशक्त करने के लिये महतारी वंदन योजना में 1-1 हजार रूपये देने का काम कर रहे हैं। हमारे जनजातीय और गरीब 13 लाख लोग तेंदूपत्ता से जुड़े हुए हैं, जिसको हरा सोना कहा जाता है, वह उनकी आजीविका का बड़ा साधन होता है, उसकी भी कीमत हम लोगों ने बढ़ायी है। हमने चरण पादुका योजना फिर से शुरू की है। माननीय अध्यक्ष महोदय, मैं आपको बताना चाहूंगा कि गरीब गर्मी के दिनों में क्षेत्र में बिना चप्पल जूता के तेंदूपत्ता तोड़ने जाते थे। लोगों के पांव में कांटा खूंटी गड़ जाता था, घाव हो जाता था, गैंग्रीन हो जाता था और पैर भी काटना पड़ता था। यह योजना भी बंद हो गयी थी, जिसको हम लोग सरकार में आने के बाद फिर से शुरू किये हैं (मेजों की थपथपाहट)। हम लोगों ने यहां पर सारे विकास के काम किये हैं। बाकी सारी बातें हमारे पूर्व के सदस्यों ने कहा है। 8 साल तक हमको मध्य प्रदेश विधान सभा में रहने का अवसर मिला और 20 साल लगातार रायगढ़ संसदीय क्षेत्र से सांसद के रूप में भी काम करने का हमको अवसर मिला। लेकिन बराबर एक चिंता रहती थी, चिंता तो क्या एक उत्सुकता रहती थी कि छत्तीसगढ़ विधान सभा में क्या हो रहा है, कैसे कार्यवाही हो रही है। बड़ा अच्छा लगता है जो मध्य प्रदेश की परिपाटी थी, जो संसदीय प्रणाली थी, वह यहां भी कायम है बल्कि उससे भी अच्छा जैसे हमारे पूर्ववक्ताओं ने भी कहा है कि आपने और यहां के जो पूर्व अध्यक्ष रहे उन सब ने यहां ऐसी व्यवस्था कायम की है कि यदि कोई भी वेल में आता है तो वह स्वत: निलंबित हो जाता है। ऐसी सुंदर संसदीय प्रणाली की भी व्यवस्था हुई है, जो पूरे देश के अनुकरणीय है। इस तरह से एक अच्छा इतिहास हमारा यह विधान सभा जो लोकतंत्र का मंदिर है, जो 25 वर्षों तक 3 करोड़ छत्तीसगढ़वासियों की आस्था, उम्मीद और आशा की किरण बनी रही। अब हमारी नयी विधान सभा का भवन बनकर तैयार है। हम लोगों ने रजत जयंती वर्ष में प्रवेश किया है और विधान सभा का भी रजत जयंती वर्ष है। 1 नवम्बर को प्रदेश का स्थापना दिवस था जिसमें छत्तीसगढ़ का सौभाग्य था कि हमारे देश के यशस्वी प्रधानमंत्री आदरणीय नरेन्द्र मोदी जी ने स्वयं आकर अपने करकमलों से हमारी नयी विधान सभा भवन का लोकार्पण किया और उन्होंने राज्योत्सव का भी शुभारम्भ किया। छत्तीसगढ़ के जनजाति समाज का इतिहास भी बहुत समृद्ध रहा है। यहां पर 14-14 विद्रोह हुए। हमारे जनजाति समाज के महापुरूषों ने अंग्रेजों से लड़ाई लड़ी। आज नये म्यूजियम में उसका सचित्र चित्रण है जिसका भी लोकार्पण माननीय प्रधानमंत्री जी ने किया है तो इस तरह से यह छत्तीसगढ़ 25 वर्षों में बहुत तेजी

से विकास किया है। हम लोग इसको विकास की दृष्टि और आगे ले जाना है क्योंकि यह छत्तीसगढ़ एक बहुत समृद्ध प्रदेश है। यहां पर खनिज संपदा, वन संपदा भी भरपूर है। यहां सैकड़ों तरह की वनोपज हैं यहां की भूमि भी उर्वरा शक्ति से भरपूर है । यहां के लोग भी अच्छे हैं और पूरे देश में यहां के लोगों के लिए कहा जाता है कि छत्तीसगढ़िया सबले बढ़िया। तो हमारा यह प्रदेश बहुत समृद्ध प्रदेश हो सकता है। हमारे प्रदेश के विकास में नक्सलवाद एक बहुत बड़ी बाधा थी, उसको भी आज पूरा देश देख रहा है। करीब इन 2 वर्षों में हमारे जवान बहुत मुस्तैदी के साथ नक्सलवाद के खिलाफ में लड़ रहे हैं । उनको लगातार सफलता मिल रही है। नक्सलवाद अंतिम सांसें ले रहा है, उनकी कमर ही टूट गयी है। (मेजों की थपथपाहट) यह जो बस्तर क्षेत्र जो एक तरह से स्वर्ग है जहां पर अनेक जलप्रपात हैं कुटुम्बसर की गुफा है, अबूझमाड़ जैसा लम्बा चौड़ा Dense forest है तो वहां स्वर्ग हो सकता है। वहां पर होमस्टे होता है। वहां का जो धुड़मारास गांव है। आज विश्व पर्यटन संस्थान जो 60 देशों में बेस्ट विलेज का चयन होता है उसमें हमारे छत्तीसगढ़ प्रदेश का धुड़मारास का चयन हुआ है। यह भी हमारे लिए बड़ा सौभाग्य का विषय है। (मेजों की थपथपाहट)

माननीय अध्यक्ष महोदय, हम लोगों ने नई उद्योग नीति भी लायी है। हमारी नई उद्योग नीति बहुत अच्छी बनी है । अभी तक 10-11 महीनों में ही हम लोगों को करीब पौने आठ लाख करोड़ रूपये का निवेश प्रस्ताव मिल चुका है। हमें केवल निवेश प्रस्ताव नहीं मिला है, बल्कि धरातल में काम भी शुरू हो गया है। सेमीकन्डक्टर प्लान्ट का काम शुरू हो गया है। ए.आई. बेस डाटा सेन्टर और भी टेक्सटाईल्स वगैरह के, उसमें हम लोगों ने सबसे ज्यादा रोजगार को ध्यान दिया हुआ है। हमारी जो नई उद्योग नीति है उसमें अगर 1 हजार करोड़ रूपये का निवेश आता है या कोई उद्यमी स्थानीय लोगों को एक हजार से ज्यादा रोजगार देता है तो हम लोगों ने नई उद्योग नीति में उनको विशेष प्रोत्साहन का प्रावधान किया है। तो इस तरह से हमारा यह छत्तीसगढ़ बहुत समृद्ध प्रदेश बन सकता है जो कि सबके सहयोग से होगा। देश के माननीय प्रधानमंत्री जी ने 2047 तक इस देश को विकसित भारत के रूप में खड़े करने का संकल्प लिया है। तो हम लोगों ने भी 2047 विकसित छत्तीसगढ़ का एक विजन डाक्यूमेंट बनाया है और उसके अनुरूप हमारी सरकार काम कर रही है। उसमें सबका सहयोग बहुत जरूरी होगा। यहां बाकी सारी बातें आ गई हैं। हमारे अध्यक्ष जी ने आखिरी में एक चीज का निवेदन किया है कि आज इस लोकतंत्र के मंदिर में इस सत्र की आखिरी बैठक तो नहीं, लेकिन एक दिवसीय बैठक का अंत हो रहा है। इसके बाद हम लोग नई विधान सभा में 14 दिसम्बर से जाने वाले हैं तो यहां आज का यह दिन यादगार रह जाये तो इसके लिए उन्होंने आग्रह किया है। अभी हम लोग अपने प्रदेश में प्रधानमंत्री सूर्यघर मुफ्त बिजली योजना को बहुत प्रोत्साहित कर रहे हैं। इसमें प्रति किलोवॉट भारत सरकार की 30 हजार रूपये सब्सीडी है और हम लोगों ने भी अपने बजट प्रदेश से भी 1 किलोवाट में 15 हजार रुपये सब्सिडी दे रहे हैं। इस तरह से हम लोग मुफ्त बिजली की ओर यहां के उपभोक्ताओं को

ले जा रहे हैं। फिर भी अभी थोड़ी लोगों को तकलीफ हो रही है। इसलिए हॉफ बिजली योजना में जो 100 यूनिट तक फ्री था, उसको बढ़ाकर 200 यूनिट तक कर रहे हैं और 36 लाख लोगों को इसका लाभ मिलेगा। (मेजों की थपथपाहट) 200 यूनिट तक जिनका consumption होगा, उनको हॉफ बिजली का लाभ मिलेगा। बाकी हम लोग प्रधानमंत्री सूर्य घर बिजली योजना पर भी बहुत जोर दे रहे हैं और आने वाले समय में सबके घर की छतों में सोलर पैनल लगाकर उनको मुफ्त बिजली की ओर ले जा रहे हैं। मैं अंत में फिर से आपका धन्यवाद करते हुए आपने एक दिवसीय ये विशेष सत्र का आयोजन किया। नेता प्रतिपक्ष सहित सभी सम्माननीय सदस्यों का भी मैं धन्यवाद करता हूं। और हमारे ऊपर जो लोकतंत्र के चौथे स्तम्भ मीडिया के साथी बैठे हैं, उनका भी धन्यवाद करते हैं। वह यहां की बातों को जनता तक पहुंचाते हैं। विधान सभा के जितने अधिकारी, कर्मचारी जिनका भी ये 25 वर्षों तक इस सदन को ठीक से चलाने में सहयोग रहा, उनका भी धन्यवाद करते हुए मैं अपनी बात समाप्त करता हूं। जय हिन्द, जय छत्तीसगढ़। (मेजों की थपथपाहट)

श्री अजय चन्द्राकर :- अध्यक्ष महोदय, एक मिनट आपसे अनुमति चाहता हूं।

अध्यक्ष महोदय :- अब मुख्यमंत्री जी के भाषण के बाद..।

श्री अजय चन्द्राकर :- मुझे भाषण नहीं देना है। अब आप खड़े हो गये हैं।

अध्यक्ष महोदय :- अच्छा चलिये, आज आखिरी दिन है, अब आप बोलिये।

श्री अजय चन्द्राकर :- माननीय अध्यक्ष महोदय, हमने यहां की कार्य प्रणाली और सभी परंपराओं में बहुत गंभीरता से विचार किया है। 25 साल में जिन चीजों की जरूरत है, मैं दो-तीन सुझाव थोड़ा सा देता हूं उससे हमारी और अच्छी होगी। एक तो जो हमारी नियम समिति है, नियम बहुत पुराने हैं। अभी तक हमने उसमें जिसमें परिवर्तन होना चाहिए, बहुत सारे नियमों में कभी नियम समिति बैठी नहीं। उसमें विचार नहीं हुआ। आपके नेतृत्व में यदि वह ठीक हो जायेगा तो बहुत सारी चीजें दुरूस्त हो जायेंगी। दूसरी बात इस सदन में छत्तीसगढ़ी का उपयोग बढ़ा है। लोकसभा ने अभी दो साल अपनी संसदीय शब्दावली को फिर से परिभाषित किया है। छत्तीसगढ़ी के उपयोग शुरू होने के बाद, हमने मध्यप्रदेश से अलग होने के बाद भी अपनी शब्दावली को संशोधित नहीं किया है, संसदीय, असंसदीय कौन सा है। तो ये भी महती कार्य आपके नेतृत्व में हो जाये। यह बोलने का, सुझाव देने का मुझे उचित अवसर लगा तो मैं सोचा कि इसको कर दूं।

अध्यक्ष महोदय :- चलिये, धन्यवाद।

अध्यक्षीय उद्बोधन

अध्यक्ष महोदय :- आज छत्तीसगढ़ विधान सभा की 25 वर्षों की गौरवशाली संसदीय यात्रा रजत जयंती वर्ष पर केन्द्रित महत्वपूर्ण चर्चा में आप सबने भाग लिया। यह अद्भूत संयोग है कि हम 25 साल की यात्रा पूरा कर रहे हैं। जब मैं वक्ताओं की सूची देख रहा था, अजय चन्द्राकर जी से लेकर माननीय मुख्यमंत्री तक, 15 भारतीय जनता पार्टी के और भूपेश बघेल जी से लेकर माननीय नेता प्रतिपक्ष डॉ. चरणदास महंत जी तक 10 कांग्रेस के, यानि 25 वक्ता ही आज की चर्चा में भागीदारी किये। (मेजों की थपथपाहट) 25 वर्ष की रजत जयंती यात्रा और मुख्यमंत्री सहित 25 लोगो ने लाग लिया। ये अद्भूत संयोग है और ये छत्तीसगढ़ विधान सभा का चमत्कार है कि यहां 25 साल हम सबने बिताये। कोई 22 साल, कोई 20 साल, कोई 18 साल, कोई 15 साल, सबने बिताये। मगर उन 51 विधायकों को विशेष बधाई दूंगा जिन्होंने 02 साल की यात्रा पूरा करते-करते 25 साल की यात्रा का आज पूरा विवरण ले लिया। (मेजों की थपथपाहट) यह आपके लिये अद्भूत अवसर है। ये जो अनुभव के भंडार बैठे हैं, जिन्होंने पूरा जीवन संसदीय कार्य में गुजार दिया। जिनकी सुबह, जिनकी शाम, जिनकी दोपहर, जिनका खाना, जिनका रहना विधान सभा और विधान सभा से जुड़ी हुई चीजों में लगा रहता है, ऐसे अनुभवी लोग इस विधान सभा के इस परिसर में हैं। पहली बार जीते हुए विधायकों का इससे बड़ा सौभाग्य क्या हो सकता है, आपने उनके अनुभव को सुनकर आज 25 साल का निचोड़ पा लिया। ये बधाई मैं आपको देना चाहता हूं। (मेजों की थपथपाहट) ये अवसर मिला। अजय चन्द्राकर जी ने भाषण शुरू किया, भूपेश जी, डॉ. चरणदास महंत जी समेत माननीय मुख्यमंत्री विष्णुदेव साय जी ने उत्तर दिया । सभी ने इस रजत जयंती वर्ष पर अपनी शुभकामनाएं व्यक्त कीं । मैं इस विधानसभा के अध्यक्ष के नाते आप सभी को मैं इस शानदार तैयारी के साथ जो विषय आपने प्रस्तुत किया, धन्यवाद देता हूं ।

यह आज का सत्र हमारे विधानसभा का इस भवन में अंतिम सत्र है, संसदीय परम्पराओं को सार्थक करने वाले सभी सदस्यों के बीच मैं यहां खड़ा होकर अपने आपको सौभाग्यशाली समझता हूं ।

लोकतंत्र के प्रति समर्पण और संसदीय व्यवहार के प्रति अद्भुत निष्ठा हमारे छत्तीसगढ़ के इतिहास में समाहित है, आज मैं थोड़ी बहुत पहले से बात शुरू कर रहा हूं । मैं याद कर रहा हूं उन पुरोधाओं को जिन्होंने इस छत्तीसगढ़ को, छत्तीसगढ़ के निर्माण के पहले छत्तीसगढ़ का नेतृत्व कितना मजबूत था, यह साबित किया था । मैं वह घटना याद कर रहा हूं, जब दुर्ग के श्री घनश्याम सिंह गुप्ता जी जो आजादी के पहले सन् 1937 में छत्तीसगढ़ से जाकर, दुर्ग से निकलकर सीपी एंड बरार के पहले विधानसभा अध्यक्ष बने । (मेजों की थपथपाहट) छत्तीसगढ़ की जड़ें कितनी मजबूत हैं, हम मध्यप्रदेश में रहें या सीपी एंड बरार में रहें । यहां छत्तीसगढ़ में हैं । दूसरा, उसी में इसी अंचल के सपूत पंडित रविशंकर शुक्ल जी उसी समय सीपी एंड बरार में मुख्यमंत्री का पद ग्रहण किये थे और उसी समय राजनांदगांव से चलकर विपक्ष में समाजवादी पार्टी से जीतकर ठाकुर प्यारेलाल सिंह जी, लीडर अपोजिशन के पद में रहे यह छत्तीसगढ़ है । (मेजों की थपथपाहट) जो सन् 1937 में भी सीपी एंड बरार में और

बाद में मध्यप्रदेश में नेतृत्व वर्ग देता रहा इसलिये लोगों को लगा कि छत्तीसगढ़ बना ही देना चाहिए जब इतने लोग सीपी एंड बरार में नेतृत्व कर सकते हैं, संविधान समिति में अनुवाद करने वाले लोग छत्तीसगढ़ में पैदा हुए । संविधान के निर्माण में भागीदारी करने वाले लोग रहे तो छत्तीसगढ़ की इस मिट्टी का हम गौरव कर सकते हैं, करेंगे और करते रहेंगे । (मेजों की थपथपाहट)

मुझे आज इस बात की खुशी है कि इन वरिष्ठों ने जो बुनियाद पुरोधाओं ने रखी थी, उस आचारण को, उस मर्यादा को यह विधानसभा आज तक कायम रखा है, आप बधाई के पात्र हैं क्योंकि आपकी वजह से यह विधानसभा की मर्यादा कायम है । (मेजों की थपथपाहट)

25 वर्ष की यात्रा पूरी कर लिये, दिनांक 01 नवम्बर, 2000 को छत्तीसगढ़ का जन्म होता है यह केवल एक नये राज्य का जन्म नहीं, एक नयी आशा, एक नया संकल्प और एक नये भविष्य का उदय था । जहां डेढ़ करोड़ लोग विश्वास और आस्था के साथ, नई उम्मीद और नई आशा को लेकर आगे बढ़ रहे थे तब छत्तीसगढ़ में क्या था ? न स्थायी राजधानी थी, न विधानसभा का भवन था, लोकतंत्र का पहिया रूका नहीं, अस्थायी व्यवस्था के तहत राजकुमार कॉलेज के परिसर में अस्थायी टेंट पर छत्तीसगढ़ की पहली विधानसभा लगी । राजकुमार कॉलेज के जशपुर हॉल में और पेड़ के नीचे विधानसभा की पहली बैठक होती है । यह छत्तीसगढ़ में लोकतंत्र की जड़ें कैसे मजबूत है उसका पहला उदाहरण है जो पहली बैठक हमारी होती है ।

प्रथम अध्यक्ष रहे, दबंग व्यक्तित्व के स्वर्गीय राजेंद्र प्रसाद शुक्ल जी ने जिन्होंने वर्ष 2000 से 3 वर्ष का कार्यकाल पूरा किया और उन्होंने यह स्पष्ट किया कि किसी भी विधानसभा की असली ताकत उसकी गरिमा में निहित है ।

वर्ष 2001 में ही शुक्ल जी ने अनुशासन की नींव मजबूत की और स्वमेव निलंबन दिनांक 20 नवंबर, 2001 को उन्होंने इस विधानसभा में अनुशासन की मिसाल पैदा करके जो देश में आज दी है, इसकी शुरूआत की और यह व्यवस्था 25 साल तक कायम है । यह विधानसभा की ताकत है, कभी मार्शल का उपयोग इस विधानसभा में नहीं हुआ । यह हिंदुस्तान की अन्य विधानसभा में चर्चा होती है, आपकी वजह से, आप लोगों के व्यवहार की वजह से ।

द्वितीय विधानसभा आता है । प्रेम प्रकाश पाण्डेय जी दिनांक 28 जनवरी, 2004 का दिन इतिहास में स्वर्ण अक्षर में लिखा गया जब डॉ.ए.पी.जे. अब्दुल कलाम साहब की गरिमामय उपस्थिति इस सदन में होती है और माननीय सदस्यों को संबोधन होता है । भाषा के प्रश्न पर अध्यक्ष पाण्डेय जी का दृष्टिकोण अत्यंत संवेदनशील और दूरदर्शी रहा । नवम्बर 2007 में छत्तीसढ़ राजभाषा (संशोधन) विधेयक पर चर्चा के दौरान उन्होंने नियमों को शिथिल करते हुए सदस्यों को छत्तीसगढ़ी भाषा में बोलने की ऐतिहासिक अनुमति दी । इतना ही नहीं, उन्होंने हिंदी और छत्तीसगढ़ी दोनों भाषाओं के लिए समानकालिक अनुवाद प्रणाली की व्यवस्था कर, हमारी भाषाई विरासत को विधान प्रक्रिया में सम्मानजनक स्थान दिलाया।

प्रक्रिया कैसे आगे बढ़ती है, छत्तीसगढ़ भाषा का सम्मान कैसे होता है, उसमें विधान सभा की भूमिका सबसे महत्वपूर्ण होती है। विधान सभा में जो चर्चा और बातचीत होती है और यहां चर्चा से जो निर्णय होते हैं, उसका असर कानून बनने पर होता है।

समय :
8.00 बजे

माननीय श्री पांडे जी के कार्यकाल में 26 जुलाई, 2007 को प्रदेश की नक्सल समस्या पर आयोजित गोपनीय चर्चा हुई है। जो Close Door Meeting, पक्ष-प्रतिपक्ष के लोगों ने ऐसी चर्चा की, जिससे मतभेद भी नहीं रहे और सबकी सभी विषयों में व्यापक रूप से उस दिन चर्चा हुई और उसका निराकरण यह है कि वह जो कार्य योजना बनी, उसका लाभ पूरे प्रदेश को मिला।

तृतीय विधान सभा के अध्यक्ष श्री धरमलाल कौशिक जी ने सदन की कार्यवाही को गरिमा, शालीनता और दक्षता के साथ संचालित किया। और आगे चलकर नेता प्रतिपक्ष के रूप में उन्होंने यह दिखाया कि विपक्ष केवल विरोध के लिए नहीं, बल्कि विकल्प और विवेक को भी आवाज देता है।

श्री कौशिक जी के नेतृत्व में छत्तीसगढ़ विधान सभा एक ऐतिहासिक अवसर की साक्षी बनी, जब छत्तीसगढ़ ने पहली बार अंतर्राष्ट्रीय संसदीय सम्मेलन की मेजबानी का गौरव प्राप्त किया। यह चतुर्थ इंडिया एवं एशिया-रीजन, राष्ट्रकुल संसदीय संघ (CPA) का भव्य सम्मेलन अक्टूबर, 2010 में आयोजित हुआ।

इस सम्मेलन में लोकसभा और राज्यसभा के प्रतिनिधि, भारत के अनेक राज्य विधानमंडलों के पदाधिकारी तथा पाकिस्तान, बांग्लादेश, मालदीव और श्रीलंका की राष्ट्रीय एवं प्रांतीय विधानसभाओं के पीठासीन अधिकारी की यहां पर उपस्थिति रही।

चतुर्थ विधानसभा के अध्यक्ष श्री गौरी शंकर अग्रवाल जी के नेतृत्व में आयोजित कार्यशालाओं और ओरिएंटेशन कार्यक्रमों में प्रदेश के वरिष्ठ मंत्रियों के साथ-साथ राष्ट्रीय स्तर की प्रतिष्ठित विभूतियों को आमंत्रित करने का रहा, जिसमें लोकसभा अध्यक्ष श्रीमती सुमित्रा महाजन जी, श्री थावरचंद गेहलोत जी, श्री रवि शंकर प्रसाद जी, राज्यसभा उपसभापति श्री हरिवंश जी, स्व. श्री अरुण जेटली जी सम्मिलित हुए।

इसी क्रम में छत्तीसगढ़ के पांचवें विधान सभा के अध्यक्ष डॉ. चरणदास महंत जी ने राष्ट्रपिता महात्मा गाँधी जी के 150वीं जयंती समारोह के अवसर पर उनके व्यक्तित्व और कृतित्व पर चर्चा हेतु अक्टूबर, 2019 में दो दिवसीय विशेष सत्र का आयोजन किया। उन्होंने 1 मार्च, 2023 को बजट सत्र के प्रारंभ में छत्तीसगढ़ विधान सभा का आधिकारिक एंड्रॉइड मोबाइल ऐप लॉन्च किया, यह ऐप विधान सभा की कार्यवाही, प्रश्नोत्तर, सदन सम्बंधी सूचनाएँ तथा दस्तावेज़ों को मोबाइल पर उपलब्ध कराने की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम है।

पिछले पच्चीस वर्षों में इस सदन की यात्रा मात्र विधायी कार्यवाहियों तक सीमित नहीं रही - यह यात्रा छत्तीसगढ़ के सपनों की, उसकी संघर्ष-शक्ति की, उसकी जन- आकांक्षाओं और उम्मीदों की रही । यह वह यात्रा है, जिसने साबित किया कि जब एक प्रदेश अपने लोकतंत्र पर विश्वास करता है, तो उसकी मिली-जुली इच्छाशक्ति इतिहास की नई राहें बनाती है।

मुझे यह कहते हुए गर्व होता है कि यह सदन केवल कानून नहीं बनाता, बल्कि भविष्य बनाता है। यह केवल शब्दों का आदान-प्रदान नहीं, जन-आकांक्षाओं का रूपांतरण करता है। इस सदन की दीवारों ने बहसें सुनी हैं, तर्क सुने हैं, मतभेद भी सुने हैं पर अंत में सदैव जन-हित का मार्ग चुना है। यही इस संसद-परंपरा की सबसे पवित्र पहचान है।

दिसम्बर, 2023 में अध्यक्ष के रूप में दायित्व ग्रहण करना, मेरे सार्वजनिक जीवन का वह क्षण था जिसे शब्दों में पूरी तरह बाँध पाना संभव नहीं समझता। मुख्यमंत्री के रूप में वर्ष 2003 से 2018, 15 साल मेरे जीवन के वे गौरवशाली क्षण रहे, जब मैं मुख्यमंत्री रहा, परंतु सदन में वर्ष 2018 के बाद अध्यक्ष के रूप में जब मैं यहां के मर्यादा का संरक्षक बना, वास्तव में यह मेरे लिए जीवन की एक अनुभूति है, एक संकल्प है और यह मेरे लिए एक अभिमान का विषय है। (मेजों की थपथपाहट)

जब कोई पूछता है कि 15 साल मुख्यमंत्री रहने के बाद अध्यक्ष के पद में, कुर्सी में कैसे बैठे हो तो मैं उनको कहता हूं कि 15 साल तो मैं सत्ता का और सरकार का दायित्व देखता रहा, मगर आज जिस दायित्व में हूं, मैं समझता हूं कि यह बहुत बड़ा दायित्व है। इसके काबिल बनने का मैं प्रयास करूंगा। ये मेरी कोशिश रहेगी। (मेजों की थपथपाहट) यह दायित्व छोटा नहीं है। 90 विधायकों का संरक्षक बनकर इस विधान सभा को और बेहतर तरीके से संचालित करने का काम 3 करोड़ लोगों की आशा और विश्वास का केन्द्र जिस विधान सभा में देश का भविष्य और देश का बजट तय होता है, वहां की मर्यादा को संचित करने का काम, मैंने कभी किसी पल भी महसूस नहीं किया कि मेरा दायित्व छोटा है। मुझे लगता है कि मेरे हाइट और मेरे वजन के हिसाब से बहुत बड़ा दायित्व दे दिया गया है, शायद मैं इसको संभाल पाउंगा, नहीं संभाल पाउंगा, यह सदन बताएगा। मैंने वर्षों तक इस सदन के सभी माननीय सदस्यों को नजदीक से देखा है और मैंने पाया है कि जो हमारे पूर्व अध्यक्षों के बारे में मैं कह रहा हूं, जिसमें महंत जी भी बैठे हैं। इनकी शांति में अनुशासन है, इनके मौन में शक्ति है, इनकी तटस्थता में लोकतंत्र की दिव्यता है। (मेजों की थपथपाहट) यह हमारे विधान सभा के अध्यक्ष रहें। आज जब मैं उसी आसंदी पर हूं तो मेरे भीतर एक ही भाव गूंजता है- "यह पद शक्ति का नहीं, यह पद उत्तरदायित्व का है।" जब कोई सदस्य अपने क्षेत्र की पीड़ा को उठाता है तो उसमें केवल राजनीति नहीं, बल्कि जनता की उम्मीदें और संघर्ष उनके अंदर दिखाई देता है। जब दो अलग-अलग विचारधाराओं वाले सदस्य किसी विषय पर बहस करते हैं तो मुझे बार-बार यह अहसास होता है कि लोकतंत्र की सुंदरता इसी में समाहित है। जब तक असहमति है। जब सदस्य अपने मुद्दे को लेकर सामूहिक रूप से एक साथ

आवाज उठाते हैं तो मुझे लगता है कि एकता की असली तस्वीर यही है कि अपने क्षेत्र की बात उठा रहे हैं। (मेजों की थपथपाहट) इसमें कहीं कोई दिक्कत अध्यक्ष के नाते मुझे नहीं आती है। आज 25 साल में जिसके बारे में महंत जी बता रहे थे। हमारी विधान सभा के 25 वर्षों में कुल 76 सत्रों में 773 बैठकें हुई हैं और इस अवधि में सदन में 3456 घंटे 19 मिनट के कार्य संपादित हुए। छत्तीसगढ़ विधान सभा का यह गौरव है कि देश के 3 महामहिम राष्ट्रपति का आगमन इस विधान सभा में हुआ है। (मेजों की थपथपाहट) यह सदन उनके मार्गदर्शन, प्रेरणा और उपस्थिति से अनेक बार सम्मानित हुआ है। इसी प्रकार, छत्तीसगढ़ विधान सभा ने समय-समय पर अनेक प्रतिष्ठित राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय संसदीय आयोजन जैसे भारत के पीठासीन अधिकारियों का सम्मेलन, एशिया रीजन राष्ट्रमंडल संसदीय संघ सम्मेलन, विभिन्न प्रबोधन के कार्यक्रमों और लोक-अर्पण कार्यक्रमों का आयोजन किया और इन अवसरों पर लोकसभा के माननीय अध्यक्षगण-श्री सोमनाथ चटर्जी जी, श्री मनोहर जोशी जी, श्रीमती मीरा कुमार जी, श्रीमती सुमित्रा महाजन जी, श्री ओम बिरला जी तथा केन्द्रीय गृह मंत्री श्री अमित शाह जी तथा केन्द्रीय मंत्रिगण और पूर्व लोकसभा अध्यक्ष श्री बलराम जाखड़ जी एवं श्री शिवराज पाटिल जी का आगमन छत्तीसगढ़ की विधान सभा के लिए अत्यंत सम्मान का विषय रहा है। (मेजों की थपथपाहट) माननीय सदस्यगण, यह भवन विद्वता और संसदीय व्यवहार को समर्पित एक आदर्श विधान सभा रही है। इस विधान सभा भवन ने प्रथम मुख्यमंत्री के रूप में श्री अजीत जोगी जी के संसदीय ज्ञान और अद्भुत व्यवहार को भी देखा है। आज मैं उन सारे मुख्यमंत्रियों को याद कर रहा हूं, जिन्होंने 25 साल छत्तीसगढ़ का नेतृत्व किया। जिसकी शुरूआत सन् 2000 से अजीत जोगी जी ने की, उसके बाद भूपेश बघेल जी के मुख्यमंत्री रहते सदन के सुचारू संचालन के वह साक्षी हैं। आज जब प्रदेश में एक आदिवासी मुख्यमंत्री के नेतृत्व में यह काम तेजी के साथ चल रहा है तो मैं माननीय मुख्यमंत्री श्री विष्णुदेव साय जी के सशक्त नेतृत्व और विकास के प्रति तेजी के साथ हो रहे काम के लिए उनको बहुत-बहुत बधाई और धन्यवाद देता हूं। (मेजों की थपथपाहट) उनके नेतृत्व में छत्तीसगढ़ की एक विशिष्ट पहचान बनी है और वह सीधे, सरल और बेहतर तरीके से काम करके उस दिशा में एक नया इतिहास बनाने वाले हैं कि जब उनके नेतृत्व में हिंदुस्तान की सबसे बड़ी समस्या, दुनिया की सबसे बड़ी समस्या मुझे लगता है कि नक्सलवाद की समाप्ति उनके कार्यकाल में मार्च, 2023 में होगा। (मेजों की थपथपाहट) यह किसी के जीवन के मुख्यमंत्री बनने और राजनीति में आने का यदि कोई कारण होता है तो उस कारण का पूरा समाधान हो जाता है क्योंकि जब मैंने अपने जीवन में एक समय संतुष्टि पाई थी, जब मुख्यमंत्री रहते हुए मैंने खाद्यान्न सुरक्षा बिल लाया था तो मैं चैन से सोया था। (मेजों की थपथपाहट) मुख्यमंत्री जी भी वर्ष 2026 के मार्च में इत्मीनान से सोयेंगे, जब छत्तीसगढ़ से नक्सल समस्या का समाधान हो जायेगा। (मेजों की थपथपाहट) यह गौरव का स्थान इनको मिलने वाला है। आज मैं याद कर रहा हूं हमारे नेता प्रतिपक्ष नंद कुमार साय जी को, जिन्होंने नेता प्रतिपक्ष की भूमिका निभाई। एक व्यक्ति को, जिसे मैं

जीवन में कभी भूल नहीं सकता। जिसके बारे में मेरे मन में अमिट छाप है और अद्भुत सम्मान है। उस व्यक्ति को मैं कभी जीवन में भूलूंगा नहीं। आज मैं उसको याद करता हूं। बस्तर टाइगर महेन्द्र कर्मा जी, जो प्रतिपक्ष को आवाज देने का काम करते थे। (मेजों की थपथपाहट) उस व्यक्ति का अद्भुत चरित्र था। नेता प्रतिपक्ष की इस परंपरा में हमारी विधान सभा में श्री रविन्द्र चौबे जी का संसदीय ज्ञान भी है और श्री टी.एस. सिंहदेव जी का धैर्य और शालीनता भी है, इस कड़ी में श्री धरमलाल कौशिक जी का अनुभव और श्री नारायण चंदेल जी की गंभीरता समग्र रूप से आगे बढ़ाकर डॉ. चरणदास महंत जी तक पहुंच जाती है। इस विधान सभा की इस लंबी यात्रा में शीर्ष पद पर ही नहीं, बल्कि हर सदस्य की भूमिका महत्वपूर्ण रही है। मैं इन 25 वर्षों की यात्रा में जब हमारे वरिष्ठ सदस्यों का योगदान देखता हूं तो घूमकर उस 25 साल के विधान सभा में बोलने वाले वे सदस्य याद आते हैं। पुन्नूलाल मोहले जी, हमारे सीनियर सदस्य, बृजमोहन जी, जो 25 साल में 25 साल लगातार विधान सभा में सदस्य रहे, श्री सत्यनारायण शर्मा, स्व. श्री नंदकुमार पटेल जी, श्रीमती अनिला भेंडिया, श्रीमती डॉ. रेणु जोगी जी, श्री अजय चंद्राकर, श्री कवासी लखमा जी, धर्मजीत सिंह, ऐसे बहुत सारे लोग हैं, नाम लूंगा तो सैकड़ों नाम हैं। ये वे लोग हैं, जिन्होंने मुखरता के साथ इस विधान सभा के संचालन में अपनी महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। आज अजय चंद्राकर जी ने तो 25वें साल में शानदार शुरूआत की है, उसके लिए बधाई देना चाहता हूं। (मेजों की थपथपाहट) इस सदन की इस पूरी यात्रा में प्रदेश के विकास और प्रदेशवासियों के हित को सर्वोपरि रखा है, यहां पारित विधेयक न सिर्फ प्रदेश के लिए आदर्श बने बल्कि उन्हें राष्ट्रीय स्तर पर सराहना भी मिली है।

यह सदन साक्षी रहा है, "भोजन के अधिकार का"
यह सदन साक्षी रहा है, "कौशल के अधिकार का"
यह सदन साक्षी रहा है, "महिला आरक्षण के उत्थान का"
यह सदन साक्षी है, "संसदीय व्यवहार और लोकतंत्र के सम्मान का"

(मेजों की थपथपाहट)

इस सदन का आपने गौरव बढ़ाया है, आपके व्यवहार से गौरव बढ़ा है। विगत् 25 वर्षों में जो विकास हुआ है, उसकी गंगोत्री इस विधान सभा का सदन है, जो भी विकास हुए हैं, यहां डिस्कस होकर, यहां चर्चा होकर, बजट में उसकी मंजूरी देकर हुई है, यही गंगोत्री है, आने वाले पिछले 25 साल में जिन उपलब्धियों को आप कम ज्यादा आंक रहे हैं, उसकी शुरूआत इस विधान सभा के चर्चा से शुरू होती है। लोग विधान सभा की ओर ध्यान लगाकर देखते हैं। मुझे लगता है कि यहां पर जो बजट प्रस्तुत होता है, चर्चा होती है तो पहला किसानों को ऋण मुक्त कर्ज मिला, जब 12 प्रतिशत से शून्य प्रतिशत ब्याज दर में किसानों को ऋण देने की योजना शुरू हुई तो छत्तीसगढ़ का इतिहास रचा गया। (मेजों की

थपथपाहट) जब एक रूपए किलो चावल की योजना शुरू हुई तो लाखों, करोड़ों लोगों के जीवन में परिवर्तन आया।

24 लाख किसानों को 3100 रूपये प्रति क्विंटल धान खरीदने की घोषणा जब मुख्यमंत्री जी ने की पूरा छत्तीसगढ़ और पूरा देश आज पूछता है कि क्या 3100 रूपए में 21 क्विंटल धान खरीदा जा रहा है ? मैंने कहा ये विष्णुदेव का चमत्कार है जो कर रहे हैं और करते जा रहे हैं। (मेजों की थपथपाहट) तेंदूपत्ता को 3000 से 5500 रूपए करने की इस 25 साल की यात्रा में बहुत सारी उपलब्धियां हैं जिसका वर्णन इस दस मिनट में पूरा नहीं हो सकता।

यह भवन राजनीति की पाठशाला भी है, जो पहली बार चुनाव जीतकर विधायक आता है, उसका प्रबोधन होता है जो अपने क्षेत्र का नेतृत्व करते हैं। मैं इन सभी नये सदस्यों को विशेष रूप से कहना चाहूंगा कि आप सब इस विधान सभा में दो साल रहे हैं, अब अगले विधान सभा की ओर जाने वाले हैं, यहां से जो सीखकर जाएंगे, यहां जो अनुभव लेकर जाएंगे, उसको आने वाले समय में नये विधान सभा में उस दिशा में आगे बढ़ाएं।

माननीय सदस्यगण 25 वर्षों बाद छत्तीसगढ़ की इस संसदीय यात्रा ने एक नया मुकाम हासिल किया है। 01 नवंबर, 2025 को अटल नगर में भव्य नये विधान सभा का लोकार्पण माननीय नरेन्द्र मोदी जी द्वारा किया गया और उसमें पूर्व प्रधानमंत्री छत्तीसगढ़ के निर्माता अटल बिहारी वाजपेयी जी प्रतिमा का अनावरण हुआ (मेजों की थपथपाहट) ये छत्तीसगढ़ के तीन करोड़ लोगों का भाव है, जो हमने अटल जी की प्रतिमा स्थापित की, हम उनको धन्यवाद दे सकते हैं, इसलिए उस दिन प्रतिमा का अनावरण हुआ़।

यह विधान सभा भवन केवल एक संरचना नहीं है, यह छत्तीसगढ़ की पहचान आत्मगौरव और विकसित भविष्य का प्रतीक है। जहां छत्तीसगढ़ की संस्कृति और अपनी धरोहर को केन्द्र में रखकर एक विकसित भविष्य की ओर आशान्वित होकर पूरा प्रदेश देश रहा है।

मैं फिर से कहना चाहूंगा कि
इस सदन की यात्रा 25 वर्षों की नहीं, 25 वर्षों की जीत है,
लोकतांत्रिक विश्वास की जीत है,
जनता की आकांक्षाओं की जीत है,
हमारी समष्टि-प्रतिबद्धता की जीत है।
हम सबके विचार अलग-अलग हो सकते हैं, पर छत्तीसगढ़ का कल-हम सबका साझा लक्ष्य है।

पक्ष हो या विपक्ष हो, हम सब मिलकर एक नये छत्तीसगढ़ के निर्माण की कल्पना करते हैं। 25वीं वर्षगांठ इस भवन के विदाई का सत्र नहीं है, मैं इसे नव संकल्प सत्र कहना उचित समझता हूं। (मेजों की थपथपाहट) अंत में हृदयपूर्ण विश्वास है कि इस सदन की अगली यात्रा, अधिक ऊंची, अधिक

सशक्त और अधिक ऐतिहासिक होगी।

इस विधान सभा के सभापति तालिका के सभी सदस्य, विधान सभा के पूर्व सदस्य, मुख्य सचिव सहित विधान सभा से जुड़े हुए प्रदेश के सभी अधिकारी-कर्मचारीगण, विधानसभा सचिवालय के सचिव और सभी अधिकारीगण, पुलिस महानिदेशक, सुरक्षा बल के जवान, मीडिया के सभी साथी, प्रत्यक्ष-अप्रत्यक्ष रूप से विधान सभा से जुड़ने और योगदान देने वाले सभी सदस्यों का आभार व्यक्त करता हूं, जो 25 साल से भवन को सुचारू रूप से संचालन में योगदान दिया है।

कुछ विषय जो बातचीत और चर्चा में आया था। उसमें 2 महत्वपूर्ण सुझाव आये थे। माननीय नेता प्रतिपक्ष ने सुझाव दिया कि क्या हम विधान सभा में आने वाले समय में किसी नई प्रक्रिया का जन्म दे सकते हैं ? आम आदमी के प्रश्नों का किस प्रकार से विधान सभा में प्रस्तुति हो और उसका समुचित जवाब विधान सभा के माध्यम से हो सकता है या नहीं ? यह एक तकनीकी प्रक्रिया है। आपने इस प्रक्रिया में बहुत अच्छा सुझाव दिया है। अन्य राज्यों की व्यवस्था और केन्द्र की व्यवस्था को देखकर हम इस दिशा में आगे बढ़ने का काम करेंगे। यह कहीं कठिन नहीं होगा।

माननीय अजय जी ने कहा कि नियम समिति बैठक नहीं हुई है, पुराने नियम हैं। इसके परिवर्तन के लिए निश्चित रूप से अगली बार बैठेंगे तो इस विषय पर विचार करेंगे कि कौन-कौन से ऐसे नियम हैं, जिसमें तात्कालिक संशोधन की आवश्यकता है, उसको आगे बढ़ायेंगे।

मैं आप सभी को बहुत-बहुत हृदय से आभार व्यक्त करता हूं। बहुत-बहुत धन्यवाद। (मेजों की थपथपाहट)

अध्यक्ष महोदय :- सभा की कार्यवाही नवा रायपुर अटल नगर स्थित नवीन विधान सभा भवन में समवेत् होने के लिए रविवार 14 दिसम्बर, 2025 को 11.00 बजे दिन तक के लिए स्थगित।

(रात्रि 8 बजकर 17 मिनट पर विधान सभा रविवार, दिनांक 14 दिसम्बर, 2025 (मार्गशीर्ष 23, शक संवत् 1947) को 11.00 बजे दिन तक के लिए स्थगित हुई)

दिनेश शर्मा

रायपुर (छत्तीसगढ़) **सचिव**

दिनांक : 18 नवम्बर, 2025 **छत्तीसगढ़ विधान सभा**